# छत्तीसगढ़ विधान सभा

# की

# अशोधित कार्यवाही

**(अधिकृत विवरण)**

**षष्ठम् विधान सभा** **प्रथम सत्र**

**गुरुवार, दिनांक 21 दिसम्बर, 2023**

**(अग्रहायण 30, शक सम्वत् 1945)**

**[अंक 03]**

Web Copy

# छत्तीसगढ़ विधान सभा

गुरूवार, दिनांक 21 दिसम्बर, 2023

(अग्रहायण-30, शक संवत् 1945)

विधानसभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुई

**{अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए}**

समय :

11.00 बजे

**निधन का उल्लेख**

**(1) श्री लीलाराम भोजवानी, अविभाजित मध्यप्रदेश शासन के पूर्व मंत्री तथा छत्तीसगढ़ विधानसभा के पूर्व सदस्य ।**

**(2) डॉ. रामलाल भारद्वाज, छत्तीसगढ़ विधानसभा के पूर्व सदस्य ।**

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यंत दुख हो रहा है कि अविभाजित मध्यप्रदेश शासन के पूर्व मंत्री तथा नवगठित छत्तीसगढ़ विधान सभा के पूर्व सदस्य, श्री लीलाराम भोजवानी का दिनांक 16 अगस्त, 2023 को तथा छत्तीसगढ़ विधानसभा के पूर्व सदस्य, डॉ. रामलाल भारद्वाज का दिनांक 02 नवम्बर, 2023 को निधन हो गया है ।

दिनांक 16 अगस्त 2023 को छत्तीसगढ़ महतारी के सेवक, हमारे साथी और वरिष्ठ जननेता श्री लीलाराम भोजवानी जी ने अंतिम सांस ली ।

श्री लीलाराम भोजवानी जी बहुत ही सरल तथा सौम्य व्यक्तित्व के धनी थे, व्यक्तिगत रूप से मैं उन्हें काकाजी कहकर संबोधित करता था, उनका भी राजनीतिक जुड़ाव राजनांदगांव विधानसभा क्षेत्र से था, जहां से वे लगातार विधायक बने । उनका मार्गदर्शन मुझे हमेशा मिलता रहा, वे मेरे प्रतिनिधि भी रहे इसलिए उनका जाना मेरे लिये व्यक्तिगत क्षति तो है ही इसके साथ ही साथ प्रदेश की राजनीति पर भी एक बड़ी चोट है ।

श्री लीलाराम भोजवानी जी भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता थे और आजीवन वे जनसेवा के कार्यों से जुड़े रहे ।

श्री लीलाराम भोजवानी जी का जन्म 24 जनवरी 1941 को हुआ और यह अद्भुत संयोग है कि उन्होंने भी अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत पार्षद के रूप में की और मेरी भी राजनीतिक जीवन की शुरूआत पार्षद के रूप में ही हुई ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सन् 1965 में उन्होंने पार्षद, नगरपालिका राजनांदगांव । तदन्तर उपाध्यक्ष, कनिष्ठ एवं वरिष्ठ अध्यक्ष (संस्थापक) जिला मजदूर संघ के रूप में कार्य किया ।

जिसके बाद श्री भोजवानी जी सन् 1990 में प्रथम बार तथा 1998 में द्वितीय बार राजनांदगांव विधानसक्षा क्षेत्र से विधायक के रूप में निर्वाचित हुए तथा उन्होंने अविभाजित मध्यप्रदेश सरकार में श्रम विभाग के राज्यमंत्री के पद पर भी अपनी सेवा दी तथा सन् 2000 में उन्होंने छत्तीसगढ़ भाजपा विधायक दल के कोषाध्यक्ष के रूप में कार्य किया ।

स्वर्गीय लीलाराम भोजवानी का निधन हम सभी के लिये अपूर्णीय क्षति है, मैं स्वर्गीय श्री लीलाराम भोजवानी जी के निधन पर अपनी और सदन की ओर से गहरा शोक प्रकट करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें ।

डॉ. रामलाल भारद्वाज का जन्म 11 अप्रेल, 1947 को भंडारपुरी जिला रायपुर में हुआ था । वे प्रारंभ से ही राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यों से जुड़े रहे । आप सन् 1998 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी की टिकट पर निर्वाचन क्षेत्र पलारी से अविभाजित मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुये तथा मध्यप्रदेश से अलग होकर बने नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य की प्रथम विधानसभा के सदस्य रहे । वे छत्तीसगढ़ विधानसभा की प्रत्यायुक्त विधान समिति के सभापति तथा कई समितियों के सदस्य रहे । उनकी सामाजिक कार्यों में विशेष अभिरूचि थी । सार्वजनिक जीवन में आपकी सेवाओं को हमेशा याद रखा जायेगा ।

उनके निधन से प्रदेश ने एक अनुभवी राजनेता तथा समाजसेवी को खो दिया है ।

मुख्यमंत्री (श्री विष्णुदेव साय) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री लीलाराम भोजवानी जी अब हमारे बीच नहीं हैं । यह सोचकर ही मन दुखी हो जाता है । उनका जीवन 82 वर्ष से अधिक का रहा । भारतीय जनता पार्टी के बहुत ही निष्ठावान कार्यकर्ता, श्रमिक आंदोलन के पुरोधा, श्रम कल्याण के बहुत लंबे समय तक संघर्ष करने वाले भोजवानी जी का जन्म 24 जनवरी, 1941 को सिंध प्रांत के दादू नामक गांव में हुआ था । लंबे समय तक उन्होंने पत्रकारिता की और जनपक्षधर पत्रकार के रूप में जनता का बहुत विश्वास अर्जित किया । समाजसेवा का भाव उनके खून में था । वे हमेशा लोगों की मदद के लिये उपलब्ध रहते थे। इसी गुण के कारण वे काफी लोकप्रिय हुए तथा मध्यप्रदेश के जमाने में वर्ष 1990 में पहली बार विधान सभा सदस्य निर्वाचित हुए। हमारे मार्गदर्शक श्री सुंदरलाल पटवा जी की सरकार में भोजवानी जी मध्यप्रदेश में श्रम राज्य मंत्री बने थे। वर्ष 1998 के विधान सभा चुनाव में श्री भोजवानी जी दूसरी बार विधायक बने। इस तरह छत्तीसगढ़ विधान सभा में भी योगदान दिया। मजदूर नेता से लेकर पार्षद, विधायक तथा मंत्री पद का सफर तय करने वाले भोजवानी जी राजनांदगांव जिले में एक आधार-स्तंभ की तरह थे। छत्तीसगढ़ में डॉ. रमन सिंह जी के नेतृत्व व मुख्यमंत्रित्व वाली सरकार में श्री भोजवानी छत्तीसगढ़ नागरिक आपूर्ति निगम के अध्यक्ष तथा खादी एवं ग्रामोद्योग के



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

भी अध्यक्ष रहे। 17 अगस्त, 2023 को श्री भोजवानी जी के देहावसान की दुखद खबर आयी थी। उनका जाना हम सबके लिए अपूरणीय क्षति है। भोजवानी जी भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं । मुझे लगता है कि भा.ज.पा. में ही नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग में, पूरे प्रदेश में श्री भोजवानी जी को चाहने वाले लोगों की संख्या लाखों में थी। मैं अपनी ओर से, अपने दल की ओर से और श्री भोजवानी के सभी प्रशंसकों की ओर से उन्हें सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। ईश्वर से प्रार्थना है कि श्री भोजवानी जी के परिवार को यह गहन दुख सहने की शक्ति प्रदान करें। ओम शांति।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बहुत ही दुख का विषय है कि इस सदन के सदस्य रहे डॉ. रामलाल भारद्वाज का देहावसान हो गया है। आज हम विधान सभा में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। डॉ. रामलाल भारद्वाज का जन्म 11 अप्रैल, 1947 को भंडारपुरी में हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा रायपुर जिले के अंतर्गत पलारी में हुई थी। डॉ. भारद्वाज किसान परिवार से आते थे। अत: उनका मुख्य कार्य खेती-किसानी ही था, लेकिन उन्होंने शिक्षक तथा रजिस्टर्ड मेडिकल प्रेक्टिसनर के रूप में भी बहुत लंबे समय तक कार्य किया। डॉ. भारद्वाज समाज से गहरा नाता रखते थे और सेवा कार्य करते हुए वे सार्वजनिक जीवन में आये। वे 9 वर्षों तक ब्लॉक कांग्रेस कमेटी, पलारी के उपाध्यक्ष थे तथा कांग्रेस की टिकट पर ही विधायक बने थे। वर्ष 1998 में पहली बार अविभाजित मध्यप्रदेश में विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए। इस प्रकार विधान सभा की विभिन्न समितियों में भी उन्होंने अपना योगदान दिया। वर्ष 1998 से 2003 के बीच विधायक रहने का लाभ यह हुआ कि उन्होंने मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ दोनों राज्यों की विधान सभा में काम किया। सहज, सरल स्वभाव के श्री भारद्वाज लंबे समय से बीमार थे और 02 नवंबर, 2023 को उन्होंने अपनी अंतिम सांसें लीं। मैं श्री भारद्वाज को श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनको श्री चरणों में स्थान प्रदान करें। मैं भगवान से यह भी प्रार्थना करता हूं कि डॉ. भारद्वाज के परिवारजनों को यह गहन दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

अध्यक्ष महोदय :- नेता प्रतिपक्ष।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह हम सबके लिए, पूरे सदन के लिए दुख का विषय है कि पहले सत्र में ही दो साथियों के बिछड़ने का गम हम सब लेकर यहां आये हैं। आप जानते हैं कि कबीर साहब ने कहा था :-

आये हैं तो जायेंगे, राजा, रंक, फकीर।

एक सिंहासन चढ़ी चले, एक बंधे जंजीर।।

ये हमारे दो साथी हैं, उनका जाना सिंहासन पर चढ़कर जाने के बराबर है, क्योंकि हम यहां पूरे सदन के लोग उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने आये हैं। उनके परिवार के लोगों को इस गहन चिंता से

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ईश्वर मुक्त करें, यह कहने आये हैं और ऐसे लोगों का जाना निश्चित रूप से हम सबके लिए अखरता है।

श्री लीलाराम भोजवानी जी के साथ मैंने भी काम किया है। हम सब मध्यप्रदेश विधान सभा में थे। सीधे, सरल व्यक्तित्व के धनी और आपके जैसे ही आपके सहज मित्र रहे। उनके शरीर में एक अलग आकर्षण था, वे स्वाभाविक रूप से मोह लेते थे । बर्बस ही उनसे बात करने की इच्छा होती थी । ऐसे सहज व्यक्तित्व के जाने का हम सबको अत्यंत दुख है । हम अपनी ओर से और अपने दल की ओर से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति मिले और ईश्वर उनके परिवार को इस गहन दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे ।

भाई रामलाल भारद्वाज हमारे दल से ही थे । सतनामी समाज का एक सदस्य होने के नाते सदैव ही उनकी चिंता समाज के प्रति रहती थी । एक समाज सेवक के रूप में सामाजिक लोगों को लेकर वे हमेशा मेरे पास आया जाया करते थे । हम उनसे अत्यंत ही प्रभावित थे, वे अत्यंत ही सरल थे । जैसा कि सतनाम समाज में यह सिखाया ही जाता है कि सतनामी समाज के लोगों को किस तरह आचरण करना है, कैसा व्यवहार करना चाहिए । उस आचरण को वे हमेशा धारण करते थे, मानते थे । आज उनके जाने से एक अच्छा सतनामी समाज का सेवक चला गया है। पूरे साथियों की ओर सदन की ओर से उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उनके परिवार को इस गहन दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे । आज इस अवसर पर हम सब उनको नमन् करते हैं ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में सदस्य रहे दो सदस्य, जिनके साथ मुझे काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित कर रहे हैं । लीलाराम भोजवानी जी से छात्र जीवन से विगत् 40-45 सालों से सम्पर्क रहा । हमने उनके बाल कभी काले नहीं देखे । हमेशा उनके बाल सफेद होते थे और उस पर गुलाल लगी होती थी ।

अध्यक्ष महोदय :- गुलाल ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में लम्बे समय तक काम किया, वे नवभारत के पत्रकार रहे । मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की राजनीति में भी उनका एक तकिया कलाम था, "ऐसे संकेत मिले" । जब भी वे मिलते थे तो हम कहते थे कि क्या संकेत हैं । वे एक मजाकिया लहजे और सरल लहजे के व्यक्ति थे। उन्होंने सिंधी समाज में काम करके पूरे देश में एक पहचान बनाई । मध्यप्रदेश में हम लोगों ने साथ में राज्यमंत्री के रूप में काम किया । आज वे हमारे बीच में नहीं हैं । माननीय अध्यक्ष जी, आपके तो वे सबसे नज़दीकी रहे हैं, शायद आपके विधायक प्रतिनिधि, मुख्यमंत्री रहते हुए और सांसद रहते हुए भी आपके प्रतिनिधि रहे । एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने सिर्फ राजनांदगांव



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जिले में ही नहीं पूरे छत्तीसगढ़ में अपनी एक छाप छोड़ी, एक पहचान बनाई । आज वे हमारे बीच में नहीं हैं, हमें उनके साथ काम करने का अवसर मिला । हम उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं । प्रभु, उनके परिवार को इस दुख को सहन करने की शक्ति दे, ऐसा प्रार्थना करते हैं ।

रामलाल भारद्वाज जी के साथ भी हमने मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की विधान सभा में काम किया । हमने उस क्षेत्र से आने वाले ऐसे तीन विधायकों को देखा है जो इंदिरा आवास में रहकर विधायक बने । उनमें से एक रामलाल भारद्वाज जी थी, जो सीधे-सादे, सरल थे, वे हमारे साथ इस सदन में रहे हैं, उनका हमारे बीच से चला जाना दुखद है और गुरू बाबा घासीदास जी के सच्चे अनुयायी का चला जाना है । मैं उनके प्रति भी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और प्रभु से कामना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति दे, ओम शांति ।

श्री धरमलाल कौशिक (बिल्हा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री लीलाराम भोजवानी जी, पार्षद से ले करके श्रम मंत्री के रूप में काम किया और इसके साथ ही उन्होंने संगठन के अनेक दायित्वों का निर्वहन किया। जिला अध्यक्ष से लेकर कोषाध्यक्ष तक लंबे वर्षों तक कोषाध्यक्ष के रूप में काम किया। लेकिन उनकी जो पहचान बनी, वह भारतीय मजदूर संघ से बनी। उन्होंने भारतीय मजदूर संघ के एक कार्यकर्ता की भांति श्रमिकों के बीच में बहुत लंबे समय तक काम किया। वे मजदूरों की सुख-दुख की चिंता करते रहे, उनकी समस्याओं को उठाते रहे, वे जब श्रम मंत्री बने, तब भी इसी भाव के साथ, उन्होंने उनके साथ काम किया। उनके हित में जो हो सकता है, एक मंत्री के नाते उनको काम करने का अवसर मिला। निश्चित रूप से उनकी प्रेरणा हमेशा दीन दुखी और मजदूरों के प्रति रही है। बिलासपुर में अनेक बार सिंधी समाज के कार्यक्रम में आने का, दुख-सुख में चर्चा करने का अवसर मिला। इसी प्रकार से भोपाल से लेकर बाकी जगह समाज में उनकी काम करने की रूचि रही है। इसके साथ ही साथ हम लोगों ने उनको देखा है कि निगम मंडल में भी काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने नागरिक आपूर्ति निगम और अनेक दायित्वों का निर्वहन किया है। आज के समय में भी हम लोग भोजवानी जी को स्मरण करते हैं, भोपाल से लेकर इस विधानसभा में काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके सामने उम्र की कोई सीमा नहीं थी, सीनियर से सीनियर या जूनियर से जूनियर जो विधायक हैं, एक मित्र की भांति उनका बर्ताव सबको साथ लेकर चलने की रही है, निश्चित रूप से ऐसे भोजवानी जी का हम सबके बीच से चले जाना, हम सबके लिए एक दुखदपूर्ण समय है, हम उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

डॉ. रामलाल भारद्वाज जी, हम लोगों ने साथ में काम किया है। भोपाल की विधानसभा और छत्तीसगढ़ की विधानसभा में एक साथ बैठकर काम किए हैं। उनकी सादगी को, उनकी सरलता को जानते हैं, साथ ही उनका क्षेत्र के प्रति लगाव, समाज के प्रति उनका एक दृष्टिकोण, बाबा गुरू घासीदास जी की अनुयायी की भांति उनका जो संपूर्ण जीवन रहा है और दायित्वों का निर्वहन करते हुए जब विधायक थे तब और जब विधायक नहीं थे तब भी अनेक अवसरों पर उनसे मिलने का अवसर हम

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सबको मिला है, निश्चित रूप से हमने एक सच्चे पलारी के सपूत को खोया है, हम भगवान से यही प्रार्थना करते हैं कि दोनों आत्मा को शांति प्रदान करें, ओम शांति।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री लीलाराम भोजवानी जी, हमारे एक अच्छे मित्र थे और दोनों की जोड़ी हम लोगों को रास आती थी, वे मुझे डोकरा नाम से बोलते थे और मैं भी उनको छोकरा बोलता था। हम दोनों का विचार था भोजवानी, हम कहते थे अच्छे हैं आपकी मेहरबानी, आप हैं भोजवानी। दोनों की मित्रता अच्छी रही। वे नागरिक आपूर्ति निगम के अध्यक्ष भी रहे, हमारे साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार हुआ, उन्होंने अच्छा कार्य किया। मैं उनको नमन करता हूं, उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

डॉ. रामलाल भारद्वाज जी भण्डारपुरी, जहां बाबा गुरू घासीदास जी का मुख्यालय है, गद्दी है, वे वहां के निवासी थे, उन्होंने अच्छा कार्य किया, उन्होंने पूरे समाज को अच्छी दिशा दी, समाज ने उन्हें प्रेम, स्नेह दिया, भण्डारपुरी से लेकर पूरे छत्तीसगढ़ में यात्रा की, भारद्वाज जी सबके हितैषी बने, उन्होंने समाज की सेवा में बहुत प्रशंसनीय कार्य किया। ऐसे भारद्वाज जी को मैं नमन करता हूं। मैं दोनों आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- मैं सदन की ओर से शोकाकुल परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं। दिवंगतों के सम्मान में अब सदन कुछ देर के लिए मौन धारण करेगा।

**(सदन द्वारा दो मिनट खड़े रहकर मौन धारण किया गया)**

अध्यक्ष महोदय :- दिवंगतों के सम्मान में सदन की कार्यवाही पांच मिनट तक के लिए स्थगित।

**(11.20 से 11.29 बजे तक कार्यवाही स्थगित रही)**

समय :
11.29 बजे

**(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)**

श्री बघेल लखेश्वर (बस्तर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, ग्राम - खुगड़ाजोर, जिला - नारायणपुर के एक किसान ने आत्महत्या की है। हमने इस विषय पर स्थगन दिया है, कृपया आप इस पर चर्चा कराएं।

श्री अजय चंद्राकर (कुरूद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। हमको जो आमंत्रण मिला है उसमें कहीं पर भी इस बात का उल्लेख नहीं है कि शून्यकाल, ध्यानाकर्षण या स्थगन की सूचनाएं ली जाएंगी। माननीय लखेश्वर बघेल जी ने जो विषय उठाया है और अभी प्रश्नकाल भी नहीं हुआ है। यदि उन्होंने आपके कंडोलेंस के बाद इस विषय को उठाया है तो यदि उसको शून्यकाल मान लिया जाए तो इस तरह के आमंत्रण में ऐसी कोई व्यवस्था ही नहीं है। माननीय लखेश्वर बघेल जी किस



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रक्रिया के तहत किसान आत्महत्या के प्रकरण को उठा रहे हैं? इस पर आपकी व्यवस्था जाए, क्योंकि आपने जो आमंत्रण भेजा है उसमें इस बात का उल्लेख नहीं है कि शून्यकाल, ध्यानाकर्षण या स्थगन की सूचनाएं ली जाएंगी। तो वह किस प्रक्रिया के तहत् और किस ऑवर में इस बात को कह रहे हैं? इस पर आपकी व्यवस्था आनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- बिल्कुल।

श्री भूपेश बघेल (पाटन) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो निमंत्रण मिला है उसमें इसका उल्लेख नहीं है, लेकिन पूरे शासकीय कार्य संपादित हो रहे हैं। राज्यपाल महोदय का अभिभाषण हो रहा है, साथ ही सप्लीमेन्ट्री बजट भी प्रस्तुत कर रहे हैं तो सत्र आहूत है। भले प्रश्नकाल हो या न हो, ध्यानाकर्षण हो या न हो, लेकिन यदि सरकार बनने के बाद घटना घटी है तो उसमें लखेश्वर बघेल जी ने स्थगन दिया है तो मैं आपसे आग्रह करूंगा कि यह विशेष परिस्थिति है और एक किसान ने कर्ज के बोझ में दबकर आत्महत्या कर ली तो इस विषय पर इस सदन में चर्चा करायी जानी चाहिए।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर-दक्षिण) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सदन नियम और परंपराओं से चलता है और यदि हम देखें तो विधान सभा की तरफ से हमें जितने भी दस्तावेज उपलब्ध कराये गये हैं, उसमें कहीं पर भी इस बात का उललेख नहीं है कि आप इस तारीख तक प्रश्न लगा पाएंगे, इस तारीख तक स्थगन लगा पाएंगे और इस तारीख तक ध्यानाकर्षण लगा पाएंगे। नियम-प्रक्रियाओं से अलग हटकर विधान सभा की कार्यवाही नहीं चल सकती है। परंपराएं भी हैं और ये जो 3 दिन का समय है, यह विशेष रूप से शपथ के लिए, सप्लीमेन्ट्री बजट के लिए और राज्यपाल जी का अभिभाषण करवाना तो हमारी बाध्यता है कि जब भी पहला सत्र होगा तो राज्यपाल जी का अभिभाषण होगा। उन बाध्यताओं के कारण इस काम को किया गया है। सामान्यत: इस प्रकार के छोटे सत्र में जब विधान सभा के सभी प्रकार के नोटिफिकेशन में स्थगन, ध्यानाकर्षण और प्रश्नों के बारे में किसी भी प्रकार का उल्लेख नहीं किया गया है तो मुझे लगता है कि ऐसी परिस्थिति में स्थगन प्रस्ताव पर चर्चा करना नियम-प्रक्रिया के विरूद्ध होगा। इसलिए मैं यह चाहूंगा कि इस विषय पर किसी भी प्रकार की चर्चा न होकर जो अनुपूरक बजट पर चर्चा होनी है, वह चर्चा शुरू होनी चाहिए।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आदरणीय अग्रवाल जी नियम-प्रक्रियाओं की बात पिछले 5 वर्षों से कर रहे हैं, जब मैं उस स्थान में था।

श्री भूपेश बघेल :- उसके पहले से।

डॉ. चरणदास महंत :- हमें यह पता है कि आप इस स्थगन को स्वीकार नहीं करेंगे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय पूर्व अध्यक्ष जी, आप यह बताइये कि नियम-प्रक्रियाओं की बात करनी चाहिए या नहीं करनी चाहिए?

डॉ. चरणदास महंत :- आप करिए न, मैं कहां बोल रहा हूं कि आप हमारा स्थगन प्रस्ताव स्वीकार करें। मगर छत्तीसगढ़ में जिसकी सेवा का संकल्प लेकर आप यहां पर आये हैं, वह भी बस्तर जैसे जिले में एक किसान आत्महत्या कर लेता है तो आप उसको शून्यकाल मान लो, जीरो आवर मान लो या कोई भी काल मान लो, लेकिन इस पर चर्चा तो हो सकती है। 5-10 मिनट आपको किसी गरीब का दु:ख सुनने में क्या तकलीफ है? मैं यही कहना चहता हूं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय नेता जी, आपको इस बात का अधिकार है कि जब अनुपूरक पर चर्चा होगी या राज्यपाल जी के अभिभाषण पर चर्चा होगी, तब आप इसका उल्लेख कर सकते हैं। यदि आप इस पर चर्चा करना चाहते हैं तो उन दोनों विषयों में इसका उल्लेख कर सकते हैं।

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप बड़े दयालु किस्म के आदमी हैं। (हंसी) सबने शुरू-शुरू में कहा है कि आपका दिल बिल्कुल दरिया है और यदि उस दरिया में एक गरीब किसान नहीं समा सकता, एक आदिवासी नहीं समा सकता तो हम लोग कहां जाएं? क्या हम लोग गांधी जी के पास जाएं? यदि आप कहेंगे तो हम गांधी जी के पास चले जाते हैं? इसलिए मैं यह चाहता हूं कि आप हमारी बात सुन लीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अच्छा, यदि दिल दरिया है तो समुंदर क्या है?

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पूर्व मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी ने जिस बात का हवाला दिया, उस पर बृजमोहन जी ने बात कही कि यह सदन नियम-प्रक्रियाओं से चलता है। अब माननीय नेता प्रतिपक्ष जी आसंदी की ओर देखकर कह रहे थे कि जब मैं वहां पर था तो ऐसा होता था। माननीय नेता जी, समय आएगा तो आपको बताएंगे कि आप उधर के कितने दबाव में थे और कितनी नियम-परंपराएं बनीं या नहीं बनीं या टूटीं या बिखरीं? मुख्य रूप से जो बात मैं कहना चाहता हूं कि छत्तीसगढ़ विधान सभा के इतिहास में कभी भी जिस दिन अभिभाषण पर चर्चा हुई है। आज अभिभाषण पर चर्चा है। वित्त की परंपरा में बजट और विनियोग दोनों पर चर्चा है। अध्यक्ष जी, ये लोग आपके दिल को दरिया है, बोलते हैं तो पूरा दरिया नहीं, सात महासागर को एक साथ जोड़कर उसमें चर्चा करवा लीजिए, पूरे 35 लोग हैं, वे सभी एक-एक लाईन उसमें बोल दें, हम कहीं पलायन नहीं कर रहे हैं, लेकिन नियम के विपरीत चर्चा की मांग करें तो यह संभव नहीं है, यह हमारा आग्रह है ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप नियम प्रक्रिया की बात कर रहे हैं, लेकिन एक बात और भी है । क्योंकि नई सरकार बनने के बाद और सत्र आहूत होने के बीच किसान ने आत्महत्या की है और जब दूसरा सत्र होगा तो आप उसमें स्थगन नहीं ला पाएंगे क्योंकि यह सत्र निकल चुका है । इस सत्र और दूसरे सत्र के बीच की जो घटना है, उसी में स्थगन लाया जा सकता है इसलिए चूंकि यह

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सत्र बुलाने के पहले की यह घटना है इसलिए मैं आपसे आग्रह करूंगा कि इसको ग्राह्य करके चर्चा कराएं ।

श्री धरमलाल कौशिक (बिल्हा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जिस बात का उल्लेख किया है, जो सत्र हम बुलाएंगे, उस सत्र में पहला अवसर होगा इसलिए उसको स्थगन में लाया जा सकता है क्योंकि जब इस सत्र में चर्चा नहीं हुई है, उसमें यह विषय लाया जा सकता है और उसमें चर्चा की जा सकती है । आप उसको नियम-प्रक्रिया में देख लें । आपको पहला अवसर कब मिलेगा ? पहला अवसर वही मिलेगा । जब आप प्रश्न, ध्यानाकर्षण और स्थगन लगाएंगे तो यह पहला अवसर होगा । जहां तक किसी भी प्रकार से चर्चा में आ जाये, जो नेता प्रतिपक्ष जी बोल रहे हैं तो मैं यह कहता हूं कि आज दो विषय में चर्चा होनी है । अनुपूरक बजट में और माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण पर चर्चा होनी है, उसमें भी आप यह विषय ला सकते हैं क्योंकि विनियोग के साथ में चर्चा होनी है । आप 10 मिनट नहीं, उस विषय में 20 मिनट बोल सकते हैं और एक नहीं, अनेक सदस्य भी उसमें बोल सकते हैं । मैं समझता हूं कि जो आपकी भावना है, उस भावना के अनुरूप उसका समावेश किया जा सकता है और आप उस विषय को लाकर दोनों विषय में अपनी बात रख सकते हैं । आपका यह कहना कि हमारे पास चर्चा का क्या अवसर है तो आपको इन दोनों विषय में आपको अपनी बात रखने का अधिकार है ।

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह दूसरे पूर्व अध्यक्ष महोदय ने अपनी बात की, लेकिन कहीं भी यह नियम में नहीं है कि एक विधान सभा सत्र के बाद दूसरे विधान सभा सत्र के बीच की घटना पर ही स्थगन लाया जा सकता है । चूंकि सत्र आहूत हो चुका है इसलिए यह पहला अवसर है इसलिए हम आसंदी से आग्रह करते हैं और ट्रेजरी बेंच से भी बात करते हैं ।

**(श्री अजय चन्द्राकर के खड़े होने पर)**

श्री भूपेश बघेल :- अभी आप संसदीय कार्यमंत्री नहीं बने हैं । जब बन जाएंगे तो अपनी बात करिए । नहीं बन रहे हैं, मंत्रिमण्डल में भी नहीं हैं । (हंसी) माननीय अध्यक्ष जी, इसे आप ग्राह्य करें और ग्राह्य करके चर्चा कराएं ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जो पहला सत्र आहूत होता है, वह विषय पर आधारित आहूत हुआ है । आपने इस सत्र को विषय पर आहूत किया है । बाकी जितने सत्र होते हैं, वह किसी विषय पर आधारित नहीं होते इसलिए इस सत्र की गणना लेप्स हो गयी तो विषय इसमें हो ही नहीं सकती । माननीय भूपेश बघेल जी का जो आग्रह है कि सत्र के बाद वह नहीं होगा, जो लखेश्वर जी किसानों की आत्महत्या के बारे में बताने की कोशिश कर रहे हैं, वह विषय बिल्कुल व्यपगत नहीं माना जाएगा, उसमें अगले सत्र में चर्चा हो सकती है क्योंकि यह विषय आधारित सत्र है । जो दूसरा सत्र है, वह विषय आधारित नहीं होगा ।

श्री रामकुमार यादव (चन्द्रपुर) :- माननीय अध्यक्ष जी, हमर साथी मन नियम प्रक्रिया के बात करत रिहीन हे, मैं सुनत रेहेंव । हम सब एके ठी उद्देश्य लेकर आए हन कि किसान मन के आंसू पोछबो, किसान के हित में काम करबो । छत्तीसगढ़ ला धान के कटोरा कहे जाथे अउ अगर किसान के बात मा चर्चा करे बर आए हन त एमन कतेक अकन तिलमिला जात हवयं । 10-15 मिनट किसान मन पर चर्चा कर लेबो त का हो जाही ।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह तो भाषण हो गया ।

श्री रामकुमार यादव :- अध्यक्ष महोदय, मोर आपसे निवेदन हे कि सबके भावना के अनुरूप किसान के हित मा काम करे बर किसान के बात पर चर्चा होना चाहिए ।

श्री कवासी लखमा (कोंटा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सत्र आहूत होने के पहले एक आदिवासी किसान 9 एकड़ की जमीन पर खेती करके आत्महत्या कर रहा है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने व्यवस्था का प्रश्न उठाया है, जिसमें आपने बोलने का अवसर दिया है । वे किसी दूसरे विषय पर बोल रहे हैं, व्यवस्था पर नहीं बोल रहे हैं । वे व्यवस्था पर बोलें ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं व्यवस्था दूंगा ।

श्री कवासी लखमा :- अध्यक्ष जी, मेरा यह कहना है कि अगर नियम को शिथिल करके चर्चा हो सकती है तो आपको चर्चा करानी चाहिए । अगर चर्चा नहीं होगी तो हम लोगों ने किसके लिए विधान सभा सत्र लगाया है ।

अध्यक्ष महोदय :- आप व्यवस्था पर ही बोलिए ।

श्री कवासी लखमा :- नियम को शिथिल करते हुए इस पर आपको चर्चा करानी चाहिए, जिससे छत्तीसगढ़ के किसान भविष्य में आत्महत्या न करे । अगर हम यह बात नहीं करेंगे तो सत्र लगाने का क्या मतलब होगा ।

अध्यक्ष महोदय :- आपकी बात आ गई । अनिला जी, आप बोलिए ।

श्रीमती अनिला भेंडिया (डौण्डीलोहारा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम लोग किसानों की बात कर रहे हैं और आप सात समुन्दर पार की बात कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय का दिल बहुत बड़ा हैं, हम यह कहकर बात कर रहे हैं। इसलिए हम किसानों के हितों की बात कर रहे हैं, आदिवासियों के हितों की बात कर रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको स्थगन स्वीकार करना चाहिए।

श्री विक्रम मण्डावी (बीजापुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम सब लोग बस्तर से आते हैं। बस्तर के नारायणपुर जिले के इलूबेड़ी क्षेत्र का जो आदिवासी किसान है, हम लोग उस पर सदन में चर्चा करना चाह रहे हैं। यह बहुत बड़ी गंभीर बात है।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, मेरी फिर आपत्ति है कि कोई भी माननीय सदस्य व्यवस्था के प्रश्न पर नहीं बोल रहे हैं। स्थगन की ग्राह्यता या अग्राह्यता जैसे विषय पर बोल रहे हैं।

श्री विक्रम मण्डावी :- सरकार की गारण्टी के आधार पर जिस तरह से आदिवासी और किसानों ने कर्ज लिया और उसके बाद उसने आत्महत्या कर लिया, हम उस विषय पर चर्चा करने की बात कर रहे हैं। खासकर आदिवासियों पर जो विश्वास इस पर था, गारण्टी की बात थी, हम चाहते हैं कि कौन सी ऐसी गारण्टी थी कि वहां के आदिवासी, ग्रामीण भरोसा करके कर्ज लेने के बाद आत्महत्या करने के लिए मजबूर हुए हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आपकी बात आ गई।

श्री विक्रम मण्डावी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम चाहते हैं कि उस पर सदन की कार्यवाही रोककर इस पर चर्चा कराई जाये और उन किसानों को न्याय मिले। पूरे प्रदेश के किसानों में रोष है। इसलिए हम चाहते हैं कि इस पर चर्चा हो।

श्री रिकेश सेन (वैशाली नगर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में हम लोग 50 से ज्यादा नये विधायक हैं। इस सदन की गरिमा को लेकर पूरे प्रदेश में ही नहीं पूरे देश में चर्चा होती है कि सदन नियम और प्रकियाओं से चलता है। अध्यक्ष महोदय, हम लोग 50 से ज्यादा नये विधायक हैं। हम सबके मन में सदन में बात रखने की बहुत सारी जिज्ञासाएं हैं। हम बहुत सारी बातें रख सकते हैं, बहुत सारी समस्याओं को बता सकते हैं। सबसे बड़ा उदाहरण भिलाई नगर निगम में बिना वर्क आर्डर के कार्य किए जा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये हो गया। आपको बाद में अवसर मिलेगा।

श्री रिकेश सेन :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह सदन नियम और पक्रियाओं से चले, यह मैं चाहता हूं। इसलिए हमें आपसे उम्मीद है।

श्री दलेश्वर साहू :- बिलकुल, हमारे सेन जी की बातों को तवज्जों दिया जाये।

**<u>अध्यक्षीय व्यवस्था</u>**

अध्यक्ष महोदय :- यह एक मान्य और सुव्यवस्थित संसदीय परम्परा है कि प्रथम सत्र में माननीय नव निर्वाचित सदस्यों का शपथ कार्य रखा जाता है। शून्यकाल, प्रश्नकाल, ध्यानाकर्षण जैसी सूचनाएं नहीं ली जाती हैं। विधान सभा सत्र आहूत किए जाने की अधिसूचना के साथ, दिग्दर्शिका तथा पत्रक भाग-2 की प्रति संलग्न कर सभी सदस्यों को प्रेषित की जाती है। पत्रक भाग-2 में सत्रों की तिथि के साथ-साथ सत्र में मुख्य रूप से कौन-कौन सी सूचनाएं कब-कब विधानसभा सचिवालय को प्राप्त की जायेगी, उसका उल्लेख किया जाता है। विधान सभा के गठन होने के बाद वाली प्रथम सत्र अल्प सूचना के आधार पर आहूत किया जाता है। इसकी परम्परा अनुसार माननीय सदस्यों को शपथ, राज्यपाल का



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अभिभाषण और अन्य शासकीय कार्य संपादित किए जाते हैं। इसलिए ऐसी अल्प सूचना में आहूत किए गए अल्पकालीन सत्र में प्रश्न, स्थगन, ध्यानाकर्षण, अशासकीय संकल्प, नियम 139 के अधीन अविलम्बनीय लोक महत्व के विषय पर चर्चा जैसी सूचना नहीं ली जाती है। सत्र के सम्बन्ध में जारी किए जाने वाले पत्रक भाग-2 में इसका उल्लेख नहीं किया जाता है। वैसे भी वित्तीय वर्ष 2023-24 के द्वितीय अनुपूरक अनुमान पर तथा माननीय राज्यपाल के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा होना है। इन चर्चाओं पर सदस्य अपने विचार रख सकते हैं। धन्यवाद।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरण दास महंत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने जो मान्य परम्परा है, उसके अनुसार अपना निर्णय सुना दिया। हम सिर्फ यह चाहते थे कि इन मान्य परम्पराओं को भी बदला जा सकता है। सिर्फ एक आदिवासी किसान की बात है। मगर इस पर, जिस तरह से विपक्षी दलों ने अपने बल के हिसाब से यहां प्रेशर बनाने की कोशिश की, आप पर दबाव बनाने की कोशिश की। मैं यह नहीं कहता कि हम आपके विरोध में जा रहे हैं। लेकिन हम इसके विरोध में बहिर्गमन कर रहे हैं।

समय :
11.44 बजे

**बहिर्गमन**

**स्थगन स्वीकार नहीं किए जाने कि विरोध में**

(नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरण दास महंत) के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस दल के सदस्यों ने सदन से बहिर्गमन किया।)

अध्यक्ष महोदय :- छत्तीसगढ़ की षष्ठम विधान सभा का यह प्रथम सत्र है। मैं आप सबका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं कि विधानसभा की कार्यवाही के दौरान सदन में मोबाईल फोन की घंटी बजने से या उसका उपयोग करने से सदन की कार्यवाही में व्यवधान उपस्थित होता है। विधानसभा की कार्यवाही के दौरान सभा में मोबाईल फोन का उपयोग किया जाना पूर्णत: वर्जित है, अत: माननीय मंत्रीगण और माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि सभा भवन में मोबाईल फोन लेकर नहीं आये और न ही मोबाईल फोन का उपयोग सभा में करें । छत्तीसगढ़ विधान सभा आपकी अपनी सभा है, इस सभा की उच्च परम्परा रही है और विधान सभा के नियम और परम्परा का पालन करते रहे हैं । इस संबंध में विधान सभा सचिवालय लॉबी स्थित सूचना कार्यालय में मोबाईल फोन जमा करने की सुविधा प्रदान की गई है, जहां माननीय सदस्य अपना मोबाईल फोन जमा कर पावती प्राप्त कर सकते हैं । माननीय मंत्रीगण, माननीय सभी सदस्यों से इस पवित्र सदन की गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये सहयोग की अपेक्षा करता हूँ । मैं समझता हूँ कि सदन इससे सहमत है ।

**(सदन द्वारा सहमति प्रदान की गई)**



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :

11.46 बजे **<u>वित्तीय वर्ष 2023-2024 के द्वितीय अनुपूरक अनुमान की अनुदान मांगों पर चर्चा</u>**

अध्यक्ष महोदय :- अब अनुपूरक मांगों पर चर्चा होगी । परम्परानुसार सभी मांगें एक साथ प्रस्तुत की जाती है और उस पर एक साथ चर्चा होती है, अत: मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से कहूंगा कि वे सभी मांगे एक साथ प्रस्तुत कर दें । मैं समझता हूँ कि सदन इससे सहमत होगा ।

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) :- अध्यक्ष महोदय, मैं, राज्यपाल महोदय की सिफारिश के अनुसार प्रस्ताव करता हूँ कि- दिनांक 31 मार्च, 2024 को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष में अनुदान संख्या- 1, 3, 6, 7, 10, 12, 13, 14, 17, 19, 20, 21, 23, 26, 27, 29, 30, 31, 36, 41, 44, 47, 55, 64, 65, 69, 80 एवं 81 के लिये राज्य की संचित निधि में से प्रस्तावित व्यय के निमित्त राज्यपाल महोदय को कुल मिलाकर बारह हजार नौ सौ बयानबे करोड़, सत्तर लाख, अनठानबे हजार, आठ सौ रूपये की अनुपूरक राशि दी जाये ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ । माननीय उमेश पटेल जी अपनी चर्चा प्रारंभ करेंगे ।

श्री राजेश मूणत :- उमेश भईया, पुराना मत बोल देना ।

श्री उमेश पटेल :- 15 साल का भी शुरू करूं क्या ?

श्री रामकुमार यादव :- एक ठन कहावत हे गा....।

श्री राजेश मूणत :- बिल्कुल तैयार हैं, हर चीज पर । महादेव एप से लेकर, धान घोटाले से लेकर, धान खरीदी पर, हर चीज पर तैयार हैं ।

श्री अनुज शर्मा :-कहां जाबे धमना, किंदर बुल के इही अंगना ।

श्री रामकुमार यादव :- अभी शुरूच में तुंहर मन के आंय-बांय-सांय हो गे हे ।

श्री उमेश पटेल (खरसिया) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम जो जनादेश भारतीय जनता पार्टी को सरकार बनाने के लिये आया है, चूंकि प्रथम वक्तव्य मेरे तरफ से हो रहा है, मैं भारतीय जनता पार्टी को बधाई देता हूँ । माननीय मुख्यमंत्री जी को बधाई, दोनों उपमुख्यमंत्री जी को बधाई और जो 30-40 लोग हैं, उन सभी को शुभकामनायें । अनार के दाने तो सिर्फ दस हैं, बीमार 30-40 लोग हैं और एक तो आपके पीछे ही बैठे हैं, वह हड़बड़ा रहे हैं, खासकर संसदीय कार्यमंत्री बनने के लिये बहुत ज्यादा हड़बड़ा रहे हैं । आप उनका भी ध्यान रखेंगे, यही मेंरी शुभकामनायें हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात किसानों से रखूंगा । भारतीय जनता पार्टी ने मोदी की गारण्टी के नाम से अपना संकल्प पत्र प्रस्तुत किया है और इन्होंने 3100 रूपये क्विंटल में धान खरीदी और जनता से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान खरीदने का वादा किया है । अध्यक्ष महोदय, आप इस सप्लीमेंट्री बजट को देखेंगे तो उसमें कितना प्रावधान है ? धान उत्पादन एवं प्रोत्साहन योजना के लिये 3 हजार 8 सौ करोड़ का प्रावधान है। यदि



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आप 3 हजार 8 सौ करोड़ को डिवाईड करेंगे तो इनका जो दो वर्ष की बोनस राशि देने का वायदा था, वह फेल हो गया है।

श्री राजेश मूणत :- उमेश भाई, आपने अपने जनघोषणा पत्र में कहा था कि हम 2 साल का बोनस देंगे। आपने 5 सालों में झुनझुना दिया है। आपने कुछ नहीं दिया इसीलिये आपको उधर बैठना पड़ा है। आप अपना जनघोषणा पत्र पहले पढ़ लीयिजे। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य :- आपके पुराने पापों को हम क्यों धोयेंगे ?

श्री राजेश मूणत :- आप पहले अपना घोषणा पत्र पढ़ लीजिये कि आप क्या किये हो। इसीलिये वहां बैठना पड़ा है।

श्री रामकुमार यादव :- हम परमिशन मांगे तो नई दिये। वह डबल इंजन (व्यवधान)

श्री राजेश मूणत :- (व्यवधान) आपने 2 साल का बोनस नहीं दिया इसलिये वहां बैठे हैं। हमने तो जो कहा है वह हम कर रहे हैं।

एक माननीय सदस्य :- आपके पाप को हम क्यों धोयेंगे ?

श्री लखेश्वर बघेल :- आप हमारी चौथी किश्त भी दे दीजिये, तब तो होगा।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- उसको भी रोकने का काम आपकी केंद्र की सरकार ने किया है। किसानों के साथ अन्याय हुआ। प्रधानमंत्री की अनुमति नहीं मिलने से 2 साल की अतिरिक्त राशि हमारे माननीय बघेल जी नहीं दे पाये।

श्री राजेश मूणत :- इसीलिये तो उधर बैठना पड़ा है।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- हम सहमत हैं। अभी बहुत सारी बातें हैं।

श्री राजेश मूणत :- अभी तो गरीब परिवारों को 18 लाख मकान भी आयेंगे, आप चिंता क्यों कर रहे हैं, अभी शुभारंभ हुआ है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, हमने आपको धान का मूल्य 3100 रूपये देने के लिये मजबूर कर दिया है।

श्री बघेल लखेश्वर :- हां, पूरे देश को देना पड़ेगा।

अध्यक्ष महोदय :- उमेश जी।

श्री रामकुमार यादव :- अध्यक्ष महोदय, चन्द्राकर जी यहां कहत रिहीसे कि छत्तीसगढ़ में 20 क्विंटल धान नहीं होवय। ऐसे करके बयान दिस हवय। ऐमा घोटाला हुए हे कहिस हे। अब तुमन कहथो कि घोटाला हुए हे कहिके तो ऐमा हिसाब किताब करबो।

अध्यक्ष महोदय :- उमेश जी, आप जारी रखिये।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से यही कहूंगा कि देखिये सब लोग कितने उतावले हैं। आप इनकी पीड़ा को समझिये और जल्द ही मंत्रिमण्डल का गठन कर

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

दीजिये। मुख्यमंत्री महोदय, क्योंकि बहुत सारे काम रूके हुए हैं। जितनी जल्दी मंत्रिमण्डल का गठन होगा, उतने जल्दी काम शुरू हो जायेगा। राजेश भैया का मैं समझता हूं और इसलिये राजेश भैया, मैं यह बात कहता हूं।

श्री राजेश मूणत :- उमेश भैया, मैं आपका दर्द समझता हूं। आप 5 साल तक उच्च शिक्षा मंत्री रहे हैं। आपका दर्द मुझसे ज्यादा कोई नहीं समझ सकता। आप छत्तीसगढ़ में 1 कॉलेज नहीं खोल पाये, इससे बड़ा दर्द और क्या होगा। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, कल माननीय राज्यपाल जी अपना अभिभाषण अंग्रेजी में पढ़ रहे थे। आपने रायपुर नहीं, इस पूरे प्रदेश के अंदर 3 साल में अंग्रेजी माध्यम आत्मानंद स्कूल खोले हैं, तो यह स्थिति बन गई कि मेरे भाई 3 साल में अंग्रेजी नहीं सीख पाये ।

श्री अटल श्रीवास्तव :- क्या आप समझ पाये थे ?

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं इनकी इस बात पर आपत्ति करता हूं कि हमने कॉलेज नहीं खोले। मैं आपको बताऊं कि पिछले 5 सालों में सबसे ज्यादा कॉलेज खुले हैं, जितने पिछले 15 सालों में नहीं खुले हैं। (मेजों की थपथपाहट) अंग्रेजी माध्यम के कॉलेज भी खुले हैं, आत्मानंद स्कूल भी खुले हैं और उसका रिजल्ट अगले 12 सालों बाद आयेगा। हमने जो बीज बोया है, उसका असर छत्तीसगढ़ के बच्चे देखेंगे।

श्री राजेश मूणत :- वह तो देख लिया।

श्री उमेश पटेल :- वह अंग्रेजी में सीखेंगे। आज जो यह सदन अंग्रेजी में बात नहीं समझ पाया, वह बात 5 साल बाद समझेंगे।

अध्यक्ष महोदय :- राजेश जी, बैठ जाईये। उमेश जी, आप आगे बढ़िये।

श्री रिकेश सेन :- आपने दुर्ग जिले में दुकान की तरह कॉलेज खोल दिये हैं।

श्री उमेश पटेल :- वह देखिये, वह अभी आपकी बात को काट दिये। वह अभी आपकी बात को काट दिये।

श्री रिकेश सेन :- आपने अपने लोगों को लाभ देने के लिये अर्बन क्षेत्र में एक कमरे में कॉलेज खोल दिये हैं।

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, इसीलिये मैं कहता हूं आदरणीय मुख्यमंत्री जी, आप जल्दी मंत्रिमण्डल का गठन कर दीजिये। यहां तो कौन क्या बयान दे रहा है, वह किसी को समझ नहीं आ रहा है। एक सदस्य बोल रहे हैं कि कॉलेज नहीं खुला है और दूसरे सदस्य बोल रहे हैं कि गली-गली कॉलेज खुले हैं। अब आप समझ लीजिये। माननीय अध्यक्ष महोदय, आप समय का जरूर ध्यान रखिये, टोका-टाकी हो रही है। मुझे उतना समय थोड़ा अधिक दीजियेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

**सदन को सूचना**

अध्यक्ष महोदय :- आपकी जानकारी के लिये मैं सभी सदस्यों को बता दूं। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लिये 46 मिनट, भारतीय जनता पार्टी के लिये 72 मिनट एवं गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के लिये 2 मिनट का समय निर्धारित है। आप प्रथम वक्ता हैं, आप बाकी सदस्यों के समय की चिंता करते हुए बोलिये।

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, जी, मैं जल्दी समाप्त करूंगा।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

**वित्तीय वर्ष 2023-2024 के द्वितीय अनुपूरक अनुमान की अनुदान मांगों पर चर्चा (क्रमश:)**

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं 21 क्विंटल और 3100 रूपये में धान खरीदी के विषय में बोलना चाहता हूं। मैं भारतीय जनता पार्टी के लिये यही कहूंगा कि इसी सदन में इन्होंने घोषणा की कि हम प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान 3100 रूपये में खरीदी करेंगे। लेकिन इसी सदन में भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों ने यह कहा कि छत्तीसगढ़ में 21 क्विंटल में धान खरीदी नहीं हो सकती। यहां की जो औसत धान खरीदी होगी वह 15 क्विंटल से ज्यादा नहीं हो सकती। यह आपका दोहरा मापदण्ड है। आप जनता के बीच में जाते हैं तो 21 क्विंटल की बात करते हैं और जब माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी ने यहां घोषणा की कि हम 20 क्विंटल धान की खरीदी करेंगे तो भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों ने उसका विरोध किया। अध्यक्ष महोदय, कल इन्होंने आदेश जारी किया कि हम 21 क्विंटल में धान खरीदी करेंगे। यह बहुत बढ़िया था। आपने कल रात को आदेश जारी कर दिया। इसका द्वितीय अनुपूरक अनुमान में प्रावधान कहां है? इसका द्वितीय अनुपूरक अनुमान में कहीं प्रावधान नहीं है। इसमें 3800 करोड़ रूपये का प्रावधान है। यह जो प्रावधान है इसे आप कैल्कुलेट कर लीजिए, जो दो सालों की बोनस राशि है अगर आप उसे देने जा रहे हैं यह उसी में समाप्त हो जाएगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस द्वितीय अनुपूरक अनुमान में न चौथे किश्त की बात हो रही है। यह किसानों का अधिकार है। इसके लिए कोई बजट प्रावधान नहीं है। आप 21 क्विटल में धान खरीदी करेंगे तो जो एक्स्ट्रा एमाउंट लगेगा, उसके बारे में बजट में कोई प्रावधान नहीं है आप 3100 रूपए में धान खरीदी करेंगे, उसके लिए कोई बजट प्रावधान नहीं है। यह आपका दोहरा मापदण्ड बताता है। यह आपका दोहरा चरित्र बताता है। आपने 21 क्विंटल का आदेश कर दिया, लेकिन आपने सोसायटियों को मौखिक आदेश दिया है, जो छोटी सोसायटियां हैं वह एक दिन में 700 क्विंटल से ज्यादा नहीं खरीद सकते और जो बड़ी सोसायटियां हैं वह एक दिन में 1600 क्विंटल से ज्यादा नहीं खरीद सकते। अब कितना दिन बचा है ? आप कैल्कुलेट कर लीजिए कि पूरी धान खरीदी नहीं हो सकती। आपने 21



अप्रकाशित/प्रकाशन के लिये नहीं

क्विंटल का आदेश जारी कर दिया। आप किसानों को धोखा दे रहे हैं। आप एक तरफ बोल रहे हैं कि हम 21 क्विंटल में धान खरीदी करेंगे और दूसरी तरह सोसायटियों में प्रबंधकों को आदेश है कि आपने एक दिन में 700 क्विंटल से ज्यादा धान खरीदा तो आपको प्रबंधक के पद से हटा दिया जायेगा। यह दोहरा मापदण्ड है।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह मनगढंत बात कर रहे हैं।

श्री गजेन्द्र यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, किसी भी सोसायटी में इस प्रकार को कोई भी आदेश जारी नहीं हुआ है, आप बेजा आरोप लगा रहे हैं।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने 5 सालों में किसानों की चौथी किश्त नहीं दे पाये । इसके लिए भारतीय जनता पार्टी को बोल रहे हैं। आप 5 सालों तक क्या कर रहे थे ?

श्री उमेश पटेल :- माननीय श्याम बिहारी जी, आप तो मेरे अच्छे मित्र हैं। आपको भी यह पता है कि सरकार किसी पार्टी की रहती है। जब सरकार हमारी थी, हमने किसानों को तीन किश्त दी। अब आपकी सरकार बन गई है जो किसानों का अधिकार है, चौथी किश्त उनका अधिकार है आप उसे तो दीजिए। आपने 15 सालों में ...।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- माननीय उमेश भाई, जनवरी से लेकर चुनाव तक में 8 महीने होते हैं उसमें आप चौथी  किश्त नहीं दे पाये। माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी बैठे हैं। वह बड़ी-बड़ी बातें करते थे।

श्री राजेश मूणत  :- माननीय अध्यक्ष महोदय, पहले तो यह बजट को पढ़ लें। बजट के अंदर केवल राशि की व्यवस्था की जाती है जब माननीय मुख्यमंत्री जी ने घोषणा कर दी कि हम 3100 रूपये में धान खरीदेंगे और 3100 रूपये में 21 क्विंटल खरीदेंगे तो फिर इसमें क्या बचा ?

श्री उमेश पटेल :- माननीय राजेश मूणत भईया आप मंत्री रहे हैं।

श्री राजेश मूणत  :- आप जो कह रहे हैं आपको मालूम होगा कि अनुपूरक अनुमान में कहीं नहीं लिखा जाता है केवल राशि की व्यवस्था की जाती है कि इसमें इतने फण्ड की व्यवस्था की गई है। यह बजट में कहीं नहीं लिखा जाता । आप इसे पढ़ लें।

श्री उमेश पटेल :- माननीय राजेश मूणत भईया आप मंत्री रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव  :- अभी ले डबल इंजन के धुंआ निकले ला लग गे हे।

श्री उमेश पटेल :- माननीय राजेश मूणत भईया, आप बहुत अच्छे से जानते हैं। इसमें 3800 का प्रावधान है । आप बजट में प्रावधान देख लीजिए।

श्री राजेश मूणत  :- आप बजट को पहले पढ़ लीजिए। आपने तो कई आयटम में 1-1 रूपया रखा है। इसके पहले बजट में कई आयटम में 100 रूपये रखे हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री उमेश पटेल :- मैं आपको कैल्कुलेट करके बता देता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपकी सरकार थी। मैं आपका नाम नहीं लेता हूँ। जब भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी तो वर्ष 2016-17 में 57 हजार मेट्रिक टन धान की खरीदी हुई थी। अगर हम उसी को औसत मानते हैं तो 57 हजार मेट्रिक टन धान की खरीदी में 300 रूपये का बोनस देने जाएंगे तो आपका 17 हजार करोड़ रूपये होता है। यह 17 हजार करोड़ रूपये हुआ। अगर आप दो साल का बोनस देने गये तो यहीं 34 हजार करोड़ रूपये खत्म हो जाता है। यहीं 3 हजार 800 करोड़ रूपये खत्म हो गए।

श्री अमर अग्रवाल :- आप थोड़ा ठीक से कैल्कुलेशन कर लीजिए। 57 हजार मेट्रिक टन में 300 रूपये के हिसाब से 1700 करोड़ रूपये आएगा।

श्री उमेश पटेल :- मैं माफी चाहूंगा। मैंने 57 हजार मेट्रिक टन बोल दिया था। वह 57 लाख मेट्रिक टन हुआ था। अब वह समझ रहे हैं।

श्री अमर अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप 300 रूपये के हिसाब से कैल्कुलेट कर लीजिए तो 17 हजार करोड़ रूपये नहीं आता है।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी भी गलत बोल रहे हैं। वह 57 लाख मेट्रिक टन नहीं है। पिछले सत्र में एक लाख मेट्रिक टन लिए।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी मंत्री बनने हैं। वित्त का हिसाब किसको आना है इधर आना है या उधर आना है यह माननीय मुख्यमंत्री जी तय करते रहे तो ज्यादा बेहतर होगा।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी तक सोसायटियों में 21 क्विंटल में धान खरीदी और 3100 रूपये में धान खरीदी का आदेश नहीं है। आपने कहा कि हमने घोषणा कर दी है, लेकिन सोसायटी में यह खरीदी अभी चालू हुई ही नहीं है।

समय :
12.00 बजे

आपने एकमुश्त पैसा देने की बात कही थी, वह हुआ ही नहीं। अध्यक्ष महोदय, इससे बड़ी बात माननीय उप-मुख्यमंत्री जी का भाषण वायरल हो रहा है, 2 लाख रुपये का हर किसान का कर्ज माफ करेंगे। अगर वह गलत है, वह सही नहीं है तो उसकी जांच करा दीजिए, लेकिन यह वायरल हो रहा है। पेपर में विज्ञापन आया है। कई-कई लोगों के घोषणा पत्र में यह आया है कि- "भाजपा का कहना साफ, हर किसान का कर्जा माफ।" यह कई लोगों ने अपने घोषणा पत्र में इसको कहा है। जब बात आ गई कर्जमाफी की।

श्री धर्मजीत सिंह :- कोई नहीं बोल रहा है।

श्री उमेश पटेल :- अगर आप चाहेंगे तो मैं प्रस्तुत कर दूंगा।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, लेकिन यह राशि कर्ज माफी की राशि से ज्यादा राशि है, कर्ज माफी से किसानों को ज्यादा लाभ होगा।

श्री संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, कर्जमाफी का वीडियो वायरल हुआ है। और हमारे पास ये सबूत भी है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जब बात कर्ज माफी करने की  आती है।

श्री धर्मजीत सिंह :- उमेश पटेल जी, अपने क्या कहा, क्या किया, नहीं किया, ज्यादा मत बोलिये। आप लोग ही गंगा जल उठाकर कसम खाये थे कि शराबबंदी करेंगे, क्या 05 साल में शराबबंदी किया? .. (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- गंगाजल की कसम आप लोग खाये थे।

श्री राजेश मूणत :- इसीलिए 17 तारीख को जनता ने गंगा जल का सदुपयोग करके आखिरी दिन की विदाई कर दी।

श्री उमेश पटेल :- धर्मजीत भैया, हम लोग इधर आ गये हैं। अगर इधर आ गये हैं तो हमारी यह भूमिका है कि हम इस सदन में आपकी कमजोरी को उजागर करें।

श्री धर्मजीत सिंह :- यह तो बहुत अच्छी बात है। आपसे बहुत ज्यादा उम्मीद है। आप बहुत पढ़-लिखे अनुभवी भी हैं, बहुत अच्छे परिवार के हैं। लेकिन यह कह रहे हैं कि आप 3800 से आगे बढ़िये, किसी दूसरे विषय में आईये। और दूसरी कमियों, खामियों की ओर अगर आप ध्यान आकृष्ट करेंगे तो ज्यादा बेहतर होगा।

श्री उमेश पटेल :- धर्मजीत भैया, आप मेरे को 5 मिनट बोलने दीजिए, आपके कितने लोग टोका-टाकी कर रहे हैं, आप देख लीजिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- हम तो सुन ही रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- उमेश जी, एक मिनट। मेरा सम्माननीय सदस्यों से आग्रह है कि अनावश्यक हस्तक्षेप न करें। दूसरा विषय सीधी बातचीत न करें, आसंदी को देखकर ही अपनी बात रखें। जो कहना है, आसंदी को देखकर अपनी बात कहें। जिस प्रकार की एक दूसरे से चर्चा हो रही है, यह उचित नहीं है। उमेश जी।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका आदेश है, मैं सीधे आपकी तरफ देखकर ही अपनी बात कहूंगा, अब मैं अपनी positon भी बदल दिया हूं।

अध्यक्ष महोदय :- आप इधर देखेंगे, समस्या का समाधान हो जायेगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आज वह भगवा position में हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप खड़े हैं, वहां तक भी ठीक है। अजय चन्द्राकर जी तो थोड़ा बाहर निकल भी खड़े हो जाते थे। आप भी चाहें तो थोड़ा बाहर आ जायें।



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 2 लाख किसानों का कर्ज माफ, 21 क्विंटल में धान खरीदी सिर्फ इसका आदेश हुआ है और साथ ही साथ लिमिट कर दिये हैं, 3100 रुपये में एकमुश्त धान खरीदी करने के लिए कहना और अभी तक आदेश जारी नहीं करना, कर्ज माफी नहीं करना। नारायणपुर के एक किसान द्वारा कर्जमाफी नहीं होने के कारण आत्महत्या कर लेना। यह सारा चीज बताता है कि यह सरकार किसानों के साथ यहां छल करने के लिए आई है। यह किसानों को गुमराह करके इस जगह पर बैठी है। किसानों को साथ जो माननीय भूपेश बघेल जी दे रहे थे, आज वह याद कर रहे हैं। हम सोसायटी में जाते हैं तो किसान कहते हैं कि कका कैसे चल दिहिस, हमू मन ला नई समझ में आत हे। कका हमर बर बने रहिस। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बात किसान कह रहे हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस विषय को लेकर आगे बढ़ता हूं। लेकिन आपसे सिर्फ इतना ही आग्रह है कि आप किसानों के साथ धोखा देना बंद करें।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप लोग 4 किश्त में पेमेंट करत रहेव, अभी तक तुमन चौथी किश्त नई देय हव। धोखा कौन करे हे, तुमन मन ला 15 दिन इंतजार नई हे। 15 दिन के इंतजार तो करो।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप देख लीजिए किस तरह से बातें हो रही हैं। आप 3 बार मुख्यमंत्री रहे हैं, क्या विपक्ष चौथी किश्त दे सकता है? इतने बड़े-बड़े मंत्री रहे हैं कि चौथी किश्त आप नहीं नहीं दिये, क्या अब विपक्ष देगा? अध्यक्ष महोदय, आप बताईये, आप स्वयं इतने अनुभवी रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- ये मन भारी कानून के बात करथे।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आप लोग पहले दे देते तो इधर नहीं आते।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने चुनाव के पहले तीसरा किश्त दिया। हमने किसानों के साथ में धोखा नहीं किया। आज आप जाईये किसानों से बात करके देखिये तब आपको समझ में आएगा कि किसानों की क्या स्थिति है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इनकी flagship project, जो इनका मानना है कि उस प्रोजेक्ट के कारण और उस प्रचार के कारण इनकी सरकार आई है और कहीं न कहीं हम लोग भी इस बात को मानते हैं कि महतारी वंदन योजना की इन्होंने जो फार्म भरवाया, उसके कारण कहीं न कहीं इनको बढ़त मिली। इन्होंने महतारी वंदन योजना के लिए कितने करोड़ का प्रावधान किया है। इन्होंने इस योजना के लिए 1200 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। अगर मैं ऐसा मान रहा हूं कि यह अनुपूरक बजट दिसंबर, जनवरी, फरवरी, मार्च तक के लिए है और अगर चार महीने के लिए 1200 करोड़ रूपये को divide करेंगे तो यह एक महीने के लिए 300 करोड़ होता है। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी जनसंख्या तीन करोड़ के आसपास है। हमारी आधी जनसंख्या डेढ़ करोड़ के आसपास हो गई। 1 से लेकर 20 साल तक का मैं मान लेता हूं कि अविवाहित होंगे और 21 साल से 60 साल तक को मैं मानता हूं कि विवाहित होंगे।

इसको 1:3 में अनुपात निकालिये। आप 1:3 में डेढ़ करोड़ को divide करेंगे तो 1 करोड़ विवाहित होंगे और 50 लाख अविवाहित होंगे। अध्यक्ष महोदय, आप इस calculation से चलेंगे तो इनको 1 करोड़ विवाहित महिलाओं को हर महीने 1000 रूपये देना होगा, जोकि इनका वादा था। लेकिन ये 1 महीने में 300 करोड़ रूपये दे रहे हैं। अगर इसको 1000 रूपये से डिवाईड करेंगे तो सिर्फ 30 लाख महिलाओं को महतारी वंदन योजना के तहत 1000 रूपये का लाभ मिलने वाला है। यह लोग 70 लाख महिलाओं के साथ में लोग धोखा करने वाले हैं। (मेजों की थपथपाहट) यह लोग 1/3 महिलाओं को देने वाले नहीं है। सिर्फ 30 लाख महिला को देना चाहते हैं। इस अनुपूरक से यह साफ है, इस अनुपूरक से यह समझ में आ रहा है कि सिर्फ 1/3 महिलाओं को लाभ मिलेगा। flagship project, जिस फार्म को आपने भरवाया। हमने समाचार पत्रों के माध्यम से पढ़ा कि भारतीय जनता पार्टी की ऑफिस में में 60 लाख फार्म अभी भी जमा है। 60 लाख फार्म इन्होंने खुद भरवाया है और सिर्फ 30 लाख महिलाओं को देने की बात कर रहे हैं। आपने जो फार्म भरवाया है, उसमें से 30 लाख महिलाओं को ठगने जा रहे हैं। आपने किसानों को ठगा है और अब आप माताओं को ठगने का काम कर रहे हैं। यह आप लोगों का दोहरा चरित्र है। आप जो ठगने का काम करते हैं। आपने 15 साल भी ठगा और अब आप इस 5 साल में भी ठगेंगे।

श्री अनुज शर्मा :- नाव काकर हे तेला सबो झन जानथे।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा एक प्वाइंट ऑफ आर्डर है।

श्री रामकुमार यादव :- जर्सी गाय देबो कहे रहा, उहू ला ओ दारी नइ देहे रहा। ओ सबके हिसाब ला मैं हर करिहौं।

श्री उमेश पटेल :- चंद्राकर जी, आपको अनुमति नहीं मिली है।

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट, मैंने प्वाइंट ऑफ आर्डर लिया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, इस विधान सभा में थोड़ी स्थिति दूसरी है। आप यहां 15 साल थे तो उधर आपकी सरकार, आपकी सरकार कहते थे या कोई आक्षेप लगाते थे। आप आसंदी में हैं। अभी दो-तीन बार नाम लेते-लेते हो गया कि आपके 15 साल, आपके 15 साल, इसके 15 साल, इसके 15 साल तो पहले मुझे यह जानना है कि कोई आपके 15 साल का उल्लेख करेंगे तो आसंदी पर आक्षेप माना जाएगा या नहीं माना जाएगा? दूसरी बात, ऐसे ही नेता प्रतिपक्ष जी उधर चल दिये हैं। जो आसंदी में थे, वह नेता प्रतिपक्ष बन गए हैं। अब यदि हम उनके लिये गये निर्णय का, जैसे वह नियम-परंपराओं का उदाहरण दे रहे हैं। मैं एक छोटा सा उदाहरण दे देता हूं, जो कभी नहीं घटा। आरक्षण के विधेयक पर विधेयक पारित नहीं हुआ था और नीचे शासकीय संकल्प आ गया था कि इसको 9वीं अनुसूची में जोड़ा जाए। ऐसा कभी नहीं हुआ था कि विधेयक पारित नहीं हुआ है और उसका शासकीय संकल्प पारित हो जाए, पर वह भूपेश जी की सरकार ने लाया था। माननीय अध्यक्ष महोदय, हमने आपत्ति ली, उन्होंने नहीं माना और उसको स्वीकार किया। उसमें बहस

करवाई। ऐसी नियम-परंपरा का जब वह उल्लेख करेंगे और हम उदाहरण देंगे तो आसंदी के खिलाफ माना जाएगा या नहीं माना जाएगा?

श्री कवासी लखमा :- 12000 रूपये का बात हो रहा था। नेता प्रतिपक्ष जी 15 साल का बोल रहे हैं। 12000 पर बात हो रहा था।

श्री अजय चंद्राकर :- दादी, अक्ल की बात है। अक्ल की बात है। थोड़ा बैठिये।

श्री कवासी लखमा :- 12000 रूपये का बात हो रहा था, आप 15 साल का बोल रहे हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह आसंदी के विपरीत माना जायेगा कि नहीं माना जायेगा ? इस हाऊस में कभी भी ऐसी परिस्थितियां उपस्थित नहीं हुई हैं क्योंकि अभी वक्तागण लगातार बोलेंगे तो इसको हम तो यानी आपके लिये बोलेंगे तो फिर व्यक्तिगत तौर पर यह आसंदी पर आक्षेप माना जायेगा इसलिये आपकी व्यवस्था इसमें आनी चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय :- बिल्कुल ।

श्री भूपेश बघेल (पाटन) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय अजय जी ने कुछ बातें उठायीं कि जो सदन के अध्यक्ष थे, वे नेता प्रतिपक्ष हो गये हैं । यह पहली बार नहीं हुआ है । माननीय धरमलाल कौशिक जी भी पहले विधानसभा अध्यक्ष थे फिर बाद में नेता प्रतिपक्ष बने । दूसरी बात, बहुत कम उदाहरण हैं कि जो मुख्यमंत्री रहे वे आसंदी में बैठे । पूरे देश में ऐसे इक्के-दुक्के ही उदाहरण होंगे । हमारे प्रदेश में पहली बार हुआ है कि जो मुख्यमंत्री थे वे विधानसभा अध्यक्ष चुने गये । अब आपने आपत्ति ली, व्यवस्था का प्रश्न उठाया कि आपकी 15 साल की सरकार । माननीय अध्यक्ष महोदय, जब आप अध्यक्ष की आसंदी पर बैठे तो मैंने आपके स्वागत भाषण में जो बात कही कि अब आप वहां बैठ गये हैं तो पहले तो हम लोग बहुत लड़ते थे, आरोप-प्रत्यारोप लगाते थे लेकिन अब चूंकि आप वहां विराज चुके हैं तो इसलिये अब आपके ऊपर आरोप नहीं लगा सकते हैं । उमेश जी ने जो कहा कि आपकी 15 साल की सरकार तो वह आसंदी के लिये नहीं है, वह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है । अब उस समय रमन सरकार कहते थे लेकिन रमन सरकार कहने का मतलब यह नहीं है कि हम आसंदी पर आक्षेप लगा रहे हैं । पिछले 15 सालों का जो कार्यकाल है उसके बारे में चर्चा हो रही है । आसंदी में बैठे हुए अध्यक्ष के ऊपर कोई आक्षेप नहीं है ।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप उमेश जी का भाषण निकलवाकर देख लीजिये कि उन्होंने सुधारा है । मैं उसमें नहीं जाता । चूंकि यह बात आयी कि आपकी सरकार तो उससे पहले उन्होंने कहा । आज ही के भाषण में उन्होंने रमन सरकार कहा फिर उन्होंने सुधारा भी लेकिन यह व्यवस्था स्थायी तौर पर आ जानी चाहिए, चूंकि आज उन्होंने सुधार लिया फिर रामकुमार जी जैसे लोग बोलें तो धाराप्रवाह बोल देंगे इसलिये इसमें व्यवस्था आनी चाहिए ।

अध्यक्ष महोदय :- अजय जी, आपने पाईंट ऑफ ऑर्डर उठाया । मैं इसकी व्यवस्था दूंगा ।



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री रामकुमार यादव :- आपमन भी ऐती रहे हओ न, इंहा तो अपशब्द के उपयोग कर दे रहेओ । हमन नइ पढ़े हन तभो ले ओ शब्द के उपयोग नइ करन ।

अध्यक्ष महोदय :- यादव जी, बैठिये । हो गया । अब आगे बढ़िये । आप और कितना समय लेंगे ?

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपका आदेश होगा तो मैं अभी बैठ जाता हूं । आप जब तक आदेश करेंगे मैं बोलता रहूंगा ।

अध्यक्ष महोदय :- नहीं-नहीं । आप प्रथम वक्ता हैं, अभी बोल रहे हैं लेकिन कितना समय लेंगे ?

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आप जब तक चाहेंगे ।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये ।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय अजय चंद्राकर जी ने आप की बात कही । आपसे मेरा उद्देश्य आपसे नहीं बल्कि आपसे कहने का मतलब भारतीय जनता पार्टी की सरकार और आसंदी पर कभी भी आक्षेप लगाने का हमारा कोई उद्देश्य नहीं रहा मतलब गलतियां हो सकती हैं, त्रुटियां हो सकती हैं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं महतारी वंदन योजना के बारे में बात कर रहा था । बार-बार टोका-टाकी हो रही है । ये लोग मध्यप्रदेश की लाडली बहन योजना से महतारी वंदन योजना लगाये हैं । लाडली बहन योजना में भी अगर आप पात्रता को देखेंगे तो आपको समझ में आयेगा कि लाडली बहन योजना में भी इतने क्राईटेरिया हैं, इतने क्राईटेरिया हैं कि मुझे डाउट है कि यह जो 30 लाख महिलाओं को भी मिलना है वह भी घटकर 20 लाख महिलाओं तक अटक जायेगा । यह हमारी शंका है। अध्यक्ष महोदय, इन्होंने प्रधानमंत्री आवास पर बजट एलोकेट किया । आपको बधाई कि आपने उसके लिये बहुत अच्छा बजट एलोकेट किया लेकिन मैं आपको बताना चाहूंगा कि यह जो आर्थिक सर्वेक्षण हुआ है यह वर्ष 2011 का आर्थिक सर्वेक्षण है और यह जो वर्ष 2011 का जो आर्थिक सर्वेक्षण है उस बीच हमने कोरोना की बड़ी महामारी को झेला है । कई लोगों की नौकरियां गयी हैं । कई लोग जो पहले अच्छी परिस्थिति में थे, वे अब गरीब परिस्थिति में आ गये हैं और ऐसा भी हो सकता है कि जिनकी परिस्थिति गरीब रही होगी वे आज काफी अच्छी पोजिशन में चले गये होंगे क्योंकि समय तो बहुत लंबा हो गया है इसीलिये माननीय भूपेश बघेल जी ने मुख्यमंत्री रहते हुए इस बात को कहा था कि आर्थिक सर्वेक्षण कराना अनिवार्य है, आज की परिस्थिति में हमें आवास देना अनिवार्य है । हो सकता है हमें एकाध लाख और आवास देने की आवश्यकता पड़े । माननीय मुख्यमंत्री जी, आप इसके लिये भी तैयारी करिये । हम उसके लिये भी तैयार हैं । आप आगे बढ़िये । हम आपका सहयोग करेंगे ।

श्री राजेश मूणत :- आप कम से कम धन्यवाद तो दे दीजिये ।

श्री उमेश पटेल :- भैया, कर तो दिया । मैंने तो बधाई दे दी ।

श्री राजेश मूणत :- उमेश भाई आप अच्छे से बोलो न ।

श्री उमेश पटेल :- आपको बधाई दी । अब इससे ज्यादा आपको और क्या चाहिए ? माननीय अध्यक्ष महोदय, अजय चंद्राकर जी पिछले सत्र में थे और बेरोजगारी भत्ता की जब हम लोग योजना लेकर आये थे कि शिक्षित बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता देना है । तब अजय चंद्राकर जी, बृजमोहन जी, कौशिक जी, हमारे पुन्नूलाल जी, ये लोग खड़े होकर एक ही बात करते थे, 18 लाख बेरोजगारों को भत्ता कब दोगे? अजय जी, यहां पर बैठते थे, पूरा डेस्क हिल जाता था, इतनी जोर से चिल्लाते थे। कभी गिर जाते थे, इतनी जोर से चिल्लाते थे कि 18 लाख बेरोजगारों को कब भत्ता दोगे?

श्री अजय चन्द्राकर :- 18 लाख 8 हजार 195 (हंसी)

श्री उमेश पटेल :- देखिए, अब इन्हें भी याद है। इन्होंने इतनी बार बोला है कि इन्हें भी याद है। और सिर्फ ये नहीं ये पूरे लोग अपने क्षेत्र में जाकर यही बोलते थे माननीय भूपेश बघेल जी ने बेरोजगारी भत्ता देने की बात से ठगा है। ये बेरोजगारी भत्ता दे नहीं रहे हैं। क्राइटेरिया बनाये हैं और हमने जो क्राइटेरिया बनाया, उसके आधार पर लोगों को दिया। आप बजट प्रावधान देखिए। आज पिछले बजट की कॉपी निकलवा लीजिए, उसमें हमने 250 करोड़ रूपये का प्रावधान किया था और अभी इन्होंने कितना प्रावधान किया है, 250 करोड़। सेम। बजट प्रावधान उतना ही है। अजय जी, 18 लाख कहां गया? कौशिक जी, 18 लाख कहां गया? कहां गया 18 लाख पुन्नूलाल जी?

श्री सुशांत शुक्ला (बेलतरा) :- उमेश भाई, सर्वे में तो आप भी कहते थे कि प्रदेश में बेरोजगारी दर 1 प्रतिशत है।

श्री धरमलाल कौशिक :- उमेश जी, एक मिनट।

श्री उमेश पटेल :- आप लोग चिल्लाते थे 18 लाख, 18 लाख, 18 लाख और पूरे क्षेत्र में जाकर चिल्लाते थे। ये है इनका असली चरित्र। (मेजों की थपथपाहट) ये है आपका दोहरा चरित्र।

श्री सुशांत शुक्ला :- उमेश जी, मीडिया महिमा-मंडित करवाती थी आपकी सरकार कि एक प्रतिशत के नीचे बेरोजगारी है। फिर आप क्यों 18 लाख निकाल रहे हैं? मीडिया आडंबर करके आप 1 प्रतिशत से कम बेरोजगारी दर बताते थे, फिर आप 18 लाख का महिमा-मंडल क्यों कर रहे हैं?

श्री उमेश पटेल :- सदन में कहीं और क्षेत्र में कुछ बात। जब आप सत्ता में आते हैं अजय जी, आप वही बात करने लगते हैं, जिसका विरोध करके आप सत्ता में आये हैं। ये है इनका दोहरा चरित्र।

श्री धरमलाल कौशिक :- आधा मिनट। जो आप 18 लाख की बात कर रहे हैं न, आपने 18 लाख की घोषणा नहीं की थी, 10 लाख की थी। आप रिकॉर्ड को पलटकर देख लेंगे कि आपने 10 लाख की बात कही थी। पता नहीं, क्यों आज आपके मुंह से 18 लाख की बात निकल रही है? और वह भी कब पौने 5 साल में। तो युवाओं ने देख लिया, बेरोजगारों ने देख लिया कि साढ़े 4 साल, पौने 5 साल ठगने

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

का काम किया है और पौने 5 साल के बाद में 6 महीने के लिए किया, और उसमें भी नहीं दे पाये तो उसी का यह परिणाम है।

श्री उमेश पटेल :- देखिए, अध्यक्ष महोदय, यही अपनी बात और मेरी बात को प्रूव करते जा रहे हैं। एक बार वो रिकेश जी बोलते हैं, वो मेरी बात को प्रूव करते हैं । राजेश भैया प्रूव कर देते हैं । जब हम लोगों ने इस योजना को लाया था, अभी तक उन्हें आंकड़ा याद है। इतना याद है कि अभी मैंने जैसे ही बोला, उन्होंने फट से सौवें अंक को भी बोलना शुरू कर दिया।

श्री अजय चन्द्राकर :- बहुत सारी बातें याद हैं।

अध्यक्ष महोदय :- उमेश जी, आपके 25 मिनट पूरे हो चुके हैं। कृपया, 5 मिनट में समाप्त करें।

श्री उमेश पटेल :- जी-जी। अध्यक्ष महोदय, तो ये इनका दोहरा चरित्र है। माननीय मुख्यमंत्री जी, आपके अलग-अलग लोगों के द्वारा अलग-अलग बयान टी.वी. में जारी हो रहे हैं। आपके उप मुख्यमंत्री जी अलग बयान देते हैं, आपके विधायक अलग बयान देते हैं। कोई कहता है कि हम बिजली बिल हाफ की योजना बंद कर देंगे। मैं ये नहीं कह रहा हूं कि अभी आप क्या कर रहे हैं? क्योंकि आपने सदन में कुछ कहा नहीं है। कहीं कोई आदेश जारी नहीं हुआ है, लेकिन अलग-अलग बयान आपके विधायकों से, आपके मंत्रिमंडल के सदस्यों के द्वारा आ रहे हैं। आप इसे स्पष्ट करिए कि बिजली बिल हाफ योजना को आप बंद कर रहे हैं या उसे चालू रख रहे हैं? और अगर बंद कर रहे हैं तो मैं यही कहूंगा कि इससे 44 लाख परिवारों को फायदा हो रहा था। महंगाई जो हमारे सिर चढ़कर बोल रहा है, महंगाई का वादा जो वर्ष 2014 में मोदी जी ने किया था कि हम महंगाई 100 दिन में कंट्रोल करेंगे, उसे माननीय भूपेश बघेल जी ने बिजली बिल हाफ योजना लगाकर कंट्रोल करने का काम किया। इस योजना को बंद करने की अगर आप सोच भी रहे हैं तो आप इस बात को स्पष्ट करिए कि आपके सदस्य बाहर में जो बोल रहे हैं, वह सही है या गलत है, आप इस योजना को जारी रखना चाहते हैं या नहीं रखना चाहते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी बात को समझ रहा हूं। मैं बहुत जल्दी खत्म करता हूं। अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी, आप मेरे सांसद रहे हैं, 4 बार के सांसद रहे हैं। आप एक सक्षम व्यक्ति हैं। आपमें इस प्रदेश को चलाने की वो सारी सक्षमता है, आप सांसद रहे हैं, इसलिए आपको करीब से जानता हूं । लेकिन परिदृश्य यह बन रहा है कि आप कहीं और से चल रहे हैं, आप ऐसा मत होने दीजिए । यह जनादेश छत्तीसगढ़िया नेतृत्व के लिए मिला है । आप नेतृत्व कीजिए, आपमें वह सारी क्षमताएं हैं । आप निर्णय लीजिए कि कौन मंत्री रहेगा, कौन नहीं रहेगा और आपके साथ पूरा विपक्ष खड़ा रहेगा (मेजो की थपथपाहट) । आप किसी और के निर्णय से मत चलिए, आप स्वयं निर्णय लीजिए ।

श्री धर्मजीत सिंह :- भैय्या, आप लोगों को छींक भी आती थी तो दस जनपथ से पूछकर छींकते थे (हंसी)। इधर आप कुछ भी बोल रहे हो ।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह :- सिर्फ दस जनपथ नहीं, सागौन बंगले से भी आती थी छींक ।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री द्वारिकाधीश यादव :- अजय चंद्राकर जी, हमारे भांचा जी ने इसी सदन में कहा था कि भांचा और भांची मन स्कूल गे रिहिस तेकर सेती देरी हो गे । अउ अभी का के सेती अतका देरी होवत हे ?

श्री उमेश पटेल :- माननीय मुख्यमंत्री जी, आपमें वह सक्षमता है । हम लोग आपको जानते हैं आपमें लीडरशिप क्वालिटी है, आप कर सकते हैं । विपक्ष और हम सब लोग आपका सहयोग करेंगे । अध्यक्ष महोदय, मैं रायगढ़ से सड़क के रास्ते आ रहा था तो बड़े बड़े पोस्टर लगे हुए थे, कहीं माननीय मुख्यमंत्री जी का पोस्टर लगा है, कहीं उप-मुख्यमंत्रियों का लगा है और बृजमोहन भइया का तो अलग ही लगा है, बाहुबली । बड़े बड़े पोस्टर लगे हुए हैं । अध्यक्ष महोदय, एक जगह मैंने पढ़ा कि भगवा सरकार । अध्यक्ष महोदय, इनकी हरकतें अभी से दिखनी शुरू हो गई । जो ये किसानों के साथ कर रहे हैं, जो महिलाओं के साथ कर रहे हैं, जो बेरोजगारों के भत्ते के साथ कर रहे हैं, बिजली बिल के साथ करने जा रहे हैं । मैं एक ही बात कहूंगा कि यह भगवा सरकार नहीं, ठगवा सरकार बनने जा रही है, ठगवा (मेजो की थपथपाहट)। यह ठगवा सरकार बनने जा रही है, जिस तरह से आपने ।

श्री श्यामबिहारी जायसवाल :- यह ठगवा सरकार नहीं, पहले ठगेश था ।

श्री उमेश पटेल :- माननीय मुख्यमंत्री जी...।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह बताओ कि आप भगवा कपड़ा पहनकर क्यों आए हो ?

श्री उमेश पटेल :- बृजमोहन जी, भगवा रंग हमारे लिए बहुत मान्यतापूर्ण है । भगवा रंग को हम मानते हैं और हम तो यह कहते हैं कि आप जैसे ठगवा लोगों को भगवा कलर का साथ नहीं लेना चाहिए । आपको इससे प्रतिबंधित कर देना चाहिए ।

श्रीमती भावना बोहरा :- भगवा रंग माननीय है तो भगवा ध्वज का अपमान क्यों हुआ था यह बताइए । क्या एक्शन लिया था आपने ?

श्री उमेश पटेल :- मेरे आराध्य हैं प्रभु श्रीराम, मुझे कोई दिक्कत नहीं है ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय, पहले दिन ही सत्र लगा और ।

श्री धर्मजीत सिंह :- भगवा से जो टकराएगा चूर-चूर हो जाएगा, देख लिया ना (मेजो की थपथपाहट) ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सरकार बनी, कल शपथ ग्रहण हुआ ।

श्री धर्मजीत सिंह :- कल नंदकुमार साय जी ने भी आपको छोड़ दिया है । बहुत बड़ा बोफोर्स तोप लेकर गए थे आप (हंसी) ।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- पहले आप लोगों को छोड़कर यहां आए थे ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- उसके बाद एक निवेदन आया कि विदेश यात्रा कराई जाए । मैं कहती हूं कि भगवा सरकार है तो सबसे पहले तो यह नियम पास होना चाहिए कि चारों धाम की यात्रा कराई जाए ।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- संगीता जी, मैंने केवल विदेश भेजने के लिए नहीं कहा था, मैंने यह भी कहा था कि हिंदुस्तान के अन्य प्रांतों में पहले ले जाइए और बाद में विदेश भी भेजिए । आपको नहीं जाना होगा तो आप अपना नाम मत दीजिएगा । हम तो चाहते थे कि आप विदेश जाएं ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सबसे पहले तो राम मंदिर ले जाना चाहिए, हम लोगों को ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सरकार की योजना बनी हुई है कि भक्तों को राम मंदिर ले जाएंगे । आपको उसमें प्राथमिकता के आधार पर ए.सी. बर्थ में बैठाकर ले जाएंगे।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- संगीता हमारे साथ चलना ।

श्री उमेश पटेल :- बैठ जा बबा ।

श्री राजेश मूणत :- उमेश भाई, 2004 में पहली बार रविन्द्र चौबे नेता प्रतिपक्ष थे । हम सब लोग गए थे ।

श्री उमेश पटेल :- 2004 नहीं, 2008 में ।

श्री राजेश मूणत :- 2004 में में माउंट आबू गए थे । पूरे परिवार के साथ गए थे उसके बाद कांग्रेस पार्टी में प्रतिबंध लगा दिया कि कोई नहीं जाएगा ।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस तरह से इनका चल रहा है, मैं एक बार फिर से रिपीट करूंगा, यह ठगवा सरकार है। यह ठगवा सरकार है और जो विश्वास अर्जित......।

श्री राजेश मूणत :- यह भगवा सरकार है, ठगवा नहीं। भगवा सरकार है।

(भारतीय जनता पार्टी के सदस्यों द्वारा नारे लगाये गए)

श्री उमेश पटेल :- ठगवा सरकार, ठगवा सरकार। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- यह ठगवा सरकार है। (व्यवधान)

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- यह ठगवा सरकार है। (व्यवधान)

श्री राजेश मूणत :- यह ठगवा सरकार नहीं है, यह महादेव एप की सरकार नहीं है, आप चिंता मर करिए। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- नॉन घोटाले की सरकार है। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- यह ठगवा सरकार है। अध्यक्ष महोदय, यह ठगवा सरकार बनेगी। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, सिर्फ ठगने का काम किया है। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- यह ठगवा सरकार है। (व्यवधान)

श्री सुशांत शुक्ला :- दत्तात्रेय गोत्रों को मारने वाले फर्जी लोग भगवा की बात ना करें। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- बैठिए-बैठिए, साहू जी बैठिए। चलिए उमेश जी, समाप्त करिए, 40 मिनट हो गए हैं।



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री उमेश पटेल :- जी-जी, मैं समाप्त कर रहा हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, जो शुरूआत हुई है, माननीय भूपेश बघेल जी ने जिस तरह से किसानों का एक विश्वास अर्जित किया था, उसके विपरीत यह सरकार जाने की कोशिश कर रही है और विश्वास बहुत जल्दी खो जाएगी। इसके लिए मैं एक बार फिर माननीय विष्णुदेव साय जी से निवेदन करता हूं कि आपने जो वादा किया था, उसको आप निभाईए और छत्तीसगढ़ की भलाई के लिए काम करिए और स्वयं सक्षम होकर फैसला लीजिए, हम आपका साथ देंगे। धन्यवाद, जय हिंद।

श्री अजय चंद्राकर (कुरूद) :- माननीय उमेश जी, सफाई से बोलना सीख गये भतीजे।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरण दास महंत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय चंद्राकर जी को माननीय अध्यक्ष कहकर संबोधित करना चाहिए, माननीय उमेश जी कहकर खड़े हो रहे हैं, यह उचित नहीं है। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 2001 में जब यह सरकार बनी, छत्तीसगढ़ बनी, तब से यह बजट आ रहा है। अभी जो पहला अनुपूरक आया है, उसकी आलोचना में कोशिश कर रहे थे कि कुछ आलोचना कर लें, बात जमीं नहीं, लेकिन उनके पांच साल के और एक अनुपूरक बजट, यह दूसरा अनुपूरक है, इन दोनों में एक बेसिक अंतर है, यह बजट मोदी जी की गारंटी का बजट है। (मेजों की थपथपाहट) और वह बजट ए.टी.एम. का बजट होता था, यह कोशिश होती थी कि भेजने के लिए कहां से पैसा निकल सकता है, इस बजट से यह परिलक्षित होता है कि जनता की सेवा के लिए, आम गरीब के लिए, आम लोगों के लिए कैसे अधिक से अधिक राशि निकाली जा सकती है। (मेजों की थपथपाहट) जो लोग अपने आपको गरीब का सेवक, किसान का सेवक कहते थे, कई प्रकार की न्याय योजना की बात करते थे, वह न्याय योजना किसानों तक नहीं पहुंची, वह न्याय योजना गरीबों तक नहीं पहुंची, वह न्याय योजना सिर्फ कांग्रेसियों तक पहुंची। वह न्याय योजना कांग्रेस के हाईकमान तक पहुंची और सिर्फ आठ दिन की तैयारी, जिस दिन से माननीय विष्णुदेव साय जी ने शपथ ली, उस दिन के बाद बजट की झलक देखिए, आपको समझ में आ जायेगा और मैं आपके समय के परिणाम को बता देता हूं कि आपने उसको क्या किया था ? यह आपकी प्राथमिकता में था या नहीं था। यह मैं नहीं कहूंगा, आपने जो कहा है, वही इस बात को साबित करेगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, बजट लगभग 12 हजार करोड़ का आया है और कुछ ज्यादा है। छत्तीसगढ़ का बजट दोनों अनुपूरक मिलाकर लगभग 1 लाख 40 हजार करोड़ से ऊपर जाएगा। माननीय अध्यक्ष महोदय, यह बजट और ज्यादा जाता और क्यों जाता, मैं थोड़ी देर में बताऊंगा। आप बात कर रहे थे, हमने स्वीकार किया। आप इस गणित को समझ रहे हैं? आप इंजीनियर हैं। दो साल की बोनस के लिए 38,00 करोड़ रूपये को अमरजीत जी को समझाना पड़ा। यह हमारी ईमानदारी स्वारोक्ति है कि हमें देना था और हमने नहीं दिया। (मेजों की थपथपाहट) आपको तो किसी तरह के प्रश्न उठाने का नैतिक अधिकार नहीं है। आपको अधिकार क्यों नहीं है, इसपर हम धीरे-



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

धीरे आगे बढ़ते हैं। 25 तारीख को देंगे। 25 तारीख को दो बड़े दिन होते हैं। स्वभावत: कलेण्डर से थोड़े दिन बाद बड़ा दिन शुरू हो जाएगा, पर क्रिसमस है और अटल जी का जन्मदिन है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अजय जी, मैंने भी तो वही बात कही थी, जो आप कह रहे हैं कि हमने कोशिश की। मैंने आपको वही बात कही थी। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- क्या है कि आपने कोशिश की थी। मैं कुछ आलोचना कर लूं और कुछ धर्म निभा लूं। आप विष्णुदेव साय जी की संवेदनशीलता का उदाहरण सुन लीजिए। 25 तारीख को छुट्टी नहीं रहेगी। 25 तारीख को हम 2 साल का बोनस देंगे। ये हमारी गारंटी थी, हमारी स्वीकारोक्ति है। प्रशासन ऐसे चलता है। (मेजों की थपथपाहट)

श्री उमेश पटेल :- अजय जी, क्या है कि पहले जो सरकार थी, उसमें आपने 2 साल के बोनस का एक पाप ढोया, उसके कारण से आपकी सरकार चली गयी। अभी आप चौथी किस्त न देकर दूसरा पाप ढोने वाले हैं।

श्री अजय चंद्राकर :- क्या है कि चौथी किस्त, तीसरी किस्त के लिए बजट हेड है। इसके लिए बजट हेड नहीं थे। आप महतारी वंदन योजना में प्रश्नचिन्ह लगा रहे थे। आपको क्या नैतिक अधिकार है? आप चुनकर आये हैं, क्या इसलिए आपको अधिकार है? आपने जन घोषणा पत्र को पढ़ा है? उसमें आपने महिलाओं को कितने रूपये देने की घोषणा की थी?

श्री उमेश पटेल :- 12,500 रूपये।

श्री अजय चंद्राकर :- बंधु, इसलिए कुछ भी बोलने के पहले, नेता जी चले गये, अभी उनका दिमाग ठिकाने में नहीं आया है।

श्री उमेश पटेल :- आप सरकार में आ गये हैं। आप अपनी बात कीजिए। आपने घोषणा की कि आप प्रत्येक महिला को 12,000 रूपये देंगे। आप उसके बारे में बताइये कि आप कितनी महिलाओं को दे रहे हैं?

श्री अजय चंद्राकर :- अभी आप लोगों का दिमाग ठिकाने में नहीं है। अभी आप लोग समझ ही नहीं पा रहे हैं कि हम किधर हैं, क्यों हैं और उधर कैसे चले गये। आप उधर क्यों चले गये, उसको मैं बताऊंगा। (मेजों की थपथपाहट) आप इसलिए उधर चले गये क्योंकि आपने उन माताओं से झूठ बोला कि हम आपको 500 रूपये देंगे। महतारी वंदन योजना टिकाऊ विकास के लिए और महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए आवश्यक चीज है, जिसको भारतीय जनता पार्टी ने महसूस किया। यह योजना मध्य प्रदेश में भी चल रही है, राजस्थान में भी इसकी घोषणा की गई है और हम हर विवाहित महिला को प्रतिमाह 1,000 रूपये देंगे। (मेजों की थपथपाहट) उसके लिए प्रावधान है। जब हम पूरा देंगे, जिस विषय को आप उठा रहे थे। सरकार का मुख्य बजट 25-30 दिन या 1 महीने बाद आ जाएगा। तब तक प्रशासन में बैठे लोग यह गणना कर लेंगे कि कितनी महिलाएं हैं, कितनी विवाहित हैं और कितनी क्या हैं



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

और उसके बाद उसके लायक बजट हो जाएगा। आप यह जान लीजिए कि यह हवा-हवाई नहीं है, यह मोदी जी की गारंटी है। हवा-हवाई कैसे होती है, उस पर मैं अभी बात करूंगा। (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल (डोंगरगढ़) :- मैं आपसे यह पूछना चाहती हूं कि यदि मोदी जी की गारंटी है तो जनगणना क्यों नहीं हुई है? महिलाओं के तो आंकड़े ही नहीं हैं। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- आप ए बताओ कि 15 लाख ला कब दिहौं?

श्री उमेश पटेल :- मोदी जी की गारंटी 2 करोड़ लोगों को नौकरी देने की थी, उसका क्या हुआ? विदेशी धन को वापस लाने की गारंटी थी, उसका क्या हुआ?

श्री रामकुमार यादव :- आप मन महंगाई ला भी कम कर दिहौं। (व्यवधान)

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- महिलाओं की जनसंख्या के सही आंकड़े ही नहीं हैं। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, यह मोदी जी की गारंटी की बात कर रहे हैं, लाडली योजना में पहली बेटी को भी लाभ मिलना चाहिए, लेकिन वह दूसरी बेटी के खाते में डाल दिये। क्या पहली बेटी के साथ भेदभाव किया जाएगा? क्या पहली बेटी, दूसरी बेटी होती है? जब यह मोदी जी की गारंटी की बात कर रहे हैं तो लाडली योजना का लाभ हर बेटी को मिलना चाहिए। (व्यवधान)

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, हम हर विधान सभा सत्र में प्रधानमंत्री आवास के लिए प्रश्न उठाते थे। आप प्रश्नोत्तरी निकालकर देख लीजिए कि मेरा इस पर प्रश्न होता था। माननीय मुख्यमंत्री जी ने आंकड़ों की जगलरी करके यह बताने की कोशिश की कि आप लोग 18 लाख आवास कहां से लाते हैं। भाई, बड़ा अचम्भा है! आपने घोषणा पत्र में कहा कि हम साढ़े 17 लाख मकान देंगे। आप विधान सभा में मुख्यमंत्री जी के बजट भाषण के आंकड़े निकालकर देख लीजिए कि विपक्षी दल के नेता जो आंकड़े बताते हैं, उतने तो गरीब हैं ही नहीं, तो हम बजट कहां से देंगे। मरते, गिरते, हपटते आपने अपने कार्यकाल के आखिरी साल में दो आर्थिक सर्वे करवाया। उस आर्थिक सर्वे को कोई नहीं जानता। उसको आपने ही देखा, पढ़ा और सुना और आपने 45,000 लोगों की स्वीकृति दे दी। अभी 25,000-25,000 रूपये ले लीजिए। अभी चुनाव आने वाला है, इसको बाद में देखेंगे। यह आपकी चुनाव जीतने की ट्रिक थी, उन गरीबों का उपहास और मजाक था। गरीबों का मजाक उड़ाना कांग्रेस की आदत है। आप छत्तीसगढ़ के मशीहा कहलाते हैं और मशीहा बनने की कोशिश कर रहे थे। धीरे-धीरे वह बात खुलेगी। इसके लिए आप देखिये कि स्थायी प्रतीक्षा सूची में 6 लाख 99 हजार मकान अधूरे हैं। 5 साल तक जो अधूरे किस्त पड़े हैं। जो एक किस्त या आधा किस्त मिल गया रहा होगा। 2 लाख 46 हजार मकान हैं और बाकी जिनको नये मकान स्वीकृत होने हैं, उसमें 18 लाख मकान राज्य के राज्यांश के लिए 3799 करोड़ रूपए एक साथ स्वीकृत का ऐतिहासिक निर्णय यदि किसी ने लिया तो विष्णु देव साय जी की सरकार ने लिया । (मेजों की थपथपाहट) जो छत्तीसगढ़ के निवासियों के लिए दीवा स्वप्न था, जो 5 साल तक इंतजार कर रहे थे कि कब भारतीय जनता पार्टी की सरकार आ जाये और हम अपने

आवास को बनाएं । आपने एक मकान, आवास स्वीकृत नहीं किया । वह श्राप है, जो आपको लगा है । (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष जी, गरीबों के घर में पानी जाये, यह आपको मतलब ही नहीं था । आपने तो जल जीवन मिशन योजना को कांग्रेस वालों के लिए रोजगार योजना बनाकर रखा था । केबिनेट के रेट अलग थे । एक बड़े नेता ने जाकर आपत्ति लगाई कि साहब, आपने जो रेट तय किया है और आपने सेन्ट्रलाईज़ होने की जो व्यवस्था बनाई है, उसमें तो हम लोगों को रोजगार नहीं मिलेगा और वह ठेकेदार मुख्यमंत्री जी के बगलगीर थे । मैं उनका नाम भी ले सकता हूं, लेकिन नाम लेने की परम्परा नहीं है । उन्होंने कहा कि अब जिले में टेण्डर होगा । कितनी बार कैंसिल हुआ, कितनी बार रिवाईज़ हुआ और आपकी सरकार ने इस योजना को दो साल बढ़ाने के लिए पत्र लिखा था कि साहब, हमारा दम भी फूल रहा है, हमको खाना भी है, हमको निचोना भी है और भेजना भी है और कागज में दिखाना भी है कि हम इसको पूरा कर रहे हैं। एक साथ 1230 करोड़ रूपए और इतने को मिलाकर जो 72 प्रतिशत है, वह सीधे 100 प्रतिशत पहुंचेगी और समय पर पहुंचेगी और मेरी बात इधर बैठने वाले सदस्य सुन रहे हैं । माननीय मुख्यमंत्री जी सदन में बैठे हैं, दोनों माननीय उप मुख्यमंत्री जी सदन में हैं । निश्चित समय में, निर्धारित समय में पूरी गुणवत्ता के साथ पहुंचेगी और मैं इस भाषण के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से यह कहना चाहूंगा कि इस योजना की तो सोशल आडिट होनी चाहिए (मेजों की थपथपाहट) पिछली बार सरकार ने जो किया है, सार्वजनिक शौचालय बने हैं, उसमें नल कनेक्शन लगे हैं या नहीं लगे हैं । आप मेरे साथ चलकर देखेंगे कि आपने स्कूल में नल लगवाया है या नहीं लगवाया है ? आप मेरे साथ चलकर देखेंगे कि आपने आंगनबाड़ी में नल लगवाया है या नहीं लगवाया है ? यह आपकी रोजी-रोटी का धंधा था । यह गरीबों के लिए नहीं था । यह योजना आपके लिए पैसा कमाने का इंस्ट्रूमेंट बन गया था । यह योजना ऐसी नहीं चलेगी । यह मोदी जी की गारंटी है । (मेजों की थपथपाहट) जो अभी विकसित भारत राष्ट्र रथ चल रहा है, इन सारी योजनाओं की समीक्षा की जाएगी, बताई जाएगी, समय में जाएगी और गरीबों को प्रभावित करने वाली जितनी भी योजनाएं हैं, वे पहले तालाब से पानी लाते थे, फिर बोरिंग का जमाना आया, फिर मोदी जी ने कहा कि मैं घर में पानी दूंगा, उसमें भी आपने आग लगा दी कि मैं वह पानी नहीं दूंगा, अभी तो मेरे ठेकेदार पैसा कमाएंगे ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कृषि पम्पों के लिए, नि:शुल्क बिजली के लिए 1123 करोड़ रूपए का प्रावधान है । माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ऊपर विराजमान थे । हमारी सरकार 2003 में आई, जब से भी योजना शुरू हुई होगी, 1947 से गिन लें, आप जिस दिन से गिनना चाहेंगे । जिस दिन से भी आप गिन लें, छत्तीसगढ़ में 50-55 हजार पम्प, लो वोल्टेज, 15 साल में गुणा-भाग । (श्री उमेश पटेल के सदन से बाहर जाने के पश्चात्) भतीजा कहां चले गया । हमने 15 साल में पांच लाख पम्प कनेक्शन दिए । आपके 5 साल के कार्यकाल में आपकी उपलब्धि कितनी रही ? आंकड़े पढ़ रहे थे, आज की तारीख में

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जिस दिन विधान सभा के आखिरी प्रश्न का उत्तर आया तो छत्तीसगढ़ के 1 लाख, 8 हजार किसानों को बिजली पम्प कनेक्शन देना लंबित है । कितना पैसा चाहिए । हम लोग एक लाख रूपए सब्सिडी देते थे । 1 लाख, 8 हजार कनेक्शन की सब्सिडी देने के लिए कम से कम 11 सौ करोड़ रूपए के आसपास चाहिए । आप किसानों के न्याय की बात करते हैं, किसानों के हितों की बात करते हैं । यदि छत्तीसगढ़ सुनिश्चित सिंचाई से समृद्ध होता तो आपने तो केवल धान, धान, धान। छत्तीसगढ़ में धान के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता, यह तो आपको 5 साल में समझ में नहीं आया । आप स्थाई कनेक्शन नहीं देकर किसानों को गरीब बनाने का काम कर रहे हैं । बाकी तो अपनी जगह ठीक है, इसमें पहली बार इस बजट में यह आया कि ब्याज और ऋण पटाने के लिए कोई प्रावधान नहीं किया गया है।

समय :

1.40 बजे **(सभापति महोदय (श्री धर्मजीत सिंह) पीठासीन हुए)**

ये प्रमुख हैं, मैं नीचे और जो नये मद आये हैं, को पढ़ सकता हूं। बजट पुस्तिका के आखिरी पेज में है, आप पढ़ लीजिये। अब मैं उस पर आता हूं। अब मैं माननीय मुख्यमंत्री जी की ओर ही मुखातिब होऊंगा। मैं 1 लाख 50 हजार करोड़ का बजट होता क्यों बोल रहा हूं ? हिन्दुस्तान में आजादी के बाद यह पहली सरकार है जो अपने कर में डकैती डालती है, अपने खजाने में डकैती डालती है। माननीय मुख्यमंत्री जी, मैं आपसे आग्रह करता हूं कि जब ई.डी. ने छापा मारा, जब सरकारी दुकान से प्रायवेट शराब बेचने का एक साल का 2100 करोड़ रूपया राजस्व है तो यदि पांच साल का एक साथ जोड़ दें तो छत्तीसगढ़ का 1 लाख 50 हजार करोड़ रूपये का बजट होता। आपने सरकारी दुकान से प्रायवेट शराब बिकवाई है। माननीय मुख्यमंत्री जी, मैं सारे सदस्यों और अपनी पार्टी की ओर से यह कहना चाहूंगा कि इस ई.डी. को पूरा सहयोग किया जाये। (मेजों की थपथपाहटा) छत्तीसगढ़ के खजाने में जो डकैती डाली गई है, राजनीतिक बदले की भावना से कार्रवाई मत हो, लेकिन जिन्होंने डकैती डाला है, जो नकली लोगो (LOGO) छपवाये हैं, जो नकली बाटलिंग प्लाण्ट किए हैं, वे कहां के लोग हैं ? माननीय सभापति महोदय, एक समय ऐसा था, हम लोग का मजाक उड़ाते थे,।प्रश्नकाल चलता था, हमारा कोई भी प्रश्न उनके खिलाफ जाता था तो कहते थे कि मैं इसमें एस.आई.टी. गठन की घोषणा करता हूं। हम लोग पूछते थे कि कभी कोई उलझा, 15 साल की और कोई बात आई ? भाई इसमें एस.आई.टी. क्यों नहीं बना रहे हो ? आपने कितनी एस.आई.टी. बनाई ? कितनी एस.आई.टी. ने क्या निष्कर्ष निकाला और आपने क्या किया ? मैं तो माननीय मुख्यमंत्री जी से यह आग्रह करूंगा कि इस मामले में ई.डी. परिणाम तक पहुंचे और जितनी ऐसी फर्जी एस.आई.टी. बनी है, वह एस.आई.टी. जो आपके हार के कारण बने हैं, जिसमें मैं आता हूं। आप निधन का उल्लेख में कबीरदास जी के दोहे से अपना भाषण शुरू किए। सभापति महोदय, कबीरधाम की भूमि में धनी धरमदास, कबीरधाम में पहली बार पहली बार



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कबीरपंथ का प्रचार करने पहुंचे। स्वामी करपात्री जी महाराज की कर्मभूमि, रामराज्य का ईलाका साजा तक, मिश्री भईया के भी वंशज, आज नाम ले रहा हूं, वह भी रामराज्य परिषद् में रहे हैं। माना जाता है कि स्वामी विवेकानंद जी को पहली समाधि वहीं लगी थी। जब उधर से ही कवर्धा की भूमि पर प्रवेश कर रहे थे, उस पवित्र भूमि में यदि आप भगवा ध्वज का अपमान करते हैं और दोषियों के ऊपर कार्रवाई नहीं करते हैं, तो ऐसे धर्म भूमि के लोग इस घटना को नहीं भूलेंगे। उसी से लगा हुआ साजा ईलाका है, वह बैठे हैं। एक निर्दोष मारा जाता है और अपराधी को पुलिस गिरफ्तार नहीं करती है और आज तक गिरफ्तार नहीं की है। 2 और लोग मारे जाते हैं, मैं तो माननीय मुख्यमंत्री जी से कहूंगा कि वे 2 लोग जो मारे गए हैं, उसको और इनको सी.बी.आई. से प्रतिबंध हटाते हुए, उन दोनों में कांग्रेस के तत्कालीन विधायक की भूमिका थी या नहीं थी, इसको शामिल करके सी.बी.आई. जांच करवानी चाहिए। क्योंकि जवान पुत्र को खोने वाला वह पिता बैठा है और वह निर्दोष, दोषित को खुला विचरण करता देख रहा है। (शेम-शेम की आवाजें)

माननीय सभापति महोदय, माननीय रूपसाय सलाम, जो नारायणपुर के हमारे जिलाध्यक्ष होते थे।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- माननीय सभापति महोदय, अनुपूरक बजट के कौन सी मांग संख्या पर चर्चा कर रहे हैं, जरा बतायेंगे ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं बताता हूं।

डॉ. चरणदास महंत :- अपनी व्यक्तिगत दुश्मनी को अनुपूरक बजट में शामिल करके भाषण देना उचित है क्या ?

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं बताता हूं, साहब। आपने व्यवस्था दी है कि विनियोग और अनुपूरक मांगों पर एक साथ चर्चा होगी। मैंने पहले अनुपूरक मांगों पर बात की और अब मैं विनियोग पर बात कर रहा हूं।

माननीय सभापति महोदय, रूप साय सलाम, हमारा जिलाध्यक्ष था, नारायणपुर धर्मांतरण के विषय में सुलग उठता है, पुलिस उनको समझाने के लिये ले जाती है, आप समझा दीजिए, उनकी मोटरसायकल में बैठकर जाते हैं, विडियो वायरल होता है, 6 महीने तक घर वापस नहीं आते हैं । यह पता चलता है कि गिरफ्तार होकर जेल चले गये । आप सनातन का अपमान करोगे ? आप धर्म परिवर्तन को बढ़ावा दोगे ? आप धर्म के आधार पर किसी आदमी को संरक्षण दोगे और कहोगे कि छत्तीसगढ़ की जनता इसे स्वीकार करेगी ? छत्तीसगढ़ की जनता स्वीकार नहीं करेगी । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को यही कहना चाहूंगा कि आप सीबीआई जांच करवाकर, इन तथ्यों को शामिल करके, उससे प्रतिबंध हटायें और दोषियों के खिलाफ में जायें । मैं हमेंशा कहता हूँ कि बदले की भावना से कार्यवाही नहीं होनी चाहिये, लेकिन जो तथ्य है, जो सत्य है, जिन लोगों ने भुगता है, उनको न्याय मिलना चाहिये । (मेजों

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे अधिकारी भी सुन रहे हैं, मैंने इसी सदन में उठाया था । एक पत्रिका छपी । करोड़ों रूपये की आजीवन सदस्यता बन गई, उस पत्रिका किल्लोल का कर्ता-धर्ता चला गया, आजीवन निधि के नाम पर अरबों रूपये जमा हुये, अब उसका क्या होगा ? वह पत्रिका छप रही है कि नहीं छप रही है, कितना पैसा जमा है, उस पैसे का उपयोग कौन कर रहा है, उसका क्या होगा ? यह लोक धन है । विनियोग और अनुपूरक में लोक धन की रक्षा करना, लोक धन की बात करना, हमारा अधिकार है । माननीय मुख्यमंत्री जी को इसमें जांच करवानी चाहिये, यह लूट का विषय है । माननीय सभापति महोदय, कैसी सरकार है और कैसी सरकार थी ? मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से मांग करता हूँ कि 2700 करोड़ से ऊपर कोरोना के शेष के लिये वसूले गये, कितने पैसे स्वास्थ्य विभाग को मिले ? वह कोरोना का पैसा कहां गया ? किस अधिनियम के तहत उसको दूसरे मद में खर्च करने का अधिकार था ? क्यों इसकी जांच नहीं होनी चाहिये ? बिल्कुल जांच होनी चाहिये और जो दोषी है, उसको जाना चाहिये । मैंने पिछले अविश्वास प्रस्ताव के भाषण में यह कहा था कि आप थोड़े दिन रूकिये, दिसम्बर में हमारी सरकार आती है, पूरे 13 के 13 लोग जेल के अंदर होंगे, यदि गलत काम किये होंगे ? नरवा, घुरवा, गरूवा, बारी एक फ्लैगशिप प्रोग्राम, यह लोग रटते थे, एक से एक फायदा गिनाते थे, समर्थन में वह बहन जी बैठी है । एक ऐसा प्रोग्राम जिसके लिये बजट में एक रूपया नहीं है, यह गोठान किस पैसे से बना है ? यह छतरी जो लगी है, गोबर सड़ाने के लिये, किस पैसे से लगी है ? जनता को जानने का अधिकार है । मनरेगा में गोठान बनाने का कोई प्रावधान नहीं है, यदि वह पशु शेड बने हैं, आप पशु शेड को चलकर देखिये । यदि वह चारागाह विकास के नाम पर बने हैं, किसी भी गोठान में चारागाह चलकर देखिये और कार्यवाही क्यों नहीं होनी चाहिये ? आयोग बनाकर बिल्कुल कार्यवाही होनी चाहिये, ताकि भविष्य में यह नजीर बने कि कोई भी आदमी दूसरे मद का पैसा, दूसरे मद में खर्च करके लोक धन का दुरूपयोग न कर सके । माननीय सभापति महोदय, भ्रष्ट्राचार के संरक्षण के लिये सीबीआई को प्रतिबंधित किया गया ? मैं अभी पी.एस.सी. के बारे में बात नहीं करूंगा, अभिभाषण में कई वक्तागण उनमें बात करेंगे, लेकिन मैं मंत्री था तो जो पी.एस.सी. का अध्यक्ष बना, उसके खिलाफ सचिव स्तर की अर्थात सरकार जांच कर रही थी, कोई विभाग जांच नहीं कर रहा था, उसकी जांच चल रही थी । भूपेश सरकार की उपलब्धि एक है, उस जांच को किसी भी माध्यम से खत्म किया गया । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह करूंगा, माननीय उप मुख्यमंत्री जी सुन रहे हैं, यदि कैबिनेट में खत्म किया होगा, उसको फिर से कैबिनेट में लाकर उस जांच को बहाल करना चाहिये और जांच को समाप्त किया गया, ताकि एक करप्ट आदमी को पी.एस.सी. में बिठाया जा सके और छत्तीसगढ़ के लाखों नवजवानों के सपनों को तोड़ा जा सके ताकि पिछले दरवाजे से आई.ए.एस. और आई.पी.एस. बनाये जायें । माननीय सभापति महोदय, आत्मानंद स्कूल, कहां है उमेश जी ? आत्मानंद स्कूल में नाम भर लगा दिया गया, पोत दिया गया, उसके लिये कौन सी नयी किताबें छापी गईं ? कौन-सी नई भर्तियां की

गईं ? कौन-से एक्ट्रा करिकुलम एक्टिविटी की गयी ? उसके लिये कौन-सी नई चीजें की गईं ? उसके लिये कितने बजट का प्रावधान किया गया ? इस सरकार ने आत्मानंद स्कूल के नाम पर पैसा खाने का काम किया है। क्या इसे रेनोवेशन घोटाला कहेंगे ? माननीय सभापति महोदय, यह सॉफ्ट हिंदुत्व और हिंदुत्व और क्या-क्या नहीं बोलते थे। ये इस बात का चिंतन करें। भगवान राम की मूर्ति लगाने के लिये 100 करोड़ रूपये के लम्प सम का ठेका टी.सी.आई.एल. कंपनी को दिया गया। भारत सरकार की कंपनी टी.सी.आई.एल. छत्तीसगढ़ में कई बार ब्लैक लिस्टेड हो चुकी है। उन्होंने एक आदमी को सबलेट किया, वह आदमी मर गया। उनके लड़के ने मूर्ति बनायी और ऑर्डर में कहीं नहीं लिखा है कि कितने हाईट की बनेगी, कौन-सी मुद्रा की बनेगी, कौन-से सामान की बनेगी, क्या-क्या चेक करेंगे, क्या एस.ओ.आर. होंगे ? उसको कोई नहीं जानता। अब पूरे सदन को भूपेश बघेल जी के नेतृत्व में भगवान राम की प्रतिमा को देखने के लिये चंदखुरी जाना चाहिए। छत्तीसगढ़ के लोगों को दिखाना चाहिए कि चलिये देखिये और संस्कृति में कभी चर्चा होगी तो इस बात को बतायेंगे कि भगवान राम कब गये हैं। उन्होंने उनके राम वन गमन पथ का शोध किया है। पैसा खाने के लिये मूर्ति की संख्या बढ़ा दिये। वे चम्पारण कब गये हैं और चंदखुरी कब गये हैं, जहां उनकी प्रतिमा लगी है ? यदि मूर्ति के नाम पर, राम भगवान के नाम पर कोई पैसे खा सकता है तो यही लोग खा सकते हैं। (शेम-शेम की आवाज) (मेजों की थपथपाहट) इसकी जांच क्यों नहीं होनी चाहिए ?

श्री रामकुमार यादव :- सभापति महोदय, अयोध्या में देखे हन चंदा बर कैसे करिस तेला ? ईहां के चंदा के पैसा बर कैसे करिस, वह पूरी मीडिया में चले हे, पूरा देश देखे हे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अयोध्या के चंदा बर यहां (व्यवधान)

सभापति महोदय :- बैठिये, बैठिये।

श्री बालेश्वर साहू :- आप लोग जो खाये हैं, उसके बारे में भी बता दीजिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, मैंने जिस दिन प्रश्न किया था, उस दिन जानकारी आयी कि 1 अरब 20 करोड़ रूपये के गोबर खरीदे गये। क्यों इसकी जांच नहीं होनी चाहिए ? आप पिछली बार के प्रश्नोत्तरी में थे। यहां धरमलाल कौशिक जी है, उसमें 17 लाख का हिसाब हुआ। उसको ले देकर जोड़े घटाये तो वह 86 लाख तक पहुंचा था, बाकी का हिसाब ही नहीं आया था। इस गोबर खरीदी की जांच क्यों नहीं होनी चाहिए ? यह सीधे-सीधे डकैती है, यह चोरी भी नहीं है, लूट डकैती है। इसके लिये डकैती शब्द भी छोटा है। माननीय सभापति महोदय, पैरा दान मिला। आज तक मैं सभी गांवों में गया। केवल कुरूद विधान सभा क्षेत्र को छोड़कर कम से कम 200 गांवों में मैं प्रत्यक्ष रूप से गया, सभी गांवों में प्रत्यक्ष बातचीत की कि आपको पैरा दान कितना किये हैं, बताईये। एक बार पैरा ढुलाई के लिये शेष के पैसे 53 करोड़ रूपये दर्ज हुए। पैरा दान ही नहीं मिला है। एक बार 53 करोड़ रूपये और एक बार 13 करोड़ रूपये मिले हैं और इतने पैसे पैरा ढुलाई के नाम से चढ़ गये। अब क्यों



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

इसकी जांच नहीं होनी चाहिए ? यह तो कागज में स्टाईल से दबा देते हैं और डकार भी नहीं लेते हैं। (श्रीमती अनिला भेंडिया ओर देखते हुए) मैडम, आप बताईये तो, चलिये मैं आपके साथ चलता हूं कि कितना पैरा दान में मिला है। दल्ली राजहरा में कितना पैरा दान में मिला है ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अब तो आपकी सरकार आ गई है। आप जांच करा सकते हैं। आपको घोटाला और चोरी के अलावा और कुछ नहीं दिख रहा है। भाषण में तो वही बोल रहे हैं, अब जब आपकी सरकार है तो आप जांच कराईये।

श्री रामकुमार यादव :- तुहर जमाना में रतनजोत ला दे रहा। ओकर से क्या डीजल और पेट्रोल मिलही कहि के। ओकरो जांच तो करवा देवा।

सभापति महोदय :- बैठिये। बोलने दीजिये।

श्री रामकुमार यादव :- अभी-भी वह लईका मन रतनजोत ला खात हवा। आप ही तो करवाए हव पूरा घर के।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ राज्य धान का कटोरा कहलाता था। अब हमारी गोधन न्याय योजना .. (व्यवधान)

सभापति महोदय :- अभी जब आप बोलेंगी ना तब जवाब दे दीजियेगा। अभी चन्द्राकर जी को बोलने दीजिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, इन्होंने पेशाब खरीदी शुरू की। हमने सिर्फ एक दिन फोटो देखी कि भूपेश बघेल जी एक लीटर मूत्र को डब्बे में झोंक रहे हैं। यह 5 लाख 21 हजार रूपये का केवल मूत्र खरीदे हैं। वे उसका क्या बनाये हैं, जीवामृत बनाये हैं, ब्रम्हामृत बनाये हैं। उसका क्या किये, कहां बेचे ?

श्री रामकुमार यादव :- वह बाबा रामदेव के जो खरीद के.. (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- वैसे भांचा वो खरीदी बिक्री के पैसा ला तुंही ले मिले हे। पूरा छत्तीसगढ़ ओ वीडियो ला देखे हे।

सभापति महोदय :- यादव जी, बैठिये। आप बात-बात में खड़े हुआ करिये।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, .. घलो मोला बिठावथा। वह बाबा रामदेव ऊंही के मूड़ में थोपथे, ऊंही वाला हे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, गोबर से जो जैविक खाद बना है, उसमें मूत्र को यूज़ किया गया है। (व्यवधान)

श्री अजय चन्द्राकर :- यह कुछ उदाहरण होये हे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, उसका उपयोग आयुर्वेद में हो रहा है।



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- हम एक महीने बाद फिर मिलने वाले हैं, इस पर विस्तार से बात होगी। मैं समय-सीमा का ध्यान रखूंगा। फिर से सदन में माननीय मुख्यमंत्री जी आ गये हैं। मैं इस बात के लिए कहूंगा कि जब झीरम का नाम लेते थे। मैंने इसी सीट से सी.बी.आई. जांच की घोषणा की थी। प्रशांत मिश्रा आयोग की रिपोर्ट रखी जा चुकी है। यह लोग उसमें बात नहीं करेंगे। हमने एन.आई.ए. जांच की बात कही। चिदम्बरम साहब ने ही एन.आई.ए. जांच की घोषणा की थी, उस पर भी इन्हें भरोसा नहीं था। यदि सी.बी.आई. जांच होती है तो दो-तीन चीजें पता लगेगी। जब फिर से वह सीन रिक्रियेट करेंगे और वह दादी को देंगे तो वह उलख देंगे। उन्होंने किधर से रास्ता बदला या नहीं बदला। एक मलकित सिंह जी गैंदू हैं मैं प्रत्यकक्षदर्शी दो लोगों को जानता हूँ जो उस हत्याकाण्ड में थे जब वह सीन रिक्रियेट होगा तो सारा सत्य सामने आ जाएगा। वह सी.बी.आई. इस बात का भी पता लगाए कि भूपेश बघेल जी की कौन से जेब में सबूत है वह 5 सालों तक नहीं निकला। 5 सालों तक उनकी जेब से सबूत नहीं निकला। वह सबूत कहां पर है ? कम से कम सी.बी.आई. तो उस सबूत को निकाले कि वह कहां पर है ? आप बैठे हैं झीरम घाटी ...। आप मेरी बात सुनिए।

श्री उमेश पटेल :- माननीय सभापति महोदय, इस सदन में माननीय अजय चन्द्राकर जी गृहमंत्री का प्रभार लेकर घोषणा की थी कि हम यह केस सी.बी.आई. को दे रहे हैं और उस समय मैंने इनको धन्यवाद् ज्ञापित किया था। इनको धन्यवाद् देते हुए, यह बात कही थी कि इसके लिए हमारा पूरा परिवार कृतज्ञ है। आपको यह याद होगा ?

श्री अजय चन्द्राकर :- हां, मुझे याद है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय सभापति महोदय, अभी भी समय है आप दे दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- प्रिय भतीजे, मैं हमेशा यह कहूंगा। पिछले 5 सालों में जब मैं खड़ा होता था तो हर बार संवेदना व्यक्त करता था। आप भूपेश बघेल जी की राजनीति के कुचक्र के शिकार थे। वह आपके, कांग्रेस के लिए जांच का विषय नहीं था। (मेजों की थपथपाहट) वह राजनीतिक विषय था। वह वोट पाने का माध्यम था। मैं फिर भारतीय जनता पार्टी की ओर से कह रहा हूँ। माननीय मुख्यमंत्री जी इस सदन में है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय सभापति महोदय, सुप्रीम कोर्ट का आदेश कब आया ? यह 23 दिसम्बर को आया। इस प्रदेश में 17 तारीख को वोटिंग हुई।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, आप पटल में प्रशांत मिश्रा आयोग में चर्चा मांग लीजिए। प्रशांत मिश्रा आयोग की रिपोर्ट आ गई है आप उसमें चर्चा मांग लीजिए।

सभापति महोदय :- माननीय उमेश जी सुनिए।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री उमेश पटेल :- अजय भईया, मैं आपसे इस बारे में कुछ नहीं कहता। मैं आपसे सिर्फ निवेदन कर रहा हूँ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मेरी पूरी संवेदना है।

श्री उमेश पटेल :- अजय भईया, आप एक बार फिर से हिम्मत दिखा दीजिए।

सभापति महोदय :- आपने कह दिया और उन्होंने सुन लिया। आप उनको बोलने दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- मेरी पूरी संवेदना आपके साथ है। मैं इस विषय में राजनीति नहीं करता, लेकिन कांग्रेस ने जो राजनीति की, आपके साथ ही नहीं, पूरे झीरम पीड़ित लोगों के साथ राजनीति ...।

सभापति महोदय :- माननीय चन्द्राकर जी, आप बोलिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, झीरम के बाद मैं इस विषय में आ जाता हूँ। अब हमें एक चिन्तन करने की जरूरत है कि हमारा जो बजट घाटा है अभी इस अनुपूरक में लगभग 1 हजार, 560 करोड़ रूपये पूंजीगत व्यय होंगे। हमारा पूंजीगत व्यय क्यों घट रहा है ? हमारे राजस्व व्यय नियंत्रित कैसे हो ? हमारे राजस्व व्यय होते हैं तो यह किन क्षेत्रों में बढ़े ? नये स्कूल खोलने पर राजस्व व्यय बढ़े, पदों पर। हमें कोई आपत्ति नहीं है। अस्पताल नये खुलते हैं उसमें स्टाफ की भर्ती होती है उसमें राजस्व व्यय बढ़े, हमें कोई आपत्ति नहीं है। माननीय भूपेश बघेल जी ने तो कहा कि मैं पाटन में उप तहसील की घोषणा करता हूँ। जहां जाता हूँ मैं एस.डी.एम. की घोषणा करता हूँ। जहां जाता हूँ मैं वहां संभाग बनाता हूँ। मैं जहां जाता हूँ वहां उप तहसील बनाता हूँ। वहां उसकी जरूरत है या नहीं है। कहीं जिले की जरूरत है या नहीं है। वहां लोगों की जरूरत है या नहीं है ? आप राजस्व व्यय ऐसे मुद्दों पर बढ़ा रहे हैं जैसे मैं राईस मिलर्स को मिल में चावल की कुटाई का 120 रूपये देता हूँ। अब ठीक है कि उनको 39 रूपये में पड़ता है या नहीं पड़ता है हम छत्तीसगढ़ के लोग हैं हम मदद करना चाहते हैं आप 50, 60, 70 रूपये कर दीजिए। आप दो सालों तक भुगतान नहीं दे रहे हैं। पहली किश्त 60 रूपये लेंगे या 20 रूपये लेंगे, मुझको तो देना पड़ेगा। फिर दूसरी किश्त दूंगा तो 20 रूपये एडवांस जमा करना पड़ेगा। भाई, यह कौन सा राजस्व व्यय है ? न मिल वालों को फायदा हो रहा था न किसी को फायदा हो रहा था, आपको फायदा हो रहा था।

सभापति महोदय :- आदरणीय, आप जल्दी समाप्त करें।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, मैं जल्दी खत्म कर रहा हूँ। माननीय विष्णु देव साय जी वरिष्ठ राजनेता हैं हमें उनका लाभ मिलेगा, लेकिन मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूँ कि यदि हमने अपने खजाने पर डाका नहीं डाला होता तो आज बजट का साईज लगभग 1 लाख 50 हजार करोड़ रूपये होती।

समय :

1.00 बजे



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आप मुझे यह बतायेंगे 05 साल में लगभग 86 हजार करोड़ रुपये का कर्ज था, जिस दिन मैं आखिरी बार प्रश्न को पूछा था। उसके बाद तो चुनाव में चले गये। 86 हजार करोड़ रुपये में 45 हजार करोड़ रुपये आपके हैं। प्रतिभूमि से आपने जो कर्ज लिये हैं, स्टेट  गांरटी के जो कर्ज हैं उसको जोड़ देंगे तो लगभग सवा लाख करोड़ रुपये जायेगा। लेकिन आपने 05 साल में 45 हजार करोड़ रुपये खर्च किया तो आप यह बात बताईये कि उसका क्या किया? आप सड़क देख लीजिए। प्रोग्राम कैसे चल रहे हैं, जिसको पैसा नहीं मिल रहा है। राजेश मूणत जी मंत्री थे तब उन्होंने जिस रोड का टेंडर किया, आज की तारीख तक वह सड़क पूरी नहीं हुई। फिर वह सरकार आ गई, वह सड़क पूरी नहीं हुई। रायपुर एक्सप्रेस-वे की हम जांच करायेंगे, इसकी घोषणा कर दी, इंट्री मिल नहीं रही है, आज तक वह पूरा हो नहीं रहा है, होगा या नहीं होगा, कब होगा, उसको भगवान नहीं जानता। आप 05 साल की एक सड़क बता दीजिए, एक कल्याणकारी योजना बता दीजिए, एक चीज बता दीजिए जिसमें इस सरकार को याद किया जाये कि कांग्रेस की सरकार ने 05 साल में ये काम किया। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से यह आग्रह करते हुए कि भारतीय जनता पार्टी ही नहीं, वरन पूरे प्रदेश में भूपेश बघेल जी ने जिन लोगों को सताया, जिन लोगों को आतंकित किया, जिन लोगों को जबरदस्ती जेल में डालने की कार्यवाही की। वह गरीब पिता जो बैठा है, ऐसी घटनाओं पर तत्काल कदम उठायें। अब दो बातें कहते हुए मैं अपनी बात समाप्त करूंगा। एक माननीय उमेश पटेल जी ने कहा कि छत्तीसगढ़ में 20 क्विंटल धान ही नहीं होती, आप लोगों ने 21 क्विंटल धान खरीदी की बात कही है। यह बात मैंने उठाई थी। मैं उस बात को बोलता हूं। मैं उस बात से कहीं नहीं मुकर रहा हूं। लेकिन मैं असत्य नहीं बोलता। अभी इधर कृषि उत्पादन आयुक्त बैठे थे। मैंने माननीय पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी से आग्रह किया कि आप अपने राजस्व रिकार्ड में, कृषि उत्पादन आयुक्त के रिकॉर्ड में दुरूस्त करवा लीजिए। जशपुर में साढ़े 7 क्विंटल, रायपुर में अधिकतम साढ़े 17 क्विंटल, आपके रिकॉर्ड में चढ़ा है। आप सबमें 20 क्विंटल चढ़वा लीजिए। आपका रिकॉर्ड कुछ बोल रहा है, आप कुछ बोल रहे हैं, हम किसको विश्वसनीय मानें। यह डबल स्टैण्डर्ड की सरकार नहीं चलेगी। आप उस रिकॉर्ड को ठीक करवा लीजिए। आप 40 क्विंटल लिख दीजिए, 40 क्विंटल खरीदिये न, हम कहां मना कर रहे हैं। मेरी बाकी बातें बहुत स्टाईल से लोग गोल कर देते हैं। डबल स्टैण्डर्ड इन लोगों का है। साढ़े 7 क्विंटल और साढ़े 17 क्विंटल ये लिख रहे हैं।

सभापति महोदय :- हो गया, अब आप समाप्त कर दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, एक बात कहूंगा और समाप्त करता हूं।

श्री उमेश पटेल :- आप मान रहे हैं न कि 20 क्विंटल से कम है।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं मान नहीं रहा हूं, आपकी सरकार को मनवा रहा हूं कि इसको सुधार लो।

श्री उमेश पटेल :- आप मान रहे हैं न ? आप मान रहे हैं या नहीं, इतना बता दीजिए।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, दूसरी बात।

सभापति महोदय :- चलिये, आप समाप्त करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- यह मेरी आखिरी बात है।

श्री उमेश पटेल :- आप मान रहे हैं या नहीं, इतना बता दीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं क्यों मानूंगा, आपकी सरकार का आंकड़ा बोल रहा हूं।

सभापति महोदय :- आप मानिये या मत मानिये, आप उनकी बात सुन लिये न। अब आप आखिरी में बोल कर खत्म करिये। 30 मिनट हो गये हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- सभापति महोदय, मैं आखिरी में बेरोजगारी भत्ता के संबंध में बोलूंगा। तत्कालीन बेरोजगारी मंत्री बैठे थे। माननीय उमेश बघेल जी। भूपेश बघेल नहीं, उमेश जी।

सभापति महोदय :- उमेश पटेल जी।

श्री अजय चन्द्राकर :- उमेश पटेल जी।

श्री राजेश मूणत :- सभापति महोदय, बघेल जी के नाम पर एलर्जी हो गई है। कोई तैयार नहीं हो रहा है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, इन्होंने बेरोजगारी के आंकड़े के संबंध में ईमानदारी से स्वीकार किया हम सी.एम.आई.आर. के आंकड़े को स्वीकार नहीं करते। दशमलव एक प्रतिशत की बेरोजगारी दर। उसके सी.ई.ओ. को मैंने फोन लगाया कि आप आईये, इसमें डिस्कश करते हैं कि आपका क्या फार्मूला है। वह बोले कि छत्तीसगढ़ को फलाना आदमी देखते हैं, मैं आता हूं। मेरे फोन के बाद से छत्तीसगढ़ में उसके बाद उसका आना-जाना बंद हो गया। इन लोगों ने उस फर्जी आंकड़ें में जिसको सरकार ने स्वीकार नहीं किया, 2 करोड़ रुपये का विज्ञापन दिया, इसमें भी बेरोजगारों के नाम से घोटाला किया।

श्री उमेश पटेल :- माननीय सभापति महोदय, चूंकि यह मेरा विषय है, इसलिए मैं कहना चाहता हूं।

सभापति महोदय :- उनको बोल लेने दीजिए। आप एक बार में ही सब बोल दीजिए।

श्री उमेश पटेल :- माननीय सभापति महोदय, यह फिर से गलत बयानी कर रहे हैं। उस संस्था को कभी विज्ञापन नहीं हुआ है। उस संस्था ने जो आंकड़े प्रस्तुत किये थे, उस आंकड़े को अन्य पेपरों के माध्यम से विज्ञापित किया गया था।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, मैंने यही बात पूछी थी जिस संस्था की रिपोर्ट को आपने स्वीकार नहीं किया उसका विज्ञापन 2 करोड़ रुपये का कैसे दे दिया ? आपके पास बेरोजगारी की परिभाषा नहीं थी, बेरोजगारी के आंकड़ें नहीं थे। आप घुमाते थे। रोजगार चाहने वाले लोगों की दर्ज संख्या 18 लाख 8 हजार 195 है। अच्छा आप जितना मानें, आपको कहना चाहिए न कि हम 1 तारीख



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

से देंगे। हम भूतलक्षी प्रभाव से ढाई हजार रूपये देंगे। आप लोग जितना घुमा-घुमाकर बोलना सीख गये हैं। तब हम मानते कि आपकी सरकार ईमानदार सरकार है और हम भूतलक्षी प्रभाव से देंगे। आप 1 तारीख को देते, भूतलक्षी प्रभाव से देते। सभापति महोदय :- चन्द्राकर जी, आप उधर देखकर मत बोलिये। आप अपना भाषण खत्म करिये। आप आपस में बात मत करिये।

श्री उमेश पटेल :- अजय जी, आप अभी भी 250 करोड़ रूपये का प्रावधान किये हैं। 18 लाख लोग कहां गये, यह बताईये? जिसको आप सदन में चिल्लाते थे। वह कहां गये?

सभापति महोदय :- पटेल साहब, बैठिये। चन्द्राकर जी, आप भाषण समाप्त करिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं सब स्वीकार कर लूंगा।

सभापति महोदय :- आप आसंदी को देखकर अपनी बात कहिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- आज से यह ए.टी.एम. पार्टी, जो लोग ए.टी.एम. बजट लाते थे, वह सीख ले कि सनातन का अपमान करेंगे, गरीब जनता को लूटेंगे और छलेंगे, माफिया की सरकार चलायेंगे, लूट की सरकार चलायेंगे, यह 5 साल तक कट्टर भ्रष्टाचारी सरकार थी, यह कट्टर जनता के नीचे तक पहुंची। (मेजों की थथपाहट) उसका परिणाम है सनातन का अपमान। भारतीय जनता पार्टी की सरकार यहां है और वह अपने निश्चित स्थान में हैं, जोकि धोखे से इधर आ गये थे, वह फिर उधर पहुंच गये। सभापति जी, आपने समय दिया, उसके लिए धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

श्री रामविचार नेताम :- सभापति जी, यह कट्टर भ्रष्टाचारी क्या होता है? (हंसी) ये कट्टर भ्रष्टाचारी क्या है, भाई? हम कट्टर हिंदू और बाकी तो समझते हैं।

सभापति महोदय :- अनुपूरक अनुमान की अनुदान मांगों पर चर्चा के लिए 2 घंटे का समय निर्धारित है। अभी दोनों पक्षों की ओर से केवल 2 सदस्यों के द्वारा अपने विचार व्यक्त किये गये हैं। 16 अन्य सदस्यों को भी अपने विचार रखे जाने हैं। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि जो भी वक्ता हैं, वह कृपया 5-5 मिनट में अपने विचार रखें। इसके आगे और भी सदन की कार्यवाही होना है। समय का विशेष ख्याल रखें। पहले दोनों वक्ता की तरफ से समय ज्यादा लगा, लेकिन अब आप लोग 5-5 मिनट में बोलियेगा। श्री द्वारिकाधीश यादव।

श्री द्वारिकाधीश यादव (खल्लारी) :- माननीय सभापति महोदय, आपने अवसर दिया, उसके लिए धन्यवाद। मैं वित्तीय वर्ष 2023-24 के द्वितीय अनुपूरक अनुमान की अनुदान मांगों के विरोध में खड़ा हुआ हूं और विरोध में खड़े होने के बाद में मैं इस सदन को मात्र यह बताना चाहता हूं कि वह चाहे किसानों की धान खरीदी का मुद्दा हो, चाहे महतारी वंदन योजना की मुद्दा हो, चाहे खेतीहर, भूमिहीन मजदूर की बात हो, चाहे घरेलू गैस कनेक्शन दान करने की बात हो, चाहे किसानों का 2 लाख तक के ऋण माफी की बात हो, चाहे वह राजीव गांधी न्याय योजना की चौथे किश्त की बात हो, चुनाव में महतारी वंदन योजना में भारतीय जनता पार्टी की सबसे महत्वपूर्ण घोषण रही और कहीं न कहीं



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

महतारियों को ठगने में भारतीय जनता पार्टी कामयाब हुई है और पहले भारतीय जनता पार्टी ने 15 साल में किसानों और बेरोजागारों को ठगने का काम किया और छत्तीसगढ़ का यह दुर्भाग्य है कि सरकार बनते ही भारतीय जनता पार्टी की सबसे पहले कोई काम की शुरूआत हुई है तो वह महतारियों को ठगने का काम है। माननीय सभापति महोदय, ठगने का काम मैं इसलिए बोल रहा हूं क्योंकि इन्होंने जो बजट प्रावधान किया है, उसमें केवल और केवल 1200 करोड़ रूपये प्रावधान किया है और उस घोषणा के मुताबित केवल और केवल 30 लाख माताओं को महतारी वंदन योजना का लाभ मिलेगा। अगर चार महीने देते हैं तो सबसे ज्यादा महतारियों को ठगने का काम भारतीय जनता पार्टी ने शुरू की है। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि अभी भी समय है कि छत्तीसगढ़ के महतारियों को न ठगे और वादा पूरा करे। दूसरा, छत्तीसगढ़ की पहचान पूरे देश में 'धान का कटोरा' के रूप में हुआ है और आज भी पूरा देश जानता है। किसान जितना मेहनत से अपना फसल लाता है, उसको तो एक किसान ही जानता है। जब हमारी सरकार में मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेल जी बने तो 2 घंटे के अंदर छत्तीसगढ़ के समूचे किसान की कर्जा माफी की प्रक्रिया की शुरूआत हुई। वह चाहे 100 एकड़ का किसान हो, चाहे 10 एकड़ अथवा 1 एकड़ का किसान हो । समूचे देश के अंदर यदि किसानों के हित में कोई काम हुआ तो इसी छत्तीसगढ़ के इसी सदन और यहीं से हुआ कि केवल 2 घंटे के अंदर सारे किसानों का कर्जा माफ हुआ । आज सरकार बन गयी है लेकिन 2 लाख तक के कर्ज को भी माफ नहीं किया जा रहा है । बजट में किसानों की धान खरीदी का प्रावधान किया गया है कि 21 क्विंटल और 3100 रूपये यह एक-साथ देने का वायदा किया गया है । बजट प्रावधान में कहीं पर नहीं है कि किसानों को यह पैसा कहां से देंगे ? जबकि सरकार बनते ही देने की बात कही गयी थी । जो बजट प्रस्तुत हुआ है, उसमें स्पष्ट है कि 2 साल का पुराना बोनस जो कि भारतीय जनता पार्टी का वायदा था उसी में वह धनराशि खत्म होते हुए दिख रही है। आखिर उन किसानों का क्या होगा ? जो 21 क्विंटल और 3100 रूपये दाम की उम्मीद लगाये बैठे हैं । धान खरीदी कुछ ही दिनों में खत्म हो जायेगी लेकिन अभी तक 21 क्विंटल लेने की शुरूआत नहीं हुई है ।

माननीय सभापति महोदय, मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या एक एकड़ के किसान एक क्विंटल धान को लेकर सोसायटी में जायेंगे ? आज सोसायटी में जिस औसत में खरीदी हो रही है उसमें 25 परसेंट किसान 21 क्विंटल के हिसाब से धान नहीं बेच पायेंगे, यह स्थिति तो किसानों की है । खेतीहर मजदूर को 10,000 रूपये देने की बात कही गयी है लेकिन कहीं पर उल्लेख नहीं है, मजदूर भाईयों के ऊपर क्या गुजर रही होगी ? क्या यह सरकार इसीलिये बनी है कि गरीबों के साथ सरकार में आते ही अन्याय हो । हमारी सरकार के द्वारा जिन खेतीहर मजदूर भाईयों को 7,000 रूपये दिया जा रहा था उसके लिये 10,000 रूपये की बात की गयी थी लेकिन 10 रूपये का उल्लेख नहीं है । बेरोजगारी भत्ता के लिये हमारे विपक्ष के साथी पूरे 5 वर्षों तक चिल्लाते रहे कि बेरोजगारों को छला जा रहा है-छला जा

रहा है । बजट में जो प्रावधान किया गया है उससे स्पष्ट है कि उतने ही बेरोजगार भाईयों को मिलेगा जो हम दे रहे थे । बिजली बिल हाफ । पहले गरीब खुश थे, आज गरीबों के बिजली बिल हाफ का कहीं पर उल्लेख नहीं है । अभी तक यह बात भी स्पष्ट नहीं है कि यह सरकार उसे करेगी कि नहीं ?

मानननीय सभापति महोदय, तीसरी बात । उन किसानों की क्या गलती है जिन्होंने अपना धान बेचा था, चौथी किस्त उनका अधिकार है । चौथे किस्त का माननीय राज्यपाल के अभिभाषण में भी कहीं पर कोई उल्लेख नहीं है । कानून-नीति के मुताबिक कोई भी सरकार बने लेकिन किसानों को चौथे किस्त का हक बनता है । जिसे इस सरकार के द्वारा अभी तक स्पष्ट नहीं किया जा रहा है । संभवत: उपमुख्यमंत्री जी चूंकि मैं दोनों में से कन्फ्यूज हो रहा हूं कि उन्होंने चौथी किस्त नहीं देने की बात मीडिया में की है । मैं चाहता हूं कि किसानों को चौथी किस्त दी जाये । माननीय सभापति महोदय, आत्मानंद स्कूल की बात हो रही थी । पहली बार छत्तीसगढ़ में ऐसा हुआ है । पहले गरीब के बच्चे केवल अंग्रेजी माध्यम के स्कूल के बोर्ड को पढ़ते थे, दीवाल को देखते थे कि यहां अंग्रेजी में पढ़ाई होती है लेकिन आर्थिक तंगी में गरीब माता-पिता के बेटा और बेटी अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में नहीं पढ़ पाते थे । चूंकि पूरे हिंदुस्तान में हमारी सरकार में ऐसा हुआ है कि गरीब के बच्चों ने केवल अंग्रेजी स्कूल के बोर्ड या बिल्डिंग को नहीं देखा है बल्कि एक करोड़पति के बेटा और बेटी के बाजू में भी गरीबी रेखा में जीवनयापन करने वाले के बेटा और बेटी उस अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़े हैं । सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि सरकार को अंग्रेजी माध्यम स्कूल के लिये स्पष्ट होना चाहिए ।

सभापति महोदय :- अब समाप्त करें ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- सभापति महोदय, बस एक मिनट और बोलना चाहूंगा ।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, 20 साल पहिली भूपेश बघेल बने रहितिस अऊ ओसनहे अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खोलवा दे रहितिस न तो माननीय राज्यपाल के अभिभाषण ला महूं समझ जातेंव ।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- मैं हमारे रामकुमार जी की बात से सहमत हूं। गरीबों के साथ अन्याय की बात इस सदन में आयी है। माननीय सभापति महोदय, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूं, इस सदन में बताना चाहता हूं कि कांग्रेस पार्टी की जब-जब सरकार बनी है, गरीबों के साथ सरकार खड़ी रही है, 20 सूत्री कार्यक्रम के माध्यम से पूरे हिन्दुस्तान में जितना गरीबों को उनका मालिकाना हक दिया गया, पट्टा दिया गया, आज भी कोई सरकार ऐसे गरीबों को नहीं दे पायी।

सभापति महोदय :- समाप्त कीजिए।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए धन्यवाद।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

समय :
1.15 बजे

**सदन को सूचना**

सभापति महोदय :- आज भोजन की व्यवस्था माननीय मुख्यमंत्री जी की ओर से माननीय सदस्यों के लिए लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है। कृपया, सुविधानुसार भोजन ग्रहण करें। श्री श्याम बिहारी जायसवाल।

**वित्तीय वर्ष 2023-2024 के द्वितीय अनुपूरक अनुमान की अनुदान मांगों पर चर्चा (क्रमश:)**

श्री श्याम बिहारी जायसवाल (मनेन्द्रगढ़) :- माननीय सभापति महोदय, द्वितीय अनुपूरक बजट पर बोलने के लिए आपने मुझे समय दिया है, इसके लिए धन्यवाद। माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा रखे गये बजट अनुदान की सभी मांगों का समर्थन करते हुए कहना चाहता हूं कि इस बजट का आकार बहुत छोटा है, लेकिन इसका असर माननीय सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ के एक-एक वर्ग के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। ये वही छत्तीसगढ़ है, जो माता शबरी की धरती है। ये वही छत्तीसगढ़ है, जो माता कौशल्या की धरती है, जहां महिलाओं का सदैव से सम्मान किया जाता रहा, हमारे वेदों में भी कहा गया है "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता" ऐसे माताओं के बारे में, बहनों के बारे में हमारी सरकार ने जो घोषणा की थी, उसको आज इस बजट में पूरा कर रहे हैं और इससे पूर्व ये वही पूर्व कांग्रेस की सरकार है, जिन्होंने माताओं और बहनों को 500 रूपये प्रति महीना देने का वादा किया था, लेकिन 5 साल में पूरा नहीं किया । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने इस पहले ही अनुपूरक बजट में हमारी माता और बहनों के लिए जो 12000 रूपये सालाना देने की बात की थी, उसके लिए इस अनुपूरक में 1200 करोड़ रूपये का बजट लाया है, साथ ही साथ हमारे छत्तीसगढ़ में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोग बड़ी संख्या में सदैव से रहे हैं। हमारी सरकार आने के बाद 15 सालों में हम लोगों ने गरीबों के लिए बहुत कुछ किया, लेकिन कांग्रेस सरकार का साथ केवल गरीबों का हाथ, ऐसा नारा देकर पिछले चुनाव में 68 सीट लाने के बाद उन गरीबों का मकान, जिनका छत स्तर में थे, 5 साल तक छत स्तर में रह गये, जिनके नींव खुदाये थे, वे नींव में रह गये और उन गरीबों के लिए 5 साल में एक भी मकान नहीं बनाया, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने इस प्रथम अनुपूरक में ही गरीबों के लिए प्रधानमंत्री आवास का जो वादा किया था, जो मोदी गारंटी दी गयी थी, उन गरीबों के मकान के लिए 3799 करोड़ का बजट इस अनुपूरक में रखा है। माननीय सभापति महोदय, जिन किसानों के दम पर पिछली बार 68 सीट लाने वाली ये कांग्रेस आज चौथी किस्त के बोनस की बात कर रही है। मैं आपके माध्यम से ये जानना चाहता हूं कि जनवरी में धान खरीदी समाप्त हुई और अक्टूबर में आचारसंहिता लगा। तो इन 10 महीनों में कांग्रेस की पिछली सरकार क्या

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कर रही थी? ये चौथी किस्त की बात करते हैं, लेकिन मैं हमारे मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि इन्होंने मोदी गारंटी का जो वादा किया था, दो साल का किसानों का बोनस, जो रूका हुआ था, जिसको पिछली सरकार ने अपने घोषणा-पत्र में गंगा जल रखकर कसम खाया था कि हम देंगे और 5 साल में नहीं दे पाये, उस मोदी गारंटी के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी ने 3800 करोड़ रूपये का बजट इस अनुपूरक में रखा है, जिससे लगता है कि छत्तीसगढ़ के किसान खुशहाल होंगे और किसानों में एक नई ऊर्जा का संचार होगा। माननीय सभापति महोदय, ये छत्तीसगढ़ पहाड़ी, तराई ऐसे तमाम क्षेत्रों में बसा हुआ है। यहां के लोग आज भी कुएं का पानी, तालाब का पानी पीने के लिए मजबूर हैं, उसके लिए हमारे देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जी ने अमृत जल मिशन योजना पूरे देश में लागू किया, लेकिन छत्तीसगढ़ का दुर्भाग्य है कि अमृत जल मिशन योजना को यहां केवल और केवल लूट का एक तंत्र बनाया गया । कभी ठेकेदार को 20 परसेंट, कभी 10 परसेंट, कभी जिले का कलेक्टर उसको बढ़ाकर कर रहा है तो कभी मंत्रालय से हो रहा है । केवल और केवल उसके टेंडर को लूटपाट का माध्यम बनाया गया । इनके समय में जो टोंटी बनी, उसमें गांव के लोग आज भी बकरी बांध रहे हैं । सभापति महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद् देना चाहता हूं जिन्होंने उसके लिए भी अनुपूरक में 1230 करोड़ रूपए की व्यवस्था की है । ऐसा लगता है कि आने वाले दो-तीन सालों के अंदर छत्तीसगढ़ के लोगों को शुद्ध पेयजल की सुविधा मिलेगी । सभापति महोदय, जब से छत्तीसगढ़ से भारतीय जनता पार्टी की सरकार गई तब से स्वास्थ्य की हालत बहुत खस्ता हो गई है । पूरे प्रदेश में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र केवल रेफर सेंटर बनकर रह गए हैं और स्मार्ट कार्ड, आयुष्मान कार्ड को केवल भ्रष्टाचार और लूट खसोट का कार्ड बना दिया गया है । इन कार्डों से इलाज की कोई व्यवस्था नहीं हो रही है । लेकिन हमारी सरकार ने माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन हेतु इस बजट में प्रावधान किया है । अब लोगों को बेहतर सुविधा मिलेगी ।

सभापति महोदय :- समाप्त करिए ।

श्री श्यामबिहारी जायसवाल :- दो मिनट में समाप्त कर दूंगा, माननीय । सभापति महोदय, हमारे वृद्धजन जो 60 साल से ऊपर हैं उनके लिए इन्होंने कहा था कि 1000 रूपए पेंशन देंगे। उनको 1000 तो दूर, उनको 350 रूपए की पेंशन भी नहीं मिलती थी । हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद् देता हूं जिन्होंने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन को भी बजट में लिया है । ऐसा लगता है ये बजट सभी लोगों का विकास करने वाला चंहुमुखी विकास का बजट है । सभापति जी, मैं कुछ बातों का उल्लेख करना चाहूंगा । अभी तक हमने सदन में किसानों की आत्महत्या पर चर्चा होते देखा है । पिछले कार्यकाल में मैं था उस समय कई बार चर्चा हुई । ऐसा लगता है कि आने वाले समय में राईस मिलरों की आत्महत्या पर चर्चा भी इस सदन में लाना पड़ेगा । इसका कारण यह है कि इन्होंने 120 रूपए क्विंटल दिया, जैसा कि चंद्राकर जी ने बताया कि इन्होंने 20 रूपए के लालच में 120 रूपए तो कर दिए लेकिन उनको 2

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सालों का भुगतान नहीं हुआ है । मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करता हूं कि 20 रूपए क्विंटल एडवांस में दे रखे हैं उसकी भी जांच कराएं और उन राईस मिलर्स का भुगतान भी करें ताकि छत्तीसगढ़ का एक बड़ा उद्योग जिसमें लाखों लोगों का परिवार चलता है, किसानों का परिवार चलता है, जिससे व्यापार चलता है उसको देने का कष्ट करें । सभापति महोदय, मैं अपने क्षेत्र की एक बात रखना चाहता हूं । मेरे क्षेत्र में नागपुर-चिरमिरी-बाराडोल का रेल्वे का जो 50-50 प्रतिशत का एमओयू हुआ था, केवल और केवल पिछली सरकार के दुराभाव के चलते इसका भूमिपूजन तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी और रेल्वे मंत्री ने किया है उसकी राशि दी जाए । साथ ही चिरमिरी नगर निगम की अमृत जल योजना को रोककर रखा गया है । मैं मुख्यमंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वे जल योजना शीघ्र चालू हो, साथ ही मनेन्द्रगढ़ मेडिकल कॉलेज की राशि जारी करें और चिरमिरी के हार्टीकल्चर और पॉलिटेक्निक कॉलेज के लिए राशि दें । सभापति महोदय, आपने मुझे समय दिया उसके लिए धन्यवाद् ।

श्री कुंवर सिंह निषाद (गुंडरदेही) :- माननीय सभापति महोदय, हमर विद्वान साथी मन बड़ा कन बात करिन । मैं वित्तीय वर्ष 2023-24 के अनुदान मांगों के विरोध में खड़े हौं । सरकार आ तो गे, बड़े-बड़े वादा करिस, बड़े-बड़े घोषणा करिस । अउ उही घोषणा के बल मा 25 तारीख बर एक ठन बड़े बात करत हे कि 2015-16 अउ 2016-17 के बोनस ला 25 तारीख के देबो । 3800 करोड़ के प्रावधान करिस लेकिन एमा ए बात के स्पष्ट उल्लेख नइ हे कि जेन किसान मन ओ समय पंजीयन कराए रिहिन अमा कुछ किसान मन दिवंगत हो चुके हे । बहुत अकन के खाता विभाजन हो चुके हे, उंखर मन बर कुछ स्पष्ट जानकारी हो जाए । ताकि वो किसान परिवार ला ओ बोनस योजना के लाभ मिल सके, ये हम आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से और बइठे सदन में सबो नेता मन से चाहबो। किसान के कर्जामाफी के बात जेन बड़े-बड़े घोषणा पत्र के माध्यम से चुनाव में जाकर ऐखर नेता मन करिन कि हर किसान के कर्जा माफ होही, कोनो-कोनो मन कहिन की दो लाख तक तलो होही, अउ उही आशा और विश्वास में भरोसा में ऐखर असत्य बात में आ के किसान मन ए मन ला वोट दे परिन और आज 55 सीट के साथ ऐखर सरकार बने हे, ता ए मन ला मे कहना चाहूं, जेन वादा करे हे, जेन बात करे हे। आज सदन में उप मुख्यमंत्री विजय भैया भी विराजमान हे, लगातार मीडिया में अपन बयान जारी करे रहिन की, दो-दो लाख तक कर्जा माफ करबो करके और कुछ-कुछ मन तो जारी भी करे हे कि सबो किसान मन के कर्जा माफ होही करके। ये संबंध में यदि स्पष्ट बात हो जाए तो हमर किसान साथी मन, किसान भाई मन देखत हे, ओमन ला विश्वास होही कि सरकार मन जेन बात करे हे, ओ बात में भरोसा करन या नई करन और उही भरोसा के कारण आज ऐ मन यहां बइठे हे। बड़ अकन बात हमर विद्वान अजय भैया कहात रहिन कि कोरोना के नाम से सेस के बात ला, पैरा खरीदी के बात करिन, गोबर खरीदी के बात करिन, गौ मूत्र के बात करिन लेकिन एक चीज छत्तीसगढ़ के जनता पूछना चाहत हे, पूरा देश के जनता पूछना चाहत हे कि पी.एम. केयर के नाम से जेन फंड जमा होय हे, तेखर हिसाब ला



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ए मन कब दीही। ये पूरा छत्तीसगढ़ के जनता, पूरा देश के जनता पूछना चाहत हे। महतारी वंदन योजना के नाम से घर-घर जा के फार्म भरवाय हे, एक एक हजार देबो करके, हमर उमेश भैया हा एक औसत निकालत रिहिस हे, मैं निश्चित कहात हौं कि यदि आधा ला करके हमन 70 लाख महिला के बात करन तो हर महीना के हिसाब से 7 हजार करोड़ और महीना में 28 हजार करोड़ अइसने हो जात हे, अउ 1200 करोड़ के प्रावधान हे। तो कहीं न कहीं हमर बहिनी मन ला, हमर महतारी मन ला जेन लूटे के ऐखर योजना हे, ओखर मन के विश्वास ला अर्जित करके जेन धोखा दे के योजना हे, जे ठगवा सरकार के चलत हे, ये माता मन के सम्मान में एक बात कहना चाहूं-

गीत जाने कितने सपने बोये, दुखियारी मां ने उस पल,
और पहले-पहले जब पट्टी पर मैंने अम्मान आम लिखा।
विवश पड़ा हो जिसको बिकना भूखे बच्चों के खातिर,
उसको चंद समझदारों ने बाजारू बदनाम लिखा,
श्याम लिखा बारिश में हमने, मां को दूध भरा आंचल,
और हल्की-हल्की ठंड लगी तब, मैंने मां को घाम लिखा,
शर्त लगी सारी दुनिया में, एक शब्द में लिखने की,
सबने अपनी लिख डाली पर, मैंने मां का नाम लिखा। (मेजों की थपथपाहट)

ओ मा ला ठगे के काम करे हौ, ओ बहिनी ला ठगे के काम करे हौ, ऐखर जवाब छत्तीसगढ़ के महतारी मन पूछत हे, ओ माता मन पूछत हे, बहिनी मन पूछत हे, केवल धर्म और सनातन के नाम पे, हिन्दू मुस्लिम के नाम पे वोट मांगे के काम करे हौं, जनता ला बरगलाय के काम करे हौ, लेकिन अब जनता ला हिसाब देबर पड़ही।

सभापति महोदय :- निषाद जी, समाप्त करिए।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति जी, जाने कितने सपने बोये, लेकिन एक चीज अउ कहना चाहूं। सभापति महोदय, एक तो अइसने बोले के कम समय मिलथे, अउ हमन नया-नया ला बोलन नई देहू ता कइसे बनही।

सभापति महोदय :- नहीं-नहीं, आप पुराने हैं। आप नये नहीं हैं।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, बाकी मन तो आधा-आधा, एक-एक घंटा बोल डालथे, मैं आपसे संरक्षण चाहूं, हमन ला बोले के अवसर मिले, एमन जेन बात कहे हे, तेखर प्रत्युत्तर के बात कहिबो।

सभापति महोदय :- मैं आपको मना कहां कर रहा हूं ?

श्री कुंवर सिंह निषाद :- मैं एक किसान परिवार के आदमी हौ, भले एक छोटे किसान दो, तीन एकड़ के हौ, लेकिन कतका बात हे, तेला हमन जानथन।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सभापति महोदय :- मैंने आपको मना नहीं किया है। समाप्त करिए, बोल रहा हूं, आप नये भी नहीं हो, पुराने हो।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- जी, सभापति महोदय, मैं बस ए कहना चाहहूं कि जेन धर्म के बात करत रीहिन, सनातन के बात करत रीहिन, राम मंदिर के निर्माण के बात करत रीहिन अऊ राम मंदिर के मूर्ति के निर्माण के बात करत रीहिन तो मैं ओमन ला कहना चाहत हो कि -

सत्ता की खातिर मजहब को ढाल बनाने वालों,

भूखी, बेबस जनता को टेढ़ी चाल चलाने वालों।

अरे एक हाथ में खंजर लेकर, एक हाथ में गीता,

बोलो कितने राम बनाये और कितनी बन पाई सीता। (मेजों की थपथपाहट)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, छत्तीसगढ़ के जनता ये जवाब मांगत हे अऊ मैं तो किसान परिवार के हरो। मछलीपालन मोर व्यवसाय हे, आपके बजट में कुक्कुटपालन हे, बकरीपालन हे, भेड़पालन है, लेकिन 23 लाख मछुआरा के जेन आस अऊ उम्मीद लेके मैं कुंवर सिंह निषाद आज ए सदन में बइठे हो, ओमे मछुआरा मन बर आपके बजट में कोई प्रावधान नहीं हे। आप ला एखर घलो जवाब देल पड़ही। 23 लाख मछुआरा के प्रति आपके कोई संवेदना नहीं हे। ए सरकार के सोच दिखत हे, जेखर बदौलत आप मन यहां तक आए हो। बड़े-बड़े बात करे कि मुख्यमंत्री मत्स्य संपदा योजना, फलाना संपदा योजना, तो ये संपदा योजना। माननीय बृजमोहन भईया कृषि मंत्री रीहिस हे, ओ जानत हे कि मछुआरा मन के प्रति कतका संवेदना के बात आथे। लेकिन आज ए बजट में कोनो प्रकार के प्रयोजन नहीं हे, तेखर सेती मैं चाहहूं कि एमे कटौती करके मछुआरा मन के प्रित भी ए बजट में प्रावधान रखें।

माननीय सभापति महोदय, साथ ही बिजली बिल हाफ योजना के माध्यम से लाखों परिवार मन ला लाभ मिलत रीहिस हे। लेकिन आज बिजली बिल हाफ योजना के प्रति ए बजट में न ही सरकार की तरफ से अऊ न ही राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में कोई बात आए हे। अब का होही अऊ कैसे होही। जनवरी में बिजली बिल आही तो 300 रूपये बिजली बिल वाले मन 600 रूपये पटाही अऊ 600 रूपये बिजली बिल वाले मन 1200 रूपये पटाही। अइसे गरीब मन ला आर्थिक मार झेलेल पड़ही। हजारों वृद्ध कलाकार मन हे। मैं बजट ला देखत रहे हव कि सरकारी आयोजन मन बर आपके बजट तो हे, लेकिन अइसे हजारों कलाकार जेन मन एक आस अऊ उम्मीद रखते कि जब सरकार बदलथे अऊ नयी सरकार बइठथे तो हमरो मन के पेंशन ला एक कन बढ़ा देतीन। 2,000 रूपये ला 3,000 रूपये अऊ 3,000 रूपये ला 5,000 रूपये कर देतीन। जइसे पिछले समय हमन बढ़ाए रहे हन, ओमन वइसने एक बार फेर उम्मीद रखे रीहिन। ओमन ज्यादा संख्या में नहीं हे। 100-200 करोड़ रूपये, 200-300 करोड़ रूपये के बात हे, लेकिन आपके बजट में ओ कलाकार मन के प्रति कोनो भाव नहीं हे अऊ न ही कलाकर मन के प्रति सम्मान नहीं हे। जब कोई राजकीय आयोजन होथे, कोई शासकीय आयोजन होथे तो बड़े सम्मान के साथ



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ओ कलाकार मन ला बढ़िया सम्मान देथन, लेकिन आज ओ वृद्ध कलाकर, जेमन कलाकारी में अपन पूरा जीवन खपा दीस, ओखर मन बर आपके सरकार के बजट में कोनो प्रकार के बात नहीं हे। तो मैं चाहहूं कि बजट में कटौती करके कलाकार मन के प्रति भी बजट में प्रावधान रखे जाए।

माननीय सभापति महोदय, साथ ही अभी बरसात के समय पानी गिरीस तो किसान मन के धान पूरा खेत में करपा के करपा माड़े रीहिस। कतको किसान के खरही के खरही माड़े रीहिस। कतको मन के धान नहीं लुआए रीहिस। अतका क्षति होहे, जेखर हमन कोई आकलन नहीं कर सकन। सरकार से बार-बार आग्रह करे के बाद, बार-बार निवेदन करे के बाद थोड़कीन रेंगीन अऊ पटवारी मन ला कह दीन कि जाओ आकलन करके लाओ। लेकिन अभी तक सरकार के पास एखर कोई स्पष्ट डाटा नहीं हे कि किसान मन ला आर्थिक रूप से कतका क्षति अऊ नुकसान होहे। ओ क्षतिपूर्ति के भी ए बजट में कोई प्रावधान नहीं हे। तो हमन कइसे चाहबो कि एक सरकार हा किसान मन के प्रति कुछ बने सोचत होही या कुछ बने बात करत होही। साथ ही आपके बड़े-बड़े होर्डिंग अऊ बोर्ड लगे हे कि रामलला अयोध्या भ्रमण में पूरे छत्तीसगढ़ के साथ-साथ हिंदुस्तान के सबो जनता जाही। खासकर हम छत्तीसगढ़िया हन तो छत्तीसगढ़ के बात करबो। अयोध्या भ्रमण बर लेगे के बात करथे। हमन बोर्ड मन मा देखथन कि बड़े-बड़े लिखाय हे, लेकिन बजट में एखर बर एको कनिक प्रावधान नहीं हे। तो कब अऊ कइसे लेगही? छत्तीसगढ़ के जनता घलो पूछत हे, जेन सियान मन ला, जवान मन ला अयोध्या घुमाए के बात करे हो, तेखरो बर भी कोनो प्रकार के अइसे कोई बात नहीं है।

सभापति महोदय :- निषाद जी, अब समाप्त कीजिए ।

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सभापति महोदय, पिछले समय हमर पूर्व मुख्यमंत्री जी के माध्यम से बहुत अकन स्कूल के उन्नयन के बात होए रिहीसे, कुछ मन के शासकीयकरण के बात होए रिहीसे, लेकिन अभी ये बजट में उन्नयन और शासकीयकरण के संबंध में कोनो प्रकार के न जानकारी दिखथे, न ही कोनो प्रकार के कोई बात हे तो सभापति जी, आपके माध्यम से निवेदन करना चाहहूं कि कुछ में कटौती करके बजट में शामिल करें । सभापति महोदय, आप बोले के अवसर देव, तेकर बर बहुत-बहुत आभार ।

श्रीमती गोमती साय (पत्थलगांव) :- धन्यवाद सभापति जी । मैं छत्तीसगढ़ राज्य के षष्टम विधान सभा के प्रथम सत्र वर्ष 2023-24 के द्वितीय अनुपूरक बजट में समर्थन देने के लिए मैं खड़ी हुई हूं । यह बजट गरीबों, किसानों, महिलाओं के लिए है और यह बजट छत्तीसगढ़ की ढाई करोड़ जनता के लिए मील का पत्थर साबित होगा, हम लोगों के लिए ऐतिहासिक बजट साबित होगा । आज मोदी जी की गारंटी में यह बजट पेश हुआ है और निश्चित रूप से भारतीय जनता पार्टी की विष्णु देव जी की सरकार को और दोनों उप मुख्यमंत्री जी को मैं धन्यवाद देना चाहती हूं कि उन्होंने यह महत्वपूर्ण अनुपूरक बजट पेश किया है । हमारे छत्तीसगढ़ में 18 लाख प्रधानमंत्री आवास लंबित थे । पिछले 5

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

साल में छत्तीसगढ़ की गरीब जनता तरस गई कि हमें कब प्रधानमंत्री आवास मिले । पिछले 5 साल से रास्ता देखते-देखते यहां की जनता की उम्मीद बंद होने जा रही थी, तब छत्तीसगढ़ में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी है। इस सदन में बैठने वाले एक-एक विधायकों, एक-एक मंत्रियों के ऊपर छत्तीसगढ़ की जनता को बहुत उम्मीद है। इस सदन में जो कहते हैं, उसमें विश्वास रहता है । जिस तरह से पूर्ववर्ती सरकार ने पांच साल तक असत्य कथन कहकर सरकार में आने का प्रयास किया था, लेकिन वे छत्तीसगढ़ की जनता के विश्वास पर खरा नहीं उतरने के कारण विपक्ष में हैं और भारतीय जनता पार्टी की सरकार सत्ता पक्ष में बैठी है । छत्तीसगढ़ की जनता ने विष्णु देव साय जी की सरकार पर भरोसा किया है तो इस अनुपूरक बजट के माध्यम से हमारी सरकार प्रदेश की एक-एक जनता के विश्वास पर खरा उतरेगी और मोदी जी की गारंटी से सभी योजनाएं पूरी होंगी ।

सभापति महोदय, जल जीवन मिशन पूरे प्रदेश में लंबित था । इस बजट के माध्यम से जल जीवन मिशन योजना में एक-एक परिवार के पास शुद्ध पेय जल पहुंचाने का काम किया जाएगा । जिस तरह से छत्तीसगढ़ में अव्यवस्था फैली हुई है, इस अनूपूरक बजट के माध्यम से सारी व्यवस्था पूरी होने जा रही है। सभापति जी, मैं बहुत ज्यादा समय नहीं लूंगी क्योंकि मेरे पूर्व वक्ताओं ने सभी विषय पर अपनी बात रख चुके हैं । इस अनुपूरक में रानी दुर्गावती योजना बहुत महत्वपूर्ण योजना है, जो हमारे बेटियों के ऊपर निर्भर करता है । हमारे आदिवासी जनजाति के लोग तेंदूपत्ता तोड़ने का काम करते थे, लेकिन पिछले पांच साल में वे भी पैसे के लिए तरस गए, लेकिन इस अनुपूरक बजट के माध्यम से उनको भी लाभ दिलाने का काम करेंगे ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, हमारी सरकार ने 4 हजार रूपए मानक दर में तेंदूपत्ता की खरीदी की है और 65 प्रकार का वनोपज खरीदा है ।

सभापति महोदय :- संगीता जी, वे पहली बार विधायक बनकर आई हैं, कम से कम उनके भाषण में तो मत टोकिए ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- वे सांसद थीं ।

सभापति महोदय :- वे सांसद रही होंगी, लेकिन इस सदन में पहली बार आई हैं ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, हमारी सरकार ने वनोपज पर बहुत काम किया है । आप लोग अपनी सरकार में 7 प्रकार के वनोपज की खरीदी करते थे।

श्रीमती गोमती साय :- सभापति महोदय, मैं सब जानती हूं। मैं गांव में निवास करती हूं और गांव की बेटी होने के नाते मैं बड़े विश्वास के साथ कह रही हूं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, आपको पता रहना चाहिए कि ..।

सभापति महोदय :- संगीता जी, आप बैठिये।

श्रीमती गोमीती साय :- सरकार दो ही दिन बाद तेन्दूपत्ता तुड़वाई बंद करवा देते थे।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय :- गोमती जी, आप इधर देखकर बोलिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति जी, आदरणीया गोमती जी, भले ही लोकसभा में भाषण दी हो, परन्तु विधानसभा में आज उनका मेडन स्पीच है।

सभापति महोदय :- मैं वहीं तो बोल रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- उनका मेडन स्पीच है तो उनको टोकने के बजाय उनके लिए टेबल को थपथपना चाहिए कि आप बहुत अच्छा बोल रही हैं। जितने भी नये सदस्य बोल रहे हैं, चाहे इधर के सदस्य बोले चाहे उधर के सदस्य बोले, टोका-टाकी करने के बजाय उनका स्वागत करिये। नहीं तो, आपकी वरिष्ठता काट दी जायेगी।

सभापति महोदय :- मैंने उनसे वही आग्रह किया।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति जी, हमारी सरकार ने बहुत सारे काम किये हैं। अगर उसको कोई गलत बोलेंगे तो हम तो बोलेंगे।

सभापति महोदय :- ना-ना, ऐसा नहीं है। उनको बोलने तो दीजिये। उनका यह अधिकार है। जब आप भी पहली बार आई थीं तो हम सब लोग सुनते थे। उनको बोलने दीजिये, बाद में उसका जवाब दे दीजियेगा, कोई दिक्कत नहीं है। आप बोलिये।

श्रीमती गोमती साय :- सभापति जी, मैं लोकसभा से विधान सभा में आई हूं। यहां मेरा पहला भाषण है। मेरे दल की ओर से मुझे बोलने के लिए कहा गया था तो मैं बोल रही हूं और मैं अपने विषय को प्रमुखता से रखने का प्रयास कर रही हूं।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- चलिये, मैं आपको, आपके मेडन स्पीच के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आप जितना समय लेना चाहे, लीजिये।

श्रीमती गोमती साय :- सभापति महोदय, मुझे बोलने के लिए 5 साल में बहुत समय मिलेगा। परन्तु यह मेरा पहला भाषण है।

सभापति महोदय :- आप इधर ध्यान दीजिये।

श्रीमती गोमती साय :- जी। सभापति महोदय जी, आज हमारी सरकार द्वारा जो घोषणा किया गया है, यह अनुपूरक एक-एक घोषणा को पूरा करने वाला अनुपूरक बजट है। अभी भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद यह हमारी सरकार का पहला अनुपूरक है और महत्वपूर्ण अनुपूरक बजट है। सभापति जी, पूर्ववर्ती सरकार ने ठगने का काम किया है। लेकिन भारतीय जनता पार्टी जो घोषणा करती है, एक-एक घोषणा को पूरा करने के लिए जनता को विश्वास दिलाते आई है और विश्वास दिलाते भी रहेगी। मोदी जी की गारण्टी पर जिस तरह से भरोसा किया गया है, वैसे ही विष्णुदेव साय जी पर छत्तीसगढ़ की जनता ने भरोसा किया है, विश्वास किया है। हम लोग इसको पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं और इस अनुपूरक के माध्यम से एक-एक घोषणा पूरा होगा। सभापति जी, मैं बहुत ज्यादा नहीं

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बोलूंगी। क्योंकि अभी बहुत सारे वक्ता बोलने वाले हैं। आने वाले 5 साल में बहुत समय मिलेगा और बोलते रहेंगे। परन्तु मैं छत्तीसगढ़ की जनता को विश्वास दिलाती हूं कि छत्तीसगढ़ की विष्णुदेव साय जी की सरकार द्वारा जो एक-एक घोषणा किया गया है, point to point घोषणा किया गया है, उन सभी को अनुपूरक के माध्यम से पूरा करेगी। सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

सभापति महोदय :- आपको धन्यवाद। श्रीमती अनिला भेंडिया।

श्रीमती अनिला भेंडिया (डौण्डीलोहारा) :- माननीय सभापति महोदय, सरकार द्वारा जो अनुपूरक मांग लाया गया है, मैं उसके विरोध में बोलने के लिए खड़ी हुई हूं। आज सत्तापक्ष की ओर बैठे हुए वक्ताओं ने बहुत बड़ी-बड़ी बातें कही हैं। हम लोगों ने भी जनता की आकांक्षाओं और उम्मीदों को पूरा करने के लिए यहां उपस्थित हुए हैं। हमारी 5 साल सरकार रही, हमारी सरकार ने हमेशा गरीबों, किसानों, मजदूरों, बेरोजगारों की भलाई के लिए काम करने की कोशिश की है। बहुत छोटी-छोटी बातें हैं, जो हमारे प्रदेश की गरीब जनता तक पहुंचे। इसके लिए हमारी सरकार ने 5 साल तक काम किया। अजय भईया, आज आपने पूरा गोल-गोल करके भाषण दिया है। हम लोगों को तो गोल-गोल बोलने की आदत नहीं है, सीधी-सीधी बातें करते हैं।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- तै तो वैसे ही गोल मटोल हस। (हंसी)

श्रीमती अनिला भेंडिया :- मैं इसीलिए गोल नहीं बोलती । मैं सीधा-सीधा सच्चाई को बोलती हूँ । अभी आपने 20 क्विंटल के बारे में झूठ बोल दिये ।

श्री अजय चन्द्राकर :- लोक धन की चोरी करने वाले का, जो किया होगा, वह चोर है । नहीं किया होगा वह नहीं है ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- जो करता है, जो सोचता है, इसलिये वह हमेंशा वैसे ही बोलता है । हमेंशा भ्रष्ट्राचार और चोरी की बात हर लाईन में आपने बोला है । आपके विचार वैसे हैं, इसलिये आपके भाषण भी वैसे ही आते हैं ।

सभापति महोदय :- अनिला जी, आप आसंदी को देखकर बोलिये । आप अपना भाषण दीजिए ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- सभापति महोदय, आप हम लोगों को बहुत कम समय दे रहे हैं...।

सभापति महोदय :- मैं तो बोला कि आप बोलिये, लेकिन इधर देखकर बोलिये।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- सभापति महोदय, महतारी वंदन की बात आज यहां हो रही है, इसमें किन महिलाओं को पात्र माना जाये, इसकी घोषणा कहीं नहीं है । आपके कार्यकर्ता चुनाव के समय हर घर में जा-जाकर, हर बस्ती में फार्म भरवायें हैं, अगर आप लोग उन महिलाओं को इसका लाभ नहीं देंगे तो हमारे क्षेत्र की महिलायें और बहनें आप लोगों को सड़क में उतरकर क्या बतायेंगी, वह आप जान सकते हो । महिलायें अपनी औकात में आ गई ना, तब तो आप लोग समझ जाओ कि क्या कर सकते



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हैं ? आप ऐसे सभी लोगों को पात्र में रखिये, जिन लोगों को आपने फार्म भरवाया है । आपने महिलाओं को 12 हजार सालाना देने की घोषणा किये हैं ना, वह सभी हमारी बहनों को मिलना चाहिये, नहीं तो हमारी महिला बहनों का उसमें अपमान होगा । सभापति महोदय, वैसे ही नारायणपुर के हमारे किसान भाईयों को कर्ज के कारण आत्महत्या करना पड़ा है । आपकी सरकार बनते ही ही यह हुआ है, कितनी बड़ी बात है ? किसानों की आत्महत्यायें चालू हो गयी है, आपके कार्यकाल में कितने ही किसानों ने आत्महत्यायें की है ? मेरे ही जिले में 5 से 7 किसानों ने आत्महत्या किया था ।

श्रीमती लता उसेण्डी :- मैं भी आदिवासी परिवार से हूँ । उन किसानों के बारे में भी आप बात करिये ...(व्यवधान)

सभापति महोदय :- अनिला जी, इधर देखकर बोलिये ना ?

श्रीमती अनिला भेंडिया :- सभापति महोदय, हमारे मुख्यमंत्री भी आदिवासी हैं, कम से कम उनको आदिवासी किसानों के लिये सोचना चाहिये ? उसमें जल्दी से जल्दी जांच कराकर कौन हमारे बैंक के अधिकारी नोटिस दे रहे हैं, उसमें जांच होनी चाहिये । सभापति महोदय, आप पी.एस.सी. की बात करते हैं, वर्ष 2008 के पी.एस.सी. का मामला आज तक कोर्ट में पेंडिंग है । आपने इसकी जांच क्यों नहीं किया ? वर्ष 2008 में भी पी.एस.सी. की परीक्षायें हुई थी, क्या उसमें अधिकारी के बच्चे पी.एस.सी. पास नहीं हुये हैं ? नेताओं के बच्चे परीक्षा में पास नहीं हुये हैं ? अगर अभी के पी.एस.सी. में अधिकारी के बच्चे परीक्षा में पास हो गये, अफसर बन गये, उसमें आप लोगों के पेट में दर्द हो रहा है ? जैसे नेता के बच्चे नेता बनते हैं, डॉक्टर के बच्चे डॉक्टर बनते हैं, अधिकारी के बच्चे क्यों अधिकारी नहीं बन सकते ? आप लोग इसमें क्यों मुद्दा उठा रहे हैं ? आपकी तो सरकार है, हर बात में जांच करायेंगे, आप जांच कराईये ना ? आप जांच क्यों नहीं कराते हैं ? आपके आई.ए.एस. अफसर लोग पहले भी अध्यक्ष रहते थे, पहले भी उनके यहां से लोग पास होकर आये हैं, आपने इस बात को क्यों नहीं उठाये हैं ? यूपीएससी के तर्ज पर पूरे छत्तीसगढ़ की परीक्षाओं को आप लेने जा रहे हैं, ऐसा क्यों होगा ? ऑल इंडिया में जो तैयारी करते हैं, वह बच्चे यूपीएससी की परीक्षा दिलाते हैं, आज हमारे ग्रामीण स्तर के बच्चों को कहोगे कि आप यूपीएससी स्तर पर परीक्षा दिलाओ, यह संभव है क्या ? हमारे स्टेट के बच्चे स्टेट स्तर पर तैयारी करते हैं, आप यूपीएससी स्तर पर उन बच्चों का परीक्षा लेंगे तो ग्रामीण बच्चों को तो और पिछड़ा करने का काम कर रहे हैं ? शहरी क्षेत्र में जो कोचिंग करते हैं, जो डॉक्टर हैं, इंजिनियर है, ऐसे बच्चों को आप ऑब्लाईज करने की कोशिश कर रहे हैं, हमारे ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे फिर से पीछे हो जायेंगे । ऐसी स्थिति में आप यूपीएससी की तर्ज पर परीक्षा लेंगे...।

श्रीमती लता उसेण्डी :- सभापति महोदय, इसीलिए शायद स्थानीय भर्ती को बंद करा दिये हैं ।

सभापति महोदय :- अनिला जी, इधर देखिये ना । भाषण समाप्त करिये ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्रीमती अनिला भेंडिया :- सभापति महोदय, हमारी सरकार के द्वारा हर विभाग में प्रमोशन किये गये हैं । इस तरह की स्थिति हमारे छत्तीसगढ में नहीं होनी चाहिये ।

श्री रामविचार नेताम :- सभापति महोदय, यह मामला दो पूर्व बाल विकास विभाग के मंत्रियों का है ।

सभापति महोदय :- जी, इसीलिये तो मैं ध्यान अपनी तरफ आकृष्ट करा रहा हूं।

श्री राम विचार नेताम :- यह इन दोनों का एक दूसरे की ओर चलेगा।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय सभापति महोदय, हम दोनों बहनें आपस में चर्चा कर लेंगी। उसकी चिंता आपको करने की जरूरत नहीं है।

सभापति महोदय :- आप चर्चा करिये ना। मैं इसीलिये बोल रहा हूं कि आप उनसे चर्चा नहीं कर रही है। आप मुझको देखिये।

श्री रामविचार नेताम :- सभापति महोदय, उनको यह गुस्सा रेडी टू ईट वाला भी है। (हंसी)

सभापति महोदय :- अब आप समाप्त करिये।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय सभापति महोदय, आप लोग गाय और गौठान की बात करते हैं कि इसमें भ्रष्टाचार हुआ, इसमें यह हुआ, उसमें वह हुआ। परंतु आपकी सरकार ने 15 सालों में क्या किया था ? आपकी सरकार गायों के चारे का पैसा खा जाती थी और पूरी गायों को गौशाला में मार देते थे। (मेजों की थपथपाहट) आपकी सरकार की यह स्थिति थी। हम लोगों ने तो कम से कम गायों को सुरक्षित करने की कोशिश की। कहीं गायों को मारने की कोशिश नहीं की है। आज यह बात बोलने से पहले आपको अपने गिरेबान में झांककर देखना चाहिए, उसके बाद दूसरो को बोलना चाहिए। यह स्थिति आपकी सरकार की थी। आज जो गायों के गोबरों की बात करते हैं। केन्द्र की सरकार ने यूरिया डीएपी बंद कर दी थी। राजेश भैया, उस समय यही आर्गेनिक खाद है, जो खाद हमारे किसानों के काम आया।

सभापति महोदय :- अनिला भेंडिया जी, एक मिनट।

श्री राजेश मूणत :- अनिला जी, आप पूर्व समाज कल्याण मंत्री रही है और बाल विकास विभाग भी आपके अंतर्गत आता था, जरा उस पर भी कुछ बोल दीजिये। रेडी टू ईट के अंदर जो बहनों का हक छीना गया है, उस पर भी कुछ बोल दीजिये, तो मुझको अच्छा लगेगा।

सभापति महोदय :- सुनिये, आप लोग एक दूसरे को टोका-टाकी मत करिये। 9 और 9, 18 लोग हैं। आप बोलिये और समाप्त करिये।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय सभापति महोदय, किसी भी बहनों का हक नहीं छीना गया था। हमारी सभी बहनों ने गौठानों में काम किया है बल्कि आप लोग जो अभी महतारी वंदन में जो राशि देने वाले हैं, उसका नतीजा देखने को मिलेगा। आगे-आगे देखते जाईये होता है क्या।

सभापति महोदय :- एक मिनट, मेरा आपसे और सभी से आग्रह है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रामकुमार यादव :- सभापति महोदय, एक मिनट। वो गोठियाईस, तेकरे सेती महु गोठिया देथव। आप रेडी टू ईट की बात करथव। मैं कहाथव जो महिला समूह के मन गौठान में जो पिरईन बनात रिहीसे, गोबर खरीदी करथे। तुमन ला खोले रहिथे...।

सभापति महोदय :- आप यह उत्तर प्रति उत्तर में मत पड़िये। आप जो अपना भाषण तैयार किये हैं, वह भाषण बोल दीजिये। अब कोई भी कुछ भी पूछेगा तो आप कितनों की बातों का जवाब देंगी।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- माननीय सभापति महोदय, आज यह लोग जो गौठानों में गोबर खरीदी के घोटाले की बात कर रहे हैं। हम लोगों ने यह योजना गांव की परिस्थितियों को देखते हुए शुरू की थी। गांव के वे गरीब लोग जिनके पास गाय थी, जिसके पास नहीं भी थी, वे लोग भी गोबर बेचते थे। वे कम से कम अपनी दिनचर्या का खर्चा निकाल लेते थे। यह काम हमने हमारी बहनों की भलाई के लिये, उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये किया है। यह महिला समूह की बात करते हैं। हमने महिला समूह के माध्यम से वनोपजों को खरीदने की कोशिश की है, जिससे हमने उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने का काम किया है। यह हमारी महिला समूहों के लिये हमारी सरकार ने काम किया है। सभापति जी, आप बैठने का ईशारा कर रहे हैं तो ठीक है परंतु मैं सरकार के इस अनुपूरक बजट का पूरा-पूरा विरोध करती हूं क्योंकि आप किस योजना में किस पात्र को लाभ देंगे यह आपके बजट में भी नहीं है और राज्यपाल महोदय के भाषण में भी नहीं है। सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिये आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

सभापति महोदय :- आपको भी धन्यवाद। आप वरिष्ठ सदस्य हैं। आप आसंदी का ईशारा भी समझ लेती है। ऐसे ही सबको समझना चाहिए। श्रीमती भावना बोहरा।

श्रीमती भावना बोहरा (पंडरिया) :- आदरणीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद ज्ञापित करती हूं। हम नये सदस्य इस सदन में चुनकर आये हैं। इस सदन में हमको अभी काफी सारी चीजें सीखनी हैं। हमको यह पहला अवसर मिला है कि अपनी बातें, अपने क्षेत्र की बातें और बजट में जो अपना सुझाव है या जो अपना विचार है, उसको हम रख सके, उसके लिये मैं सहृदय आपको धन्यवाद देती हूं। सभापति महोदय, साथ ही मुझे लगता है कि जो अनुपूरक बजट आया है, उसमें हर वर्ग का ध्यान रखा गया है, चाहे वह महिला की बात करें, चाहे गरीब किसानों की बात करें, चाहे सुदूर वनांचल में रहने वाले आदिवासियों की बात करें, मुझे लगता है कि हर तरीके से चाहे शिक्षा और रोजगार की बात करें, यह बजट हर तरीके से आने वाले छत्तीसगढ़ के भविष्य को निर्धारित करने वाला अनुपूरक बजट है। खासकर की हमने जो 2023 की विधान सभा के चुनाव में मोदी की गारंटी की बात की थी, जिसको लेकर इतना बड़ा जनमत भारतीय जनता पार्टी को मिला है। आज जो हम यहां पर 55 सीटों में बैठे हैं, यह निश्चित ही जनता का विश्वास है कि भारतीय जनता पार्टी का जो 15 सालों का कार्यकाल था और उनकी जो कार्यशैली थी, वही कार्यशैली आने वाले समय में जनता देखना चाह

रही थी। सभापति महोदय, जो बजट आया है उसमें खासकर प्रधानमंत्री आवास के विषय में जरूर बात करूंगी क्योंकि हम एक जनप्रतिनिधि हैं और हम लगातार पिछले 5 सालों से क्षेत्र में जा रहे थे। मैं महिला एक हूं तो खासकर महिला की बात पहले करूंगी। जिस तरीके से आवास को लेकर महिलाओं में चिंता थी और हमारे मुख्यमंत्री, आदरणीय विष्णुदेव साय जी ने स्वयं के मुख्यमंत्री आवास में जाने से पहले जो गरीबों के आवास का बजट सुनिश्चित किया है, उसकी जो राशि सुनिश्चित की है, वह निश्चित ही उनकी कृतज्ञता, संवेदनशीलता दिखाती है कि उनकी गरीब किसानों के लिए भी संवेदनशीलता है। दूसरा मैं महतारी वंदन योजना की जरूर बात करूंगी। क्योंकि सामने हमारे जो विपक्ष में भाई बैठे हैं वह लाडली योजना की बात कर रहे थे जो मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के द्वारा चालू की गई थी मैं बताना चाहूंगी कि शायद उनके पास अपडेट होगा। अभी मध्यप्रदेश में जो महिलाओं का खाता है अगर उनका चालू खाता देखें तो उसमें कम से कम प्रति माह पांच या छ: हजार रूपये उनका बजट दिखाया जा रहा है जो उनके खाते में जमा राशि है तो जो महतारी वंदन योजना 1 हजार रूपये की राशि है कहीं न कहीं उनको सक्षम और समर्थ बनाने लिए है। जो उनकी छोटी-छोटी सुविधाएं हैं चाहे वह दवाई, बच्चों की फीस को लेकर हो। यह कहीं न कहीं उनके लिए बहुत बड़ी मदद साबित होगी। मुझे लगता है कि आदरणीय दीदी अनिला भेंडिया जी जो महिलाओं, रेडी टू ईट या महिला स्व सहायता समूह के विषय में बात कह रही थी। मैं स्वयं एक महिला हूँ। मैंने विधान सभा में आने के पहले जिला पंचायत के सभापति के रूप में काम किया है। मेरे पास महिलाएं लगातार इस विषय को लेकर आती हैं। मैं याद दिलाना चाहूंगी कि लगभग छत्तीसगढ़ में 20 हजार से अधिक जो रेडी टू ईट की महिलाएं हैं, जिनका काम छिन लिया गया है, जिनका आज भी कोर्ट में केस चल रहा है वह लगातार हाईकोर्ट में लगा रही हैं कि हमें वह काम वापस मिलना चाहिए, जो हरियाणा की किसी प्राईवेट कंपनी, ठेकेदार को दे दिया गया था। जहां तक जो समूह की बात कर रही है मैं याद दिलाना चाहूंगी कि जो गौठान में समूहों की बात कर रही थी कि गौठानों में हमारी महिलाओं को रोजगार मिला है, वह भी चिन्हांकित समूहों को मिला है। जो उस समय कांग्रेस सरकार को समर्थन करते थे, उनके लिए काम करते थे जिनके परिवार के सदस्य हैं। कहीं न कहीं कांग्रेस के कार्यकर्ता हैं उन समूहों को ही काम दिया गया है आज भी बहुत सारे समूह बेरोजगार हैं। जो भारतीय जनता पार्टी की सरकार के समय में कभी अगरबत्ती, साबुन या अन्य जो काम करते थे आज भी वह समूह बेरोजगार बैठे हैं। इन समूहों की संख्या लाखों में है। हम यहां पर जिसके रिकॉर्ड भी उपलब्ध करा सकते हैं। उसके बाद हम 2 सालों के बोनस की बात करते हैं। हमें याद है कि जिस समय हम विपक्ष में थे। हमें यह चिढ़ाया जाता था कि आप लगभग 13-14 सीटों में सिमट गये हैं। यह आपने जो असत्य वायदे किये थे यह उसके कारण है तो जब भारतीय जनता पार्टी सरकार में थी तो उन्होंने सिर्फ एक वायदा पूरा नहीं किया था। उन्होंने दो सालों का बोनस देने की बात कही थी तब हम लगभग 13-14 सीटों में सिमट गये थे, लेकिन कांग्रेस सरकार ने 36 घोषणाएं की थीं और

मुझे नहीं लगता है कि उन 36 घोषणाओं में ज्यादा कुछ घोषणाएं पूरी हुईं होंगीं। उसमें से दो सालों का बोनस बकाया था। उन्होंने बोनस देने की बात की थी, जो भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने अपने कार्यकाल में नहीं दिया था, जो उनको देना था, लेकिन उन्होंने नहीं दिया था। आप यह सोच लीजिए कि जो अगर इतना बोलने के बाद भी आज 35 सीटों में सिमट गये हैं तो आने वाले कितने सालों तक जनता 36 असत्य वायदे जो घोषणा पत्र में थे उन्होंने उसका जवाब दे दिया है। यह बहुत खुशी की बात है कि बजट में इसको भी प्रमुखता से डाला गया है। इसके लिए भी 3800 करोड़ रूपये का प्रावधान रखा गया है, जो आने वाले 25 दिसम्बर को आदरणीय अटल बिहारी बाजपेयी जो छत्तीसगढ़ के निर्माता हैं उनकी जयंती के दिन यह सुशासन दिवस पर किसानों को मिलेगा। मुझे लगता है कि बजट में सारी चीजें बहुत अच्छी तरीके से समाहित हैं और यह छत्तीसगढ़ के लिए एक अच्छा बजट साबित होगा। निश्चित ही आने वाले समय में यह छत्तीसगढ़ के उज्जवल भविष्य के लिए एक छोटा सा आईना है। मुझे लगता है कि आने वाले समय में काफी कुछ योजनाएं हैं, जो धरातल में उतारनी है। मैं सिर्फ यही कहना चाहूंगी कि पक्ष और विपक्ष, हम अभी विपक्ष की बातें सुन रहे थे। यह मेरा पहला अनुभव है। मुझे लग रहा है कि जिस तरीके से माननीय उमेश पटेल जी अपनी बातों को रख रहे थे। जब हम पहली बार सदन में आये, जब हम उनकी बातों से कनवेन्स नहीं हो सक रहे हैं तो मुझे नहीं लगता है कि जनता विपक्ष की बात को सुनकर, उन बातों से कनवेन्स होगी। जनता ने भारतीय जनता पार्टी की सरकार पर भरपूर विश्वास दिखाया है हम उसको आगे उसी तरीके से कायम भी रखेंगे।

माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का समय दिया, उसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद् । (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- आपका भाषण समाप्त हो गया?

श्रीमती भावना बोहरा :- माननीय सभापति महोदय, जी।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल (डोंगरगढ़) :- माननीय सभापति महोदय, आपका तहे दिल से धन्यवाद् कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया।

माननीय सभापति महोदय, मैं पहली बार चुनाव जीतकर आयी हूँ और मैंने अभी सभी वक्ताओं की मुद्दे की बातें सुनीं। अभी मैं भावना दीदी जी की बातों को ध्यान दे रही थी। जिसमें अभी कहा गया था कि दो सालों का धान का बोनस नहीं दिया गया था। जो आपकी सरकार में दो सालों का बोनस नहीं दिया गया था उसका कारण जो भी रहा होगा, लेकिन सत्ता में आने के बाद आपको दो सौ रूपये बोनस के साथ-साथ, 7 सालों का किसानों का ब्याज देना चाहिए।(मेजों की थपथपाहट) क्योंकि किसान उसी बोनस के कारण कर्ज में डूब गये थे। उन 15 सालों में बहुत से किसान आत्महत्या कर रहे थे।

श्रीमती भावना बोहरा :- बहन मैं थोड़ी सी जानकारी अपडेट कर रही हूँ कि वह 300 रूपये है 200 रूपये नहीं है।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- माननीय सभापति महोदय, मुझे बोलने दिया जाए।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- माननीय सभापति महोदय, वह बिल्कुल सही बात बोल रही है किसानों को ब्याज सहित राशि दी जानी चाहिए। 5 सालों में डबल हो जाता है।

सभापति महोदय :- आप उनको बोलने तो दीजिए।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- माननीय सभापति महोदय, मैं आपको यह बताना चाहूंगी । आपने ही कहा है कि पहली बार बोल रहे हैं तो कोई खण्डन नहीं दिया जायेगा। मैं अपनी बातें पूरे विस्तार से कहना चाहती हूँ। मैं उसका पूरा ध्यान रखूंगी।

सभापति महोदय :- एक मिनट। आप पहली बार आयी हैं। उनके भाषण में कोई डिस्टर्ब न करे। यही तो मैं आपको तब से कह रहा हूँ। उनको बोलने दीजिए। वक्ता का फ्लो बिगड़ जाता है। आप बोलिए।

समय :

2.00 बजे

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- माननीय सभापति महोदय, इसमें महतारी वंदन योजना के तहत प्रत्येक विवाहित महिलायें को महीने में 1 हजार रुपये दिये जायेंगे जिसमें 70 लाख महिलाओं को आप नहीं दे रहे हैं। जिन 60 लाख महिलाओं का फार्म आलरेडी भराया जा चुका है तो सिर्फ 30 लाख महिलाओं को क्यों दिया जा रहा है? क्या यह महिलाओं के साथ धोखाधड़ी नहीं हो रही है? अभी गोमती दीदी ने भी कहा था कि यह अनुपूरक बजट किसानों, महिलाओं, युवाओं, सभी के लिये बहुत अच्छा साबित हो रहा है। इसमें आपको कौन सा सही लग रहा है। 70 लाख महिलाओं के साथ में धोखाधड़ी हो रही है तो यह अनुपूरक बजट कहां से सफलतापूर्वक हो रहा है। इस अनुपूरक बजट में किये गये प्रावधान कहां सही हैं? मैं आपसे पूछना चाहूंगी कि इनके घोषणा पत्र में लिखा था कि रानी दुर्गावती योजना के तहत गरीब परिवार की लड़कियों को डेढ़ लाख रुपये का आश्वासन प्रमाण पत्र दिया जायेगा। जबकि अभी अनुपूरक अनुमान में कही पर भी इसका उल्लेख नहीं है। इसको हम कैसे बोलेंगे कि यह जो अनुपूरक बजट लाया है, एकदम सही है या जनता के हित में है। दूसरी बात इन्होंने अपने घोषणा पत्र में रसोई गैस का उल्लेख किया है कि सभी को 500 रुपये में रसोई गैस मिलेगी, लेकिन अनुपूरक अनुमान में इसका भी कही उल्लेख नहीं है। माननीय सभापति महोदय, आपको अभी बताना चाहूंगी कि किसानों को जो अभी धान का समर्थन मूल्य मिलना चाहिए था, जब उसकी घोषणा हुई, जब तक आवंटित हुआ, उससे पहले बहुत से किसान कर्ज ले चुके थे। उसमें एक नारायणपुर की घटना सामने आ चुकी है। ऐसे बहुत से किसान कर्ज से डूबे हुए हैं। क्या उनके लिए हमारी यह प्राथमिकता नहीं बनती कि उनके बीमा के लिए अनुपूरक बजट में प्रावधान किया जाये? क्योंकि अभी यह देखा जा रहा है कि किसान की फसल बहुत अधिक मात्रा में खराब हो चुकी है, उनकी फसल का नुकसान हो चुका है तो इसके लिए भी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अनुपूरक बजट में कोई प्रावधान नहीं किया गया है। मैं अपनी वाणी को यहीं पर विराम करने से पहले एक और आखिरी बात कहना चाहूंगी कि आपने जो अनुपूरक बजट बनाये हैं, उसमें न ही किसानों के लिए उल्लेख है, युवाओं के लिए जो भत्ते की बात बोली थी, उसके लिए भी अनुपूरक बजट में सही दिशा नहीं मिली है तो यह अनुपूरक बजट कहीं से भी जनता के हित में नहीं है। माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने के लिए समय दिया, उसके लिए धन्यवाद।

श्री गजेन्द्र यादव (दुर्ग शहर) :- माननीय सभापति महोदय, मैं आज तृतीय अनुपूरक बजट के समर्थन में सरकार के पक्ष में बात रखने के लिए अपनी बात बोलत हौं। आज हमन हा अगहन बृहस्पत मनात हन। छत्तीसगढ़ में अगहन बृहस्पत के एक अलग महत्व हे, छत्तीसगढ़ के महतारी मन के आज के दिन बहुत विशेष रहिथे। अइसन शुभ दिवस पे आप इस सदन में हमन हा सब महतारी वंदन योजना के बारे में बात करथन, विषय रखथन। ओखर लिये मैं आपके माध्यम से हमर माननीय मुख्यमंत्री और ये सदन के सब सदस्य मन ला बधाई देवत हौं कि आज अइसन शुभ दिन में महतारी वंदन योजना के लिये बजट में राशि के प्रावधान रखथन। मैं ये बात कहना चाहत हौं हमर छत्तीसगढ़ हा हमन छत्तीसगढ़ महतारी के नाम से जानथन, छत्तीसगढ़ महतारी के वंदना होथे और वंदना के साथ-सा यहां के रहवईया किसान मन के बात करथन। पहली बार अइसे होय हे, अगहन के महीना हे, सब किसान मन हा सहकारी सोसायटी में धान बेचेत हे। हमन हा घर में जो पूजा करथन वो पूजा में धान के बाली के पूजा होथे। अइसे धान के पूजा के समय महतारी मन हा किसान मन के ध्यान में रख के जो पिछले दो किश्त हमन मन के छूटे रहिस हे, हमर पिछली सरकार के कुछ त्रुटिवश 02 साल के बोनस छूट गये रहिस, ओ बोनस के राशि ला देय के आज हमन ये बजट मा बात रखत हन। ओखर लिये भी मैं आपके माध्यम से सदन के नेता हमार मुख्यमंत्री, हमर सदन के सभी सदस्य ला बहुत-बहुत बधाई, शुभकामना देथौं। पिछले 04 साल से बिजली बिल हॉफ के बात होत रहिस हे लेकिन मोला अइसे लगत रहिस कि बिजली हॉफ तो नई होईस, बिजली हॉफ हो गये रहिस, किसान हा हांपे लग गये रहिस हे। मैं किसान भी हौं, 04 साल से मैं देखे हौं एक लाख से भी ज्यादा किसान मन के कृषि पंप हा पेन्डिंग रहिस हे। मैं दुर्ग में रहिथौं, दुर्ग शहर से प्रतिनिधित्व करत हौं। पिछले 06 महीने से दुर्ग में ये स्थिति हे कि कोई भी उपभोक्ता ला बिजली के मीटर नई मिलत हे। आज मैं आपके माध्यम से सदन के नेता, सदन के सब सम्माननीय सदस्यगण ला मैं बधाई देथौं कि आप मन हा आज ये बजट के माध्यम से ऊर्जा विभाग ला जो सरकारी अनुदान देथौ, पॉवर कंपनी के ऋण ला टेक-ओवर करत हौ, ओकर लिये मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देवत हौ। जेकर माध्यम से जेन किसान मन के लगातार कृषि पंप अभी तक लंबित हे, ओहर मोला अइसे लगथे कि आज हमर बजट के माध्यम से ओ सब किसान मन के लंबित कृषि पंप हा वापस मिलही अउ जोन-जोन किसान अउ शहर में रहइया जो निवासी हे, जेकर उपभोक्ता, जेकर मीटर के समस्या के कारण ओकर घर के बीजली मीटर नइ लगे हे, ओकर निदान भी होही, अइसे मैं मानत हव।

सभापति महोदय, मैं एक बात अउ बात कहना चाहता हौं कि पिछले चार साल से ये मन गौ-गोठान के बात बहुत करिस। आज के समय में 1 सामान्य आदमी, सामान्य परिवार के लिए गौ पालन करना बहुत असंभव और तकलीफ वाला काम हे। छोटे किसान, गांव में रहइया मजदूर और शहर में रहइया मजदूर मन के लिए आप मन जो कुक्कुट, बकरी पालन के योजना ये बजट के माध्यम से लाय हौ, ओकर लिये धन्यवाद देथौं। छोटे आदमी के लिए बकरी पालन अपन आप में आधा रात में भी अगर ओला पइसा के आवश्यकता रही तो ओला बकरी के द्वारा अपन पइसा के उपार्जन कर सकत हे। मैं ओकर लिये अइसे मानत हौं कि आज आपके माध्यम से सदन के नेता, हमर मुख्यमंत्री जी ला धन्यवाद देथौं कि आप बकरी पालन, कुक्कुट पालन के क्षेत्र में एतेक छोटे-छोटे काम के लिए, छोटे आदमी के लिए, मंझोले आदमी के लिए, मजदूर के लिये, आप चिंता करे हौ, ओकर लिये आप ला बहुत-बहुत धन्यवाद देवत हौं। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से यह सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री अउ सदन के सदस्य मन ला बधाई देवत हौं। पिछले चार साल से लोग मन बर रहे के बहुत समस्या रिहीसे। जो हमर प्रधानमंत्री आवास लंबित रिहीसे। आप पहला केबिनेट में माननीय मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, हमर सब भाई मन ला मैं हर बधाई देवत हौं, धन्यवाद देवत हौं कि आप 18 लाख नया मकान बनाय के विचार करे हौ, केबिनेट में प्रस्ताव लाय हौ, ओकर लिये मैं धन्यवाद देवत हौं। आज के बजट में, हितग्राही जो पिछले कई दिन से जेकर मकान आधा बने हे, बीच मा बन के छूट गेहे, घनरा अभाव मा छूट गेहे, आज आपके बजट के माध्यम से आप पूरा करत हौ, ओकर लिये भी मैं हा बहुत-बहुत धन्यवाद देवत हौं काबर कि हमर जो भाई मन हे, जो हितग्राही हे, गरीब आदमी हे, जेकर मकान अभी छूटे हे, ओकर मकान पूरा हो सके, ओकर लिए बहुत धन्यवाद देवत हौं। कुछ बात मैं अउ कहत हौं। आपके बजट पुस्तिका के माध्यम से मैं हर आज पढ़े हौं कि आप मन हा बजट में यह बात के प्रावधान करके हौ कि जो शहर में, गांव में माध्यमिक शिक्षा के जो निजी स्कूल हे, शिक्षित बेरोजगार लइका मन, जेला रोजगार नइ पाय, ओमन हा गांव-गांव में, शहर में, कस्बा में, पारा-मोहल्ला में जो स्कूल चलाथे, पिछले 3 साल पहले कोरोना वैश्विक महामारी आइस, ओमा जो सबसे ज्यादा कोरोना वायरस के दंश ला भुगतिस हे, तो बीच के जो मध्यम वर्ग के स्कूल हे, ओ स्कूल के पालक, ओ स्कूल में पढ़ाने वाला शिक्षक अउ ओ स्कूल के संचालन करने वाला संचालक, ये तीनों हर कोरोना के ग्रास के कारण बहुत दुष्परिणाम झेलिस हे। आज आपके बजट के माध्यम से ओमन ला आर्थिक सहायता देहे के बारे में लिखे हौ, मोला अइसे लगथे कि जो कोरोना काल में स्कूल संचालक, स्कूल के पालक अउ स्कूल में पढ़ने वाला लइका अउ पढ़ाने वाला टीचर हा बहुत सारा दंश झेलिसे ओला आपके माध्यम से प्रतिपूर्ति हो जाही। अइसे मैं हर मानत हौं। आपके आज यह बजट हर हर वर्ग के लिए चाहे किसान, जवान, मकान अउ यहां के युवा मन बर मैं विशेष धन्यवाद देवत हौं। हमन छत्तीसगढ़ के षष्ठम् विधान सभा के सदस्य बन कर आए हन अउ आज पहली बार ही पटल में आप मन युवा बेरोजगार के लिए जो बजट के प्रावधान करे हौ, ओकर लिये भी मैं आपके माध्यम से

सदन के नेता, उप नेता अउ सभी सदस्य ला बहुत-बहुत बधाई देवत हौं कि आप युवा मन के लिए सोचे हौ ओकर लिये बहुत-बहुत आभार व्यक्त करत हौ। (मेजों की थपथपाहट) मैं आउ एक ठग बात कहत हौं। मैं छत्तीसगढ़िया आदमी हव। हमन यादव अन। देवारी मा दोहा पारथन। जैसा कि - "मया, दया दियो रे भैया, तइसो के मिलय अशीष हो, अन धन तोर घर भरे, जियो लाख वरिश हो।" अइसे कइथे। आज हमन ला जइसे आशीर्वाद जनता जनार्दन हर देहे, वइसने आशीर्वादस्वरूप आप सदन के नेता, सदन के सब सदस्य हर जो किसान ला, जवान ला यहां छत्तीसगढ़वासी ला हमन वापस भेजत हन, ओकर लिये बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुए, सभापित महोदय, आप मोला बोले के मौका देहौ, ओकर लिये बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुए अपन बात रखत हौ।

सभापति महोदय :- विक्रम मण्डावी जी।

श्री विक्रम मण्डावी (बीजापुर) :- माननीय सभापति महोदय, सरकार का पहला अनुपूरक बजट पेश हुआ है और यह बजट को पूरा प्रदेश देख रहा था कि जिस तरीके से बड़े-बड़े वादे करके उनकी सरकार बनी। अगर मैं खासतौर पर बात करूं कि इस अनुपूरक बजट को जिस तरीके से पूरे प्रदेश के किसान, युवा, माताएं-महिलाएं, सभी देख रहे थे कि जिस तरह से जो बड़े-बड़े वायदे हुए, वह वायदा इस बजट में पूरा होगा लेकिन इस बजट के पेश होने के बाद कहीं से भी ऐसा नहीं लगा कि कोई भी वायदा इस बजट में पूरा हुआ है ।

माननीय सभापति महोदय, आप सभी यह जानते हैं कि जिस तरह से सभी किसानों में आदिवासियों में, युवाओं में, खासकर हमारी जो महतारी बहनें हैं वे हताश और निराश हुई । जो वायदा किया गया था कि जैसे ही हमारी सरकार बनेगी, सबसे पहले हम किसानों का कर्जा माफ करेंगे । जब पिछली सरकार बनी थी तो हमारी सरकार ने, हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी ने मात्र 2 घंटे के अंदर कर्जा माफ का वायदा पूरा किया था, उन्होंने सीधे मंत्रालय पहुंचकर उसमें हस्ताक्षर किये थे लेकिन इस सरकार के अंदर में कोई भी ऐसा काम 2 घंटे के अंदर नहीं हुआ । हमारे अजय चंद्राकर जी बहुत विद्वान हैं । उनको संसदीय ज्ञान है । वे हमेशा एक चीज बोलते रहे हैं, जब भी किसानों की बात आती तो वे उसमें विरोध करते हैं । अगर किसान गोबर बेचता है तो उनको उसमें भी आपत्ति है । किसान न्याय योजना से अगर किसान को पैसा मिलता है तो उसमें भी आपत्ति है । आखिर ये चाहते क्या हैं, क्या किसानों को पैसा नहीं मिले ? क्या किसान गोबर नहीं बेचे ? गौठान के माध्यम से अपनी बात नहीं रखे ? कहीं न कहीं हमारी जो पिछली सरकार थी अर्थात् हमारी सरकार ने उनका जीवन स्तर उंचा उठाने का काम किया है । आज किसानों का कर्जा माफ नहीं हो रहा है । सरकार के जो उपमुख्यमंत्री जी हैं और बहुत से बड़े नेताओं ने बार-बार कहा कि हम सभी का कर्जा माफ करेंगे लेकिन आज यह विरोधाभाष आता है कि कर्जा माफ नहीं होगा । यह जो दो अर्थ की बात हो रही है यह किसानों के साथ धोखा है । जिस तरीके से हमारे बस्तर अंचल और नारायणपुर का जो किसान है हीरू बढ़ाई । उसने आत्महत्या की है । आप

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सभी जानते हैं कि वह परिवार का इकलौता, जिसके ऊपर पूरा परिवार आश्रित था । आज उसकी आत्महत्या से पूरा परिवार सदमे में है, उससे उबर नहीं पा रहा है । आने वाले समय में इस तरीके से बहुत सारी घटनायें होने की आशंका है तो इस सरकार को अविलंब कर्जा माफ करना चाहिए । जिस तरीके से कर्जा माफ के वायदे पर भरोसा करके, गारंटी पर भरोसा करके पूरे प्रदेश के किसानों ने कर्जा लिया, बड़े पैमाने पर कर्जा लिया लेकिन यह उनके साथ धोखा है । यह सरकार किसान बोनस की बात कर रही है, मैं इस पर बात करना चाहता हूं कि वर्ष 2016-17 जो 2 वर्ष का किसानों के धान का बोनस देंगे, आज 7 साल होने जा रहे हैं । आज आप 7 साल के बाद बोनस दे रहे हैं, इन 7 सालों में यदि हम इस राशि को बैंक में जमा करें तो हमारा पैसा दुगूना होता है । अभी भी इसमें स्पष्ट नहीं है कि हम किस किसान को बोनस देंगे, क्या वास्तव में वह किसान वहां पर अभी जीवित है कि नहीं है ? किसी की जमीन का बंटवारा हो चुका है ऐसी बहुत सारी बातें हैं । जिसको इस सरकार ने स्पष्ट नहीं किया है और जिस तरीके से किसान की बात कर रहे हैं, धान का समर्थन मूल्य 3100 रूपये देने की बात हुई थी, आज उसमें भी स्पष्ट नहीं है कि हम 3100 रूपये देंगे कि नहीं देंगे ? जो किसान अपना धान बेच चुके हैं, उन्हें 2183 रूपये की दर से भुगतान हो रहा है, बाकी पैसा मिलेगा, कब मिलेगा, कैसे मिलेगा । इस सरकार की ओर से इसमें जो वक्तव्य आना चाहिए वह कहीं पर भी नहीं है । 21 क्विंटल की बात है, पहले बोलते रहे कि 20  या 21 क्विंटल नहीं हो सकता था फिर अब 21 क्विंटल का आदेश किये हैं वह भी इस सीजन में और अब यह कह रहे हैं तो उसमें भी स्पष्टता नहीं है कि वह किस तरीके से जो बेच चुके हैं वह किसान कैसे बेचेंगे ? कब बेचेंगे ? कहीं से लायेंगे? इसमें भी कुछ स्पष्ट नहीं है ।

मानानीय सभापति महोदय, हम देख रहे हैं कि सरकार कल से ही एक और प्रधानमंत्री आवास योजना की बात कर रही है । इस प्रधानमंत्री आवास योजना में अब यह कह रहे हैं कि 18 लाख लोगों को हम प्रधानमंत्री आवास देंगे । चलिये अच्छी बात है, 18 लाख लोगों को देंगे । लेकिन इस संबंध में पहले ही हमारी सरकार ने लगभग 7 से 8 लाख लोगों को जो प्रभावित परिवार थे, उनको आवास का लाभ दे चुके हैं। क्या वे इसमें शामिल हैं ? शामिल हैं या नहीं हैं । आवास कैसे देंगे, कब देंगे और कितने समय में देंगे ? यह कहीं से भी इसी तरीके से जो बात बजट में या सत्ता के वक्तव्य में आना चाहिए वह नहीं है और जिस तरीके से बड़े पैमाने पर चुनाव के समय जो फॉर्म भराये गये, लाखों फॉर्म भराये गये उन फॉर्मों का क्या होगा? इसका भी उल्लेख यहां पर नहीं है । आपने जो फॉर्म भरवाये हैं, उन व्यक्तियों को लेंगे, नहीं लेंगे और वर्तमान समय में जो प्रतीक्षा सूची रहती है उसमें से लेंगे ? कहीं पर भी इस तरीके से जो बात है उसका उल्लेख नहीं है । महतारी वंदन योजना को एक बड़ी योजना के नाम से लाये थे, आप उस योजना में भी देखिए कि लाभ किसे मिलेगा ? कैसे मिलेगा ? कब मिलेगा? ये बात भी सरकार की तरफ से स्पष्ट नहीं है। माननीय सभापति महोदय, मैं चाहता हूं कि सरकार की तरफ से यह बात स्पष्ट तौर पर आये। हम जिस क्षेत्र में रहते हैं और जाते हैं तो बहुत सारी बातें सुनने

और देखने को मिल रही हैं कि क्राइटेरिया तय किया जा रहा है कि इसको मिलेगा, इसको मिलेगा, लेकिन उस समय कहीं पर भी इस बात का उल्लेख नहीं था कि इसको मिलेगा, उसको मिलेगा, बी.पी.एल. वालों को मिलेगा या ए.पी.एल. वालों को मिलेगा, सभी महिलाओं को समान रूप से देने की बात हुई थी और बजट में जो प्रावधान है, उस प्रावधान से बहुत ही कम महिलाओं को मिलेगा। जैसे हमारे साथी उमेश पटेल जी ने कहा कि लगभग 1 करोड़ महिलाएं ऐसे हैं, जिनको लाभ मिलना चाहिए था, लेकिन मुश्किल से बजट की जो राशि है, उसके संबंध में बात करें तो मैं जहां तक समझता हूं कि 10 या 15 लाख महिलाओं को ही उसका लाभ मिलेगा। माननीय सभापति महोदय, बिजली बिल हाफ योजना की बात हुई, हमारी सरकार के समय लगभग 40 लाख से ऊपर लोगों को इसका लाभ मिलता था और उन्हें बाकायदा सूचना भी दी जाती थी कि हमने इतनी-इतनी राशि को माफ किया, वह राहतभरी योजना थी।

श्री श्याम बिहारी जायसवाल :- बिजली बिल कहां माफ हुआ? किसान हॉफ रहे हैं।

श्री विक्रम मंडावी :- लेकिन उस योजना का जिस तरीके से विरोध हो रहा है, उसे लेकर भी ग्रामीणों में रोष व्याप्त है और मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि 5 साल हमारी सरकार ने गांव, गरीब, किसान, आदिवासियों के लिए जो योजना लाया तथा चलाया एवं धरातल पर पहुंचाने का काम किया, ये बहुत बड़ी चीज है और हमारे विपक्षी साथी बार-बार ये कह रहे हैं कि 5 साल, 5 साल। मैं उनसे कहना चाहता हूं कि हमने 5 साल क्या किया और क्या नहीं किया, लेकिन अब आपको 5 साल मिले हैं, उस 5 साल में आपको करना है। आप उसकी बात करिए, न कि हमारे इस 5 साल की। बड़े-बड़े वादों की लगातार बातें हो रही हैं, कहीं पर डबल इंजन की बात हो रही थी, कहीं पर गारंटी की बात हो रही थी, ऐसी बहुत सारी बातें हो रही थीं, लेकिन इस बजट में कहीं पर भी न डबल इंजन वाली बात दिखी और न गारंटी वाली बात दिखी। तो माननीय सभापति महोदय, मैं आपसे कहना चाहता हूं कि कम से कम इन्होंने जो वादा किया है, उस वादे को पूरा करे। गांव, गरीब और किसान की बात कर रहे थे । स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल, एक बड़ी योजना हमारी सरकार ने लायी थी, जिसमें एक गांव का गरीब, किसान का बेटा भी उस स्कूल में पढ़ता था, एक आदिवासी का बेटा भी उस स्कूल में पढ़ता था और एक अमीर से अमीर का बेटा भी वहां पर पढ़ता था तो ये इस बड़ी सोच के साथ हमारी सरकार हमारे मुखिया ने किया था। तो मैं सरकार से मांग करूंगा कि ज्यादा से ज्यादा अपने वादों को पूरा करे। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

सभापति महोदय :- धन्यवाद। श्री लखनलाल देवांगन।

श्री लखनलाल देवांगन (कोरबा) :- माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी ने जो अनुपूरक बजट का प्रावधान लाया है, उसका समर्थन करता हूं और सभी मांगों का समर्थन करते हुए मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देता हूं। हमारा घोषणा पत्र था मोदी गारंटी, उसमें सभी घोषणाओं

का आज प्रथम अनुपूरक बजट लाया गया है और जैसे हमारे विपक्ष के साथी बोल रहे हैं कि धोखा हुआ तो पहले अपनी सरकार के कार्यकलाप को देखें कि उनके 5 साल में किस तरह से छत्तीसगढ़ की जनता ने ठगा, चाहे बिजली बिल हाफ में ठगा हो, चाहे युवाओं और बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता के नाम से ठगा हो, वृद्ध माता-पिताओं को 1500 रूपये पेंशन देने के नाम से ठगा हो, माताओं और बहनों को 500 रूपया मासिक देने के नाम पर ठगा हो, हर क्षेत्रों पर ठगने का काम किया। आज नौजवान, गरीब 5 साल में परेशान हुए और फिर से छत्तीसगढ़ की जनता ने भारतीय जनता पार्टी के ऊपर विश्वास किया है और निश्चित तौर पर हम लोगों ने जो वादा किया है, वो 1-1 वादा हमारा पूरा होगा, चाहे महातारी वंदन योजना हो, हमारी सभी बहनों को जो प्रति महीना 1 हजार रूपया देने का वादा हुआ है, वह हम देंगे। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को धन्यवाद देता हूं कि 2 साल के किसानों का बोनस देने की बात 25 दिसंबर को माननीय अटल बिहारी वाजपेयी  के जन्म दिवस पर बोनस का भुगतान किया जाएगा । विपक्ष का कहना है कि उनको ब्याज सहित देना चाहिए तो पहले इनको सोचना चाहिए कि जब गंगाजल की कसम खाकर कहा था कि हम बोनस देंगे तो फिर पांच साल तक क्यों नहीं दिया, क्यों किसानों को ठगा ? भारतीय जनता पार्टी उस दो सालों के बोनस को देने जा रही है । निश्चित तौर पर 21 क्विंटल प्रति एकड़ और 31 सौ रूपए प्रति क्विंटल धान खरीदी की बात हमने की है 3100 रूपए एक मुश्त देने का वायदा भारतीय जनता पार्टी पूरा करेगी । भारतीय जनता पार्टी अपने प्रत्येक वायदे को माननीय मुख्यमंत्री जी के माध्यम से, सरकार के माध्यम से पूरा करेगी । कांग्रेस ने जनता को ठगा उसे जनता कभी नहीं भूलेगी । हर क्षेत्र में इन्होंने जनता को ठगा और पूरे पांच साल भ्रष्टाचार का खेल पूरे प्रदेश में चला । चाहे वह कोयला हो, चावल हो, शराब हो, गौठान हो, हर चीज में भ्रष्टाचार करके कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ की जनता को लूटा । चूंकि सारी बातें आ चुकी हैं । आपने मुझे बोलने का मौका दिया उसके लिए धन्यवाद देते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं । जय हिंद, जय भारत, जय छत्तीसगढ़ ।

श्री गुरू खुशवंत साहेब (आरंग) :- माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे अनुपूरक बजट पर बोलने का सौभाग्य प्रदान किया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद् देता हूं । यह छत्तीसगढ़ गुरू घासीदास बाबा जी एवं माता कौशल्या की धरती है । गुरू घासीदास बाबाजी का संदेश है मनखे-मनखे एक समान और उनका उद्देश्य है कि प्रत्येक वंचित व्यक्ति को उसका हक़, अधिकार मिले । उसी संदेश और उद्देश्य को 200 साल बाद पंडित दीन दयाल उपाध्याय जी ने हर वंचित व्यक्ति तक विकास पहुंचाने के लिए कार्य किया । वर्तमान में उन्हीं उद्देश्यों को देश में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं छत्तीसगढ़ में माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय जी कर रहे हैं । सभापति महोदय जी, इस राष्ट्र को आजादी मिलने के पीछे सबसे बड़ा नारा था वंदे मातरम् । सभी को मेरा वंदे मातरम्, वंदे मातरम्, वंदे मातरम्, श्री राम वंदे मातरम्, श्री कृष्ण वंदे मातरम्, गुरू घासीदास वंदे मातरम्, भारत का कण-कण यह कह रहा है श्री शंकर वंदे मातरम्, मानस है वंदे मातरम्, गीता है वंदे मातरम्, सूरदास, तुलसीदास, सब

संत हैं वंदे मातरम् । माननीय सभापति महोदय, अनेकानेक विभागों एवं कार्यों पर इस अनुपूरक बजट में चर्चा होनी है । परंतु मैं सबसे पहले मां पर बोलूंगा । मां को कभी परिभाषित नहीं किया जा सकता । सूर्य को परिभाषित किया जा सकता है, चन्द्रमा को बच्चे के लिए धरती पर उतारा जा सकता है । आकाश-पाताल को परिभाषित किया जा सकता है परंतु मां को कभी परिभाषित नहीं किया जा सकता । हमारी सरकार इस अपरिभाषित प्रेम "मां" को वंदित करने का प्रथम प्रयास कर रही है । महतारी वंदन योजना को महज तीन-चार दिनों में ही अनुपूरक बजट में शामिल कर हमारे प्रदेश की लाखों माताओं को उपहार भेंट करने का काम किया है ।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति महोदय, हमर गुरू बबा आए हे । त हमन ला बिश्वास हे कि ए दारी दारू ह जरूर बंद हो जाही, हमन ला पूरा भरोसा हे ।

श्री अनुज शर्मा :- पांच साल बाद सुरता आत हे ।

श्री गुरू खुशवंत साहेब :- क्रमांक 14 से 22 तक में इसके लिए प्रावधान हैं । इसके समर्थन में मैं अपना मत व्यक्त करता हूं । राजनीतिक लाभ हेतु अनेकानेक घोषणाओं को बिना दलगत् राजनीति के हम समर्थन कर रहे हैं । जिला बनाया, स्टाफ नहीं । अस्पताल की घोषणा, स्टाफ नहीं । महाविद्यालय की घोषणा, स्टाफ नहीं । बेरोजगारी भत्ता देना, राशि नहीं । आंगनबाड़ी सहायिका, राशि नहीं । ऐसे महान् घोषणावीर पूर्व मुख्यमंत्री की घोषणाओं को अनुपूरक बजट में शामिल कर हमारी सरकार ने साबित कर दिया है कि हम जनकल्याण के कार्यों में राजनीतिक भेदभाव नहीं करेंगे । राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, राष्ट्रीय जल जीवन मिशन ऐसे केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं को अब छत्तीसगढ़ में सुचारू रूप से चलाया जाएगा। राज्यांश देने में ना जाने कौन सी पीड़ा थी, 18 लाख बिन घर बार, बिना राज्यांश के। हमारी सरकार महिलाओं के साथ-साथ, बेरोजगारों के साथ-साथ, आवासहीन परिवार हेतु प्रधानमंत्री आवास योजना 27,352 लाख रूपये अनुदान की मांग रखी गयी है। अन्त्योदय तक जाने का, राम राज्य की स्थापना का यही तरीका है। (मेजों की थपथपाहट) जब सत्ता पैदल चल करके दूर गांव तक जाता है तो राम राज्य बन जाता है। जब सत्ता पैदल चलकर गरीब आवास बनवाता है तो राम राज्य बन जाता है। हमारे मुख्यमंत्री जी इतने सालिन विनम्र हैं कि....।

श्री रामकुमार यादव :- सभापति जी, गुरू घासीदास जी हा ए प्रदेश में राम राज्य के सपना नई देखे रहिस हे, एक समतामूलक समाज बनाय के सपना देखे रहिस हावए।

श्री गुरू खुशवंत साहेब :- सभापति जी, मुखिया को मान दिया दल ने, वनवासी मन को भाता है तो राम राज्य बन जाता है। श्री विष्णुदेव साय जी के लिए मेरे उद्‌गार हैं, श्री विष्णु नाम अनुरूप समाज का संरक्षण करेंगे, बिना भेदभाव के अहंकार नहीं, ना ही दम है, सीधे-साधे हैं, ईश्वर के अंश हैं। (मेजों की थपथपाहट) माननीय सभापति महोदय, किसानों की अस्मिता का ध्यान जो हमने दिया कोई नहीं, किसने मना किया था, दो साल का बोनस मत देना, किसने आपसे कहा था, तुकड़े-तुकड़े में राशि देना,

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

खुद के पैरों पर खड़ा किसान, मजलूम बनाते थे तुम तो, ऐसा लगता था विधाता हो, तुम स्वप्न दिखाते थे। हम 2 करोड़ 10 लाख रूपए धान उत्पादन के प्रोत्साहन हेतु स्वीकृत करने जा रहे हैं। मांग संख्या 13 मद क्रमांक (1) में उल्लेख है, वहीं मुख्य शीर्ष 2401 मद संख्या (26) में धान उत्पादन प्रोत्साहन पर 1,24,400 लाख रूपए का अनुपूरक अनुदान मांग का समर्थन करता हूं। माननीय सभापति जी, वित्तीय वर्ष 2023-24 के द्वितीय अनुपूरक अनुमान जो विधानसभा के समक्ष लाया गया है, मैं उन मांगों का समर्थन करता हूं। धन्यवाद, जय सतनाम, जय श्री राम, जय छत्तीसगढ़। (मेजों की थपथपाहट)

श्री भूपेश बघेल (पाटन) :- माननीय सभापति महोदय, द्वितीय अनुपूरक माननीय मुख्यमंत्री के द्वारा जो प्रस्तुत है, मैं उसके विरोध में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। सबसे पहले नई सरकार बनने के बाद यह पहला सत्र है और पहले सत्र में मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को बधाई देता हूं, वरिष्ठ उप मुख्यमंत्री को भी बधाई देता हूं, कनिष्ठ उप मुख्यमंत्री को भी बधाई देता हूं, वे जहां भी हो, वे मेरी आवाज सुन रहे होंगे, उन्हें भी मेरी बधाई। अध्यक्ष जी को तो हमने पहले बधाई दे दी थी। इन तीनों को भी बधाई, साथ ही जो संभावित मंत्री हैं, उनको भी अग्रिम बधाई। कौन बनेगा, कौन नहीं बनेगा, सभापति महोदय, आनंद पिक्चर का डायलॉग है, जहां पनाह हम सब ऊपर वाले के हाथ में कठपुतली है, कौन, कब, कहां, कैसे उठेगा, किसी को पता नहीं। अभी हमारे सत्ताधारी दल के साथियों की स्थिति वैसी ही है। पुराने वाले यह सोच रहे हैं, हम पहले थे, हमारी कुर्सी बनी रहेगी या नहीं रहेगी। नये वाले सोच रहे हैं कि अभी अच्छा मौका है, ये हटें तो हम लोग बनें। सभापति महोदय, सब जोड़ तोड़ में लगे हैं। बहुत कोशिश भी कर रहे हैं...।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय सभापति महोदय, जोड़-तोड़ आना-जाना राजनीति का अभिन्न हिस्सा है, पर यहां ढाई-ढाई साल वाला किस्सा नहीं है। क्लियर कट मामला है। (मेजों की थपथपाहट)

श्री भूपेश बघेल :- सभापति महोदय, अजय भाई की बात में निराशा झलक रही है। शायद उनको अंदेशा हो गया है। कोई बात नहीं। भले आप ट्रेजरी बेंच में न रहे, लेकिन हमारे साथ तो रहेंगे और अजय भाई की आवाज गूंजती रहेगी, चाहे वह कहीं भी रहे। सभापति महोदय, चुनाव के संदर्भ में बहुत सारी बातें कही गईं। बहुत सारे नये सदस्य, हमारे इधर के साथी भी बोले, उधर के साथी भी बोले। गोमती बहन ने भी बहुत अच्छी बात कही। साथ ही हमारे गुरू गोसाई भी बोले। उधर पंडरिया तरफ से भी आवाज आई, लेकिन अग्रवाल जी चुप बैठे हुए हैं। वह भी देख रहे हैं कि बड़े नेता को हराकर आये हैं तो शायद उनका भी नंबर लग जाए। इसलिए वह मौन साधे हुए हैं।

श्री राजेश अग्रवाल :- मैंने आपकी मदद की है। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट)

श्री भूपेश बघेल :- अग्रवाल जी, आपने हमारी जोड़ी तोड़ दी और कहते हैं कि आपने मेरी मदद की है। आपने जय-वीरू की जोड़ी तोड़ दी।

श्री राजेश अग्रवाल :- आपकी विशेष कृपा।

श्री प्रबोध मिंज :- जो आप नहीं कर पाये, वह राजेश जी ने कर दिया है।

श्री रामविचार नेताम :- इन्होंने आपकी इच्छाओं का पूरा ध्यान रखा है। (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- रामविचार जी, जैसे ही मैंने अग्रवाल जी की बात की, सरगुजा के दो सदस्य खड़े हो गये।

श्री प्रबोध मिंज :- तीसरा भी है।

श्री भूपेश बघेल :- हां, अब अल्पसंख्यक कोटे से राजेश जी आएंगे या मिंज जी आएंगे।

श्री राजेश मूणत :- पहले मैं आपसे एक निवेदन कर दूं कि मैं अल्पसंख्यक कोटे का नहीं हूं।

श्री भूपेश बघेल :- मैंने पेपर में पढ़ा है, इसलिए बोल दिया।

श्री राजेश मूणत :- नहीं-नहीं, पेपर में तो आप बहुत कुछ पढ़ते रहे। आप भी पढ़ते रहे और मैं भी पढ़ता रहा। इसलिए पहले आप हमेशा के लिए कॉन्सेप्ट क्लियर कर लीजिए।

श्री भूपेश बघेल :- चलिये, ठीक है।

श्री राजेश मूणत :- मैं हिंदू हूं, सनातनी हूं, जैन धर्म का पालन करता हूं। मैं अल्पसंख्यक नहीं हूं। मैं यह पहले ही बात दूं।

श्री भूपेश बघेल :- वैसे भी जैन धर्म अल्पसंख्यक में आता है।

श्री राजेश मूणत :- आप इधर-उधर की बात छोड़िये, यह बताइये कि कारवा क्यों लूटा?

श्री भूपेश बघेल :- वह तो मैं बता ही दूंगा। सभापति महोदय, मुख्यमंत्री जी आये हैं, मैं उनका पुन: अभिनंदन करता हूं, स्वागत करता हूं और बधाई देता हूं। सारे सवालों को तोड़ते हुए कौन बनेगा, कौन बनेगा करोड़पति के जो सवाल थे, उन सबको ध्वस्त करते हुए विष्णु देव साय जी एक नंबर में विराजे। मैं आपको पुन: बधाई देता हूं। कनिष्ठ उप मुख्यमंत्री भी आ गये। मैं समझता हूं कि उसी क्रम से शपथ दिलाया गया है इसलिए मैं विजय शर्मा जी को भी बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

आदरणीय साथियों, यह इस सरकार का पहला अनुपूरक बजट है। इसमें 3 प्रमुख बातें हैं। इसमें बहुत ज्यादा बोलने का नहीं है। सभी साथी इसमें बोल भी चुके हैं। पहली बात, किसानों का मुद्दा है जिसमें दो साल का बोनस देने की बात कही गयी है, जिसके लिए इसमें राशि प्रावधानित की गई है। हमारे साथियों ने इस मुद्दे को उठाया भी कि राजीव गांधी किसान न्याय योजना की चौथी किस्त का क्या होगा? इसके बारे में मुख्यमंत्री जी जरूर खुलासा करेंगे कि वह चौथी किस्त मिलेगी या नहीं मिलेगी। दूसरी बात, जो दो साल का बोनस है, उसकी ओर मैं मुख्यमंत्री जी का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि अभी जब भावना बोहरा जी बोल रही थी तो उन्होंने कहा कि आपने दो साल का बोनस देने की बात कही थी और आपने वह नहीं दिया। मैं आपको स्मरण दिलाना चाहूंगा। मेरे पास भी पत्र वगैर: हैं कि भारत सरकार ने कब-कब क्या-क्या चिट्ठी लिखा। वह सब पत्राचार मेरे पास हैं। मैं इसका उल्लेख कर देता हूं। आपको याद होगा कि वर्ष 2014 में जब केन्द्र में मोदी जी की सरकार बनी, उसके बाद

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उन्होंने पूरे देश में बोनस पर प्रतिबंध लगाया था, यह केवल छत्तीसगढ़ की बात नहीं है। वह प्रतिबंध चलता रहा। उसके बाद जब वर्ष 2017-2018 का चुनाव नजदीक आया तो उस समय छत्तीसगढ़ को वर्ष 2018-2019 के लिए विशेष छूट दी गई थी। उसमें आपने 1 साल का बोनस भी दिया और उसी आदेश के तहत जब हमारी सरकार बनी तो पहले साल हमने 2,500 रूपये प्रति क्विंटल में धान खरीदा और ऋण माफी भी की। मेरे पास वर्ष 2019 की चिट्ठी है, जिसमें उस समय के खाद्य मंत्री रामविलास पासवान जी की चिट्ठी है। सुनील कुजूर जी जो वहां के खाद्य सचिव थे, जो छत्तीसगढ़ के तत्कालीन मुख्य सचिव भी थे, उनको भी चिट्ठी लिखी थी, उसकी कॉपी भी मेरे पास है । उसमें उन्होंने कहा कि आप चूंकि बोनस दे रहे हैं इसलिए न केवल आपके एफ.सी.आई. में जो चांवल का कोटा है, उसे कम किया जाएगा, बल्कि और दूसरे विभाग में भारत सरकार से जो सहायता मिलती है, वह भी बंद किया जा सकता है और उसके बाद हम लोगों ने राजीव गांधी किसान न्याय योजना लागू की और उसके बाद हम लोग देते रहे । कोरोना कॉल भी आया । मैं बहुत ज्यादा विस्तार में नहीं जाऊंगा । उसके बाद पूरे देश की वित्तीय स्थिति क्या थी, वह पूरा देश जानता है । हमने चार किश्त में देने का फैसला किया और हम लोग नीयत समय में लगातार देते रहे ।

समय :
2.36 बजे

**(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए)**

अध्यक्ष महोदय, अभी भी वह सवाल वहीं खड़ा हुआ है । मुख्यमंत्री जी, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा । बोनस पर भारत सरकार की जो रोक है, इसके पहले मैंने प्रधानमंत्री जी को भी पत्र लिखा था कि बोनस पर प्रतिबंध हटा दिया जाये, ताकि हम दो साल का बोनस दे सकें । अभी तक कोई आदेश आया है, मुझे नहीं पता, लेकिन जब हम लोग सत्ता में थे, तब तक आदेश नहीं आया था । अभी आदेश आ गया होगा तो इसकी जानकारी मुझे नहीं है । यदि जानकारी हो तो निश्चित रूप से मुख्यमंत्री जी जब भाषण देंगे तो वह प्रतिबंध हटा है या नहीं हटा है, यह बताएंगे क्योंकि उसके बिना आप इसका वितरण नहीं कर सकेंगे, भले ही आपने बजट में प्रावधानित कर दिया है, लेकिन जब तक भारत सरकार की रोक नहीं हटेगी, तब तक आप बोनेस का वितरण नहीं कर पाएंगे । आज 21 दिसम्बर है, आपको 25 दिसम्बर को वितरित करना है । मैं समझता हूं कि उसके पहले आप वह अनुमति ले लेंगे, ताकि छत्तीसगढ़ के किसानों के साथ कोई अन्याय न हो । बाद में कोई वैधानिक संकट न आ जाये । हालांकि डबल इंजिन की सरकार है, आपको तो फोन पर आदेश मिल जाएगा ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात, मैं कहना चाहूंगा कि राजीव गांधी किसान न्याय योजना में हम केवल धान तक ही सीमित नहीं थे । उसमें हम लोगों ने कोदो, कुटकी, रागी और उड़द दाल, दलहन-तिलहन को भी शामिल किया था । उसमें हम 9 हजार रूपए एकड़ दे रहे थे । अब आपने 31 सौ रूपए



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

प्रति क्विंटल देने की बात की है, वह किसान जो कोटो, कुटकी, रागी का उत्पादन करते हैं, जो मक्का या गन्ना का उत्पादन करते हैं, उसको इस योजना का लाभ नहीं मिल पाएगा क्योंकि आपकी घोषणा में केवल 31 सौ रूपये की बात है, लेकिन इस बजट में आपने केवल दो साल का बकाया बोनस देने की व्यवस्था की है । 31 सौ रूपये देने के बारे में अभी भी आप मौन हैं क्योकि धान खरीदी शुरू हो गई है । ठीक है, आप मार्कफेड के माध्यम से लोन लेंगे, 21 क्विंटल नहीं, आप जितना लेना चाहें बैंक से लोन लेंगे, लेकिन आप 31 सौ रूपए प्रति क्विंटल दे रहे हैं, वह भी बोनस ही है । फिर से वही बात आकर रूक जाती है । भारत सरकार ने बोनस पर प्रतिबंध लगाया है फिर आप 31 सौ रूपए कैसे देंगे ? पहली बात वह क्लीयर कर लें, दूसरी बात यह है कि मुझे जानकारी है कि अभी तक 38 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी हो चुकी है। हालांकि खरीदी बहुत धीमी है और जिस प्रकार से रकबा बढ़ा है और जिस प्रकार से उत्पादन हुआ है, दिसम्बर का केवल एक सप्ताह बचा है, जिसमें कुछ दिन छुट्टियां में चली जाएंगी, केवल जनवरी का महीना बचा है और इसमें लगभग 130 लाख मीट्रिक टन का जहां लक्ष्य है, उसमें आपने अभी तक यदि 38-40 लाख मीट्रिक टन की खरीदी की है मतलब आपने अभी तक एक तिहाई खरीदी की है, दो तिहाई से अधिक धान की खरीदी अभी बची हुई है । यदि एक महीने में खरीदी नहीं होती तो आपको समय में वृद्धि करनी होगी और उसके साथ-साथ यदि 2183 रूपए प्रति क्विंटल धान के समर्थन मूल्य की कीमत है, उसे आपने 31 सौ रूपये किया है तो इसमें लगभग 900 रूपए प्रति क्विंटल या 900 से अधिक देना होगा क्योंकि पतला धान है तो और अधिक हो जाएगा, उसके लिए आपने बजट में कोई प्रावधन नहीं किया है क्योंकि आपने कहा है कि हम नकद भुगतान करेंगे, वह भी पंचायत में करेंगे तो इसका मतलब यह है, यह बात भी स्पष्ट करनी पड़ेगी कि यह भुगतान कब से शुरू हुआ, किसानों को कब मिलेगा, पंचायत की व्यवस्था कब होगी ? दूसरी बात यह है कि जब बजट में प्रावधान नहीं है तो अनुपूरक पर राज्यपाल महोदय के दस्तखत होने के बाद परसों से किसानों को भुगतान मिलना शुरू हो पायेगा या नहीं हो पायेगा ? आपको यह भी स्पष्ट करना होगा। यह धान की बात हो गई।

अध्यक्ष महोदय, आपने आवास की बात कही। आपने 18 लाख परिवारों को आवास देने की बात कही। सन् 2011 की जनगणना और आर्थिक सर्वेक्षण में 18 लाख परिवार थे, उसमें से 11 लाख परिवारों के आवास पहले से ही बन गये थे। हम लोगों ने 7 लाख परिवारों को उसका प्रथम किश्त जारी किया। हमने जो एक अप्रैल से जो आर्थिक सर्वेक्षण किये, उसमें 10 लाख 47 हजार परिवार हैं, जिन्हें आवास की आवश्यकता है, यह आर्थिक सर्वेक्षण में आया था, जिसमें से 47 हजार ऐसे परिवार थे, जिनके पास आवास था ही नहीं। हमने उसको भी शामिल किया और 7 लाख 47 हजार परिवारों को आवास की पहली किश्त जारी कर दी थी। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से यह बात भी स्पष्ट जानना चाहूंगा कि ये 18 लाख में शामिल है या जो पहला किश्त



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जारी हो गया है, उसके अलावा 18 लाख हैं ? मैंने मुख्यमंत्री जी से सवाल किया है, आप थोड़ा सा रूकिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- सर्वे रिपोर्ट कहां है ? किनके पास है ?

श्री भूपेश बघेल :- जी ?

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- यह सर्वे रिपोर्ट कहां है, किनके पास है ? फर्जी है। आप विधानसभा के पटल पर रखिये। आप विधानसभा के पटल रख्वाईये।

श्री भूपेश बघेल :- मैं कहां से रखूंगा। अब, सरकार में आप हैं, आप रख दीजिये।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- रिपोर्ट कहां है ? आपने पिछड़ा वर्ग वाली एक और रिपोर्ट बनवाई थी। वह भी नहीं है। आपकी कोई रिपोर्ट नहीं है।

श्री भूपेश बघेल :- अब आप सत्ता में हैं, इसकी जिम्मेदारी आपकी है।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- आपने हाईकोर्ट में नहीं दिया, राज्यपाल महोदय को नहीं दिया। खाली फर्जीवाड़ा करने की बात करते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, माननीय मुख्यमंत्री जी पांचवें साल में 7 लाख, 18 लाख आवास की बात करने लग गये। उसके पहले जब हमारा प्रश्न होता था तो आप ही कहते थे कि इतने तो हैं ही नहीं। दूसरी बात, आप आर्थिक सर्वेक्षण की बात करते हैं, वह आर्थिक सर्वेक्षण पूरे प्रदेश में किसी ने नहीं देखा है। अभी आपने थोड़ी देर पहले कहा कि धान का रकबा बढ़ा है, खरीदी नहीं हो रही है, वह चिंताजनक है। आपने 2022-23 के जो आर्थिक सर्वेक्षण जारी किया था, मैं उसके बारे में आपको बता देता हूं। कृषि भूमि रकबा में 50,124 हैक्टेयर की कटौती है, यह रकबा छत्तीसगढ़ में कम हुआ है। जिस क्वांटीफाइबल डाटा का उल्लेख कर रहे थे, सिर्फ आपने ही उसको देखा है। अब आप उसका अधिकृत रूप से उल्लेख मत करिये। जो सदन की सम्पत्ति नहीं है, जो किसी को मालूम नहीं है, आप उसका उल्लेख करेंगे तो आप ही सुनिये और आप ही जानिये। आपने उसको कभी सार्वजनिक नहीं किया तो उसकी क्या विश्वसनीयता है ? हम करेंगे या नहीं करेंगे, वह बाद का विषय है। चूंकि अभी आप बोल रहे हैं, इसलिए आपकी बात की कोई विश्वसनीयता नहीं है। क्योंकि हमने उसको देखा नहीं है और ना विधान सभा में टेबल हुआ है। ये आकड़ें फर्जी माने जायेंगे।

श्री भूपेश बघेल :- चलिये बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं आपसे तो वही सवाल कर रहा हूं। आपने 18 लाख आवास कहा है तो जिन 7 लाख परिवारों को पहली किश्त चली गई है, वह इसमें शामिल है या उसके अतिरिक्त है, बस मेरा इतना ही पूछना है। दूसरी बात, इसमें राज्यांश का उल्लेख कर दिया है। केन्द्र से केन्दांश मिलेगा या नहीं मिलेगा, कब मिलेगा, आपने इसकी जानकारी नहीं दी है। क्योंकि इसमें राज्यांश का ही उल्लेख है। तो क्या यह राशि बना केन्द्रांश के पूरा करेंगे ?



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय, तीसरी बात, महतारी वंदन योजना की बात कही, उसके बारे में भाई उमेश जी और अन्य साथियों ने भी इस मुद्दे पर सवाल उठाया। हम लोगों ने समाचार-पत्रों में पढ़ा उसमें कोई करीब 53 लाख, कोई 60 लाख कहता है, आपने 53 लाख महतारी वंदन का फार्म भराया है। तो क्या उनको और भी फार्म भरना पड़ेगा या उसी फार्म के आधार पर यह महतारी वंदन की किश्त जारी होगी ? बहुत सारे साथी बता रहे थे कि चुनाव के समय फार्म के साथ ही पहला किश्त नकदी मिल भी गया था, सरकार बनते ही दूसरी किश्त भी जारी होगी। रामविचार जी, जो बात चर्चा में है, उसके बारे में कह रहा हूं। यह कब से लागू होगा ? इसकी सीमा क्या है ?

श्री राम विचार नेताम :- हम क्या कर रहे हैं, आपको हवा ही नहीं लगा। (हंसी)

श्री भूपेश बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्य रूप से बात यही है कि इस दायरे में कौन आयेगा, कौन नहीं आयेगा, मैं समझता हूँ कि बहुत जल्दी इसमें कैबिनेट का डिसीजन हो जायेगा, इसका क्राईटेरिया जल्दी से जल्दी जारी होगा । इसी प्रकार से गैस सिलिण्डर 500 रूपये में देने की बात है, केवल उज्जवला वाले को मिलेगा या अन्य जो कनेक्शनधारी हैं, उसको भी इसका लाभ मिलेगा या नहीं मिलेगा, यह स्पष्ट होना चाहिये ? चूंकि अजय जी और केदार कश्यप जी सहित बहुत से साथियों ने बिजली बिल हॉफ के बारे में बातें की है, उन्होंने कहा है कि पिछली सरकार की योजना को जारी रखने की कोई आवश्यकता नहीं है । मैं पूछना चाहता हूँ कि बिजली बिल हॉफ योजना जारी रखेंगे या बंद कर देंगे ? गोबर खरीदी, गौमुत्र खरीदी जारी रहेगा या बंद कर देंगे ? राशन जो हर परिवार को 35 किलो मिल रहा था, उसे जारी रखेंगे या जैसे दूसरे राज्यों में जो प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत जो पांच रूपया दिया जाता है, केवल उतना ही रहेगा ? आम जनता के मन में सरकार बदलने के बाद बहुत सारे प्रश्न हैं । मैं समझता हूँ कि मुख्यमंत्री जी का जब जवाब आयेगा तो इस मामले को भी स्पष्ट करेंगे, ऐसी मैं अपेक्षा करता हूँ । अध्यक्ष महोदय, ऐसे जो सप्लीमेंट्री बजट प्रस्तुत किया गया है, उसमें बहुत सारे लोगों को निराशा हुई है, खासकर किसान वर्ग, महिला वर्ग को 300 करोड़ रूपये देने जा रहे हैं, जबकि 1 करोड़ से अधिक महिलाओं को इससे लाभान्वित होना है और इसमें 900 से 1000 करोड़ से इसमें हर महीना लगना है, यह ऊंट के मुंह में जीरा है, इसमें लोगों को लाभ मिलने वाला नहीं है । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इसका विरोध करता हूँ और आपने जो समय दिया उसके लिये धन्यवाद ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय पूर्व मुख्यमंत्री महोदय, अनाज के बारे में आपने जो भी शंका जाहिर की है, वह आपका धर्म है, लेकिन हम लोग पहले 28 महीने के कोरोना काल के गायब चावल की जांच पहले करायेंगे और बाकी निर्णय बाद में लेंगे । (मेजों की थपथपाहट)

श्री भूपेश बघेल :- अध्यक्ष महोदय, आप जो भी जांच करायेंगे, उसका स्वागत है । आप पी.एस.सी. की जांच करायें, आप राशन की जांच करायें, हमने जो 271 करोड़ के गोबर खरीदे हैं और 1360 करोड़ रूपये का आरोप लगाये हैं, उसकी जांच करायें । हमें कोई तकलीफ नहीं है, आप जांच

करायें और जल्दी करायें । मैं यह कहना चाहता हूँ । जांगड़े जी, जो पी.एस.सी. चेयरमेन थे ना, उसकी जांच आज तक चल रही है ।

श्री राजेश मूणत :- महादेव एप में भी कुछ बोल दो ?

श्री भूपेश बघेल :- आप महादेव एप के बारे में बहुत कह रहे हैं ना, चर्चा करा लीजिए, मैं एक-एक बात का जवाब दूंगा । श्री राजेश मूणत :- मैं भी तैयार हूँ, अगले सत्र में चर्चा के लिये आ जायेंगे ।

श्री भूपेश बघेल :- अभी ट्रेजरी बेंच में भी नहीं बैठे हैं, आप अभी सदस्य हैं और मैं भी सदस्य हूँ । जब आप ट्रेजरी बेंच में आ जायेंगे, आसंदी से आग्रह करके चर्चा करा लीजिए, हम चर्चा से भागने वालों में नहीं है । (मेजों की थपथपाहट) मैं यह बात कहना चाहता हूँ । ऐसा न हो कि जांगड़े जी पी.एस.सी. के चेयरमेन थे और उसकी जांच आज तक चल रही है, उसी प्रकार से न हो । मैं इस बात को अजय जी से कहना चाहता हूँ । धन्यवाद ।

**अध्यक्षीय व्यवस्था**

अध्यक्ष महोदय :- माननीय अजय चन्द्राकर जी ने मेरा ध्यान आसंदी पर आरोप के परिप्रेक्ष्य में आकर्षित किया है । इस पवित्र सदन की आसंदी पर अध्यक्ष के रूप में एक गरिमामय दायित्व की जिम्मेदारी सभा द्वारा मुझे सौंपी गई है । मैं आप सभी सदस्यों से विनम्रतापूर्वक यह कहना चाहता हूँ कि तत्कालीन सरकार में प्रदेश के मुखिया के रूप में मुझे जो जिम्मेदारी सौंपी गई थी, अपने पदेन दायित्व के निर्वहन के दौरान शासन द्वारा लिये गये निर्णयों के बारे में सदन में चर्चा करते समय कृपया आप मेरे नाम का उल्लेख करने से बचेंगे तो संसदीय गरिमा और आसंदी की गरिमा के लिये उचित होगा । सदन में वॉक स्वतंत्रता आप सभी का अधिकार है, किन्तु मैं आप सभी से अपेक्षा करूंगा कि सभा की गरिमा जो है, वह आसंदी की गरिमा में है, इसलिये आसंदी की अवमानना या गरिमा के प्रतिकूल टिप्पणी सभा की उच्च संसदीय परिपाटियों के विपरीत होगी । कृपया आसंदी की गरिमा और सम्मान सुनिश्चित करें । (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय नेता प्रतिपक्ष डॉ.चरणदास महंत जी ।

**<u>वित्तीय वर्ष 2023-2024 के द्वितीय अनुपूरक अनुमान की अनुदान मांगों पर चर्चा (क्रमशः)</u>**

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा प्रस्तुत वित्तीय वर्ष 2023-24 के द्वितीय अनुपूरक अनुदान मांग संख्या 1, 3, 6, 7, 10, 12, 13, 14, 17,



अप्रकाशित/प्रकाशन के लिये नहीं

19, 20, 21, 23, 26, 27, 29, 30, 31, 36, 41, 44, 47, 55, 64, 65, 69, 80 एवं 81 का विरोध करने के लिये खड़ा हुआ हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सरकार का प्रथम अनुपूरक बजट आ गया है। प्रदेशवासी बहुत आशा के साथ देख रहे थे। जैसा कि आप लोगों ने कहा कि मोदी जी की गारंटी की सरकार आ रही है। मोदी जी की गारंटी वाली घोषणा है। इससे प्रदेश के लोगों को लगा कि सरकार हम सब को अपने सर आंखों पर बिठाकर रखेगी। लेकिन जैसे ही आपने अनुपूरक बजट प्रस्तुत किया तो उनको लगा कि इस सरकार ने उनके साथ धोखा किया है, छल किया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय नेता जी, पूर्व मुख्यमंत्री आपके भाषण का बहिष्कार करके गये हैं, वह किसी तरह की गुटबाजी तो नहीं है ?

डॉ. चरणदास महंत :- जी नहीं, इसमें किसी तरह की गुटबाजी नहीं है।

श्री कवासी लखमा :- इसमें कोई गुटबाजी नहीं है, वह पेशाब करने गये हैं। (हंसी)

श्री द्वारिकाधीश यादव :- पिछली सरकार में तो अधिकांश समय में यही होता था।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- यह गुटबाजी नहीं है, चालबाजी है।

डॉ. चरणदास महंत :- अध्यक्ष महोदय, उनके पिताजी की तबियत खराब है इसलिये मैंने उन्हें अस्पताल जाने की अनुमति दी है। मैं ऐसा समझता हूं कि सरकार बदल जाने का अर्थ यह नहीं होता कि जनता के हितों को अनदेखा किया जाये, जनता के हितों पर प्रहार किया जाये। मैं समझता हूं कि जनता ने आपको इसीलिये चुना है कि आप उनको पिछली सरकार से बेहतर सुविधाएं देंगे, उनका सम्मान करेंगे और उनका संरक्षण करेंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस अनुदान मांगों के माध्यम से सरकार के द्वारा प्रस्तुत 12 हजार 992 करोड़ 70 लाख 98 हजार 800 रूपये की अनुपूरक राशि का विरोध इसीलिये करना चाहता हूं कि सरकार जिस तरह घोषणा पत्र में किये गये वायदों के जरिये चुनकर यहां पर पहुंची है, उन वायदों में मुख्यत: जल मिशन योजना, महतारी वंदन योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, धान उत्पादन पर प्रोत्साहन योजना और अनेक योजना के लिये आपने यहां पर लगभग जो राशि मांगी है, उस राशि की व्यवस्था आप कहां से करेंगे ? इसमें उसका कुछ उल्लेख नहीं है। मेरा यह मानना है और मैं इसलिये विरोध करना चाहता हूं कि आपके दूसरे पृष्ठ को ही देखें तो उस पर लिखा हुआ है और राजस्व के जो आंकड़े मुझे हैरान कर रहे हैं, जो मेरी चिंता बढ़ा रहे हैं, वह यह है कि इस अनुपूरक में 01 खरब 14 अरब 2 करोड़ 29 लाख 93 हजार 700 रूपये का राजस्व व्यय दिखाया गया है। वहीं पूंजीगत व्यय मात्र 15 अरब 90 करोड़ 41 लाख 5 हजार 100 रूपये का है। इस प्रकार से इतनी राशि यदि आप राजस्व व्यय में खर्च कर रहे हैं तो मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं और मैं इस बात से चिंतित हूं कि आने वाले समय में अधोसंरचना विकास के लिये कहां से पैसे बचेंगे। क्या वह सब काम रूक जायेंगे ? मुझे इस बात की चिंता है। जैसा कि मेरे सभी साथियों ने बिजली बिल हॉफ योजना के बारे में कहा, यह कोई



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

छोटी-मोटी बात नहीं है। बिजली बिल हॉफ करने से हमारी बहुत-सी जनता की आर्थिक दशा सुधरी है, यह संभव है कि कुछ लोगों को लाभ न हुआ हो। अब आप बिजली बिल हॉफ योजना बंद कर देना चाहते हैं। उससे उनकी आर्थिक स्थिति में प्रभाव पड़ेगा। मैं आगे यह कहना चाहता हूं कि हमारी राजीव गांधी किसान न्याय योजना, जैसे मुख्यमंत्री जी ने भी कहा कि हमारा हर अन्नदाता ... (जारी) श्रीमती सविता

सविता\21-12-2023\d19\03.55-03.60

(पूर्व से जारी) डॉ. चरणदास महंत :- जैसे माननीय मुख्यमंत्री जी ने भी कहा कि हमारा हर अन्नदाता यह इंतजार कर रहा है कि आप उनके लिए क्या करेंगे ? इस प्रदेश में होगा क्या ? हमारे जो दिन बदले थे फिर वैसे के वैसे ही हो जाएंगे क्या ? क्या फिर से उनको वही दिन देखना पड़ेगा, मैं ऐसा मानता हूँ। माननीय चन्द्राकर जी ने कहा कि आपको कोई चिन्ता करने की बात नहीं है। यह बजट मोदी जी की गारण्टी पर तैयार की गई है। भईया, हम तो यह मानते हैं कि माननीय मोदी जी की पहले वाली गारण्टी फेल हो चुकी है। यह आप तो जानते ही हैं। लोगों के खातों में 15 लाख रूपये देने की गारण्टी फेल हो गई। देशवासियों को 2 करोड़ नौकरी देने की बात फेल हो गई। आपने इस नई महतारी वंदन योजना में 1200 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है। प्रदेश में अब तो सब बात की गणना होती है। छत्तीसगढ़ प्रदेश में 2 करोड़ 2 लाख 40 हजार 410 महिला मतदाता हैं। इसका मतलब यह है कि लगभग 70 लाख विवाहित महिलाएं हैं। यदि महिलाओं को प्रति माह 1 हजार रूपये देने का वायदा किया है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय नेता जी, मैं कुछ कहना चाहता हूँ।

डॉ. चरणदास महंत :- एक मिनट। पहले इसको पूरा कर लेता हूँ। उसके बाद मैं आपकी बात सुन लूंगा तो आपको कुछ जवाब दे सकता हूँ। यदि आपने मोदी जी की गारण्टी के अनुसार एक हजार रूपये प्रति माह देने का वायदा किया है तो मार्च तक 70 लाख महिलाओं को जो राशि देनी पड़ेगी, वह 2800 करोड़ रूपये की राशि होगी। तो आपने महतारी वंदन योजना में 1200 करोड़ रूपये का प्रावधान कैसे किया है ? आप इसे आधा-आधा देंगे ? इसे आप 25 प्रतिशत देंगे या 50-50 देंगे। आप बता दीजिएगा। आप कुछ कहना चाहते हैं ?

श्री अजय चन्द्राकर :- क्या है ? मेरे और आपके संबंध परिभाषित नहीं है।

डॉ. चरणदास महंत :- देखिए, मेरे और आपके संबंध इनको परिभाषित हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- नहीं। आप मेरी बात सुनिए।

डॉ. चरणदास महंत :- मैं, माननीय अध्यक्ष के सामने कह चुका हूँ कि आपके और मेरे अवैध संबंध हैं और अवैध संबंध थे। (हंसी)

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अब बैठ जाईये।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- आप मेरी बात सुनिए। क्या है ? नेता प्रतिपक्ष के रूप में आपका पहला भाषण है। मैं सोच रहा था कि जोरदार जेस्टर पोस्चर के साथ आपका भाषण होगा, परन्तु आपका भाषण माननीय पत्रकार लोगों के लिए हो रहा है। पहले आकाशवाणी में टेली प्रिंटर के लिए जो धीमी गति का समाचार आता था। आप हम लोगों को धीमी गति का समाचार सुनवा रहे हो।

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय भाई जी...।

श्री रामविचार नेताम :- माननीय नेता जी, आपके बोलने के पहले हम लोगों ने आपका स्वागत किया है, इसका भी ध्यान रखिएगा।

डॉ. चरणदास महंत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझसे गलती हो गई। मैं आपसे क्षमा मांग लेता हूँ। मैं आदरणीय मुख्यमंत्री जी का बहुत-बहुत स्वागत करता हूँ। माननीय विष्णु देव साय जी हमारे मुख्यमंत्री हैं। वह भगवान विष्णु का नाम लेकर अवतरित हुए हैं। तो हम पूरे प्रदेशवासी उनसे यही चाहेंगे कि विष्णु जी की कृपा बनी रहे। मगर आप लोग उनको उल्टा-सीधा सीखा रहे हो, उससे बचें। अभी तो अभिभाषण आएगा, हम उसमें और कुछ कहेंगे। आप लोगों ने बेचारे को दिल्ली भेज दिया। उनके दिमाग में यह डाल दी कि मंत्रि-मण्डल में कौन-कौन मंत्री होंगे, आप आंख बंदकर के बताईये। इसलिए जो अधिकारी महोदय ने यह बजट बनाया है मैं उन्हीं को बता रहा हूँ। माननीय मुख्यमंत्री जी बहुत कुछ कह गये हैं। आपने 2 लाख रूपये तक कर्ज माफी का प्रचार किया। माननीय उप मुख्यमंत्री जी बैठे हैं। आप कबीरहा हैं, मैं आपको ज्यादा नहीं टोकूंगा। आप क्या करेंगे, इस द्विवितिय अनुपूरक में कोई प्रावधान नहीं है। माननीय चन्द्राकर जी यह मेरा पहला भाषण है, यह हो सकता है कि आपको अच्छा न लगे। दूसरे भाषण में देखेंगे कि आपको मेरा भाषण कितना अच्छा लगेगा।

उप मुख्यमंत्री (श्री विजय शर्मा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको एक विषय स्पष्ट करना चाहता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी सदन में बहुत बातें हुईं। दो लाख रूपये के कर्ज माफी का कोई विषय कहा गया ? जब चुनाव का समय था, उस समय मैंने कहा, परन्तु उसके बाद मेरी पार्टी का घोषणा पत्र आ गया और फिर उसके बाद चुनाव हुआ। यहां जनता का निर्णय हुआ। मैं सोचता हूँ कि जनता के निर्णय का सम्मान किया जाना चाहिए।

समय :

3.00 बजे

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चुनाव के समय कई जगह यह बात कही गई थी, इसका वीडियो भी वायरल हुआ था। .. (व्यवधान).. इनके घोषणा पत्र का पेपर है, इसको हम पटल पर रखने के लिए तैयार हैं।

श्री उमेश पटेल :- आपने कह दिया। यह इस सदन के रिकॉर्ड में आ गया। (व्यवधान)

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे पास इनका घोषणा पत्र है। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय जी, हमारे पास पेपर हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- क्या है कि हमारे घोषणा पत्र जारी किया है (व्यवधान) इसमें फंसने की बात, फंसाने की बात हो गई। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- नहीं तो यह जनता से माफी मांगे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप मतदाता भाईयों को धोखा नहीं दे सकते। आपने किसान भाईयों को धोखा देने का प्रयास किया है। आपको कर्जमाफी करनी पड़ेगी। आपने चुनाव जीतने के लिये यह कार्य किया है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन के रिकॉर्ड में यह बात आ गई है, इसको झुठला नहीं सकते। अब आपको 2 लाख रुपये की कर्जमाफी करनी चाहिए। आपने किसानों को धोखा दिया है। चुनाव के बीच में आपने जो घोषणा की है, उसको आपने माना है। अब आप इसको झुठला नहीं सकते। (व्यवधान) आपको माफी मांगनी पड़ेगी। (व्यवधान) आपने जो असत्य वादा किया है, आपको इसके लिए किसानों से माफी मांगनी पड़ेगी। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह नहीं चलने वाला। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारे पास प्रूफ है। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- यह सदन के रिकॉर्ड में आ गया है। आपको माफी मांगनी पड़ेगी, आपने जो असत्य वादा किया है, आपको छत्तीसगढ़ के किसानों से माफी मांगनी पड़ेगी। (व्यवधान) आप छत्तीसगढ़ के सभी किसानों से माफी मांगिये। (व्यवधान) आज यह प्रूफ हो गया है। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आपको किसान भाईयों से माफी मांगनी पड़ेगी। (व्यवधान) आप लोगों ने किसान भाईयों को धोखा दिया है (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- आप लोग अपने नेता जी को भाषण नहीं देने दे रहे हैं। आपके नेता बोल रहे हैं और आप लोग बीच में इस तरह से कर रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय :- सम्माननीय सदस्यगण, नेता प्रतिपक्ष खड़े होकर बोल रहे हैं, वह सक्षम हैं, अपनी पूरी बात रखेंगे। आपको बोलने की जरूरत नहीं है। नेता जी जब बोल रहे हैं तो बिल्कुल हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। माननीय नेता जी।



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री धर्मजीत सिंह :- अभी वह मंत्रि-मंडल तो बांट नहीं रहे हैं, आप लोग परेशान हो रहे हैं। माननीय नेता जी, एक मिनट, जहां तक माननीय उप-मुख्यमंत्री के बयान को कोई कोट कर रहा है, राजनीतिक रूप से भाषणों में कोई कहां से कहां तक के बात करता है, लेकिन ये जीते हैं भगवा ध्वज के सम्मान को ले करके जनता के बीच में गये थे। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- आपको छत्तीसगढ़ की जनता से माफी मांगनी पड़ेगी। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- हमारे घोषणा पत्र से हम बंधे हुए हैं। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- आपको सदन से माफी मांगनी पड़ेगी। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- इस सदन के रिकॉर्ड में आ गया है। आपने जनता से वादा किया है। आपको इसको झुठला नहीं सकते हैं। आपको छत्तीसगढ़ की जनता से माफी मांगनी पड़ेगी। किसानों की कर्ज माफी करनी होगी। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- महिला समूह का भी कर्ज माफ करना होगा। (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- यह रिकॉर्ड में आ गया है। आप माफी मांगिये। (व्यवधान) इन्होंने छत्तीसगढ़ की जनता को धोखा दिया है और छत्तीसगढ़ की जनता से आपको माफी मांगनी पड़ेगी। आप विजय शर्मा जी, सदन में खड़े होकर माफी मांगिये। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- माफी मांग लीजिये। (व्यवधान)

श्री धर्मजीत सिंह :- हम आपसे कोई माफी नहीं मांगेंगे। (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत जी। बैठिये। आप लोग बैठिये। नेता जी खड़े होकर अपनी बात कर रहे हैं। सारा विषय आ जाएगा। एक मिनट। उसके बाद माननीय मुख्यमंत्री का जवाब आएगा। बहुत सारे बिजनेस बाकी हैं। आप लोगों ने अपनी बात कह दी है। इसी विषय में अभी और अवसर मिलेगा। इसलिए मैं आप लोगों से आग्रह करूंगा।

श्री उमेश पटेल :- (व्यवधान) इन्होंने सुना है।

अध्यक्ष महोदय :- आपने अपनी बात रख दी। आपने बिल्कुल ठीक कहा। मैं माननीय नेता प्रतिपक्ष को आमंत्रित करता हूं।

डॉ. चरणदास महंत :- आदरणीय धर्मजीत जी, मैं अभी आपकी प्रशंसा करने वाला हूं। आप मेरे को उत्तेजित मत करिये। (हंसी)

श्री धर्मजीत सिंह :- हम तो आपका भाषण तल्लीन होकर सुनते हैं। आप कबीर दास जी के अनुयायी हैं। हम तो आपसे कुछ दोहा भी सुनना चाहते थे। आपके अनुभव का लाभ हमें मिल भी रहा है। अब यही लोग सब गड़बड़ कर रहे हैं।

श्री उमेश पटेल :- छत्तीसगढ़ की जनता को धोखा दिये हैं। इस सदन की कार्यवाही में आया है।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप असत्य कह कर जनता से (व्यवधान) कर रहे हैं।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप लोग नेता प्रतिपक्ष जी को (व्यवधान) कर रहे हो।

श्री उमेश पटेल :- धर्मजीत जी, आपको छत्तीसगढ़ की जनता से माफी मांगनी पड़ेगी। आप छत्तीसगढ़ की जनता से जब तक माफी नहीं मांगेंगे, तब तक छत्तीसगढ़ की जनता आपको माफ नहीं करेगी।

अध्यक्ष महोदय :- महंत जी, कृपया आगे बढ़िये।

श्री धर्मजीत सिंह :- आप लोग पेपर के बात में आते हो।

अध्यक्ष महोदय :- धर्मजीत जी, बैठिये। जवाब आ रहा है।

डॉ. चरणदस महंत :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, थोड़ी-बहुत राजनीतिक बात चल रही है, इसलिए मैं भी कह देता हूं कि जिस दिन मैं सक्ती विधान सभा क्षेत्र से फार्म भरा था, उस दिन माननीय मुख्यमंत्री जी वहां गये थे और वहीं से उन्होंने किसानों के कर्जा माफी की घोषणा की थी। वह लहर इस कदर फैली थी । मैं आपको नहीं कहना चाहूंगा, इधर कह सकता हूं। आप लोगों में आग लग गई थी और उसमें कई लोगों ने चाहे व्हाट्सएप से भेजा हो, चाहे जैसे भी भेजा हो, बचने के लिए प्रचार, दुष्प्रचार जो भी करना था, वह किया और उसी में बेचारे शर्मा जी फंस गये। नये-नये थे, ताव आ गया होगा। चलता है। मैं ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा। आप लोगों ने जो एकमुश्त धान का बोनस देने की बात कही है जो शायद आप लोग अटल बिहारी बाजपेयी जी के जन्मदिन पर देने वाले हैं, उसकी कुछ तैयारी हो गई है? पंचायतों को निर्देश चले गये हैं, कलेक्टरों को निर्देश चले गये, कमीश्नर को निर्देश चले गये, किसी को गया नहीं और आप कह रहे हैं कि हम बोनस बांटने जा रहे हैं। चलिये देखते हैं कि आप कैसे बांटते हैं। नक्सल प्रभावित एरिया के लिए आपने मात्र 100 रूपये प्रावधान किया है। आपके आते ही फिर नक्सली घटना शुरू हो गये। क्यों हो शुरू गये? आपसे क्या संबंध है? हमसे क्या संबंध थे? यह तो विचारणीय प्रश्न है, जांच का प्रश्न है। आपने कह दिया कि आदरणीय पटेल जी के सी.बी.आई. से जांच करांएगे। आप जो भी जांच करायेंगे, हम लोग आपका स्वागत करते हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी मैं ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा। जैसा कि मैं जानता हूं कि आप भी सीधे-साधे व्यक्ति हैं। बहुत लोग आपको भी कुछ-कुछ करेंगे, लेकिन मैं कुछ नहीं करूंगा। आप चिंता मत करिये। (हंसी) मगर मैं एक चीज जरूर कहूंगा।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- कुछ-कुछ क्या होता है, जरा यह तो बता।

डॉ. चरणदास महंत :- आपको एक चीज जरूर बताना चाहता हूं कि छत्तीसगढ़ में हसदेव अरण्य में आंदोलन चल रहा है और 3 आदिवासी रामलाल करियाम, जयनंदन पोर्ते, ठाकुर राम और उनके कई साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया । क्यों किया गया ? क्योंकि धर्मजीत सिंह जी ने यहां दिनांक 26 जुलाई, 2022 को प्रस्ताव रखा था कि हसदेव अरण्य एक ऐसा महत्वपूर्ण अरण्य क्षेत्र है जिसमें से हमें जंगली जानवरों को भी बचाना है । वहां के जो बड़े-बड़े पेड़ हैं उनको भी बचाना है, पर्यावरण को बचाना है और ओजोन का जो बनता है उसको भी बचाना है । मैंने सुना है, आप मुझे बतायेंगे कि आपने 14

हैक्टेयर में पेड़ काटने की उनको अनुमति दे दी है । अभी तो आप सभी मंत्री हैं । पुलिस मंत्री भी आप हैं, राजस्व मंत्री भी आप हैं, वन मंत्री भी आप हैं । क्या यह सही है ? अगर ऐसा हुआ तो अभी तक 30,000 पेड़ कट चुके हैं और आने वाले समय में ढ़ाई लाख पेड़ केवल इसी ब्लॉक से कटेंगे जिसको पी.ई.के.बी. (**PEKB**) ब्लॉक कहते हैं । सरकार, आपको बोल रहा हूं । आपने गरीबों को तो अभी तक कुछ नहीं दिया है । अभी तक नहीं दिया है, केवल घोषणा भर की है लेकिन आपने अडानी को देना शुरू कर दिया । (शेम-शेम की आवाज) दे दीजिये । रायपुर दे दीजिये न, हमें कोई आपत्ति नहीं है लेकिन अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि उन गरीब आदिवासियों की जमीन और जंगल अडानी को मत दीजिये ।

अध्यक्ष महोदय, अब बातों-बातों में माननीय मुख्यमंत्री जी चूंकि थोड़ा सीरियस हो रहे हैं । इसीलिये मैं उनके द्वारा प्रस्तुत इस अनुदान मांग का, उन्होंने जो अनुपूरक बजट पेश किया है, उसका विरोध करता हूं और उनसे यह अपेक्षा करता हूं कि वे मेरी बातों का जवाब देंगे । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक मिनट । चूंकि आपने मेरा भी नाम लिया । सदन में बड़ी कृपापूर्वक मुझे यहां बोलने का अवसर दिया था ।

डॉ. चरणदास महंत :- मैंने प्रशंसा में नाम लिया ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक घंटे भाषण हुआ था । मैंने सारे तथ्यों को रखा था । उसमें यह भी तथ्य रखा था कि अडानी को अनुमति भूपेश बघेल की सरकार ने सरकार बनने के बाद दिया । एक तरफ राहूल गांधी अडानी का विरोध कर रहे थे और इस सरकार में जो मंत्री बैठे हैं, इन सब लोगों ने उनको वन फॉरेस्ट का क्लियरेंस, एन्वॉयरमेंट का क्लियरेंस सबकी अनुमति आपकी सरकार ने दी। आपने दी । जब मैं हसदेव की बात पूछ रहा था तो जहां पर अजय चंद्राकर जी बैठे हैं, वहीं एक मंत्री बैठा करते थे । श्री विजय जी के प्रतिद्वंदी थे । मैं हसदेव की बात पूछ रहा था और वे वॉड्रफनगर का जवाब दे रहे थे ।

डॉ. चरणदास महंत :- अध्यक्ष महोदय, मैं इसको ज्यादा लंबा नहीं खींचना चाहता । चूंकि यह ऐसा विषय है कि इसका जवाब न तो आपके पास है और न ही हमारे पास है । विधानसभा में आपने 26 जुलाई को संकल्प लाया था और वह संकल्प यहां पारित हुआ था । अजय चंद्राकर जी और आदरणीय अग्रवाल साहब ने भी उसमें सहमति दी थी और विधानसभा में यह बाद में छपा था कि छत्तीसगढ़ विधानसभा में आज हसदेव को लेकर एक अशासकीय संकल्प सर्वसम्मति से पारित किया गया । इस संकल्प में केंद्र सरकार से हसदेव क्षेत्र में आवंटित सभी कोयला खदानों को रद्द करने का अनुरोध किया गया है । (मेजों की थपथपाहट) हमने उनसे अनुरोध किया था कि रद्द कर दो, हम विरोध करते हैं कि वहां अब कोई नया कोयला खदान मत खोलो । हम यह चाहते हैं कि वहां कोयले का जो शील्ट बनेगा या जो गड्ढ़े बनेंगे उसके कारण हसदेव नहर में जो पानी कम आयेगा उससे हमारी सिंचाई



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कम हो जायेगी । हम जानते हैं कि आप उनके लिये कोयला खदान की अनुमति देंगे तो हमारे हाथी जो सैकड़ों वर्षों से जिस रास्ते से आते-जाते हैं वह बंद हो जायेंगे और वह हमारे किसानों के घर में घुसेंगे । किसानों के घर को तोड़ेंगे और जो तोड़ रहे हैं। अब एन.एच. में हाथी आने लगे हैं। आपके धमतरी में हाथी आने लगे हैं। आपके रायपुर के आसपास हाथी आने लगे हैं, इसलिए मैंने कहा कि श्री विष्णु देव जी हैं, वे सोचेंगे, विचारेंगे और अपने मन से अपने आदिवासी भाइयों की सुरक्षा और रक्षा करें, यही तो मैं मांग कर रहा हूं। मैंने मुख्यमंत्री जी से मांगा है। अध्यक्ष जी की अनुमति से मांगा है।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी। (मेजों की थपथपाहट)

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, 6वीं विधान सभा के प्रथम सत्र में प्रस्तुत हमारी सरकार के द्वितीय अनुपूरक बजट की चर्चा में भाग लेने वाले पक्ष एवं विपक्ष के सभी सम्माननीय सदस्यों आदरणीय श्री उमेश पटेल जी, आदरणीय श्री अजय चन्द्राकर, आदरणीय श्री द्वारिकाधीश यादव, आदरणीय श्री श्याम बिहारी जायसवाल, आदरणीय श्री कुंवर सिंह निषाद, श्रीमती गोमती साय, श्रीमती अनिला भेंडिया, श्रीमती भावना बोहरा, श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल, श्री गजेन्द्र यादव, श्री विक्रम मंडावी, श्री लखनलाल देवांगन, श्री गुरू खुशवंत साहेब, आदरणीय श्री भूपेश बघेल और आदरणीय नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरण दास महंत जी का मैं आभार व्यक्त करता हूं। अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ की पूरी जनता को हृदय से धन्यवाद देता हूं, जिन्होंने मोदी की गारंटी के प्रति अपना भरोसा जताया है और मुझे छत्तीसगढ़ महतारी की सेवा का अवसर दिया है। (मेजों की थपथपाहट) मुख्यमंत्री पद की शपथ लिये हुए मुझे कुछ ही घंटे हुए थे, लेकिन मोदी जी की गारंटी का क्रियान्वयन करने में हमने एक पल की भी देरी नहीं की, क्योंकि मोदी की गारंटी का मतलब होता है गारंटी पूरी होने की गारंटी। (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, इस सदन में प्रस्तुत किया गया द्वितीय अनुपूरक बजट प्रदेश की जनता को मोदी जी द्वारा दी गई गारंटी को पूरा करने की दिशा में हमारी सरकार का पहला कदम है। अध्यक्ष महोदय, पिछली सरकार ने वर्ष 2023-24 का मुख्य बजट 1 लाख 21 हजार करोड़ रूपये से अधिक का प्रस्तुत किया था। बजट में लोक-लुभावन योजनाओं के बारे में बड़ी-बड़ी चर्चा की गई, किंतु दुख का विषय यह रहा कि इन योजनाओं की पूर्ति हेतु राजस्व प्राप्तियों के ठोस प्रयास नहीं किये गये। परिणाम यह रहा कि पिछली सरकार ने 5 वर्षों में खर्चों की पूर्ति के लिए बेतहाशा कर्ज लेने का काम किया। 15 साल के लंबे कार्यकाल के बाद 17 दिसंबर, 2018 को जब हमने खजाना सौंपा तब राज्य पर मात्र 41 हजार 695 करोड़ रूपये का कुल कर्ज था। मात्र 5 साल की अल्पावधि में कुल कर्ज की राशि बढ़कर 91 हजार 533 करोड़ रूपये हो गई। (शेम-शेम की आवाज) इस प्रकार 5 साल के कार्यकाल में लगभग 50 हजार करोड़ का कर्ज लेने का काम पिछली सरकार ने किया। अध्यक्ष महोदय, ऐसी विषम वित्तीय स्थिति में खजाना मिलने के बावजूद भी हमारी सरकार मोदी की गारंटी के प्रत्येक वचन को पूरा करने के लिए दृढ़-संकल्पित है। (मेजों की थपथपाहट) अध्यक्ष महोदय, मैं गरीब परिवार से



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

आता हूं। गरीब के दर्द को समझता हूं। एक गरीब का सबसे बड़ा सपना होता है उसका खुद का अपना मकान। खुले आसमान के नीचे अथवा कच्चे मकानों में जब चूल्हे जलते हैं तो तेज हवा और बारिश की बूंदों से कई बार चूल्हे की आग बूझ जाती है और गरीब भूखे पेट सोने के लिए विवश हो जाते हैं। जन-जन के नायक माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का संकल्प है कि किसी गरीब परिवार का चूल्हा अब नहीं बूझेगा। सबको अपना पक्का मकान मिलेगा । (मेजों की थपथपाहट) आपने अपने वर्ष 2018 के जन-घोषणा पत्र में ग्रामीण और शहरी आवास के अधिकार का वादा किया था, लेकिन आप घोषणा-पत्र में केवल लिखकर भूल गये। लोगों को आवास देने के बदले आपने केन्द्र सरकार की प्रधानमंत्री आवास योजना में मिलने वाले आवासियों का लाभ भी लोगों से छिन लिया। देश के भा.ज.पा. शासित राज्यों के साथ-साथ गैर भा.ज.पा. शासित राजस्थान और महाराष्ट्र जैसे राज्यों ने भी स्थायी प्रतीक्षा सूची के अतिरिक्त आवास प्लस सूची में भी सम्मिलित परिवारों को भी आवास स्वीकृत किये, लेकिन आपने कोई कार्रवाई नहीं की। आपकी सरकार की उदासीनता की हद तब पार हो गई जब स्थायी प्रतीक्षा सूची से आवंटित 7 लाख, 82 हजार ग्रामीण आवासों की स्वीकृति में प्रगति लाने के लिए तत्कालीन केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर एवं श्री गिरीराज सिंह को पत्र लिखने के लिए विवश होना पड़ा, मेरे पास तोमर जी का और गिरीराज जी का पत्र है (मेजो की थपथपाहट) । बावजूद इसके आपकी सरकार सत्ता के उपभोग में व्यस्त रही और विवश होकर आपकी ही सरकार के मंत्री को गरीबों को आवास न मिल पाने के पाप से मुक्ति पाने के लिए मजबूर होकर इस्तीफा देना पड़ा, उनका इस्तीफा भी मेरे पास है (मेजो की थपथपाहट)। आपकी इस लापरवाही का नतीजा हमारे गरीब परिवार अभी भी भोग रहे हैं । जिन्हें आवास नहीं मिले वे तो वंचित हैं ही, जिन्हें मिला उन्हें भी आधा-अधूरा । पहली किश्त से मकान बनाना शुरू कर चुके परिवार, दूसरी किश्त नहीं मिल पाने के कारण अब कर्ज लेकर मकान पूरा कर रहे हैं, यह है आपका गरीबों के प्रति न्याय । इन्हीं गरीबों की आह आप लोगों को लग गई । मोदी की गारंटी में राज्य के लगभग 18 लाख ग्रामीण परिवारों को प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत पक्का आवास देने का वायदा किया गया है । हमारी सरकार की पहली केबिनेट ने 18 लाख ग्रामीण आवासों की स्वीकृति देने का पहला निर्णय लिया है (मेजो की थपथपाहट) । प्रदेश के 18 लाख ग्रामीणों के लिए पक्का आवास बनाने के लिए प्रथम किश्त की राशि जारी करने हेतु 3,799 करोड़ का प्रावधान इस अनुपूरक बजट में किया गया है । हमारे इस निर्णय से न केवल गरीब परिवारों को पक्के आवास का लाभ मिलेगा, अपितु निर्माण संबंधी गतिविधि एवं इनसे जुड़े हुए सहायक उद्योगों में तेजी से प्रदेश की अर्थव्यवस्था में भी गति आएगी ।

छत्तीसगढ़ को अलग राज्य बनाने की मांग तो वर्षों से चली आ रही थी । 50 वर्षों तक पंच से लेकर पार्लियामेंट तक कांग्रेस के जन प्रतिनिधि हुआ करते थे । लेकिन अलग छत्तीसगढ़ की मांग कभी पूरी नहीं हो सकी । छत्तीसगढ़वासियों के इस दर्द को पहली बार प्रधानमंत्री भारत रत्न श्री अटल बिहारी

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बाजपेयी जी ने समझा और हमें हमारा अपना छत्तीसगढ़ राज्य दिया । छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण, छत्तीसगढ़ के निवासियों की उन्नति एवं खुशहाली के लिए किया गया था । इस अनुपूरक के माध्यम से हम जनता की उन्हीं सपनों को साकार करना चाहते हैं । मोदी की गारंटी में किसानों को 2 साल का बकाया धान बोनस भुगतान करने का वायदा है । यह वायदा तो 2018 में सत्ता पाने के लिए आपने भी किया था किंतु आप वायदा करके भी भूल गए । आपके 2018 के जन-घोषणा पत्र में भी था कि भाजपा ने दो साल का बोनस नहीं दिया उसे हम देंगे लेकिन आपने नहीं दिया । किंतु हम अब इसे नहीं भूलेंगे । इसे तुरंत पूरा करेंगे । 2 साल का बकाया धान बोनस भुगतान के लिए द्वितीय अनुपूरक में 3,800 करोड़ का प्रावधान किया गया है (मेजो की थपथपाहट) । पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी के जन्म दिवस 25 दिसम्बर जिसे हम सुशासन दिवस के रूप में मनाते आ रहे हैं । इसी दिन राज्य के 13 लाख से भी अधिक किसानों को बकाया धान बोनस की राशि उनके खाते में एक मुश्त भुगतान की जाएगी (मेजो की थपथपाहट) ।

अध्यक्ष महोदय, मोदी की गारंटी में राज्य की महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन एवं सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए महतारी वंदन योजना प्रारंभ करने का वायदा किया गया है । इस योजना के अंतर्गत माताओं एवं बहनों को 12 हजार रूपए प्रतिवर्ष भुगतान उनके बैंक खातों में किया जाएगा । महतारी वंदन योजना में आर्थिक सहायता दिए जाने हेतु द्वितीय अनुपूरक में 1,200 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है (मेजो की थपथपाहट) । अध्यक्ष महोदय, मोदी की गारंटी में हर घर नलजल का वायदा किया गया है इसके लिए जल जीवन मिशन के अंतर्गत लगभग 50 लाख ग्रामीण परिवारों को घरेलू नल कनेक्शन के माध्यम से स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित है । हर घर तक नल से जल पहुंचाने के पवित्र उद्देश्य से जल जीवन मिशन योजना शुरू की गई है । किंतु पिछली सरकार की लचर कार्य प्रणाली के कारण योजना की प्रगति लगातार निचले पायदानों पर रही । योजना के क्रियान्वयन में इतना भारी भ्रष्टाचार किया गया कि खुद आपकी सरकार को बुलाई गई निविदाएं निरस्त करना पड़ा। ऐसी योजना जिसके लिए जनता को आभार करती हुई हर चौक चौराहे पर केवल भ्रष्टाचार पर चर्चा का विषय बनकर रह गयी। इन्हीं करतूतों के कारण प्रदेश के लाखों लोग योजना के लाभ से वंचित रह गये।

अध्यक्ष महोदय, जल जीवन मिशन योजना के अंतर्गत हर घर नल जल को मिशन मोड में तेजी से क्रियान्वयन हेतु इस अनुपूरक बजट में 1,230 करोड़ का राज्यांश मद में प्रावधान किया गया है। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार के पिछले कार्यकाल में किसानों के लिए कृषक जीवन ज्योति योजना प्रारंभ की गयी थी। योजना में 3 एच.पी. तक के कृषि पंपों को 6 हजार यूनिट तक तथा 3 से 5 एच.पी के कृषि पंपों को साढ़े 7 हजार यूनिट तक प्रतिवर्ष नि:शुल्क बिजली दी जाती थी। वर्तमान में 6



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लाख 93 हजार किसानों को इस योजना का लाभ मिल रहा है। इस वर्ष योजना के लिए पूर्व से 3,200 करोड़ रूपए का प्रावधान है, जो अपर्याप्त होने के कारण इस अनुपूरक बजट में 1,123 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, राज्य में निराश्रितों, बुर्जुगों, दिव्यांगों, विधवा तथा परित्यक्ता महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा पेंशन की राशि केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा प्रतिमाह दी जाती है। इन योजनाओं में पिछली सरकार द्वारा पर्याप्त प्रावधान नहीं किया गया। अध्यक्ष महोदय, सभी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं का लाभ सबको निरंतर मिलता रहे, इसके लिए इस अनुपूरक बजट में 360 करोड़ का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, देश के सभी नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन योजना चलाई जा रही है। इस योजना के लिए अनुपूरक बजट में 255 करोड़ 25 लाख का अतिरिक्त प्रावधान किया गया है। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के आदेश के तहत् राज्य के नदी, नालों को प्रदूषण से बचाने के लिए सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किया जाना है। इसके लिए इस अनुपूरक बजट में 250 करोड़ का प्रावधान किया गया है। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय, प्रदेश की नक्सल समस्या, नागरिकों के जन जीवन की सुरक्षा से जुड़ा एक संवेदनशील विषय है। विशेष अधोसंरचना योजना के अंतर्गत नक्सल क्षेत्र में उन्नत थाना एवं चौकी निर्माण तथा अन्य कार्यों के लिए राज्य को वित्तीय सहायता दी जाती है। किंतु अफसोस आपकी सरकार ने इस योजना में भी पर्याप्त धनराशि का प्रावधान नहीं किया था। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में पुलिस बल बेहतर एवं सुरक्षित ढंग से कार्य कर सके, इसके लिए विशेष अधोसंरचना योजना में 150 करोड़ का प्रावधान किया गया है। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, हमारी सरकार के घोषणा पत्र में छत्तीसगढ़ की जनता से किये गये वादों को पूरा करने की शुरूआत हम इस अनुपूरक बजट के माध्यम से करने जा रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय, 10 वर्ष की उम्र में मेरे सर से पिता का सांया उठ गया था। किंतु प्रदेश के युवाओं को यह आश्वस्त करना चाहता हूं कि मैं विष्णु देव साय एक पिता एक पालक के रूप में आपकी बेहतरी के लिए सदैव काम करता रहूंगा। (मेजों की थपथपाहट) मैं विष्णु देव साय मेरे प्रदेश के बहनों की सुरक्षा और समृद्धि के लिए एक भाई के नाते सदैव तत्पर एवं हाजिर रहूंगा। (मेजों की थपथपाहट) मैं विष्णु देव साय अपने पुत्र धर्म का निर्वाह करते हुए प्रदेश के सभी बुर्जुगों के स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए सदैव क्रियाशील रहूंगा। (मेजों की थपथपाहट) मैं विष्णु देव साय छत्तीसगढ़ के हर नागरिक की बेहतरी के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने में भी कभी पीछे नहीं हटूंगा। (मेजों की थपथपाहट)



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ की जनता से प्राप्त अभूतपूर्व समर्थन के लिए एक बार पुन: आभार व्यक्त करता हूं एवं माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा छत्तीसगढ़ निवासियों को दी गयी मोदी की गांरटी के क्रियान्वयन हेतु प्रस्तुत 12,993 करोड़ के द्वितीय अनुपूरक विधेयक को सर्व सम्मति से पारित करने का पूरे सदन से मैं विनम्र अनुरोध करता हूं। धन्यवाद, जय हिंद, जय भारत, जय छत्तीसगढ़, (मेजों की थपथपाहट)।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरण दास महंत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी माननीय मुख्यमंत्री जी ने एक भावनात्मक बातें कहकर हम लोगों को थोड़ा सा मौन कर दिया, चुप कर दिया। 10 वर्ष में वे पिता को खो गये, हमने भी, हम सब भी अपने-अपने पिता को खोए हैं, कई लोगों को सौभाग्य है कि अभी भी सेवा कर रहे हैं। यहां एक अभागा बैठा है, जिसने अपने पिता को कैसे खोया है उसको वह और उसका परिवार ही समझता होगा। ठीक है, आप पिता बनकर सेवा करें। यह भईया कका बनकर सेवा कर रहे थे। शायद लोगों ने कका की सेवा पसंद नहीं की, इसलिए पिता को चुन लिया। (हंसी)

श्री अजय चंद्राकर :- क्या है कि।

डॉ. चरणदास महंत :- जस्ट अ मिनट। प्लीज, गड़बड़ हो जाएगा।

श्री अजय चंद्राकर :- मैं आसंदी से एक प्रश्न पूछ रहा हूं।

डॉ. चरणदास महंत :- मैं कुछ कह रहा हूं न। मध्यप्रदेश में मामा बनकर सेवा कर रहे थे।

श्री अजय चंद्राकर :- Right To Answer का प्रावधान नहीं है।

डॉ. चरणदास महंत :- भाई, मुझे इतनी बात कहने का अधिकार है। मुझे आप ही इतना थोड़ी न समझते हैं। उन्होंने जो भावनात्मक बातें की हैं उसी भावना के साथ मैं भी कुछ कह रहा हूं। वह तो मेरे से छोटे हैं, इसलिए मैं उनको आशीर्वाद ही दूंगा कि वह छत्तीसगढ़ की सेवा करे, यहां की महतारी की सेवा करे, बच्चों की सेवा करे। मेरा उनको आशीर्वाद है। मैं यह नहीं कह रहा हूं, मगर आप लटके-झटके में मत आइये। 25 तारीख को आप अटल जी की याद में 2 वर्ष का बोनस देने जा रहे हैं। आप कामयाब हो, आप बोनस बांटेंगे और हम देखेंगे। मगर आप महतारी वंदन योजना को बार-बार याद दिला रहे हैं, इसलिए मैं आपको बार-बार टोक रहा हूं कि आपने जो 1,200 करोड़ रूपये दिये हैं, वह 70 लाख महिलाओं के लिए पूरा नहीं हो सकता। या तो आप उसमें अपनी गलती सुधार लीजिए या कह दीजिए कि हमने असत्य कहा है। मुझे केवल इतना ही कहना है और इतना कहने का अधिकार तो विपक्ष को है।

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है।

अध्यक्ष महोदय :- हां, बोलिये।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी के बजट भाषण के उत्तर के तत्काल बाद माननीय नेता प्रतिपक्ष जी खड़े हुए। सदन की परंपरा के अनुसार नेता प्रतिपक्ष जी को कभी भी खड़े होने का अधिकार है। इसमें मुझे कोई रोष नहीं है।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

डॉ. चरण दास महंत :- मैं खड़ा नहीं हुआ।

श्री अजय चंद्राकर :- एक मिनट, पहले व्यवस्था के प्रश्न को पूरा होने दीजिए।

डॉ. चरण दास महंत :- मैं भी आपको टोक रहा हूं। मैं अध्यक्ष जी से अनुमति लेकर खड़ा हुआ हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष जी ने मुझे व्यवस्था के प्रश्न पर बोलने की अनुमति दी है। आप मेरा व्यवस्था का प्रश्न पूरा हो जाने दीजिए।

अध्यक्ष महोदय :- एक मिनट। चंद्राकर जी, आप पूरा कीजिए।

श्री अजय चंद्राकर :- अध्यक्ष महोदय, यह Right To Answer का अधिकार हमको अविश्वास प्रस्ताव में है। वक्तव्य में प्रतिक्रिया का अधिकार है। वह किसी भी Motion में खड़े हो रहे थे। अभी के वक्तव्य को Right To Answer माना जाएगा या किसी वक्तव्य की प्रतिक्रिया मानी जाएगी या बोल सकते हैं? क्योंकि यदि वह किसी दूसरे विषय में बोलते तो मैं यह आपत्ति नहीं लेता, परंतु उन्होंने जो तत्काल कहा, न तो यह Right To Answer है और न तो यह वक्तव्य था, जिसकी वह प्रतिक्रिया दें। वह किसी Motion में किसी विषय में कुछ भी बात करें। चूंकि उन्होंने वक्तव्य के तुरंत बाद यह बात कही, इसलिए मैंने व्यवस्था का प्रश्न लिया। आपसे अनुरोध है इसपर तत्काल व्यवस्था आनी चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये। क्या आप कुछ बोल रहे हैं?

डॉ. चरण दास महंत :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से खड़ा हुआ हूं। आप इतने घबरा क्यों रहे हैं? मैं तो आप ही के पक्ष में बात कह रहा हूं।

श्री अजय चंद्राकर :- नहीं, मैं बिल्कुल नहीं घबरा रहा हूं। मैंने व्यवस्था का प्रश्न लिया है।

डॉ. चरण दास महंत :- महाराज, माननीय मुख्यमंत्री विष्णु देव जी ने कहा कि वह पितातुल्य क्षेत्र की सेवा करेंगे। नहीं कहा क्या? मैं कह रहा था कि हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी ने ककातुल्य सेवा की और एक ने मामातुल्य सेवा की। मैंने केवल इतना ही कहा। आपको क्या तकलीफ है?

श्री अजय चंद्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे कोई तकलीफ नहीं है। चूंकि यह प्रक्रियाजनक बात है। आपने प्रक्रियाजनक बात कही। मैं आपके अधिकार को सायलेंस नहीं कर रहा हूं। परंतु आपने तत्काल खड़े होकर वक्तव्य पर जो प्रतिक्रिया दी, उस पर मैं आपकी व्यवस्था की मांग करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। मैं इस पर व्यवस्था देता हूं।

**<u>व्यवस्था</u>**

अध्यक्ष महोदय :- माननीय नेता प्रतिपक्ष ने अपनी बात कही। सामान्य प्रक्रिया है और उन्होंने अनुमति लेकर अपनी बात कही थी। निश्चित रूप से मुख्यमंत्री के भाषण के बाद अपनी बात संक्षिप्त में रख सकते हैं। (मेजों की थपथपाहट)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि यह परंपरा बन जाएगी तो हमेशा के लिए बन जाएगी। सामान्यत: नहीं रखना चाहिए। आपने अनुमति दी, उसमें हमें कोई आपत्ति नहीं है। परंतु यह परंपरा न बने, इस बात पर हमको ध्यान देना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय :- सामान्यत: नहीं होता। मैं आपसे बिल्कुल सहमत हूं कि यह परंपरा न बने। चूंकि मौका दिया गया था और उन्होंने अपनी बात कह दी। आगे बढ़ते हैं।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि - दिनांक 31 मार्च, 2024 को समाप्त होने वाले वर्ष में अनुदान संख्या-1, 3, 6, 7, 10, 12, 13, 14, 17, 19, 20, 21, 23, 26, 27, 29, 30, 31, 36, 41, 44, 47, 55, 64, 65, 69, 80 एवं 81 के लिए राज्य की संचित निधि में से प्रस्तावित व्यय के निमित्त राज्यपाल महोदय को कुल मिलाकर बारह हजार नौ सौ बयानबे करोड़, सत्तर लाख, अन्ठानबे हजार, आठ सौ रूपये की अनुपूरक राशि दी जाये ।

**अनुपूरक अनुदान की मांगों पर प्रस्ताव स्वीकृत हुआ.**

(मेजों की थपथपाहट)

समय :
3:36 बजे

**<u>छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-4) विधेयक, 2023 (क्रमांक 15 सन् 2023)</u>**

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-4) विधेयक, 2023 (क्रमांक 15 सन् 2023) का पुर:स्थापन करता हूं ।

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-4) विधेयक, 2023 (क्रमांक 15 सन् 2023) पर विचार किया जाये ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-4) विधेयक, 2023 (क्रमांक 15 सन् 2023) पर विचार किया जाये।

**प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।**

अध्यक्ष महोदय :- अब विधेयक के खण्डों पर विचार होगा ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि खण्ड 2, 3 व अनुसूची इस विधेयक का अंग बने ।

**खण्ड 2, 3 व अनुसूची इस विधेयक का अंग बने ।**

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि खण्ड 1 इस विधेयक का अंग बने ।

**खण्ड 1 इस विधेयक का अंग बना ।**



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि पूर्ण नाम तथा अधिनियमन सूत्र इस विधेयक का अंग बने ।

**पूर्ण नाम तथा अधिनियमन सूत्र इस विधेयक का अंग बने ।**

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) :- अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-4) विधेयक, 2023 (क्रमांक 15 सन् 2023) पारित किया जाये ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ ।

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि छत्तीसगढ़ विनियोग (क्रमांक-4) विधेयक, 2023 (क्रमांक 15 सन् 2023) पारित किया जाये ।

**प्रस्ताव स्वीकृत हुआ ।**

**विधेयक पारित हुआ ।**

(मेजों की थपथपाहट)

श्री उमेश पटेल :- माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्यमंत्री जी, आपका यह पहला बजट था तो आपको बहुत-बहुत बधाई ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अध्यक्ष महोदय, पूरे सदन की तरफ से माननीय मुख्यमंत्री जी को पहला अनुपूरक बजट प्रस्तुत करने के लिए और उनकी पहली मैडन स्पीच के लिए पूरा सदन समवेत् स्वर से उनको बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता है । (मेजों की थपथपाहट)

श्री राजेश मूणत :- नेता जी, आप भी बधाई दे दीजिए ।

श्री अजय चन्द्राकर :- अवैध संबंधों को वैध कर लीजिए ।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरण दास महंत) :- मैं स्वीकार कर चुका हूं कि आपके और मेरे संबंध कैसे हैं, उसके बावजूद भी आप मुझे टोकते हो ।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- अईसे हे, ओ ह टोकत हे, लेकिन तैं ह सार्वजनिक कर दे हस । अवैध संबंध ला कभी सार्वजनिक नहीं करे जाये ।

डॉ. चरण दास महंत :- सॉरी । अध्यक्ष महोदय, आज हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी का प्रथम अनुपूरक बजट पास हुआ है । मैं सभी साथियों को, उनके उप मुख्यमंत्रियों को, हमारे तमाम साथियों को, जिन्होंने इस बजट में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की है, उनको धन्यवाद देता हूं । अध्यक्ष महोदय, और आपने सफलतापूर्वक सदन का संचालन किया है इसलिए आपका भी आभार व्यक्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद । माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर चर्चा । श्री अजय चन्द्राकर, सदस्य माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा प्रारंभ करेंगे ।



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने नाम लिया नहीं ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं माननीय अजय चन्द्राकर पहले ही बोला था ।

डॉ. चरण दास महंत :- आपने क्या अजय बघेल सुन लिया था ? (हंसी)

समय :
3.40 बजे

**माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा**

अध्यक्ष महोदय :- श्री अजय चन्द्राकर सदस्य, माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा प्रारंभ करेंगे।

श्री अजय चन्द्राकर (कुरूद) :- आप अजय चन्द्राकर, बोलेंगे सोच रहा था।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने माननीय अजय चन्द्राकर पहले बोला था।

श्री बृजमोहन अग्रवाल :- माननीय भी लगाये और श्री भी लगाये।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- आपने क्या अजय बघेल सुन लिया था ? (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, मुझे आपका भाषण, आपकी हर बात बहुत प्रिय है। आपने कहा कि मेरा भाषण अप्रिय नहीं लग रहा था।

श्री राजेश मूणत :- अजय जी, वह नेता जी का ईशारा किस तरफ है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आपकी सारी बातें मुझे अच्छी लगती है और आप यहां उपस्थित रहते हैं। चूंकि अभिभाषण अभी शुरू हो रहा है। मैंने आप लोगों को शुरूआत में बधाई नहीं दी थी, वह अनुपूरक का क्षण था। किन्हीं भी कारणों से आगे-पीछे हो गया। अभिभाषण पर चर्चा शुरू हो रही है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी को सदन का नेता निर्वाचित होने पर अपने दल की ओर से एवं पूरे सदस्यों की ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। (मेजों की थपथपाहट) माननीय नेता प्रतिपक्ष जी आपको नेता प्रतिपक्ष बनाये जाने पर बहुत-बहुत बधाई देता हूं। हमारे जितने सदस्य, विशेष तौर पर जो पहली बार नव निर्वाचित होकर आये हैं, उन सदस्यों को बधाई देता हूं। सबकी ओर से समवेत् स्वर में माननीय अध्यक्ष महोदय जी का अभिनन्दन करते हुए हम सबको संरक्षण के लिए सदन की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करता हूं। हम आपसे अपेक्षा करते हैं कि आपका मार्गदर्शन हम सबको मिलेगा।

माननीय नेता प्रतिपक्ष जी, इन सबसे बढ़कर सन् 2003 के पहले आम चुनाव से लेकर अब तक चाहे आपकी सरकार बनी हो या हमारी बनी हो, हमारे साथ ही झारखण्ड राज्य बना था, वहां बहुत बार क्लीयरकट मेन्डेट नहीं मिला, खिचड़ी सरकार बनी, छः महीने में मुख्यमंत्री बदलते गये, 3-4 मुख्यमंत्री बने। परन्तु छत्तीसगढ़ की जनता का इस सदन के माध्यम से अभिनन्दन करता हूं, जिन्होंने हर पर मेच्योर मेन्डेट छत्तीसगढ़ की विधान सभा को दिया और उन्होंने एक स्थाई सरकार निर्वाचित की। उसके



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

लिए और यह नई सरकार बनाने के लिए जनता का अभिनन्दन करते हुए, सदन के माध्यम से अपनी बात शुरू करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता जी आपकी सरकार थी। कौन अभिभाषण बनाता था, कौन लिखता था, कौन उसको देखता था, कौन ध्यान देता था और मंत्रिमण्डल के सदस्य क्या करते थे ? बिना पढ़े अनुमोदित करते थे या क्या करते थे, मैं आज तक नहीं समझ पाया।

डॉ. चरणदास महंत :- मैं भी इसी तरह से अपना भाषण शुरू करूंगा, आपको बुरा नहीं लगना चाहिए। मैं भी इसी अंदाज में कह सकता हूं, इसी अंदाज में शुरू करूंगा, आप उस समय बुरा मत मानियेगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- सवाल ही पैदा नहीं होता, मैं तो आपके-मेरे सम्बन्धों की हमेशा कद्र करूंगा। (हंसी)

अध्यक्ष महोदय :- देखिये अजय जी, आपका अंदाज अपनी जगह रहे और आपका अंदाज अपनी जगह रहे। दोनों को परिवर्तन नहीं करना चाहिए, आप दोनों बेहतर हो।

श्री अजय चन्द्राकर :- देखिये, माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण में आपने जन घोषणा-पत्र आत्मसात् किया, आपने उसकी क्या कीमत की ? उसमें 36 बिन्दु थे, उसके सब चेप्टर को मिला दे तो 327-329 बिन्दु थे। श्री भूपेश बघेल, उनके मंत्रिमण्डल के 3 सदस्य सामने बैठे हैं। आज धान खरीदी से लेकर बिजली बिल हाफ पर चर्चा हो रही थी, प्रत्येक बिन्दु पर चर्चा करने के लिए चुनौती है, आपने एक बिन्दु पूरा नहीं किया है। आपने छत्तीसगढ़ की जनता को सिर्फ छला। आप धान खरीदी को सफल मानते हैं, आप वक्तव्य दे रहे थे, चलिये उस पर बहस करते हैं। मैंने एक दिन लिखा था कि भारत सरकार के साथ जो एग्रीमेंट है, उसको खत्म कर दीजिये और अपने दम पर धान खरीदी करके बताईये। बिजली बिल हाफ पर चर्चा हो रही थी। आपने बिजली बिल हाफ लिखा था, आपने यह भी लिखा था कि 400 यूनिट खपत होने पर बिजली बिल हाफ है।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ.चरणदास महंत) :- अध्यक्ष महोदय, मुझे डर लगता है कि आप इन्हें संबोधित कर रहे हैं या इन्हें कर रहे हैं ? मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि अध्यक्ष की तरफ देखकर बोलें । डर लग रहा है ।

श्री अजय चन्द्राकर :-चलिये, मैं वैसा ही कर देता हूँ । अध्यक्ष जी, कर्जा माफी लिखा था, मैंने कहा था कि 10 दिनों में इस्तीफा दे दूंगा । आर्डर क्या आया, सोसायटी के अल्पकालीन कर्ज माफ, बहुत चिल्ला-चिल्ला कर बोलते हो ।

श्री रामकुमार यादव :- 10 हजार करोड़ कर्जा माफ करे हन ।

श्री अजय चन्द्राकर :- तुम जिंदा रहो, दीर्घजीवी रहो, हमारी शुभकामनायें हैं, लेकिन उतना सारा नोट एक साथ देखकर बेहोश कैसे नहीं हुये ? (हंसी) (मेजों की थपथपाहट)



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रामकुमार यादव :- ये नोट हा तुमन के हावय ।

श्री अजय चन्द्राकर :- चुनाव प्रचार के बजाय सफाई देते घूम रहे थे कि नोट मेरा नहीं है ।

श्री रामकुमार यादव :- ये सब झूठा बात ला जान डारे रहिसे, चालबाज हा । अभी तोला हिसाब देला लागही ।

श्री अजय चन्द्राकर :- ये बेचारे को दिखाये होते तो उतना सारा नोट देखकर हार्ट अटैक हो जाते ।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर मालपानी ...।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय रामकुमार जी, मैं पानी भरा था, मैं कांवर बोहा था, बरदी चराया था, कहानी सुनाना बंद करो । मैं इतना सारा नोट देखा हूँ कि जिंदगी भर प्रसन्न रहूंगा, यह कहो ।

श्री रामकुमार यादव :- मैं कोन हंव ऐला क्षेत्र के जनता तय करही, आप तय नई करव । क्षेत्र के जनता मोला भेजे हे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष जी, राजयपाल महोदय की कितनी इज्जत उस अभिभाषण की कितनी गंभीरता कांग्रेस की दृष्टि में थी, मैं उस सरकार में होता तो अभी तक कार्यवाही हो गई होती । न दिशा, न दृष्टि, न सोच, न भावना, न कुछ । यदि भावनायें व्यक्त करते हैं, यदि कमिटमेंट व्यक्त करते हैं, प्रतिक्रिया आ जाती है ।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ.चरणदास महंत) :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि श्री विश्व भूषण हरिचंदन जी ने जो यहां अभिभाषण दिया है, उस पर आपको बात करनी है, ऐसा मैं समझता हूँ । क्या इनकी अनुमति है कि उनके पुराने अभिभाषण पर चर्चा करें ?

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, राज्यपाल के अभिभाषण पर बात करूंगा, मैं कभी विषय से बाहर बात ही नहीं करता हूँ ।

डॉ.चरणदास महंत :- अभी वाले अभिभाषण पर करो ना या ?

श्री अजय चन्द्राकर :- आपने राज्यपाल के अभिभाषण को मजाक बना दिया था, यह मुझे बताने की जरूर जरूरत है । यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार नहीं करेग, यह भी कमिटमेंट करने की जरूरत है । (मेजों की थपथपाहट) जो कहा, वह किया, यह साबित करेंगे । बिजली बिल हॉफ बोलकर 400 यूनिट आधा नहीं करेंगे। कर्जमाफी कहके, अल्पकालिक ऋण माफ होगी, यह नहीं कहेंगे । आपने जो कहा है, मैं सब में बोलूंगा, सारे विषयों में आता हूँ । गोधन न्याय योजना, नरवा, गरूवा, घुरवा, बारी में ज्यादा बोल दिया था, इसलिये नहीं बोलूंगा । वर्ष 2023 के भाषण में आया, वर्ष 2022 के भाषण में आया, वर्ष 2021 के भाषण में आया, वर्ष 2020 के भाषण में आया, वर्ष 2019 के भाषण में आया । यह पांच बार आया है । आप राज्यपाल महोदय के पांचवा अभिभाषण निकालकर देख लीजिए । इस सरकार की क्या दृष्टि थी ? नरवा, गरूवा, घुरवा, बारी से पांच साल में आगे नहीं बढ़ सके ? भूमिहीन



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

मजदूर, 6 हजार रूपया जो देते थे, अब नरवा, गरूवा, घुरवा, बारी में बोल चुका हूँ, 1 रूपया का बजट नहीं है । केन्द्र की 9 योजनाओं से अभिशरण, कन्वर्जेंस। भूमिहीन कृषि मजदूर न्याय योजना, वर्ष 2023 में, वर्ष 2021 में, क्या आंकड़ा, क्या मापदंड, किसी को नहीं मालूम है ? जैसे माननीय बोल रहे थे, जो अभी गये हैं, जिस काम से गये हैं, उसका उल्लेख नहीं करूंगा । क्वांटिफाईबल डाटा आयोग रखा नहीं गया है । आर्थिक सर्वेक्षण एक बार नहीं, दो बार हुआ है, दोनों बार यह निर्देश दिया गया है, इसमें छांटकर मितान क्लब बने हैं, उससे अनुमोदित करवाओ और कांग्रेस के जो नाम है, उसको अनुमोदित करके भेजो । असत्य कथन था । 47 हजार स्वीकृत हुआ था, मैं पेपर का विज्ञापन दिखा दूंगा कि 47 हजार लोगों को पहली किश्त गई और आज कहते हैं कि 7 लाख लोगों को हमने किश्त दे दी है ? इस सदन में झूठ बोल रहे हैं । पेपर का विज्ञापन गलत है तो डीपीआर के ऊपर कार्यवाही करेंगे ? लिखे वह, आवेदन दे ? डीपीआर गलत है तो हमारे माननीय मुख्यमंत्री जी से हम कार्यवाही करवायेंगे । माननीय अध्यक्ष महोदय, तेंदूपत्ता संग्रहण वर्ष 2021 में रिपीट हुआ और वर्ष 2020 में रिपीट हुआ है । बिजली बिल हाफ और निशुल्क वितरण ये वर्ष 2023 में रिपीट हुआ, वर्ष 2022 में रिपीट हुआ, वर्ष 2021 में रिपीट हुआ, वर्ष 2020 में रिपीट हुआ । जल जीवन घरेलू कनेक्शन, यह भी वर्ष 2021 में और रिपीट हुआ । मैं जल जीवन के बारे में बात कर चुका हूँ । कूपोषण, एनीमिया, जिस साल 2019 में दिया गया, फिर वर्ष 2022 में रिपीट हुआ, वर्ष 2021 में उसको सूपोषण का उल्लेख किया गया । मैं जिस दिन आखिरी प्रश्न किया था, अब तो सरकार बदल गयी। कुपोषण में छत्तीसगढ़ पहले नंबर में था। तीन बार अभिभाषण बोलवाने के बाद कुपोषण में छत्तीसगढ़ की स्थिति पहले नंबर में थी। फसल क्षति, कोविड मुआवजा के बारे में बोलना चाहूंगा। कोई भी आदमी नहीं जानता कि उसमें क्या हुआ। फसल की बीमा के लिये तो राज्यांश की राशि भी इन्होंने नहीं दी। आत्मानंद स्कूल के बारे में बोलना चाहूगा, वह वर्ष 2021 और 2022 दोनों में रिपीट हुआ। कोई नई चीज नहीं, कोई नई दृष्टि नहीं और इसके लिये कोई बजट भी नहीं था। डी.एम.एफ. और सी.एस.आर., ऐसे फण्डों से वह अभी-भी संचालित हो रहा है। टीचर मांग करने आये थे कि हमारा वेतन बजट से दिलवा दीजिये। सरकार बदल गयी है, मान लीजिये यदि हमको निकाल दिया गया, कुछ कर दिया गया तो हम लोगों का क्या होगा। राम वन गमन पथ में ये इतने उत्साहित थे कि यह लोग सोचे कि मूर्ति लगाकर यह लोग चुनाव जीत जायेंगे। भगवान भी देख रहा है कि मैं भगवान जैसे तो दिखूं। मैंने बोला था कि आप तो ज्ञाता है। अटल श्रीवास्तव जी कहा है ? अटल श्रीवास्तव जी, आपके निर्वाचन क्षेत्र, रतनपुर में, राम की टेकरी में, अजानुबाहु भगवान श्री राम की पहली अवाक्ष प्रतिमा लगी है।

श्री सुशांत शुक्ला :- जय जय श्री राम।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप हर जगह मूर्ति लगाने के पहले जाकर अजानुबाहु की प्रतिमा को देखकर आ जाते। आप वहां चंदखुरी में तुरंत जाकर देखिये, टिकट का पैसा मैं दूंगा। तीन बार रिपीट हुआ

है। चिटफण्ड कंपनियों की राशि वापसी के बारे में बोलना चाहूंगा। वर्ष 2019 से 2023 में अभी तक किसी को भी राशि वापस नहीं की गई है और इसमें तो कलाकारी चल रही है कि कुर्की कौन करेगा, कैसे करेगा, कौन-सी जमीन की होगी, चुप-चाप होगी।

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाईंट ऑफ ऑर्डर है। अभी जो अभिभाषण पर चर्चा चल रही है, इसकी कुछ सीमा तय कर दीजिये कि हम कितने पुराने अभिभाषणों का उल्लेख करेंगे और हम कहां के शुरू करेंगे और यह कितनी सरकार से चल रहा है। मेरा यह प्वाईंट ऑफ ऑर्डर है कि समय-सीमा तय कर दीजिये। अगर आप ऐसे जायेंगे तो फिर मध्यप्रदेश से शुरू कीजिये। वहां से शुरू करते जाओ। वहां से सुनाते जाते हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- आप सुनिये तो, आप मंत्री थे।

श्री रामकुमार यादव :- ये तो त्रेता और द्वापर ला घलोक निकाल देत हावय।

श्री अजय चन्द्राकर :- ते जिन्दा हस, इहि मोला संदेह हे।

श्री उमेश पटेल :- अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे व्यवस्था चाह रहा हूं। आप व्यवस्था दे दीजिये।

अध्यक्ष महोदय :- ठीक है। चन्द्राकर जी, बोलिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- अध्यक्ष महोदय, चिटफण्ड कंपनी की रकम वापसी और मौके की जो जमीन है, उसकी नीलामी, उसको कौन लेगा, यह पहले से तय है, जो 10 प्रतिशत की नीलामी है, जमीन ऑक्सन में वह भी घोटाला है। शराबबंदी का मामला दो बार आया। छोटे-छोटे भूखण्ड, वर्ष 2019 और वर्ष 2020 दोनों में आया। अब इतने सारे विषय है, यदि कोई अधिकारी रिपीट करता है, यदि कोई चीजें रिपीट होती है, तो इसका मतलब यह है कि वह केबिनेट इसको पढ़ती लिखती नहीं थी, उनके ध्यान में संवैधानिक संस्थाओं की कोई मर्यादा नहीं थी। मैं माननीय नेता प्रतिपक्ष जी को आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि आरक्षण के विषय पर कितनी बार गवर्नर महोदया की आलोचना की ? 05 फरवरी 2018 को, यह जब सरकार में नहीं आये थे। माननीय भूपेश बघेल जी ने गवर्नर के लिये जो शब्द उपयोग किये हैं, यदि आप अनुमति देंगे तो मैं पढ़कर सुना दूंगा। यह संवैधानिक संस्थाओं के लिये कांग्रेस की भाषा है, यह कांग्रेस की आस्था है। आपने क्या महत्व दिया, वह दिख गया। जिस दिन जिसके सामने 327 से 329 बिंदुओं पर या 36 बिन्दुओं के क्रियान्वयन पर जब चाहे फिर से बहस कर लें, लेकिन जनता के साथ झूठ बोलना बंद करें। माननीय महोदय, अभी अभिभाषण की बात कर रहे थे। मैं अभिभाषण में अधिकांश बिंदुओं में बोल चुका हूं, लेकिन कुछ बिंदुओं में बोल देता हूं । पी.एस.सी. पर हमारे सदस्य बोलेंगे। आप पी.एस.सी. घोटाले में सहमत है या असहमत है कि क्या हुआ, कैसे हुआ। मैं उसमें बता चुका हूं लेकिन मैं सिर्फ एक मांग में बोल देता हूं कि सचिव स्तर की जांच अर्थात् सरकार की जांच मानी जाती है, उसको आपने खत्म करके अध्यक्ष बनाया। यदि वह जांच चलती रहती तो कोई भी आदमी जिसके खिलाफ जांच चल रही है, वह अध्यक्ष नहीं बन सकता था, वह षडयंत्रपूर्वक बनाया गया और



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

षडयंत्रपूर्वक वह सब काम करवाये गये। मैंने उस दिन बोला था और आज भी बोल रहा हूं। वह उस समय भी सक्रिय राजनीति में थे, यदि आज भी है तो वह उनकी मर्जी है, मैं आज का नहीं बोलता । आप इसमें देखते रहिए। छात्र-छात्राओं के लिए ट्रेवल एलाउंस देंगे, हमने हर संभाग में एम्स की तर्ज पर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईंस की शुरूआत की थी। पूर्व स्वास्थ्य मंत्री जी तो नहीं हैं। रायपुर में सुपर स्पेशियालिटी का हॉस्पिटल शुरू करने की बात थी, उसकी बॉडी बनी थी। माननीय अध्यक्ष महोदय ऊपर बैठे हैं। मैं उल्लेख नहीं करूंगा। पी.जी.आई. लखनऊ, रोहतक, चण्डीगढ़ या मुम्बई की तर्ज पर डी.के.एस. के साथ मिलाकर इसे पी.जी.आई. इंस्टीट्यूट बनायेंगे। पूर्व में हमारी यह परिकल्पना थी। मैं फिर कह रहा हूँ जो डी.के.एस. हॉस्पिटल में एक्स- रे और गामा यूनिट लगा है। कोई प्रक्रियाजनक त्रुटि हो गई होगी, इन्होंने उसमें 5 सालों से ताला लगाकर रखा और आपके शासन में उसका भुगतान हुआ। उन्होंने भुगतान कर लिया। यदि अधीक्षक या किसी ने गलती की है तो उतनी महंगी जमीन थी, वह कैंसर रोगियों के लिए मध्य भारत का सबसे अच्छा अस्पताल बन जाता। उस प्रक्रियाजनक त्रुटि को ठीक किया जा सकता था। यदि आप चन्दूलाल चन्द्राकर मेमोरियल हॉस्पिटल खरीद सकते हैं तो आप दो मशीनों को भी शुरू कर सकते थे। आपने चन्दूलाल चन्द्राकर मेमोरियल हॉस्पिटल एक डिप्टी कलेक्टर से मूल्यांकन कराकर खरीदा था, पूरा छत्तीसगढ़ इस बात को जानता है। तो यह आपकी फितरत में है। अब आप देखिए आई.आई.टी. की तर्ज पर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी की बात हुई थी। निश्चित रूप से छत्तीसगढ़ में उच्च शिक्षा मंत्री थे। आपको श्रेय जाता है। आप छत्तीसगढ़ में कॉलेज खोलने की बात कर रहे थे। मेरा आपके साथ बहुत जोरदार अनुभव है। मैं अनुभव को तो नहीं गिनाता, लेकिन सभी शिक्षा मिलाकर, आप प्रतिवेदन पढ़ लीजिए। अभी हमारा प्रतिवेदन आया नहीं है। इस प्रदेश में शिक्षकों के एक लाख चार हजार पद खाली हैं। आपने दो विश्वविद्यालय बनाये। मैं आपको एक ही काम का श्रेय दे देता हूँ कि आपके वही दो काम 5 सालों में याद रखे जाने योग्य थे, लेकिन आप उसको भुना नहीं सके। क्यों, क्योंकि आपका शिक्षा से संबंध ही नहीं था, आपकी इस क्षेत्र में रूचि नहीं थी। आपकी केवल नामकरण में रूचि थी कि आप कामधेनु का नाम बदलकर वासुदेव दास जी के नाम पर रख दो, कुशाभाऊ ठाकरे का नाम बदलकर चन्दूलाल चन्द्राकर जी के नाम में रख दो। आप एक फैक्लटी, नया विषय खोलते। यह जब आएंगे तो इस तरह का हम बनायेंगे । यहां ए.आई. आएगा, आज की दुनिया का विषय है इस प्रदेश में सेमी कंडक्टर पर अध्ययन होगा। यह हो सकता है, इस प्रदेश में ऑटो मोबाईल का विषय नहीं है, यहां स्पेश इंजीनियरिंग का विषय नहीं है। माननीय, जब आप थे आप देख लीजिएगा । आई.आई.टी. के विषय के आधुनिकरण के लिए हमारा खड़गपुर आई.आई.टी. के साथ एम.ओ. यू. था। इस प्रदेश में वह दोनों ट्रेड शुरू नहीं हो सके। अभी एक लाख चार हजार पद खाली हैं। यह इसके बाद दिखेंगे । सदन में लंबित बोनस भुगतान की बात आ गई। यहां महतारी वंदन, घर-घर निर्मल योजना, तेन्दूपत्ता संग्रहण की बात आ गई और बाकी योजनाएं शुरू की जाएंगीं। इस सरकार को



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

काम करते हुए, कितने दिन हुए हैं ? आप 5 सालों तक सरकार में थे। कोई बड़ी चीज, नीतिगत चीज के लिए बहुत छोटा समय है।

श्री उमेश पटेल :- माननीय भईया जी, प्रश्न यह नहीं है कि हम सरकार में कितने वर्षों तक थे । यहां प्रश्न यह है कि आपने महतारी वंदन योजना के लिए 60 लाख महिलाओं से फार्म भरवाया। यहां पर प्रश्न यह है कि आप प्रदेश में इस योजना का लाभ कितनी महिलाओं को देने जा रहे हैं।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मुख्य बजट आने दीजिए। मैंने कहा कि उसमें नाम्र्स क्या बनेंगे, कितने लोग हैं ? इसके लिए वर्ष 2011 को आधार वर्ष माना जाएगा या नया कुछ होगा। जैसे आप लोगों ने फर्जी आर्थिक सर्वेक्षण करवाया है। तो किसी न किसी रूप में योजना का स्वरूप आएगा। यहां सवाल कमिटमेंट का है। आपको हमारे कमिटमेंट में 25 दिसम्बर को बोनस मिलेगा। यहां महतारी वंदन योजना शुरू होगी और इस प्रदेश के विकास के लिए जिन चीजों की कल्पना की गई है, वह होगी। माननीय अध्यक्ष महोदय, अब फिर से बेहोशी में बात कर दूं। इस प्रदेश में किसानों का पूरा कर्ज माफ नहीं हुआ। इस बार इन्होंने फिर घोषणा की थी। इन्होंने अपने घोषणा पत्र में कहा था कि हम प्रति एकड़ 20 क्विंटल धान खरीदी करेंगे। इस बार इन्होंने फिर घोषणा कर दी और नया कुछ नहीं हुआ। इन्होंने यह भी कहा कि स्कूल, कॉलेजों में पी.जी. तक शिक्षा मुफ्त होगी। मैं आपको आपके घोषणा पत्र की बात बता रहा हूँ। शिक्षा का अधिकार आंगन बाड़ी से लेकर 12 वीं कक्षा तक और पी.जी. तक महिलाओं की शिक्षा...।

श्री उमेश पटेल :- अजय जी एक मिनट सुन लीजिए।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं पूरा तो पढ़ लेता हूँ फिर बैठूंगा।

श्री उमेश पटेल :- अजय जी, आप हमारे घोषणा पत्र को पढ़ रहे हैं। हम तो विपक्ष में आ गये हैं।

श्री रामकुमार यादव :- तुंहर मन के घोषणा पत्र में का हे, तेला बतावव न भई। ए छत्तीसगढ़ के जनता ए जानना चाहत हे कि तुमन का करिहौ तेला बतावव।

श्री उमेश पटेल :- आप अपना घोषणा पत्र पढ़िए कि आप क्या करने वाले हैं। इस प्रदेश में जना देश आ गया है और जनादेश ने आपको सत्ता में बैठा दिया। आप विपक्ष का घोषणा पत्र पढ़ रहे हैं।

समय :
4.00 बजे

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, यह पहले के घोषणा पत्र में भी था। एक बालिका को 12वीं तक की मुफ्त शिक्षा नहीं मिली, इनके घोषणा पत्र में रिपीट आई। भूमिहीन मजदूर, रिपीट, रिपीट, फिर घोषणा पत्र में आ गया, धान भी गया। 200 यूनिट बिजली फ्री पहले थी, अभी भी इनके घोषणा पत्र में आ गया। गैस सिलेण्डर में 500 रुपये सब्सिडी देंगे। माननीय केदार जी, पिछली

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बार क्या कहा था कि 4 गैस सिलेण्डर महिलाओं को फ्री में देंगे। इसीलिए मैं कहता हूं कि पूरे घोषणा पत्र को राज्यपाल जी के अभिभाषण में आत्मसात किये हैं, उसमें एक बहस हो जाये। लघु वनोपज, 17 लाख मकान गरीबों को आवास देंगे, दुर्घटनाओं में इलाज मुफ्त होगा। यह सारे के सारे बिन्दु आपके पहले के घोषणा-पत्र में भी थे, इसमें भी है। तिवरा पर समर्थन मूल्य, आप समझ रहे हैं न।

श्री उमेश पटेल :- अजय जी, जिस तरह से आप स्टडी करके आते हैं, जितना आपका ज्ञान है, हम तो बड़ी उम्मीद से आपके भाषण को सुन रहे हैं। लेकिन ऐसा लग रहा है कि आप किसी मंच में भाषण देने गये हैं। विपक्ष के घोषणा पत्र में विपक्ष क्या करने वाली थी, इस पर बात कर रहे हैं। आपके भाषण से बहुत मायूसी हुई।

श्री अजय चन्द्राकर :- ऐसा है कि आपको मिर्ची लगेगी तो मैं क्या कर लूंगा। यह तो आपने लिखा है उसको ही मैं पढ़ा हूं। आप छत्तीसगढ़ की जनता का संवैधानिक अपमान करना बंद कीजिये, संवैधानिक संस्थाओं का सम्मान करना सीखिये। एक भी संवैधानिक संस्था ऐसी नहीं है जिसका आपने सम्मान किया हो। माननीय अध्यक्ष महोदय, शराबबंदी की बात करना चाहता हूं। शराबबंदी की जगह में आप कल्पना कीजिये कि एक आदमी को 16 पौवा मिलेगा। एक आदमी को 16 पौवा पिला दीजिये, वह मर जायेगा। भूपेश बघेल जी के द्वारा संरक्षित स्टार्ट-अप था कि एक आदमी को 16 पौवा ले जाओ और गांव जाकर अवैध शराब बेचो। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से एक आग्रह करते हुए और एक बात बोलते हुए अपनी बात समाप्त करूंगा क्योंकि अधिकांश बातें मैं कह चुका हूं। भाजपा के घोषणा पत्र में है कि हम जितने प्रकार की अनियमितता हुई है उसके लिए एक आयोग बनायेंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, सबसे बड़ा अपराध तो यह है, मैं फिर से उसको बोल रहा हूं लेकिन दूसरे मोशन में बोल रहा हूं कि अपने राज्य के कर राजस्व की मुख्यमंत्री जी के संरक्षण में चोरी होना, इस पर जांच की घोषणा आज सदन में माननीय मुख्यमंत्री जी उत्तर देते वक्त करेंगे कि मैं आयोग बनाऊंगा और इस तरह की जितनी अनियमितता है उस पर समयबद्ध सीमा में कार्रवाई करवाऊंगा। मैं यह मांग एक सत्तारूढ़ दल के सदस्य होने के नाते, हमारी सरकार बनी है, उसके नाते माननीय मुख्यमंत्री जी से करना चाहता हूं। माननीय अध्यक्ष महोदय, एक भी काम उसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ को, भूपेश बघेल जी का, मंत्रिमंडल के सदस्य बैठे हैं, यह जिम्मेदारी से भाग नहीं सकते। लेवी वसूली में आई.ए.एस. जेल में है। रेत के बारे में आज पेपर में छपा है कि इतने सारे हाईवा जब्त किये गये। अवैध शराब, जुंआ, सट्टा ये छत्तीसगढ़ के सरकारी स्टार्ट-अप हैं। स्टार्ट-अप के लिए कोई नीति नहीं बनी, बेरोजगारों के लिए कोई नीति नहीं बनी, एक स्टार्ट-अप का वित्त पोषण नहीं हुआ। पर 300, छत्तीसगढिया का नारा लगाते रहे, पुन्नी स्नान करते रहे, सांकड़ लेते रहे, आपको एक-दो बात बता देता हूं। आपका समर्पित कर रहा हूं। इस साल यूनेस्को ने भारत के एक आर्ट "गरबा" को अमूर्त आर्ट में शामिल किया है। इससे पहले वैदिक मंत्र, राम-लीला शामिल थे। इस साल गरबा को शामिल किया है। मैं भूपेश बघेल जी के अधूरे संपने को पूरा



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

करूंगा। उनके सांकड़ लेने को और पुन्नी स्नान करने को यूनेस्को को लिखना है कि इसको भी सांस्कृतिक विरासत में दर्ज करो, एक मुख्यमंत्री होते थे जो छत्तीसगढ़ को वास्तविक स्वाभिमान देने के लिये, छत्तीसगढ़ी को सम्मान देने के लिये, छत्तीसगढ़िया, छत्तीसगढ़ियावाद को सम्मान देने के लिये एक काम नहीं किये और इमोशनल शोषण किये। आप लिस्ट जारी कर दीजिये, मेरी विधान सभा की लिस्ट देख लीजिये, एक पंचायत के एक आदमी को रेत खनन का ठेका नहीं है। भिलाई-3 के माफिया कहां के रहने वाले हैं, बता दूंगा। इस तरह के जो कृत्य हैं, इस तरह की जो नीतियां छत्तीसगढ़ को लूटने के लिए बनाई गईं, एक वक्तव्य आया। मैंने एक प्रश्न लगाया, ट्वीट किया कि खनिज की नीलामी ऑनलाईन है उसको ऑफलाईन क्यों किया गया ? उसमें स्पष्टीकरण क्या आया। ऑफलाईन करने से राजस्व बढ़ा। अब अगर आप अनुमति देंगे तो मैं नाम लेकर बता दूंगा कि ऑफलाईन करके किसको भानुप्रतापुर में खदान दिया गया है। आर्फलाईन करके कोषाध्यक्ष फरार हो गया। अब इस तरह के कृत्यों की यदि जांच नहीं होती है तो साहब, लोग हमको भी माफ नहीं करेंगे। हम वह हर कारण दूर करेंगे, जिन चरित्रों के कारण कांग्रेस की सरकार को उधर बैठना पड़ा और जिन कारणों से भारतीय जनता पार्टी के ऊपर जनता ने भरोसा करके छत्तीसगढ़ की जनता ने क्लियर अमेंडेड दिया, वह हर कारण को हम साकार करेंगे। (मेजों की थपथपाहट) इस भाव के साथ मैं फिर से माननीय मुख्यमंत्री जी से यह आग्रह करते हुए कहता हूं कि इनके लिए आयोग बने, जल्दी जांच हो और छत्तीसगढ़ की जनता को संदेश जाए कि भ्रष्ट सरकार के कारनामे सामने आएंगे । कोई राजनीतिक द्वेषवश नहीं आएंगे और वह हर प्रतीक को स्थापित करेंगे और वह हर परंपरा और संस्कृति को विस्थापित करेंगे जो छत्तीसगढ़ को गौरव के स्थान पर पहुंचायेगा। ये लूटने, चोरी, [XX], डकैती, वसूली, यह सब बंद होगा। दारू भी बंद होगा। आपने अवसर दिया, उसके लिए धन्यवाद।

अध्यक्ष महोदय :- धन्यवाद।

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- आपने इतनी निराशापूर्ण भाषण दिया । आपके मुख्यमंत्री जी नहीं हैं, आपके दोनों उपमुख्यमंत्री नहीं हैं तो आप किसको सुना रहे थे? जब आपको कोई सुनने वाला कोई नहीं है तो इतना ताव क्यों खा रहे हैं, भैया?

श्री अजय चन्द्राकर :- मुझे तो आपके मेरे अवैध संबंधों पर ही भरोसा है। बाकी तो कोई दूसरे चीज से मुझे मतलब नहीं है। माननीय अध्यक्ष महोदय जी ने सुन लिया, वह काफी है।

श्रीमती चातुरी नंद :- माननीय अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय :- आप कुछ बोलेंगे।

श्रीमती चातुरी नंद :- जी?

अध्यक्ष महोदय :- किस पर?

श्रीमती चातुरी नंद :- अजय जी पर। (हंसी)



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, आप बोल लीजिये। आपको विशेष अनुमति है। मैं आपको विशेष अनुमति दे रहा हूं।

डॉ. चरणदास महंत :- एक ही बारी है, मत बोलिये।

अध्यक्ष महोदय :- मैंने कहा है। बोल सकते हैं। बोलिये-बोलिये।

श्रीमती चातुरी नंद :- मैं सबसे पहले अध्यक्ष महादेय जी ला सादर प्रणाम करत हौं अउ धन्यवाद देवत हौं कि आप मोला बोले के मौका देओ। मैं सुबह से बइठे हव, हमर अजय भइया हर बहुत सुंदर तरीका से संचालन करत हे। आपके नजर सबो डहर जा हे, पर आप ला एक बात बता देना चाहत हौं कि अभी आप मन देखे हौ कि ओलावृष्टि अउ बारीश होए हे, जेकर चलते किसान मन के धान बर्बाद होय हे।

अध्यक्ष महोदय :- चलिये, धन्यवाद। बहुत अच्छा।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय अध्यक्ष महोदय, एक और बात। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने नक्सल समस्या पर एक चिंता जाहिर की थी कि हमारे क्या संबंध था? आपके क्या संबंध था? न आपके सबंध थे, न मेरे सबंध थे। किसके उनके क्या संबंध थे, वह दादी आपको बता देंगे। आप पूछ लीजियेगा। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव में 29 माननीय सदस्यों के संशोधनों की सूचनाएं प्राप्त हुई हैं। संशोधन बहुत ही विस्तृत हैं, मैं पूरे संशोधनों को नहीं पढ़ूंगा, केवल संशोधन प्रस्तुतकर्ता सदस्यों के नाम को ही पढ़ूंगा। जो माननीय सदस्य सदन में उपस्थित होंगे, उनके ही संशोधन प्रस्तुत हुए माने जायेंगे :-

| **क्र.** | **सदस्य का नाम** | **संशोधनों की संख्या** |
|---|---|---|
| 1. | डॉ. चरणदास महंत, नेता प्रतिपक्ष | 19 |
| 2. | श्री कवासी लखमा, सदस्य | 10 |
| 3. | श्री उमेश पटेल, सदस्य | 5 |
| 4. | श्रीमती अनिला भेंडिया, सदस्य | 14 |
| 5. | श्री भोलाराम साहू, सदस्य | 14 |
| 6. | श्री दलेश्वर साहू, सदस्य | 13 |
| 7. | श्रीमती उत्तरी गनपत जांगड़े | 3 |
| 8. | श्रीमती संगीता सिन्हा, सदस्य | 16 |
| 9. | श्रीमती अंबिका मरकाम, सदस्य | 15 |
| 10. | श्री रामकुमार यादव, सदस्य | 5 |
| 11. | श्री द्वारिकाधीश यादव, सदस्य | 10 |
| 12. | श्रीमती यशोदा निलाम्बर वर्मा, सदस्य | 9 |

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

| | | |
|---|---|---|
| 13. | श्री ओंकार साहू, सदस्य | 7 |
| 14. | श्री ब्यास कश्यप, सदस्य | 7 |
| 15. | श्री अटल श्रीवास्तव, सदस्य | 5 |
| 16. | श्रीमती शेषराज हरवंश, सदस्य | 6 |
| 17. | श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल, सदस्य | 9 |
| 18. | श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह, सदस्य | 4 |
| 19. | श्री बालेश्वर साहू, सदस्य | 4 |
| 20. | श्री जनक ध्रुव, सदस्य | 5 |
| 21. | श्रीमती चातुरी नंद, सदस्य | 5 |
| 22. | श्रीमती विद्यावती सिदार, सदस्य | 9 |

अत: अब माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण श्री अजय चन्द्राकर, सदस्य द्वारा प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर एवं संशोधन पर एक साथ चर्चा होगी। मैं समझता हूं कि माननीय राज्यपाल के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव में जितने संशोधन प्रस्तुत किये उस पर एक-साथ मत लिया जाये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी जब आप आंकड़े पढ़ रहे थे तो मैं सुन रहा था । उधर हमारे साथ विधायक के रूप में महंत रामसुंदर दास जी बैठा करते थे । उन्होंने 260 संशोधन दिये थे । उनका रिकॉर्ड अभी तक कोई तोड़ नहीं पाया है लेकिन अजय चंद्राकर जी बता रहे हैं कि बजट में उन्होंने 360 दिये थे।

समय :
4.11 बजे

**माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा**

"माननीय राज्यपाल महोदय ने जो अभिभाषण दिया उसके लिये छत्तीसगढ विधानसभा के इस सत्र में समवेत सदस्यगण अत्यंत कृतज्ञ हैं ।"

अध्यक्ष महोदय :- चलिये । माननीय राज्यपाल अभिभाषण पर चर्चा । श्री दलेश्वर साहू जी ।

श्री दलेश्वर साहू (डोंगरगांव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय राज्यपाल के अभिभाषण पर चर्चा करना चाहूंगा । छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद हमारे प्रदेश के निवासी, अनुसूचित जाति, जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, महिलायें, युवा और परम्परागत जीवन जीने वाले वनवासियों के जीविकोपार्जन के लिये और इसके साथ ही साथ हमारी गौरवशाली परम्परा, संस्कृति को हमने किस तरह से हमारे पक्ष और विपक्ष को जो मौका मिला । अपने-अपने कार्यकाल में किस तरह से उसका संरक्षण करने का प्रयास किया गया । हम लोग तीसरे बार के विधायक हैं, हमने अनुभव भी किया । हमने माननीय अजय चंद्राकर जी



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

का कार्यकाल भी देखा और हमारे कार्यकाल का भी हमने अनुभव किया । ठीक है, इस पूरे प्रदेश का राजनीतिक अलग-अलग कोई एक ही परिवेश में, कोई एक ही विधा से किसी ने चुनाव नहीं जीता है और मैं सोचता हूं कि राजनांदगांव, सरगुजा, बस्तर, रायपुर संभाग की एक अलग-अलग परिस्थिति रही और परिस्थिति रहने से शायद अपने-अपने वायदे और कामकाज की वजह से हम सब लोग यहां पर इकट्ठा हुए हैं और सभी लोगों को छत्तीसगढ़ राज्य की सेवा करने का अवसर पक्ष के रूप में, चाहे विपक्ष के रूप में हम अपना योगदान देंगे ।

समय :
4.12 बजे **(सभापति महोदय (श्री विक्रम उसेण्डी) पीठासीन हुए)**

माननीय सभापति महोदय, मैं पूरे नवनिर्वाचित हमारे विधायकों को, माननीय मुख्यमंत्री जी को, अध्यक्ष महोदय तो हमारे क्षेत्र के बाजू के विधायक हैं । पहले ही उन्होंने मेरे विधानसभा में चुनाव लड़ा । उनका एलाईनमेंट इतना अपने क्षेत्र का बिगड़ा हुआ था । उसे बनाने में बहुत मेहनत लगती है और मैं आज हूं तो मैं निश्चित रूप से अपने पूरे क्षेत्र की बात और माननीय राज्यपाल महोदय जी के अभिभाषण की बात समय के अनुसार करूंगा । जहां तक माननीय राज्यपाल के अभिभाषण में मेरी सरकार का उल्लेख करते हैं । सरकार ने छत्तीसगढ़ जनता के लिये यह आश्वासन दिया है और मंत्रिमण्डल काम करेगा । लगभग मैंने 12 और 13 जिसमें 8 विभाग का उल्लेख हुआ है । जिसमें प्रधानमंत्री आवास का 18 लाख, धान खरीदी का 2 वर्ष का बोनस, कृषक उन्नति योजना, दीनदयाल उपाध्याय कृषि मजदूर कल्याण योजना, महतारी वंदन योजना, घर-घर निर्मल जल अभियान, रानी दुर्गावती योजना और तेंदूपत्ता संग्रहण दर 5,000 प्रति मानक बोरा करने का और 5000 से 50,000 तक बोनस जिसमें से मार्च के पहले हमारे पास 4 महीने हैं । आज यदि दिसम्बर को हमारे मुख्यमंत्री जी ने शपथ ले ली है तो दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च इन 4 महीनों में लोगों के लिये हमारी क्या सोच रही है, मैं इस पर बात करना चाहूंगा । पूत के पांव पालने पर चूंकि एक प्रक्रिया है जब किसी योग्य व्यक्ति की सोच, उनका लक्षण दिखाई देता है । हम लोग पालने पर पांव को ही आधारित मानते हैं कि यह एक विलक्षण लक्षण का होगा तो इस बजट को देखने से ऐसा लग रहा है कि 8 योजनाओं में से केवल 4 योजनाओं के लिये हमने पैसे की मांग की और जिसका अनुमोदन हमने कर भी लिया लेकिन आप देखेंगे कि एक भी योजना । जैसे कि मैं एक पहला उदाहरण दूंगा कि सारे लोगों ने उसी पर चर्चा की । सबसे पहले तो मैं महतारी वंदन योजना की बात करूंगा । महतारी वंदन योजना में मांग संख्या 41 मुख्य शीर्ष में मतलब दो मांग संख्या में 2 प्रकार के बजट 1 हजार 55 करोड़ 93 लाख रूपये आपने प्रावधान किया। जबकि छत्तीसगढ़ वैवाहिक जनगणना 2011 के अनुसार कुल 70 लाख 90 हजार का हमारे पास आंकड़ा है, जिसमें से 59 लाख 83 हजार 673 वैवाहिक महिला हैं, जिसका आपने घोषणा-पत्र

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में वादा किया है कि हम विवाहित महिला को पैसा देंगे, जिसका बजट प्रावधान भी आपने रखा है। विधवा की संख्या 9 लाख 73 हजार 747 है, परित्यकता की संख्या 1 लाख 1 हजार 741 है। तलाक-शुदा की संख्या 30 हजार 871 है। अगर हम पैसे को देखते हैं, केवल विवाहित महिला की बात करेंगे तो आप सिर्फ जनवरी का पैसा दे पायेंगे। उसके बाद फरवरी में 140 करोड़ 73 लाख रूपया आपके लिए पैसे की तंगी आ जायेगी, ऐसा मैं मानता हूं। दिसंबर को तो छोड़ दीजिए, वैसे तो कायदे से आपको दिसंबर का भी उल्लेख करना चाहिए था, पर जनवरी और फरवरी का पैसा देने के लिए आपके पास पैसा नहीं है। आप कहां से जुगाड़ करेंगे, अगर पूरे महिलाओं की बात कर रहे हैं तब की बात कर रहा हूं। उसके बाद फरवरी में आपके पास पैसा नहीं है। आप कहां से उठायेंगे? आप कैसे व्यवस्था करेंगे? इस बजट को देखने से ऐसा लगता है कि शायद कैल्कुलेशन के आधार पर आपने बजट का प्रावधान नहीं रखा। जो भी जल्दबाजी हो, जैसा भी स्वरूप हो या हमारी महिलाओं को डार्क में रखने का या महिलाओं को दरकिनार करने का हमारी सोच नहीं है, इसलिए मैंने कहा कि आपकी मंशा क्या है, इस बजट से पता चलता है। तो इस बजट के आधार पर आपके पास जनवरी, फरवरी तक के लिए भी पैसा नहीं है और वर्ष 2011 की जनगणना को आपको लेना ही पड़ेगा, क्योंकि कहीं न कहीं जब हम पैसे का वितरण करेंगे, महिलाओं का मापदंड तय करेंगे तो वो एक आधार हमें बनाना ही पड़ेगा, यह नियमावली के तहत होता है। आपकी दूसरी योजना धान उत्पादन प्रोत्साहन योजना, हालांकि आपने कृषक उन्नति योजना का नाम दिया है, पर बजट में कृषक उन्नति योजना का कहीं भी उल्लेख नहीं पर हमने एक बजट देखा है, वह बजट धान उत्पादन प्रोत्साहन योजना है। हो सकता है कि इसमें आप अंतर की राशि या बोनस की राशि का उल्लेख करेंगे। मैं उसके बारे में भी डिटेल कहना चाहूंगा। आप वर्ष 2013-14 और वर्ष 2014-15 के किसानों के बोनस का उल्लेख किया है। हमने कल पता लगाया है कि आप कौन से वर्ष का बोनस किसानों को देना चाह रहे हैं। उसमें वर्ष 2014-15 और वर्ष 2015-16 है। किसानों की संख्या 12 हजार 57 लाख 196 है। जिसमें से धान 6 करोड़ 37 लाख 65 हजार 87 रूपये क्विंटल है। उसमें बोनस के रूप में 1 हजार 912 करोड़ 97 रूपये आपको देना पड़ेगा। मैंने एक आंकड़ा लगाया है 915 रूपये के हिसाब से मोटा में और पतला में 897 रूपये के हिसाब से। उसी प्रकार वर्ष 2015-16 में 13 लाख 27 हजार 771 किसानों की संख्या है, जिसमें 6 करोड़ 1 लाख 13 हजार 769 आपको पैसे लगेंगे। उसके बाद 1 हजार 300 करोड़ 41 लाख रूपये लगभग-लगभग पूरे को देखेंगे और थोड़ा सा पैसा बचता है बोनस देने के बाद आप अगर मान लीजिए हमारे अंतर की राशि और बोनस की राशि दोनों को एकजुट करने का प्रयास करेंगे तो आपके पास पैसा नहीं है। आपको 196 करोड़ 4 लाख 31 हजार रूपये पैसे का जुगाड़ करना पड़ेगा। यह एक authentic आंकड़ा है। आप कहां से लायेंगे? आपके पास केन्द्र की सरकार है, आप जैसा चाहेंगे, आपका अधिकार है । जहां तक बजट प्रावधान है, मुझे ऐसा लगता है कि इसके लिए भी आपको जुगाड़



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

करना पड़ेगा । बिना सोचे समझे जो बजट प्रावधान किया गया है, मैं समझता हूं कि यह किसानों के हित में नहीं है ।

प्रधान मंत्री आवास योजना के विषय पर लगभग सभी सदस्यों ने बात की । हमारे अजय चंद्राकर जी द्वापर, सतयुग की भी बात कर रहे थे । हमने आपका भी कार्यकाल देखा है, आपने संस्कृति विभाग के पैसों का कैसे दुरूपयोग किया । आपने लोक कलाकारों के पैसों को, बड़े बड़े संतों को बुलाकर लाटा महाराज आदि को बुलाया, जबकि यहां के कलाकार भूखे मरते थे, कलाकारों को समय पर पेमेंट नहीं होता था । आप ने ही हमको बोलना सिखाया है, हम लोग भी मार्च में तैयारी से आएंगे तो निश्चित रूप से उस समय की बात भी आपके सामने रखेंगे । प्रधान मंत्री आवास के तहत आपने 18 लाख आवास पूरे करने का वायदा किया है । 3343 करोड़, 12 लाख का प्रवधान किया है । इतनी राशि में 18 लाख मकानों का निर्माण संभव ही नहीं है। सिर्फ नियमानुसार उस राशि को 1 लाख 30 हजार प्रति घर के हिसाब से देते हैं तो आप सिर्फ 2 लाख 57 हजार मकान ही बनाए जा सकेंगे । लोग, आज आपका भाषण सुनेंगे कि 18 लाख मकान का बजट पारित हो गया, लोगों में आशा लगेगी लेकिन आज आपके बजट आवंटन के हिसाब से यह संभव नहीं है । आपने प्रधान मंत्री आवास और महतारी वंदन योजना का उल्लेख प्रमुखता से किया है निश्चित रूप से मानकर चलिए लोग आपकी ओर आशा भरी नजरों से निहार रहे हैं । उन्होंने आप पर विश्वास किया, मैं समझता हूं कि बहुत जल्दी यह पर्दाफ़ाश होगा लोगों में निराशा आएगी । देखते रहिएगा कि आप उसको कैसे संभालेंगे, मार्च के बजट में इसको कैसे संभालते हैं । सब लोग रणनीति बनाते हैं, हमारी कांग्रेस सरकार ने भी कहा कि हम ऐसा करेंगे तो वैसा होगा । उसी अंदाज में आप भी काम करना चाहेंगे किंतु क्या आप जो सोचेगें वह धरातल पर उतरेगा । उसको उतारने के लिए बहुत सारे लोग रहते हैं उसमें शासन, मंत्री, प्रशासन, जिला स्तरीय अधिकारी । यह कितना कारगर साबित होगा । उसे हम लोगों को भी भुगतना पड़ता है । हम लोग समय समय पर इसी विधान सभा के सत्र में सचेतक के रूप में अपने भाषण में बोलते जाएंगे । आप उसको कितना गंभीरतापूर्वक लेंगे, यह समय बताएगा ।

दीनदयाल उपाध्याय कृषि मजदूर कल्याण योजना के विषय में आपने राज्यपाल महोदय से कहलवाया है । महामहिम से असत्य बोलवाया है, क्या यह अच्छा लगता है । इस योजना के लिए आपके पास कोई बजट नहीं है । रानी दुर्गावती योजना के लिए आपके बजट में प्रावधान नहीं है । आपने राज्यपाल महोदय से 8 योजनाओं का उल्लेख करवाया है लेकिन प्रावधान केवल 4 के लिए ही किया है। महतारी वंदन योजना के एक फार्मेट है । इसमें लिखा है कि विवाहित महिला का 2 वर्ष पूर्व पंजीयन होना अनिवार्य होगा । ऐसी विवाहित महिलाएं जिनकी दो से अधिक संतानें हैं, उस योजन हेतु पात्र नहीं होंगी । ऐसे बीपीएल परिवार जिनकी आय 15 हजार से अधिक है इस योजना हेतु पात्र नहीं होंगे । अविवाहित परित्यक्ता, विधवा महिलाएं इस योजना हेतु पात्र नहीं होंगी । यह आप ही के विभाग से

निकला है । अन्य किसी शासकीय योजना का लाभ प्राप्त करने वाले लाभार्थी ....

श्री धरमलाल कौशिक :- दलेश्वर जी यह कहां का पत्र पढ़ रहे हैं । जारी हो गया है क्या ?

श्री दलेश्वर साहू :- जारी नहीं हुआ है लेकिन ।

श्री धरमलाल कौशिक :- मध्यप्रदेश का है, हिमाचल का, किस प्रदेश का उठाकर ले आए ?

श्री दलेश्वर साहू :- आपके छत्तीसगढ़ का ही है । अगर आपको ज्ञान होता तो आप उस हिसाब से बजट रखते ।

श्री धरम लाल कौशिक :- ज्ञान का नहीं बोल रहा हूं, अभी तो उसका प्रावधान नहीं बना है, आप कहां से ले आए बोल रहा हूं। यही तो पूछ रहा हूं, उसको कहां से ले आए ?

श्री दलेश्वर साहू :- मैं यही तो कह रहा हूं कि यह प्रसारण कहां से हुआ है, यह कागज कहां से आई है ?

श्री प्रबोध मिंज :- अभी भी लग रहा है कि यह लोग नियम बनाने वाले हैं। खुद से नियम बना रहे हैं।

श्री धरम लाल कौशिक :- मैं वही तो पूछ रहा हूं, कहां से ले आए ?

श्री दलेश्वर साहू :- सरकार, दो लाईन और पढ़ देता हूं। महिला स्वयं सहायता समूह या महिलाएं जो किसी योजना के तहत् अनुदान या ऋण प्राप्त कर चुके हैं, इस योजना हेतु पात्रता नहीं होंगे। प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राही परिवार की महिलाएं इस योजना के लिए पात्र नहीं होंगे। तेंदूपत्ता संग्रहण परिवार जिसे तेंदूपत्ता संग्रहण प्राप्त होता है, वह इस योजना हेतु पात्र नहीं होंगे। भूमिहीन खेतिहर मजदूर जिसे मजदूर कल्याण योजना के तहत राशि प्राप्त होती है, इस योजना के पात्र नहीं होंगे। यह आपकी रूप रेखा है तभी तो आपने इतना कम बजट रखा है। अगर आपकी सोच सभी महिलाओं को देने की होती तो शायद मैं सोचता हूं कि इतना कम बजट नहीं रखते। आपको टोटल 598 करोड़ 37 लाख रूपये की व्यवस्था करनी थी, आपकी मंशा महिलाओं के प्रति नहीं है। किसी एन केन प्रकारेण आप सत्ता में आने के लिए किए है, जैसे हमारे कवर्धा के विधायक ने एक, दो लाख रूपए कर्ज माफी की घोषणा करके माननीय मुख्यमंत्री के अवधे में बैठने के लिए किए हैं। देखिए, साम दाम दंड भेद सभी अपनाते हैं, पर जीवन एक अनमोल है। हम इतना ना करें कि अपना पद प्रतिष्ठा पाने के लिए इस हद तक उतर जाएं कि कल हम अपनी बहनों के साथ नजर ना मिला सकें, अपने किसानों के साथ नजर ना मिला सकें। ठीक है, आपको पांच साल जनमत दिया है। ऐसा लगता है कि हमारे भाई साहब को रविन्द्र चौबे ने गोली मारकर हत्या कर दी है। ऐसा माहौल पैदा हो गया है। हमारे वन मंत्री जी ने खुद ही झंडा को गिरा दिया ऐसा कर रहे हैं, करने वाले कोई और होते हैं, पर ऐसा होता है कि भुगतना किसी और को पड़ता है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री ईश्वर साहू :- आप ही लोगों ने कराया है, सरकार तो आपकी ही थी। आप लोगों ने ही कराया था, क्योंकि सरकार आपके हाथ में थी।

श्री गजेन्द्र यादव :- संरक्षण तो कांग्रेस सरकार ने दिया है, कहीं न कहीं दोषी उसमें कांग्रेस सरकार है।

श्री दलेश्वर साहू :- मैं आपकी सहानुभूति में हूं।

श्री प्रबोध मिंज :- अपराधी को संरक्षण दिए हैं।

श्री गजेन्द्र यादव :- जो घटना घटी है, जब यह मर्डर हुआ, मर्डर होने के बाद कभी भी स्थानीय मंत्री उस जगह पर नहीं गए।

श्री ईश्वर साहू :- आपने ही तो उनका साथ दिया। गांव-गांव में गुण्डा पालकर रखे थे और उसका खामियाजा मेरे को भुगतना पड़ा।

श्री दलेश्वर साहू :- भैया, मैं आपके लिए सहानुभूति हूं। मैं भी उसी परिवार का हूं। आप लोग भी जनप्रतिनिधि हैं, कहीं ना कहीं हमारे सिस्टम में गड़बड़ी आने से वायरस आने से हम अपने लोगों से ही....।

श्री धरम लाल कौशिक :- दलेश्वर साहू जी, यह सिस्टम में गड़बड़िया थोड़ी आई थी। यह तो आप लोग मदांत हो गये थे और मदांत होने के बाद उसका जो चित्रण दिखाई देता है, वही हुआ है, जो संरक्षण दे रहे थे और संरक्षण देकर जो दबाने का प्रयास किया, जो खुलेआम हत्या की गई यह उसी का परिणाम है कि आज आपको उधर जाकर भुगतना पड़ेगा। (मेजों की थपथपाहट)

श्री दलेश्वर साहू :- सभापति महोदय, कोई भी जनप्रतिनिधि नहीं चाहता कि किसी का अन्याय हो। मैं सोचता हूं कि शायद इतने बड़े सीनियर नेता रविन्द्र चौबे भी नहीं चाहते होंगे, क्योंकि वे साहू परिवार से इतने सालों तक जुड़े हुए हैं। उन्हें जनप्रतिनिधि चुना है।

श्री गजेन्द्र यादव :- सभापति महोदय, इस घटना के बाद कभी भी स्थानीय मंत्री बिरनपुर नहीं गये, एक भी दिन नहीं गये, आस पास के और जो अपराधी हैं, उनके परिवारजनों को और आस पास के सभी लोगों को अंदर किया गया, प्रताड़ित किया गया। जो अपराधी हैं, वे मुक्त होकर घूम रहे थे। इसको आप षड़यंत्र नहीं मानेंगे तो क्या मानेंगे ?

श्री दलेश्वर साहू :- सभापति महोदय, आपका शासन आ गया है, आपको जनमत दिया, बिल्कुल कार्रवाई होनी चाहिए। जो गलत है सो गलत है। हम आपके लिए सहानुभूति हैं। सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे, हमारे से चूक हो गयी होगी। कहीं ना कहीं हमारा सिस्टम उसको फॉलो नहीं किया होगा तो आपकी सरकार है, तत्काल अमल करिए। इतने दिन क्यों लगाए, अभी हमारे पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इसी जांच के विषय पर कहा। उन्होंने कहा टाईम लिमिट, आप जांच करवाईए।

श्री सुशांत शुक्ला :- माननीय, आप दूसरी बार के विधायक हैं।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री दलेश्वर साहू :- तीसरी बार।

श्री सुशांत शुक्ला :- आपने अपनी सरकार में कितनी बार किया? आपको अपनी सरकार में भी अन्याय के खिलाफ आवाज बुलंद करना था। आज आप बड़े नीतिगत और न्यायगत हो रहे हैं। ये कहां की बात हुई?

श्री दलेश्वर साहू :- मैं सिस्टम की बात कर रहा हूं।

श्री सुशांत शुक्ला :- मैं आपको सिस्टम ही सिखा रहा हूं। सभापति महोदय, माननीय आसंदी के माध्यम से मेरा सीनियर सदस्य से निवेदन है कि पूर्ववर्ती व्यवस्था की भी ठीक-ठीक जानकारी ले लें। (व्यवधान)

श्री कुंवर सिंह निषाद :- सुशांत भाई, ये सीनियर हैं। आप सीनियर सदस्य के साथ सिखाने वाली बात न करें। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- सुशांत जी, आप इनको नहीं सिखा सकते। (व्यवधान)

सभापति महोदय :- आप बैठिये। (व्यवधान)

श्री दलेश्वर साहू :- सभापति महोदय, यदि आप सिस्टम को थोड़ी सी भी गंभीरता से लेते तो इस प्रकार का बजट प्रस्तुत नहीं होता। कहीं न कहीं आपने चूक की है। आप लपेटने का काम मत कीजिए। आप इसको टोकने का काम मत कीजिए। जब आप इसका केल्कुलेशन करेंगे तो फरवरी तक किसी महिला को पैसे नहीं दे पाएंगे।

श्री सुशांत शुक्ला :- आप लोग...जो छोड़कर गये हैं। (व्यवधान)

श्री दलेश्वर साहू :- हम लोग भी भरोसा करते थे, पर आप देखिये।

श्री सुशांत शुक्ला :- आप थोड़ा तो इंतजार कीजिए। आपको इतनी हड़बड़ाहट क्यों है?

सभापति महोदय :- बैठिये-बैठिये।

श्री प्रबोध मिंज :- माननीय सभापति महोदय, राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर चर्चा हो रही है।

सभापति महोदय :- आप अपनी बात पूरी कीजिए।

श्री दलेश्वर साहू :- सभापति महोदय, मैं यह कह रहा हूं कि हम लोग जनप्रतिनिधि हैं और भी जनप्रतिनिधि हैं। कोई नहीं चाहता है कि गरीब जनता या किसी दु:खी व्यक्ति के साथ अन्याय हो। आप निर्वाचित हुए हैं। आप हजारों की संख्या में चुनाव जीते हैं, परंतु हम उस सिस्टम को थोड़ा महसूस करे। यदि आपको थोड़ा भी महसूस होता तो शायद आज ऐसा निराधार बजट प्रस्तुत नहीं होता। आप सबने इस बजट को गंभीरतापूर्वक नहीं लिया है। आपने इस बजट का केल्कुलेशन नहीं किया है। आपने अधिकारियों पर भरोसा करके इस प्रस्ताव को पारित कर लिया है। आप 2-3 महीने बाद देखिये कि पूरी महिलाओं के बीच चर्चा होगी। महिलाओं पर यह कंडिका बनी है।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति महोदय, मुझे अच्छा लगा कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। मैंने मुख्य मुद्दे पर अपनी बात कही है। मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से आग्रह करूंगा कि आप उतना ही भरोसा करे, जितना करने लायक रहें। हम सबको सिस्टम के कारण ही भुगतना पड़ता है। यह पहला बजट है। आने वाले समय में जब मार्च में एक महीने का बजट सत्र होगा, उसको केल्कुलेशन के आधार पर लोगों के हित में हमारे अनुसूचित जाति वर्ग, अनुसूचित जनजाति वर्ग और अन्य पिछड़ा वर्ग की महिलाओं और भाइयों-बहनों के लिए आप गंभरतापूर्वक इसपर विचार करेंगे। अपने जानकार व्यक्तियों और एक सिस्टम को फॉलो करेंगे। शायद एक जनप्रतिनिधि होने के नाते हमने इस पीड़ा को समझा है। कभी-कभी हम लोगों को भी न चाहते हुए अपने क्षेत्र में भुगतना पड़ता है। यह जागरूकता का विषय है। हमें जागरूकता को अपनाना पड़ेगा। जब भी बजट में प्रावधान हो, आप लोगों ने बड़ी-बड़ी बात जरूर की है, परंतु कहीं न कहीं ऐसा लगेगा कि समय आवाज उठाएगा और उस हिसाब से आपको सतर्क होकर चलना पड़ेगा। मैं सोचता हूं कि राज्यपाल महोदय से इतने बुजुर्ग आदमी से आपने असत्य बोलवाया, क्योंकि अच्छा काम नहीं हुआ है और न मेरे क्षेत्र की जनता के लिए अच्छा काम हुआ है। इस अभिभाषण का विरोध करते हुए मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

सभापति महोदय :- धरमलाल कौशिक जी।

श्री धरमलाल कौशिक (बिल्हा) :- माननीय सभापति महोदय, वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ और वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण होने के बाद चूंकि कांग्रेस की यहां पर बहुमत रही और बहुमत के आधार पर यहां पर कांग्रेस की सरकार बनी। उस कांग्रेस की सरकार के समय भी मैं यहां विधायक था। जिस प्रकार से 3 साल तक वह सरकार चली तो जनता आज भी उस चीज को देख रही है और देखने के बाद भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई और 15 साल तक हमारी सरकार चली। वास्तव में यदि यह कहा जाए कि छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माण के बाद छत्तीसगढ़ की बुनियाद यदि किसी के द्वारा रखी गई तो वह भारतीय जनता पार्टी के द्वारा रखी गई। भारतीय जनता पार्टी की सरकार के द्वारा यहां की अधोसंरचना सड़कों से लेकर, कॉलेज से लेकर, सिंचाई से लेकर एक महत्वपूर्ण दिशा में जो काम होना चाहिए, उस दिशा में जाकर भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने काम किया। उसके बाद फिर कांग्रेस की सरकार बनी। 67 का बहुमत था, धीरे-धीरे यह 71 हो गये और 71 की बहुमत में जिस प्रकार से 5 साल में इस सरकार ने ताण्डव किया और इस ताण्डव के कारण इस सरकार को जाना पड़ा क्योंकि इनका उद्देश्य छत्तीसगढ़ का विकास नहीं था। छत्तीसगढ़ के विकास से इनका दूर-दूर तक लेना-देना नहीं है। चाहे कांग्रेस की पहली सरकार हो या कांग्रेस की दूसरी सरकार हो, कैसे लूट-खसोट की जा सकती है, कैसे जेब भरा जा सकता है और जेब भरकर भ्रष्टाचार का विकेन्द्रीकरण कैसे किया जा सकता है ? ऊपर से लेकर नीचे तक भ्रष्टाचार की जो गंगा बहानी है, वह काम इस सरकार के द्वारा किया गया है । मुझे आज भी याद है कि जब कांग्रेस की सरकार बनी तो उस समय पहला अभिभाषण



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हुआ था, उस अभिभाषण में राज्यपाल महोदय के द्वारा यह कहलवाया गया कि नरवा, गुरूआ, घुरूवा, बारी, छत्तीसगढ़ की चार चिन्हारी, अब तुमला कोई नहीं चिनही संगवारी । तो यहां ले वहां जाना पड़िस । (मेजों की थपथपाहट) उसी अभिभाषण में मैंने कहा था कि मुख्यमंत्री जी, आपने मेहनत किया होगा, आपने प्रयास किया होगा, आपकी पार्टी काम की होगी, लेकिन मुख्यमंत्री बनने के बाद मुफ्त में बहुत सारे सलाहकार आ जाते हैं और जो ऐसी सलाह आपको देते हैं, उस पर आप विचार करिए । क्योंकि मैंने एक उदाहरण दिया था कि चारा घोटाले में लालू यादव आज भी भुगत रहे हैं और उससे बड़ा घोटाला गोबर घोटाला और नरवा, गुरूआ, घुरूवा, बारी का घोटाला न हो, इसलिए इन सलाहकारों से बचकर रहिए । मैंने उदाहरण दिया था कि जब शुरू में कांग्रेस की सरकार बनी थी तो सफेद मुसली का मामला आया था और सफेद मुसली के नाम से जो लोगों को थमाया गया और उसके बाद में नरवा, गुरूआ, घुरूवा, बारी आ गई । इन्होंने थोड़े दिन तो नाम लिया, लेकिन नाम लेने के बाद में धीरे-धीरे हिचकते गए क्योंकि जो पालन करना चाहिए, क्रियान्वयन करना चाहिए, कहीं न कहीं सरकार की नीयत उसमें ठीक नहीं थी। जो पंचायत के चुने हुए जनप्रतिनिधि थे, उन पंचायत के प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्ताव दिया गया, उसकी अनदेखी इस सरकार के द्वारा की गई और अनदेखी करने के बाद प्रभारी मंत्री के द्वारा अपने कार्यकर्ताओं को छांट-छांट कर, चुन-चुनकर मनोनीत किया गया । गोबर की खरीदी कैसे हुई । जिस प्रकार से चंडी वाले दूध देने के लिए आते हैं और एक पाव, दो पाव प्रतिदिन का लिखा रहता है, उसी प्रकार से एक क्विंटल, दो क्विंटल गोबर का विक्रय की जा रही है, वह इनके दूध की चंडी के बराबर में गोबर का हिसाब लिखने का काम किया गया । उसके बाद में जब गोबर की बारी आई, जिस बात का जिक्र अजय चन्द्राकर जी ने किया, उसमें इनको हिसाब देना चाहिए कि इन्होंने जो गोबर खरीदा, आखिर आपने उस गोबर का क्या उत्पादन बनाया, बाजार में कितनी बिक्री हुई, लेकिन यह सरकार बताने में असमर्थ रही और मंत्री जी अंत तक नहीं बता पाये कि उस गोबर खरीदी का कितना उत्पादन किया है, कहां रखा हुआ है, उसका आगे क्या करने वाले हैं और एक प्रकार से इस सरकार के द्वारा बड़ा घोटाला, गोबर घोटाला इस सरकार के द्वारा किया गया ।

माननीय सभापति महोदय, कांग्रेस की सरकार के द्वारा जितनी भी योजनाएं लाई गईं, यदि हम उन योजनाओं के क्रियान्वयन की बात करेंगे तो निश्चित रूप से यह सरकार अपनी जो 36 घोषणा की बात की है, मैं वहां पर बैठा हुआ था और मुख्यमंत्री जी यहां बैठे हुए थे । मैंने कहा कि आपका जो 36 घोषणा-पत्र है, उसमें से कितना पूरा हुआ तो मुख्यमंत्री जी ने कहा कि हमने इतनी घोषणा का क्रियान्वयन कर दिया है । मैंने वहीं से कहा कि आप बताते जाईए । मैंने तत्कालीन मुख्यमंत्री जी को गिनवाया तो वे 6 घोषणा पूर्ण करने से आगे नहीं बढ़ सके । मैंने वहां से कहा कि आप अधिकारी दीर्घा से पर्ची बुलवा लीजिए, आप व्यस्तता के कारण भूल गए होंगे, लेकिन वे 6-7 से ज्यादा घोषणा बताने में असफल रहे हैं क्योंकि वह घोषणा-पत्र की क्रियान्वयन समिति में नहीं थे । जिन्होंने घोषणा-पत्र बनाया

था, उनको मालूम है कि कौन-कौन सी घोषणा है, किसका क्रियान्वयन हुआ है, लेकिन जब क्रियान्वयन की बारी आई तो उनको हटाकर दूसरे को क्रियान्वयन की जवाबदारी दी गई, लेकिन अंत तक, आजतक यदि मैं 36 घोषणा को गिनाऊंगा कि आपने कितना वादा निभाया है ? आज उसी का परिणाम है कि यहां से उठकर उनको जाना पड़ा है । कांग्रेस की सरकार और उनके नेता असत्य बोलने में माहिर थे ।

माननीय सभापति महोदय, 5 लाख लोगों को नौकरी देने की बात आई । आप भी उस समय बैठे हुए थे । 4 लाख, 64 हजार लोगों को नौकरी देने की होल्डिंग लगाई गई कि हम नौकरी दे रहे हैं । जब मैंने प्रश्न किया कि मुख्यमंत्री जी, आपने 4 लाख, 64 हजार लोगों को नौकरी देने की बात की है, आप विधान सभा में बताएंगे कि आपने कितने लोगों को नौकरी दी है ? मुख्यमंत्री जी ने बड़ी मुश्किल से बता पाये कि हम लोगों ने 20 हजार लोगों को नौकरी दिया है। मैंने कहा कि आप या तो होर्डिंग्स निकलवा दीजिये नहीं तो आपकी होर्डिंग्स की गोबर से बहुत बढ़िया पुताई की जायेगी। पूरे प्रदेश से इनका सारा होर्डिंग्स निकाला गया। ये असत्य बोलने में बहुत माहिर हैं, लेकिन हमने उनको पर्दाफास किया और उसके बाद यह साबित किया कि यह सरकार, असत्य सरकार है, होर्डिंग्स को निकालना पड़ा है, इस तरह ये 5 साल सरकार चलाये हैं। यह इसी का परिणाम है कि आज वहां पर बैठे हुए हैं।

माननीय सभापति महोदय, आज विपक्ष के सदस्य किसान के आत्महत्या की बात कर रहे थे, कह रहे थे कि आज किसानों के ऊपर बहुत कर्ज है।  आप थोड़ा सा विचार करिये कि किसान कब कर्ज लिया ? उन किसानों का कर्ज का बोझ आपकी सरकार के समय क्यों ऊपर लदा रहा ? किसान क्यों कर्ज नहीं पटा पाये ? वह किसान आज आत्महत्या किया है तो उसका पाप भी आपके सिर पर लगेगा। क्योंकि उन्होंने आपकी सरकार के कार्यकाल में कर्ज लिया था और कर्ज लेने के कारण उनको आत्महत्या के लिए विवश होना पड़ा। जो किसान विवश हुए हैं, उसमें किसी की भागीदारी है तो उसमें कांग्रेस की सरकार की भागीदारी रही है।

माननीय सभापति महोदय, आप लोगों ने सिंचाई की बड़ी-बड़ी बात की थी कि हम सिंचाई का रकबा डबल कर देंगे, दोगुना कर देंगे। आपको याद होगा, आप बस्तर की एक सिंचाई परियोजना, बोधघाट सिंचाई परियोजना लेकर आये थे। बोधघाट सिंचाई परियोजना के बारे में कहा था कि इस परियोजना से इतने लाख एकड़ खेत की सिंचाई करेंगे। लेकिन अब क्या सिंचाई करेंगे ? जो करना है, अब तो हमको करना है। ये बड़े-बड़े होर्डिंग्स लगाये थे, लेकिन पूरे पांच साल में उसका प्राक्कलन भी नहीं बना पाये। यह सरकार प्राक्कलन बनाने में असफल रही है।

श्री रामकुमार यादव :- भईया, वह सब तो ठीक हे। यदि अनुमति होही तो बतावा कि जंगल ला काबर काटे ला दे देहा, ओखर बारे मा कुछ बोलिहव ?

श्री धरमलाल कौशिक :- तो यह सरकार प्राक्कलन बनाने में सफल नहीं हुई।

श्री कवासी लखमा :- रामकुमार का शादी नहीं हुआ है, थोड़ा देखो तो।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आवेदन दे दो।

श्री धरमलाल कौशिक :- मोहले जी को आवेदन दे दो।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- आप आवेदन दे दो, मैं बढ़िया ढूंढ दूंगा।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, भ्रष्टाचार और कमीशन की सरकार थी। कांग्रेस की जो सरकार चल रही थी, वह भ्रष्टाचार और कमीशन की सरकार थी। घोटाले की सरकार थी। कोयला घोटाला, पी.एस.सी. घोटाला, शराब घोटाला, डी.एम.एफ. घोटाला, बीज निगम में सूखा घोटाला, राशन घोटाला, राशन और शिक्षक भर्ती में घोटाला, दवाई खरीदी में घोटाला, कस्टम मिलिंग में घोटाला, सीमेन्ट में घोटाला, रेत में घोटाला और जल जीवन मिशन तो आप लोग पूरा खा गये। आज उस योजना का कार्य पूर्ण हो जाना था, लेकिन आज भी वह योजना वहीं का वहीं है। केवल उसमें राशि का आहरण किया गया है। लेकिन यदि किसी गांव में जायेंगे तो आप देखेंगे कि वहां पाईप बिछा हुआ है, टेप नल लगा हुआ है, टंकी बना हुआ है, लेकिन उस नल की टोटी से पानी नहीं निकल रहा है। आप लोग उसको एक धन्धा बना लिए थे, व्यवसाय बना लिए थे। केन्द्र से जो पैसा आये..।

श्री कवासी लखमा :- आप लोग तो टोटी लगाने वाले को हरा दिए हो।

श्री धरमलाल कौशिक :- तुम बहुत होशियार हो। एक बार अपने साथियों के साथ क्या किए हो, डूबते-डूबते बचकर आ गये और सबको डूबा दिए।

माननीय सभापति महोदय, यदि हम इस सरकार की बात करेंगे तो पिछली सरकार ने जिस प्रकार से अपना घोषणा-पत्र जारी किया गया और कहा गया कि गांव में जो रहने वाले लोग हैं, उनको बाड़ी और मकान देंगे आप उसके लिए माफी मांगेंगे ? आप लोगों ने कहा था कि शहर में जिनका आवास नहीं है, उनको आवास देंगे।

श्री रामकुमार यादव :- रतनजोत के बारे मा कुछु कहू ? बंगाल की ना खाड़ी से, पेट्रोल मिलेगा बाड़ी से। रतन जोत ला लइका मन खा डारथे, ओखर बारे मा कुछ कहू ?

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, सम्पत्ति कर आधा की बात कही गई थी। सम्पत्ति कर आधा की बात करने वाले लगातार सम्पत्ति कर बढ़ाते गये। आज आप लोग उसके लिए माफी मांगेंगे ? पट्टा देने की बात कही गई थी, आपके द्वारा लोगों को जो छलने का काम किया गया, वास्तव में आप लोगों को उनसे माफी मांगना चाहिए। महिलाओं से माफी मांगनी चाहिये, जहां 500 रूपये देने की बात कही गई थी । 60 साल और 75 साल की उम्र है, उनको 1000 और 1500 रूपये देने की बात कही है, इसके लिये आपको माफी मांगनी चाहिये। आज हमारी सरकार बने कितने दिन हुये हैं ? जब आपने शराबबंदी की बात की थी, हमने कहा तो आपने कहा कि हम पांच साल में उसे बंद करेंगे और यह बात कही कि हमने घोषणा पांच साल के लिये किये है, लेकिन पांच साल में क्या हुआ ? आप लोग कमेटी में कितने जगह गये हैं, किस-किस प्रदेश में गये हैं और जाने के बाद में वहां से क्या लेकर आये हैं ? आप



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

लोगों ने आखिर में क्या किया है? आपको उन महिलाओं से माफी मांगनी चाहिये, जिन महिलाओं को झूठ बोलकर आपने वोट लिया था कि हमारी सरकार आयेगी तो हम पूर्ण शराबबंदी करेंगे । गंगा जल की जो कसम खाये थे, उसके बाद भी आप लोगों ने नहीं किया है, उसके लिये आपको माफी मांगनी चाहिये ।

श्री कवासी लखमा :- गंगा जल वाला है ना, उत्तरप्रदेश से आया है ।

श्री गजेन्द्र यादव :- अध्यक्ष महोदय, शराबियों से भी माफी मांगनी चाहिये । 48 रूपया के पौव्वा को 110 रूपया कर दिया है ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, सरकार में जिस प्रकार से लूट और खसोट की घटना हुई है, उससे छत्तीसगढ़ अपमानित हुआ है । वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ का निर्माण हुआ था, 15 सालों तक हमारी सरकार रही है, उसके पहले कांग्रेस की सरकार थी, लेकिन जिस प्रकार से इस सरकार में लूटने का काम किया गया है, खसोटने का काम किया गया है, घोटाला किया गया, उसके कारण आई.ए.एस.अधिकारी जेल में बंद हुये हैं, जिनका आज तक जमानत नहीं हुआ है, वास्तव में उसके लिये कोई दोषी है तो आप लोग हो और छत्तीसगढ़ को कलंकित करने का काम कांग्रेस सरकार के द्वारा किया गया है और इसका परिणाम आपके सामने है । हमारी पहले कैबिनेट की बैठक हुई, पहले कैबिनेट में ही हमारे मुख्यमंत्री जी ने तय किया कि जो 18 लाख आवास से वंचित हुये लोग हैं, उसे छत्तीसगढ़ में आवास प्रदान किया जायेगा । (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, आपने कैबिनेट में बैठकर फैसला किया, लेकिन हमारे यशस्वी मुख्यमंत्री जी ने तो 2 घण्टे में कर्जा माफ किया है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- सभापति महोदय, कर्जा माफ किये होते, दारू बंद किये होते तो इतना बुरा हाल थोड़ी होता ? हम सबके लिये गेड़ी भिजवायेंगे । (मेजों की थपथपाहट) हम आप लोगों के लिये गेड़ी, भौंरा, गिल्ली डंडा सब भेज देंगे । चिन्ता मत करिये और आप खेलिये । पांच साल अभी वही करना पड़ेगा ।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, हमने प्रधानमंत्री आवास को लेकर अनेक प्रश्न लगाये हैं । लगभग हर सत्र में प्रश्न लगाये हैं, केन्द्र सरकार के द्वारा जो प्रधानमंत्री आवास दी गई थी, उस आवास का निर्माण जो इनको करना था, कहीं न कहीं इन्होंने गरीबों को वंचित रखा है और जिनको आवास मिलना चाहिये था, उस आवास से वंचित करने का काम इनके द्वारा किया गया है, लेकिन हमारी नीयत साफ है । हम इस बात को लेकर जनता के पास गये, इस बात को लेकर हमने आंदोलन किया था, जनता ने इसे स्वीकार किया इसलिये पहले कैबिनेट की बैठक में 18 लाख आवास का प्रावधान रखा है । (मेजों की थपथपाहट) आप लोगों ने कहा था कि भाजपा सरकार ने बोनस नहीं दी है तो हमारी सरकार आने के बाद में देंगे। दो साल के बोनस के लिये लगातार, एक साल, दो साल, तीन



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

साल, चार साल, पांच साल, पांच साल बीत जाने के बाद भी इन्होंने किसानों को धोखा दिया, उनसे वोट लिये थे कि हम दो साल का बोनस देंगे, लेकिन दो साल का बोनस कांग्रेस नहीं दे पाई है ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति महोदय, आपने 2100 रूपये समर्थन मूल्य का भी वादा किया था ?

श्री धरमलाल कौशिक :- सभापति महोदय, इस सरकार के द्वारा दो साल का बोनस नहीं दिया गया, लेकिन हमारी नीयत साफ है और हमने कहा कि हां हम बोनस देंगे। हम किसी कारण से पहले बोनस नहीं दे पाये, लेकिन कांग्रेस ने जिसके नाम से वोट लिया और वोट लेने के बाद उन्होंने बोनस नहीं दिया। हमारी नीयत साफ है, हम दो साल का बोनस देंगे और 25 तारीख को किसानों के खाते में 2 साल के बोनस की राशि जाएगी। (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, अभी धान खरीदी चल रही है। आप लोगों ने अपने घोषणा पत्र में कहा है कि 3100 रूपये क्विंटल धान लेंगे, तो 20 क्विंटल से 01 क्विंटल बढ़ाने में क्या है, आप घोषणा कर दीजिये, हो जायेगा।

सभापति महोदय :- बैठिये।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप चिंता मत करिये, हम देंगे। आपके खाते में भी पैसा जायेगा। यहां जो सामने में बैठे हैं, वहां से लेकर आपके खाते तक पैसा जायेगा।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- महतारी वंदन का पैसा भी आना चाहिए।

श्री धरमलाल कौशिक :- माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार के द्वारा और हमारे घोषणा पत्र में 3100 रूपये प्रति क्विंटल धान खरीदी की बात कही गई है, उस दिशा में हम लोगों ने माननीय राज्यपाल महोदय के द्वारा अभिभाषण में बहुत सारी बातों का समावेश किया है। जिस प्रकार से महतारी वंदन योजना की बात है, जिसकी चिंता आप बार-बार कर रहे हैं और कह रहे हैं कि पैसा कहां से लायेंगे। आप लोग चिंता मत करिये, जो लोग सरकार में बैठे हैं, उन्होंने सोच समझकर घोषणा की है। यह सरकार, पिछली कांग्रेस की सरकार की तरह नहीं है कि आयेगी तो आयेगी नहीं तो नहीं आयेगी, घोषणा कर दिये रहो। उसके बाद कांग्रेस की सरकार के द्वारा वादा खिलाफी की गयी और जिन्होंने वादा खिलाफी की है, मैडम जी, उसका परिणाम आपके सामने है।

माननीय सभापति महोदय, एक महती योजना माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा लायी गयी कि हर गांव के प्रत्येक घर में स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था करेंगे। इसकी राशि केन्द्र सरकार से आयी। केन्द्र सरकार से राशि आने बाद राज्यांश की जो राशि मिलनी चाहिए, वह राशि कहीं न कहीं नहीं मिल पायी। राशि नहीं मिलने के कारण घोषणा का जो क्रियान्वयन होना था, आज पूरे छत्तीसगढ़ में आप देखेंगे कि वह योजना आधी-अधूरी पड़ी हुई है। निश्चित रूप से हम लोग संकल्प लिये हैं कि जो हमारी नल जल योजना है, उस योजना को हम लोग क्रियान्वित करेंगे और आने वाले समय में हर घर में

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

पानी पहुंचे, इस सरकार के द्वारा इसकी व्यवस्था की जायेगी। इसके साथ ही हम लोग रानी दुर्गावती योजना, तेंदूपत्ता योजना भी लागू करेंगे। हमारी जो चरण पादुका की योजनाएं हैं, उसको इस सरकार के द्वारा बंद कर दी गयी थी, उस योजना को भी हम चालू करेंगे। उसके साथ ही तेंदूपत्ता का 5,500 रूपये प्रति मानक बोरा करने का फैसला लिया गया है, उसके साथ ही उसमें बोनस देने का भी प्रावधान किया गया है, ताकि वनांचल क्षेत्र में रहने वाले हमारे जो आदिवासी समाज है, जो तेंदूपत्ता का बहुत बड़ा काम करते हैं, इन सारे मजदूरों को लाभांश का भी वितरण होगा। यह लाभांश का वितरण पहले हमारी सरकार में हो रहा था। लेकिन कांग्रेस की सरकार आने के बाद उसको बंद कर दिया गया था, हम इसको पुन: प्रारंभ करेंगे।

माननीय सभापति महोदय, आज युवाओं के लिये शिक्षा और स्वास्थ्य की चिंता इस सरकार के द्वारा की गयी है। एक तो अब पी.एस.सी. में यू.पी.एस.सी. की तर्ज पर भर्ती की प्रक्रिया अपनाई जायेगी, जिससे उसमें पारदर्शिता रहेगी। जिसमें किसी प्रकार से पीछे दरवाजे से ऐसे लोग न आये जो अपात्र हैं और आकर उसमें कब्जा करें, इस बात के लिये हम लोग प्रतिबद्ध हैं। हर संभाग में एम्स की तर्ज पर छत्तीसगढ़ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साईंस की सुविधा तय की गयी है ताकि उनको सुविधा और लाभ मिल सके। प्रत्येक लोकसभा क्षेत्र में आई.आई.टी. की तर्ज पर छत्तीसगढ़ इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के निर्माण की दिशा में सकारात्मक कदम उठाने की बात कही गई है। निश्चित तौर पर आने वाले समय में हमारे जो युवा साथी हैं, उन साथियों को इसका काफी लाभ मिलेगा। जो पिछली सरकार चली है, उस सरकार को हम लोगों ने देखा है कि भ्रष्टाचार, घोटाला, करप्शन, कमीशन, इसी में यह सरकार डूब गयी। लेकिन जो हमारी सरकार चलेगी वह सेवा, सुशासन, सुरक्षा और विकास के साथ सभी के जीवन स्तर के उन्नयन के लिये हर संभव कदम उठाये जायेंगे और इस दिशा में भारतीय जनता पार्टी की सरकार चलेगी।

सभापति महोदय, आज के इस अवसर पर आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिये आपको धन्यवाद देते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- धन्यवाद। श्री कवासी लखमा। (मेजों की थपथपाहट)

श्री कवासी लखमा (कोंटा) :- माननीय सभापति महोदय, यह हमारा षष्टम् विधान सभा है।

माननीय सभापति महोदय, मैं हमारे माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव की चर्चा में भाग लेने के लिए खड़ा हुआ हूँ। हम लोग इस षष्टम् विधान सभा के पहले सदन में हमारे सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री जी हैं। इस प्रदेश में 32 प्रतिशत आदिवासी रहते हैं। यहां 29 सीटें आदिवासियों की सुरक्षित सीट है। इस प्रदेश में 23 वर्षों के बाद आदिवासी मुख्यमंत्री बने हैं। मैं आदिवासी समाज और छत्तीसगढ़ के लोगों की तरफ से माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। (मेजों की थपथपाहट) उसके बाद हमारे प्रतिपक्ष के नेता बहुत अनुभवी हैं

वह लोकसभा, विधान सभा के सदस्य थे और मध्य प्रदेश विधान सभा में भी मंत्री रहे हैं। हमारी पार्टी ने डॉ. चरणदास महंत जी को प्रतिपक्ष का नेता बनाया है। मैं उनको भी बधाई देता हूँ। हम लोग सरल स्वभाव के लोग हैं। जिस प्रदेश के एक ही पार्टी के एक ही व्यक्ति ने मुख्यमंत्री पद संभाला। उनको विधान सभा अध्यक्ष बनाया है। मैं उन्हें उस दिन भी बधाई दी थी और आज भी बधाई देता हूँ। आज के बाद से बधाईयां कम होंगी, यह शुरूआत का दौर है इसलिए माननीय डॉ. रमन सिंह जी को अध्यक्ष पद मिला है, उनको भी बधाई देता हूँ। साथ ही इस प्रदेश में दो उप मुख्यमंत्री बने हैं। बाकी पुराने बुजुर्ग लोग देख रहे हैं कि हमें कब मंत्री पद मिलेगा। मैं नये-नये, दोनों उप मुख्यमंत्रियों को बधाई देता हूँ। वह बहुत आगे जाएं और इस प्रदेश को ऊंचाईंयों पर ले जाएं, मेरा ऐसी आकांक्षा है। आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, लेकिन माननीय मुख्यमंत्री जी हम लोगों की आशाएं बहुत ज्यादा हो गईं हैं। क्योंकि हमारे आदिवासी समाज से पहली बार राष्ट्रपति का पद मिला है। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री आदिवासी समाज से हैं। आदिवासी समाज की आकाक्षाएं सरगुजा से लेकर बस्तर तक ज्यादा बढ़ी हैं। क्योंकि किसी भी पार्टी के मुख्यमंत्री हों, वह हमारे आदिवासी समाज के हैं। इसलिए हम आदिवासियों का दिल से खुशी हुई, हम लोगों की आशाएं ज्यादा होंगीं। हमारे समाज के मुख्यमंत्री जी हमारी बातें सुनेंगे, हमारी ओर देखेंगे और हमारी रक्षा करेंगे। माननीय सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से पहले यह मांगूंगा। हम लोगों ने इसी सदन में विशेष सत्र बुलाया और जो 32 प्रतिशत आरक्षण है। हम लोगों ने 2 दिन विधान सभा लगाकर सर्वसम्मति से पास किया था। मध्यप्रदेश में जो 32 प्रतिशत आरक्षण मिलता था। किसी कारणवश हाईकोर्ट में इधर-उधर हुआ और उसमें लोग पीड़ित हुए। हम लोगों ने विशेष विधान सभा सत्र बुलाया। उस समय तात्कालीन राज्यपाल महोदया हमारे आदिवासी समाज से थीं। उन्होंने भी कहा कि  अगर आप लोग विधान सभा में यह बिल पेश करेंगे तो मैं रात को भी हस्ताक्षर कर दूंगी। हम लोगों ने उस आशा के अनुरूप विधान सभा में बिल पारित किया। माननीय रमन सिंह, बृजमोहन अग्रवाल जी हो, माननीय अजय जी खूब चिल्ला-चिल्ला कर बोलते हैं उन्होंने भी समर्थन  किया था। हमारे ठाकुर साहब माननीय धर्मजीत सिंह जी भी थे, उस विधान सभा में सभी लोग थे, लेकिन आप उस समय सदस्य नहीं थे, लेकिन आपने उस समय सुना होगा। इसी सदन में 7.30 बजे 32 प्रतिशत आरक्षण का विधेयक पास हुआ।

श्री अजय चन्द्रकार :- दादी, 32 प्रतिशत आरक्षण तो पहले भी मिलता था, आपने कौन सा नया बिल पास करवाया दिया। आपने क्या नया करवाया?

श्री कवासी लखमा  :- आपने उस दिन क्यों नहीं कहा?

श्री अजय चन्द्रकार :- मैंने उस दिन भी कहा था। आप उसे 77 प्रतिशत तक क्यों ले गये? आप यह बताईये। इधर-उधर की बातें न करें।

श्री कवासी लखमा :- आप मेरी बात सुनिए। हमने आदिवासियों के लिए 32 प्रतिशत आरक्षण किया। यहां पर कुम्हार, कलार, साहू हो या यादव हो। पूरे समाज ने मिलकर, उन लोग भी छत्तीसगढ़िया हैं। जंगल में रहते हैं बस्तर से लेकर सरगुजा तक उसी आसपास के क्षेत्र में रहते हैं उनको भी 27 प्रतिशत आरक्षण मिलना चाहिए। अभी 14 प्रतिशत आरक्षण मिल रहा है उनको 27 प्रतिशत आरक्षण मिलना है। उसके बाद अनुसूचित जाति को 13 प्रतिशत आरक्षण मिलना चाहिए ।

समय :
5.00 बजे

हमारे यहां सामान्य लोग भी रहते हैं, वह लोग भी गरीब हैं, वह लोग भी आदिवासी जैसा जीवन जीते हैं, उनको भी आरक्षण मिलना चाहिए। राज्यपाल जी के पास संसदीय कार्य मंत्री, कानून मंत्री और मैं रातों-रात फाईल लेकर गये। राज्यपाल जी का ट्रांसफर हो गया, दूसरे राज्यपाल आये, वह हिन्दी नहीं जानते हैं। उस दिन भाषण दे रहे थे। मेरे को गोड़ी भाषा ठीक-ठाक आती नहीं है तो इंग्लिश भाषा कहां से समझ में आयेगी। माननीय राज्यपाल महोदय का संवैधानिक पद है, उन्होंने इंग्लिश में भाषण दिया। हम लोग उनके पास तीन बार गये। वह बोल रहे थे कि उड़िया भाषा जानने वाला ढूंढो, हम लोग उड़िया भाषा जानने वाला ढूंढ नहीं पाये। मैं कोई संवैधानिक पद के लिए आपत्तिजनक बात नहीं कर रहा हूं। हमारे पास बस्तर के इंग्लिश जानने वाले आदिवासी नहीं है।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, राज्यपाल ने दस्तखत किया, नहीं किया, दूसरे राज्यपाल आ गये, उड़िया, अंग्रेजी समझते हैं, हिन्दी नहीं समझते। माननीय नेता प्रतिपक्ष जी मौजूद हैं उनकी उपस्थिति में मैं कह रहा हूं कि यहां ऐसी चर्चा नहीं हो सकती। मेरा यह कहना है कि आप ऐसी चीजों पर चर्चा न करवायें।

सभापति महोदय :- चलिये, ठीक है।

श्री कवासी लखमा :- अगर गलती हो गई तो माफी मांग लेंगे। लेकिन सच बोलने में कोई दिक्कत नहीं है। अगर मेरी गलती से ऐसी बात हो गई तो मैं माफी मांग लूंगा। मैं इतनी बड़ी लंबी-चौड़ी बात नहीं कर रहा हूं। सुप्रीम कोर्ट ने एक पंजाब के मामले में निर्णय दिया है, आप लोंगों को भी मालूम होगा। कोई भी काम अगर विधान सभा में पास होता है, मैं माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन कर रहा हूं, आप तो मंत्री हैं नहीं। अभी सब पद उन्हीं के पास हैं, कल-परसों बंटेगा, आपको मिलेगा या नहीं मिलेगा, पता नहीं। मोदी जी की गारंटी नहीं है। इसलिए माननीय मुख्यमंत्री जी से निवेदन करने का मेरा अधिकार है, मेरा पॉवर है, उसी आधार पर मैं मांग कर रहा हूं। क्योंकि आदिवासी मुख्यमंत्री हैं, मैं पहले ही बोला कि हमारा विश्वास बढ़ गया, हमारी उम्मीद बढ़ गई। आप उस बिल को पास कर दीजिये नहीं



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

तो आदिवासी आपको कभी माफ नहीं करेंगे। हम पार्टी से ऊपर उठकर भी जब भी आपको कोई कठिनाई होगी, आपके साथ खड़े रहेंगे।

माननीय सभापति महोदय, आज यहां पर बड़ी-बड़ी बात हो रही है। कौशिक साहब इतना घोटाला, उतना घोटाला की बात कर रहे थे। हम इसी सदन में थे। बड़ी-बड़ी बात हुई थी। उस समय बोले थे खाड़ी से नहीं, डीजल मिलेगा बाड़ी से, पुन्नूलाल मोहले जी की बाड़ी से डीजल मिल रहा है ? असत्य बोलने की राजनीति में कोई भी सच्चा आदमी नहीं होगा। हम लोग बडे-बड़े होर्डिंग्स देखे, खाड़ी से नहीं, डीजल मिलेगा बाड़ी से, क्या कहीं डीजल मिल रहा है ? अजय चन्द्राकर जी क्या आपकी बाड़ी में डीजल मिलता है ?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, हमारा नाम ले रहे हैं, हमारी बाड़ी में लगाये ही नहीं तो डीजल कहीं से हमारी बाड़ी में मिलेगा।

श्री कवासी लखमा :- आप यह तो बताईये कि किसकी बाड़ी में लगाये हैं ? माननीय मुख्यमंत्री महोदय, आज छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुए 23-24 साल होने जा रहे हैं। ज्यादातर छत्तीसगढ़ में बी.जे.पी. की सरकार थी। जब से छत्तीसगढ़ बना, मैं जब से एम.एल.ए. हूं। हम लोग यही चिल्ला-चिल्लाकर बोलते हैं कि आदिवासी लोगों को ये होना चाहिए, उनको आरक्षण मिलना चाहिए, जिला स्तर में आदिवासी लोगों को भर्ती होनी चाहिए। यह कभी नहीं हुआ। मैं जिस क्षेत्र से आता हूं, हम लोग दुनिया जानते हैं। पिछले 15 साल हमारे बस्तर से शिक्षा मंत्री केदार कश्यप जी थे, अभी फिर जीतकर आये हैं। हमारे बस्तर में 3 हजार स्कूल बंद किये। जगरगुंडा, चिंतलगुफा, गोलापल्ली, आवापल्ली, अबूझमाड़ बाजार बंद हो गये थे, वहां के आदिवासी लोग नरक जैसा जीवन जी रहे थे। जब कांग्रेस की सरकार बनी।

सभापति महोदय :- लखमा जी, थोड़ा जल्दी समाप्त कीजिये। आपको बोलते हुए 10 मिनट हो गये हैं।

श्री कवासी लखमा :- सभापति महोदय, अभी तो शुरूआत किया हूं। आप दूसरे वक्ता को लंबा-चौड़ा 1 घंटे का वक्त दे दिये, यह प्रतिपक्ष के साथ नहीं होना चाहिए। माननीय सभापति महोदय, पूरे स्कूल, हॉट बाजार, आश्रम, हॉस्टल बंद थे। मैं कांग्रेस पार्टी की सरकार और माननीय भूपेश बघेल जी को बधाई देता हूं जगरगुंडा में बंद स्कूल चल रहे हैं। वहां तहसील खोले हैं, वहां हॉस्पिटल चल रहा है। वहां अस्पतालों में डिलीवरी के केस हो रहे हैं। बाजार चालू हैं, बस चल रही हैं। इन 05 सालों में बस्तर में सुधार आ रहा था। मैं चुनाव जीता, 03 तारीख को मतगणना हुई। मैं 4-5 तारीख को यहां आया। रोज खबर आ रही है, कोंटा से सुकमा रोड 80 किलोमीटर है, वहां बाजार-बाजार में बड़े-बड़े कांड हुए, एर्राबोर में कांड हुआ। हमारी नेताम जी गृह मंत्री थे । वहां हेलीकाफ्टर में गये थे। उस एरिया में 5 साल में कभी बम का आवाज नहीं सुने थे। कल रात में हजारों गाड़ी को जला दिया गया। वहां रोज बम फुट रहा है।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

बस्तर का क्या होगा? पिछले 5 साल में हमारा नारा शांति, विश्वास, विकास, सुरक्षा की थी। वहां के लोग बोल रहे थे कि हम लोग नक्सलाईट से मुक्ति पायेंगे। कितने दिन मरते रहेंगे। आज आवापल्ली, भैरमगढ़ में लोग कह रहे हैं कि मैं जाऊंगा या नहीं जाऊंगा? वहां मेन रोड में नक्सलाईट, बंदूकधारी आ रहे हैं। यह क्या हो रहा है? इसलिए मेरे विधान सभा में बड़े-बड़े गृह मंत्री आये थे। मैं उनको बधाई देता हूं। पोटोनपार में कभी (व्यवधान) नहीं देखे थे। तेलंगाना के बार्डर गांव में हेलीकाफ्टर में उतरे और खुश होकर गये। उस गांव में स्कूल चल रहा था, उस गांव में चावल बंट रहा था, उस गांव में (व्यवधान) जा रहा था। गृहमंत्री जी वहां के सब पुलिस वाले को बधाई देकर गये। अभी कोंटा में नहीं जा पा रहे हैं। चल नहीं पा रहे हैं। काम हो या ना हो। चाहे गरीब हो या अमीर, जान तो जान है। पुलिस सुरक्षित नहीं, हमारे आदमी लोग सुरक्षित नहीं, एकदम (व्यवधान) है। इसलिए माननीय मुख्यमंत्री जी, इसको राजनीति से ऊपर उठकर हम लोगों से सलाह लेंगे, हम लोगों को मदद करेंगे, हम पूरा मदद करने की कोशिश करेंगे। इसको जड़ से मिटाना चाहिए। अगर हम लोग राजनीति कर देंगे तो 5 साल में सरकार चले जाती है।

श्री अजय चन्द्राकर :- दादी, मैंने पिछले विधान सभा में कहा था। सुरक्षा नहीं, यह नहीं है, वह नहीं है, यह आप बहुत देर से बोल रहे हैं। मैंने एक गांव का नाम बताया था। सुकमा में एक राष्ट्रीय स्तर का जुआ स्थल है। कोंटा के पास एक गांव में, तेलंगाना के, महाराष्ट्र के, छत्तीसगढ़ के, उड़ीसा के सब जुआरी लोग आकर खेलते हैं। वह लोग कैसे खेल लेते हैं, यह तो बताईये, दादी? पूरा राष्ट्रीय स्तर का जुआ स्थल है। जब सुरक्षा नहीं है तो वहां जुआ कैसे हो जाता है? पिछले सत्र में उस गांव का नाम बताया था। मैं अभी भी जाकर उस गांव का नाम ला दूंगा।

श्री कवासी लखमा :- चन्द्राकर जी, सारी बात को राजनीतिक चश्मे से मत देखना। मैं जो बोल रहा हूं, वह दिल से बोल रहा हूं।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं भी दिल से बोल रहा हूं।

श्री कवासी लखमा :- यदि कोई खेल रहे हो तो अभी भी जांच करवा लीजिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति महोदय, दूसरा यह है कि सुकमा एस.पी. सुनील शर्मा ने चिट्ठी लिखी थी कि यहां धर्मांतरण की स्थिति बहुत विस्फोटक है। इस पर सारे पुलिस अधीक्षक सबको ध्यान लेकर वहीं सुकमा के पुलिस अधीक्षक ने क्या किया? वह तो मंत्री थे। वहां सनातन को खत्म करने में इनका संरक्षण था या नहीं था? थोड़ा बताईये।

श्री कवासी लखमा :- मैं उसी चीज में बोला हूं। सुकमा में, सिंहगण में कोई आदिवासी धर्मांतरण किया हो तो मैं राजनीति से इस्तीफा दूंगा। (मेजों की थपथपाहट) मैं दिल से करता हूं, मन से करता हूं। ऐसे बोलने से कुछ नहीं होगा।

श्री अजय चन्द्राकर :- दादी, क्या है कि अभी उसकी सी.बी.आई. जांच होगी। झीरमघाटी का सीन फिर से री-क्रियेट होगा। किसका क्या संबंध है, वह पता लग जायेगा।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री कवासी लखमा :- ले जाने से क्या है। हम किये थे तो हम को ले जायेंगे, तुम किये थे तो तुमको ले जायेंगे।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, दादी अगर कह रहे हैं कि धर्मांतरण नहीं है तो इनका नारा लगाते हुए वीडियो सोशल मीडिया में चल रहा है। (व्यवधान) तो क्या यह धर्तांतरण नहीं है? यह सदन में बता दीजिये।

श्री कवासी लखमा :- हमारे बस्तर के लोग, हमारे सरगुजा के लोग 21 बोरा धान पैदा नहीं करते। उधर होता है या नहीं होता है, पता नहीं। अजय चन्द्राकर जी की सरकार ने कहा कि हम 20 क्विंटल की धान खरीदी करेंगे। यह कहां से चोरी करके लायेंगे, यह तो बतायें ही नहीं। आज बोले या नहीं बोले?

श्री अजय चन्द्राकर :- आज बोला था।

श्री कवासी लखमा :- आज नहीं बोले थे। आपने अपने गांव में बोले थे।

श्री अजय चन्द्राकर :- माननीय सभापति जी, मेरा नाम लिया। मैंने सुबह भी इस बात को बताया।

श्री कवासी लखमा :- आज नहीं, भाई। हमने जिस दिन घोषणा किये थे, उस दिन आपने बताया।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैंने बताया था। एक मिनट, दादी। सुबह इस बात को बताया कि मैंने कहा था कि सरकारी रिकॉर्ड में कृषि उत्पादन आयुक्त में राजस्व विभाग के रिकॉर्ड में यह है कि जशपुर में साढ़े सात क्विंटल धान होता है। रायपुर में अधिकतम साढ़े सत्रह क्विंटल धान होता है। मैंने माननीय तत्कालीन मुख्यमंत्री जी को कहा कि यदि आप 20 क्विंटल खरीद रहे हैं तो आप अपना रिकॉर्ड दुरूस्त करवा लीजिये। आप उसके बाद 40 क्विंटल खरीदे, उसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन आपका रिकॉर्ड कुछ बोल रहा है, आप कुछ बोल रहे हैं, छत्तीसगढ़ के लोगों को भ्रमित मत कीजिये। (व्यवधान) ये आधी बात सुनते हैं । (व्यवधान)

सभापति महोदय :- चलिये, ठीक है ।

श्री कवासी लखमा :- सभापति महोदय, मैं सही बात कर रहा हूं कि बस्तर में टोरा-महुआ से आदिवासी जीता है । साढ़े 5000 जो रेट बढ़ाया है उसके लिये मैं बधाई दूंगा । लेकिन मैंने इस समय पता किया है कि जो पहला टेंडर होने वाला था । वह नहीं हुआ । सरकार खरीद लेगी तो अच्छा होगा । टोरा का रेट बढ़ा दीजिये, उसके बाद महुआ का रेट बढ़ा दीजिये । आदिवासी लोग जंगल में जीने वाले लोग हैं। टोरा-महुआ में जिंदा रहने वाले लोग हैं इसलिये इस ओर भी ध्यान दें । अभी आखिरी में हमारे प्रतिपक्ष के नेता बोल रहे थे कि बांगो का जंगल, हमारे बैलाडीला में हम लोग सुरक्षित किये थे उनको सुरक्षित करिये । हम लोग एक नगरनार का स्टील प्लांट इसी विधानसभा में मैं बिल लाया था । नगरनार में आदिवासी लोगों को इसीलिये स्टील प्लांट दिये ताकि वहां के लोगों को नौकरी मिले, वहां के नौजवान लोगों को नौकरी मिले इसीलिये तत्कालीन जोगी सरकार ने 50-60 लोगों को अंदर करके उस जमीन को हम लोगों ने लिया है । अगर एन.एम.डी.सी. नगरनार स्टील प्लांट चलायेगा तो नौकरी



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

मिलेगी, प्राईवेट को जायेगा तो मनमर्जी करेगा । इसीलिये हम लोग इसी विधानसभा में उद्योग मंत्री होने के कारण बिल पेश किये । नगरनार स्टील प्लांट को या तो एन.एम.डी.सी. चलाये या तो राज्य सरकार चलाये । हमको भारत सरकार अनुमति दे । अभी 5 साल हो गये हैं । कागज कहां है, अभी तो दोनों डबल इंजन की सरकार है । उसको या तो सरकार चलाये, एन.एम.डी.सी. को दे दो, हम तो आदिवासी आदमी चला नहीं पायेंगे ।

श्री राजेश मूणत :- लखमा जी, आप ईमानदारी से एक बात बता दीजिये कि वह 5 साल का इसका हिसाब किसके पास है ?

श्री कवासी लखमा :- आपके पास है ।

सभापति महोदय :- लखमा जी समाप्त करें ।

श्री कवासी लखमा :- सभापति महोदय, मैं एक बात कहकर समाप्त करूंगा । तेलंगाना में कांग्रेस की सरकार बनी । हमारे यहां 17 तारीख को चुनाव हुआ और वहां 30 तारीख को चुनाव हुआ । गिनती तो एक ही दिन हो गया । वहां गिनती होने के बाद कांग्रेस पार्टी ने घोषणा-पत्र लिखा था कि महिलाओं के लिये फ्री बस चलायेंगे। वहां गैस का रेट 500 रूपये देंगे । पेंशन पैसा 4000 रूपये देंगे । वहां मुख्यमंत्री के शपथ लेने के बाद मीडिया के सामने आधे घंटे में बस फ्री चल रही है, गैस 500 रूपये में मिल रही है । पेंशन पैसा 4000 रूपये मिल रहा है उसको बोलते हैं गारंटी । यह मोदी गारंटी क्या है ? मोदी गारंटी में 15 लाख रूपये देने का बोला था, वह कहां है ? 2 करोड़ लोगों को नौकरी देंगे बोले थे वह कहां है ? मोदी का नाम लेकर अच्छे आदमी के नाम को बदनाम मत करो । उन्होंने जो बोला है तो उसको पूरा करो । फटाफट दे दीजिये । माननीय सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने के लिये समय प्रदान किया इसके लिये धन्यवाद ।

श्री अजय चंद्राकर :- वह अस्पताल में आपसे मिलने के लिये गये थे । क्या-क्या बोले थे उसको अभी सार्वजनिक करिये ।

श्री कवासी लखमा :- शाम को आओगे तो बता देंगे ।

श्री पुन्नूलाल मोहले (मुंगेली) :- माननीय सभापति महोदय, मैं पिछली सरकार की कुछ बातें बताना चाहूंगा । मैं माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर कृतज्ञता व्यक्त करता हूं । पिछली सरकार इधर से उधर क्यों गयी । इस बात को अभी बताने की आवश्यकता है । अगर मैं कहूं कि इस सरकार ने बोला था कि बिजली बिल करेंगे हाफ, यह हो गये खुद हाफ । 71 में हो गये 35 आये आप और हो गये हैं हाफ । इन्होंने 400 यूनिट की बिजली की थी माफ लेकिन बिजली नहीं कर सके माफ ।

श्री कवासी लखमा :- हम लोग 35 आये हैं । ऊपर वाला करता रहता है ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- देर है अंधेर नहीं हुआ है । इसी कारण इधर आये । अब पियो काफी, 15 हम लोग थे काफी ।



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री उमेश पटेल :- तें हा बार-बार माईक ला बंद-चालू मत करबे । ठीक है ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- माननीय सभापति महोदय, दूसरी बात यह है कि इस सरकार ने कहा था कि हम करेंगे शराबबंदी । बोले थे कि एक किस्त में धान देंगे लेकिन चार किस्तों में है । चार किस्त में किये धान का भुगतान किस्तबंदी, यह सरकार थी लंदी-फंदी । इस कारण हम सत्ता में आये। (मेजों की थपथपाहट) नहीं किये सरकार शराबबंदी और 4 किस्त में धान का दिये भुगतान, इसलिए ये सरकार हे लंदी-फंदी, इस कारण हम वापस आये। ये खाये थे गंगा जल के कसम, अपने वादा को नहीं निभा सके, इस कारण हो गये ये सरकार भसम। (मेजों की थपथपाहट) ये आपको जानने की आवश्यकता है। इसके बाद इन्होंने कहा रेडी-टू-इट। 10 हजार महिलाओं को आपने रेडी-टू-इट का बहाना बनाकर हरियाणा की कंपनी को दिया। इनकी योजना आपकी फिट, आप बन गये ढिट। इस कारण हमारी योजना हो गई फिट। (मेजों की थपथपाहट) इस कारण बिदक गई। आपने जितना किया था वादा, आपका पक्का नहीं था इरादा। आपके नेता दिये थे वारंटी और हमारे प्रधानमंत्री ने दिया गारंटी। (मेजों की थपथपाहट) इस गारंटी योजना के कारण हमारी सरकार बनी। 15 में कितने आये, समझ सकते हो। (हंसी) आपके सभी बड़े नेता बोलते थे कि हम 75 प्लस करेंगे और आये कितना हाफ ? क्योंकि आपने बिजली बिल हाफ किया था। आपको मिला 35 हाफ और पार्टी थी आप, वो भी पता नहीं हो गई हाफ। पार्टी हो गई साफ। अब जनता ने आपको नहीं किया माफ। इस कारण हम सरकार में आये।

श्री कवासी लखमा :- मशीन हे ममा।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- उस समय जब हमारी 15 साल की सरकार थी, कहां गया था मशीन, आप बन गये हसीन, हमारी खराब हो गई थी मशीन। (हंसी)

श्री अजय चन्द्राकर :- ओ दादी, पुन्नूलाल जी की मशीन खराब नहीं है, इस बात को ध्यान रखना। (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- चन्द्राकर जी, अउ ला कहिथे, एक झन ला कहिथे आवव, अउ एक ही ठक पहलीच बजट में तुमन मन के निकल के हवा।

पुन्नूलाल मोहले :- तुम्हर होगे हवा, हमला मिलगे दवा। (हंसी) अउ मिलगे दुआ। दूसरी बात मैं बताना चाहूंगा कि ये आपकी सरकार के कारनामे थे। दूसरा अगर मैं कारनामे की बात करूं चाहे तेंदूपत्ता का घोटाला हो, चाहे रेत का घोटाला हो, चाहे चावल का घोटाला हो, चाहे कोयला का घोटाला हो, हो गया मुंह काला, घूस से हो गये थे घोटाला। इन घोटालों की आपकी सरकार थी। लोगों ने विश्वास नहीं किया। आप नहीं दे सके आवास, लोगों को कर दिये उदास, इसी कारण जनता ने हमें कर दिया पास, बन गये हम खास। (मेजों की थपथपाहट) आपको सोचने की आवश्यकता है। ये 3-4 बातें मुझे बताने की आवश्यकता थी। अब आ गये माननीय प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी क्या थे? आपकी गारंटी क्या थी? 5 साल में पंचायतों को नहीं दे सके काम, आप हो गये बदनाम, गारी दे रहे थे सुबह-शाम। गांव-गांव के



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

रोड पर पड़ गये थे गड्ढा, भूपेश बघेल सरकार हो गये फेल, निकल गया आपका तेल, तब करने आये हो ताल-मेल। इधर कहते हो माननीय अध्यक्ष महोदय जी, पानी पी-पी कर क्या बोलते थे डॉ. रमन को 5 साल में चेहरा नहीं देखते थे। आंख से आंख नहीं मिलाते थे, अब आंख मिलाकर चलेंगे। बराबर होगा हिसाब-किताब बराबर। विष्णु साय का जब चक्र सुदर्शन जब घूमेगा तो हो जायेगा साय-साय, ये हैं विष्णु देव साय। (मेजों की थपथपाहट) ये हमें आज समझने की आवश्यकता है। आप जितना कह लें। पिछली सरकार में आप लोगों ने बेरोजगारों को नहीं दिया भत्ता, इस कारण बदल गयी आपकी सत्ता। (मेजों की थपथपाहट)

श्री उमेश पटेल :- बबा, तहूं नंबर में हस का? नंबर में हस या नहीं हस?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- नंबर से का मतलब। अपन अपन काम करबो। 11 बार जीते हन, नंबर के का जरूरत?

श्री उमेश पटेल :- नहीं-नहीं, परिवार के नंबर नहीं पूछथो। अभी नंबर में हस या नहीं?

श्री अजय चन्द्राकर :- बता न 14 ठन हे।

श्री द्वारिकाधीश यादव :- सुन न कका, आप मन बर हमन लड़थन, महतारी वंदन के सरकार पूरा-पूरा लाभ दिही तो सर्वाधिक लाभ आपके ओर जाही। वो अभी 30 ही परसेंट जाथे।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- अच्छा, आपको कितना परसेंट चाहिए, बता दो। (हंसी)अब आप आवास कहां से देंगे, कहां से पैसा पाएंगे । आप भी सरकार में थे और हम लोग भी सरकार में थे । पैसा कहां से आता है यह आपने भी देखा होगा, 50 हजार करोड़ से ज्यादा तो आपने कर्जा लिया है । आपने कर्जे से काम किया है ना ? आपकी योजनाएं आईं, अधोसंरचना में आपने पैसा पास किया तो अब आप क्यों होते हैं उदास, सब काम हो जाएगा पास, रखो आस, मत रहो उदास । हमारे मुख्यमंत्री जी ने 18 लाख आवास की बात की और केबिनेट की बैठक में पास भी कर दिया और आज बजट भी पास हो गया और क्या चाहिए आपको । महतारी वंदन, लगाओ अब चंदन। देखते जाओ, प्रधानमंत्री जी ने जो घोषणा की है, मोदी जी की गारंटी यहां के बजट की गारंटी है । अगर भारत के प्रधानमंत्री ने गारंटी ली है तो वहां से भी पैसा आएगा और यहां से भी पैसा आएगा । आप देखते जाइए, डम डम डिगा डिगा, मौसम भिगा, भिगा । यह आपको समझना है । किसानों से खरीद रहे हैं 21 क्विंटल धान, आपकी बढ़ना चाहिए शान, क्यों कहते हो मेहरबान, क्या इससे परिस्थिति होती है आसान। सब मत हो परेशान, सब हो जाएगा काम । 3100 रूपए का करेंगे भुगतान, आप तो काम कर रहे थे उटपुटांग, यह माननीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का है काम, मत करो उसे बदनाम । सरकार को मत करो बदनाम । आप लोग पांच लाख में बीमारी का इलाज नहीं दे सकते थे । अब लाइलाज बीमारी का इलाज होगा । पांच लाख से बढ़ाकर दस लाख । बीमार लोगों का बढ़ेगा स्वाभिमान, बच जाएगी उनकी जान । 10 लाख मिलेगा उसे बीमारी के लिए पैसा, यह बहुत भारी बात है । गांव का गरीब है, उनकी झोपड़ी बिक जाती है, खेत बिक जाता

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

है । परेशान हो जाते हैं, मृत्यु हो जाती है । प्रधानमंत्री मोदी जी को और भारतीय जनता पार्टी का घोषणा पत्र बनाने वाले को मैं धन्यवाद् देता हूं, बधाई देता हूं जिन्होंने ऐसी योजना बनाई ।

रानी दुर्गावती के नाम से भी योजना है । हमारी जो बच्चियां पैदा होंगी । उनके खाते में डेढ़ लाख का पत्र दिया जाएगा ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- पहली बेटी को या दूसरी बेटी को ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- बेटी को मिलेगा, पहली बेटी हो या दूसरी बेटी हो ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- लाडली बेटी योजना में दूसरी बेटी को मिलता है ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- गारंटी और वारंटी में अंतर है । आपकी सरकार वारंटी वाली थी । हमारी सरकार गारंटी वाली है, अंतर तो यह है (हंसी) (मेजो की थपथपाहट) ।

श्री राजेश मूणत :- ये गारंटी और वारंटी क्या होती है ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- वारंटी वह होती है जैसे कि आपने कोई सामान ले लिया उसके टूटे फूटे को सुधारा जाता है, नया नहीं दिया जाता । हम लोग उसको नया देते हैं । गारंटी और वारंटी में यह फर्क है ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- यानी पहली बेटी, बेटी नहीं है ?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- इसलिए आपको बताना चाहते हैं । आप लोग चिंता कर रहे हैं 12 हजार रूपए प्रति वर्ष मिलेगा । आप देखते जाइए, पहले बजट में पास हो गया । सुन लीजिए बहन जी, जब शादी होती है तो बच्चा कितने साल में होता है बता दीजिए । किसी की शादी होती है तो बच्चा साल, डेढ़ साल (हंसी) । शादी जब होती है तो किसी का बच्चा एक साल, किसी का डेढ़ साल में होता है । अभी तो भारतीय जनता पार्टी की शादी हुई है ।

श्री अनुज शर्मा :- सबले जादा अनुभवी आदमी हे ए मामला के ।

श्री राजेश मूणत :- अनुभवी आदमी हे वो बात अलग हे । आजकल के लड़का लड़की अलग टाइप के अनुभवी हैं ।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- अरे, वो मुहब्बत वाला अलग होता है जी । तो विष्णुदेव साय जी हमारे मुख्यमंत्री हैं उनकी राजनीतिक शादी को अभी कितने दिन हुए हैं । विपक्ष वाले बताइए ?

श्रीमती संगीता सिन्हा :- 10 दिन।

श्री पुन्नूलाल मोहले :- मुश्किल से। 10 दिन में इतने पैदा कर दिए तो एक साल के कितना करेंगे सोचने की बात है। (हंसी)

श्री उमेश पटेल :- यह आपका रिकॉर्ड तोड़ देंगे क्या ?

श्री पुन्नूलाल मोहले :- रिकॉर्ड तोड़ेंगे ही, रिकॉर्ड तोड़ रहे हैं। (हंसी) मेरे कहने का मतलब मैंने एक उदाहरण दिया। यह बच्चा पैदा नहीं करेंगे, यह पूरे काम को करेंगे। (हंसी) इसे आपको समझने की



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

जरूरत है, मुझे ज्यादा बोलने की जरूरत नहीं है। समझने वाले के लिए इशारा कॉफी है। माननीय राज्यपाल के अभिभाषण में हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, आपको भी धन्यवाद देते हैं। आप ऐसा काम नहीं करते तो इधर नहीं बैठते, आपकी पूरी पार्टी को धन्यवाद देते हैं कि आपने ऐसे-ऐसे कर्म किए जिससे आपके कर्म का फल इधर, हमारे कर्म का फल इधर आया। जय हिंद, जय भारत, जय छत्तीसगढ़। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- मोहले जी धन्यवाद।

**सदन को सूचना**

सभापति महोदय :- माननीय सदस्यों के लिए स्वल्पाहार की व्यवस्था लॉबी स्थित कक्ष में एवं पत्रकारों के लिए प्रथम तल पर की गई है। कृपया सुविधानुसार स्वल्पाहार ग्रहण करें।

**माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा (क्रमशः)**

श्रीमती संगीता सिन्हा (बालोद) :- माननीय सभापति महोदय, मैं माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के विरोध में बोलने के लिए खड़ी हुई हूं। आज अघ्घन बृहस्पति है, गुरूवार है, विष्णु भगवान के त्यौहार ए, हमर मुख्यमंत्री घलोक विष्णु देव साय जी हे, तो मैं हमर मुख्यमंत्री ला बहुत-बहुत बधाई देवत हौं और हमर नेता प्रतिपक्ष ला भी बहुत-बहुत बधाई देवत हौं, हमर विधान सभा अध्यक्ष ला भी बहुत-बहुत बधाई देवत हौं। जब से ये राज्यपाल के अभिभाषण शुरू होए हे, तब ले राज्यपाल के अभिभाषण के बात तो कम लेकिन हमर सरकार के बात ज्यादा होवत हे। हमर सरकार हा लगातार चर्चा में बने हुए हे। जे सरकार चर्चा में रथय ता आप समझ सकथव हमर सरकार कतना महत्वपूर्ण हे। जे पांच साल के सरकार हे, ओ कतना लोकप्रिय हे। छत्तीसगढ़ राज्य ला धान के कटोरा कहाय और हमन साबित कर देन की धान के कटोरा रहिस। जो सबसे ज्यादा धान खरीदे हे, वो हमरे छत्तीसगढ़ राज्य हरे। हमर सरकार जो भी वादा करे रहिस हे, आप मन जानत हव, हमर जो गांव के किसान मन, भईया मन सब झन ए बात ला कथय कि जो कांग्रेस पार्टी के सरकार हे, जो वादा ला करथे ओला निभाथे। हमर सरकार निभाईस, आप मन ला कर्ज माफी के बात याद होही, दो घंटा के अंदर कर्जा माफ होए हे। समर्थन मूल्य के बात करन, 2500 रूपया समर्थन मूल्य देबो करके कहेन, ओला भी देन। बिजली बिल हाफ होइस हे, साथ में भूमिहीन किसान योजना के भी लाभ देन, हाट बाजार क्लिनिक के भी लाभ मिलिस, सब योजना ला हमन क्रियान्वयन करेन और सब योजना के लाभ हमर किसान भाई मन ला, बहिनी मन ला, बेटी मन ला, सबला मिलिस। बेरोजगारी भत्ता देन, साथ ही सब वादा ला हमन निभायेन। एक बात कहना चाहूं, मोदी जी की गांरटी के बात चलथे। हर बात में, हर लाईन में, हर वक्ता



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

मोदी जी के गांरटी के बात करिस। हम भी कहना चाहत हन कि मोदी जी छत्तीसगढ़ राज्य के गोधन न्याय योजना के तारीफ करे रिहिस हे। आप मन ला भी बहुत बहुत बधाई देवत हौं कि गोधन न्याय योजना ला दूसरा राज्य में क्रियान्वयन करना चाहत रिहिस हे। हमर जो गोधन न्याय योजना हे, जमीनी स्तर से जुड़े हे। हम धान के कटोरा कथन, हमर सरकार अन्नदाता रिहिस हे, किसान भाई मन अन्नदाता हे, ओला हम पूरा आगे बढ़ाय के प्रयास करेन, आप ला याद हे कि हमर किसान भाई मन जब छत्तीसगढ़ से दूसरा राज्य में पलायन करत रिहिस हे...।

**सदन को सूचना**

सभापति महोदय :- एक मिनट । सभा का कार्य पूर्ण होने तक सभा के समय में वृद्धि की जाए। मैं समझता हूं, सदन इससे सहमत है।

**(सभा द्वारा सहमति प्रदान की गई)**

**माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा (क्रमशः)**

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, आप मन ला याद होही कि हमन गोधन न्याय योजना लायेन, गोबर खरीदी के कार्य करेन। ओखर पहली जो कंपोस्ट खाद यूरिया ये सब यूज होत रिहिस हे, हमर मिट्टी हा पत्थर बनगे रिहिस हे। गोधन न्याय योजना आए के बाद वो मिट्टी में जैविक खाद से उत्पादन करिस हे, आप पहली के 15 साल के रिकॉर्ड निकालकर देख लो, कैंसर, बांझपन के समस्या, किडनी के समस्या सब समस्या रिहिस हे।

सुश्री लता उसेण्डी :- माननीय सभापति महोदय, आप एक दल गठित कर दीजिए, जिसमें इनके विधान सभा क्षेत्र में हम लोग गौठान देखने के लिए जाएंगे, क्योंकि प्रदेश में तो हमको कहीं पर दिखाई नहीं दे रहा है। (व्यवधान)

श्री बालेश्वर साहू :- सभापति महोदय, इनका स्वागत है। (व्यवधान)

सुश्री लता उसेण्डी :- शायद आपके यहां ही होगा, क्योंकि सुबह से गौठान के सारे उदाहरण केवल वही दे रही हैं। बाकी कोई सदस्य गौठान के बारे में नहीं बोल रहे हैं। (व्यवधान)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आप आइये। आपके लोग 2 दिन हमारे गौठान में घुमने आये थे। लेकिन हमारे गांव वालों ने आप लोगों को बाहर कर दिया गया। (व्यवधान)

सुश्री लता उसेण्डी :- आप लोगों को और आपके प्रदेश अध्यक्ष जी को हमने चैलेंज किया था कि आप हमारे साथ चलिये। लेकिन वह तैयार ही नहीं हुए।

श्री बालेश्वर साहू :- आप लोग तो पूरे 5 साल तक घर से बाहर नहीं निकले हैं। (व्यवधान)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्रीमती संगीता सिन्हा :- माननीय सभापति महोदय, आपने बोनस देने की बात कही। बोनस दुहूं, वह भी ठीक है। लेकिन आज सात साल हो गेहे अऊ कई व्यक्ति खतम हो चुके हे, स्वर्ग सिधार गेहे। कई व्यक्ति घर बंटवारा हो गेहे। आप ओला कइसे बोनस दुहूं? ओ सात साल के बोनस ला कइसे निकालहुं? यदि आप साथ में बोनस देत हो तो हमर किसान भाई मन ला पूरा ब्याज सहित बोनस मिलना चाहिए। (मेजों की थपथपाहट) पूरा ब्याज सहित बोनस दो तो हमर किसान भाई, मतदाता भाई मन ला न्याय मिलही।

सभापति महोदय, महतारी वंदन योजना बहुत चर्चा के विषय हे, जो कि महिलाओं के लिए विशेष हे। चुनाव प्रचार के दरमियान हमन देखेन कि लोग घर में जाके पहिली से 1-1 हजार रूपये छोड़े हे कि ये आपके पहला किस्त अऊ ओखर बाद के किस्त हमर सरकार बने के बाद दिही। आज ओ महिला मन इंतजार करत हे। जइसे कर्जा माफ होए रीहिस हे। जब हमर सरकार बनीस तो दो घण्टा के अंदर कर्जा माफ होइस। हमर मतदाता भाई मन खुश होइस। आज महिला मन आके पूछथे कि महोदया, हमर जेब में पइसा कब आही? काबर कि आपके इस योजना में महिला मन के बहुत बड़े योगदान हे। हर महिला मन आपके ऊपर विश्वास करे हे अऊ आप ला एला देल पड़ही। आपके जो भी क्राइटेरिया हे, आप मन ये तो नइ बताएओ कि B.P.L. ला मिलही कि कोन ला मिलही। आप मन कुछ भी क्राइटेरिया नहीं रखेव। हम तो चाहथन कि हर एक महिला ला ये योजना के लाभ मिलना चाहिए। हमर छत्तीसगढ़ राज्य के 3 करोड़ से ज्यादा जनसंख्या हे। जेमे लगभग 70 लाख विवाहित महिला हैं। पूरा 70 के 70 लाख जतका विवाहित महिला हैं, ओला ये योजना के लाभ मिलना चाहिए। मैं आपके समक्ष ए बात ला रखत हो। मैं हमर विपक्ष के सरकार ला निवेदन करत हो कि हर विवाहित महिला ला महतारी वंदन योजना के लाभ मिलना चाहिए।

सभापति महोदय, हमर महिला मन बर हमन अऊ हमर सरकार जो काम करीस। गौधन न्याय योजना के तहत स्व सहायता समूह के महिला मन ला रोजगार के बहुत अवसर प्राप्त होहे। अगर आज हमन छत्तीसगढ़ राज्य के महिला के स्थिति देखथन तो बहुत सुधर गेहे। एक घर में अगर बेटी या बेटा है तो ओ बच्चा बहुत खुश होथे कि मोर मम्मी हा स्व सहायता समूह के महिला हरे अऊ ओ काम करेल जाथे। महिला आत्मनिर्भर होहे। महिला में बहुत सारा परिवर्तन अइस। हम सभी चुनाव लड़े हन, हमर सब्बो विधायक भाई-बहिनी मन बइठे हे, आप महसूस करहूं कि जब आप पिछले चुनाव प्रचार में जाओ तो महिला सामने नहीं आत रीहिस। आज आप चुनाव प्रचार में गेव तो सबसे पहिली जो सामने खड़े रहाए तो महिला वर्ग खड़े रहाए। काबर कि ओ आर्थिक स्थिति से संपन्न हे। आज स्वयं सहायता समूह के महिला मन काम करत हे।

श्रीमती भावना बोहरा :- आदरणीय सभापति महोदय, जो घर-घर शराब पहुंची है और जिससे हमारी बहनें परेशान हैं, उस विषय पर भी बहन थोड़ा ध्यानाकर्षित कर दें।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्रीमती संगीता सिन्हा :- मैं आर्थिक रूप से मजबूती की बात कर रही हूं, क्योंकि यदि महिला आर्थिक रूप से सशक्त होती है। आप महिला हैं और आप महिला का दर्द समझ सकती है।

श्रीमती भावना बोहरा :- इसीलिए आप इस विषय पर बोलिये और अपना वक्तव्य रखिये।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- यदि हर महिला आर्थिक रूप से संपन्न होही तो छत्तीसगढ़ राज्य एक आसमान छूही, छत्तीसगढ़ राज्य बहुत आगे बढ़ही। इस चीज के ध्यान रखना चाहिए कि हर महिला ला आगे बढ़ना चाहिए अऊ हर महिला आगे बढ़ सकथे। साथ में मैं यही कहात हो कि क्षेत्र के जनता जिस विश्वास के साथ आप ला जीताहे, ओमे आप जरूर खरा उतरो अऊ हर महिला ला कभी ए मत हो कि महिला मन ला धोखा देओ। ए वाले बात कभी नहीं आना चाहिए। मैं निवेदन करत हो कि आप मन हर महिला ला महतारी वंदन योजना के लाभ दो, even हमन ला भी लाभ मिलना चाहिए। (हंसी) हमन ला भी ओ योजना के लाभ मिलना चाहिए, काबर कि हमन भी ओ महिला में आथन।

श्री रामकुमार यादव :- जरूर।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय सभापति महोदय, मोदी जी के गारंटी के बात बार-बार अइस हे। मैं लाडली योजना के बात करहूं। अभी हमर पुन्नू भईया ओ बात ला रखीस। मैं ये बात ला पूछ के क्लियर करना चाहत रहे हवो कि लाडली योजना के बात करथे। लाडली योजना के लाभ पहिली बेटी से मिलना चाहिए तो ओमे नियम निकाल दिस कि दूसरा बेटी आही तो लाडली योजना के लाभ मिलही। तो का पिहली बेटी हा सौंतेली हरे? मतलब, मैं पूछना चाहत हो कि का पहिली बेटी हा बेटी नोहे? तो पहिली बेटी ला ओ योजना के लाभ नहीं मिलथे, दूसरा बेटी ला लाभ मिलथे तो ये तो गलत हे । अगर आप योजना ला लात हौ तो वह स्पष्ट होना चाहिए कि आप वह योजना काकर लिये लाथौ । वह योजना किसलिए ला रहे हैं । साथ में मोदी जी की गारंटी फिर से इस बार का नारा आया । तो मैं बता देना चाहथौं कि मोदी जी के गारंटी अईस ह तो आप मन 500 रूपिया में गरीब बहिनी, बीपीएल वाले मन ला सिलेण्डर देके वादा करथौ अउ यही बात आए रिहीसे कि आप मन उज्ज्वला योजना के तहत हमर बहिनी मन ला चूल्हा नहीं जलान देव, करके मोदी जी ह ओला उज्ज्वला योजना लागू करिस अउ उज्ज्वला योजना लागू करके 200 रूपिया में सिलेण्डर दिस और धीरे, धीरे, धीरे करके गैस सिलेण्डर के रेट ला 12 सौ रूपिया कर दिस । अब ओ बेचारी मन ह गैस जलाही, काबर कि 200 रूपिया में ले हे तो ओ गैस ला जलाना हे न, लेकिन रेट ला इतना बढ़ा दे हे कि कहां ले गैस जलाही । ओ ह चूल्हा फूकथे, कोई सगा सोदर आथे, तब ओ ह चूल्हा जलाथे।

श्री रामकुमार यादव :- हमर घर में रिस के मारे गैस चूल्हा ला पट में टांग दे हे ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- गारंटी कहिथे तो मोदी जी के गारंटी अईसने थोड़ी होथे । मोर ये कहना कि अगर आप गरीब व्यक्ति ला देत हौ तो आप जमीनी स्तर पे बात करौ न । अगर जहां आप सिलेण्डर दे हौ, गरीब ला 200 रूपिया में देवथे तो ओ महिला ह सिर्फ बेटी-बेटा बर टिफिन बनाना रहिथे,



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

तब ओ ह गैस ला जलाथे । जब कोई सगा आथे, तब ओ ह चाय बनाएबर गैस ला जलाथे तो मोर ये कहना हे कि आप ओ नियम ला सही करौ । अगर आप गरीब ला देवथौ तो गैस सिलेण्डर के रेट ला कम करौ और ये सिर्फ बीपीएल के लिए नहीं, सबके लिए गैस सिलेण्डर के रेट ला कम होना चाहिए, यह मैं आप मन से निवेदन करथौ ।

सभापति महोदय, साथ में बिजली बिल हाफ के बात करे रेहेन । अभी हमन उप मुख्यमंत्री जी के भी बयान सुनेन तो ओ ह ये केहे रिहिसे कि बिजली बिल हाफ योजना बंद होही त मैं यह निवेदन करथौं कि अगर बिजली बिल हाफ बंद होवईया हे तो पूरा 44 लाख हमर भैया-बहिनी मन हे तो ओमन ला फायदा नहीं मिल पायी, लोग के घर अंधेला हो जही और आज के जमाना बदल गे हे । आज कोई कंडिल में नहीं रहाय । आज हमन चंदेल भैया ला बहुत मिस करथन, बहुत याद करथन काबर कि वही ह बिजली बिल हाफ के बात ला रखे रिहीसे । त जो हमर महिला वर्ग के हे, चाहे हमर किसान भाई के बात करौ, चाहे कोई भी योजना के बात करौ तो जिस उद्‌देश्य से आपला यहां पर हमर मतदाता भाई मन लाए हे तो मैं निवेदन करथौं कि उस चीज ला ध्यान रखहूं । युवा साथी के बात करहूं, आपके पिछले घोषणा-पत्र के बात करहूं, आपके पिछले घोषणा-पत्र में आपके बेरोजगारी भत्ता के बात रिहीसे, लेकिन आप मन नहीं देव, ओ चीज ला हमर सरकार करिए । 25 सौ बेरोजगारी भत्ता हम दे रेहेंन । मैं निवेदन करते हुए कहना चाहथौं कि हम लोकतंत्र के मंदिर में बईठे हन, जो विश्वास के साथ जनता हमन ला चुनके लाए हे, हम ओ विश्वास में खरा उतरबो और हम जनता ला जो न्याय दिलाना चाहथन, ओ न्याय दिलाए के प्रयास करबो । यही आशा और विश्वास के साथ मैं अनुपूरक बजट के विरोध करत हुए अपनी वाणी ला विराम देथौं । सभापति महोदय, आप मोला बोले बर मौका देव, ओकर बर धन्यवाद ।

**<u>सदन को सूचना</u>**

सभापति महोदय :- विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमावली की प्रति सभी माननीय सदस्यों के उपयोगार्थ खानेदार आलमारी से वितरित की जा रही है । कृपया खानेदार आलमारी से नियमावली की प्रति प्राप्त करें। श्री रामविचार नेताम ।

**<u>माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर चर्चा (क्रमश:)</u>**

श्री रामविचार नेताम (रामानुजगंज) :- माननीय सभापति जी, आपका बहुत-बहुत आभार, बहुत-बहुत धन्यवाद । सभापति महोदय, माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण पर चर्चा चल रही है और चर्चा

की शुरूआत हमारे बहुत ही वरिष्ठ और संसदीय ज्ञान के हमारे प्रणेता आदरणीय अजय चन्द्राकर जी ने प्रस्तुत किया, उसी के समर्थन में बोलने के लिए मैं भी खड़ा हुआ हूं ।

सभापति जी, एक तो नई सरकार का गठन हुआ, नई सरकार का जो जनादेश प्राप्त हुआ, सुदूर बस्तर के अंचल से लेकर सरगुजा, जशपुर के तमाम सारे क्षेत्रों में सरकार को जनादेश प्राप्त हुआ और इसके लिए प्रदेश के करोड़ों जनता, मतदाताओं का अभिनन्दन करते हैं, मैं उन्हें प्रणाम करता हूं। उन्होंने अपना अमूल्य मत देकर, क्योंकि पूरे देश भर में ऐसा माहौल था, छत्तीसगढ़ में तो था ही, लेकिन देश भर में ऐसा माहौल खड़ा किया गया था कि यह सरकार तो रिपीट होने वाली है, यही सरकार आने वाली है। लेकिन, आप देखिये कि जनता के दरबार में किस प्रकार से न्याय होता है, मैं समझता हूं कि उससे बड़ी न्यायपालिका कहीं नहीं है। लोगों ने जो जनादेश दिया, निर्णय दिया, सभी अभी तक मूर्छित हैं, यह मूर्छापन अभी तक दूर नहीं हो पा रहा है। बहुत सारे लोग आज भी यह सोच रहे हैं कि हम सत्ता में हैं। बहुत से लोगों की नींद नहीं खुल पा रही है, समझ नहीं पा रहे हैं, तरह-तरह का आंकलन करने में लगे हुए हैं, तरह-तरह की समीक्षा कर रहे हैं कि कहां पर भूल हुई, कहां पर कमी हुई ? क्यों ? क्योंकि इनका जो घोषणा-पत्र था, हमारा घोषणा-पत्र था, मोदी की गारन्टी का नकल करके अधिक देने का था। प्रदेश की जनता को इसीलिए मैं बार-बार प्रणाम करता हूं कि इनकी बातों में ना आकर, इनकी गारण्टी पर विश्वास ना करते हुए मोदी जी की गारण्टी पर विश्वास करके जनता ने जो वोट दिया, मैं उसके लिए अभिनन्दन करता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय सभापति महोदय, सरकार बनी और सरकार बने हुए कितने दिन हुए हैं भईया ? अभी से हाय-तौबा मचा हुआ है। हफ्ता-दो हफ्ता भी नहीं हुआ है। महीना भी नहीं हुआ है, इसके बाद भी इतनी खलबली मची हुई है। अभी तो फिलहाल 5 साल झेलना है और 5 साल के बाद फिर आगे हम लोग रिनीवल करा लेंगे, हम यह भी बोल रहे हैं। हमारी सरकार बनी, हमारी सरकार के मुखिया आदरणीय विष्णुदेव साय जी के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ के इतिहास में पहली बार कोई गरीब आदिवासी का बेटा आज इस कुर्सी पर बैठा हुआ है। बस्तर के सुदूर अंचल में जन्म लिए, जैसा कि सबको मालूम है, उनकी पृष्ठभूमि भी मालूम है, उनकी सरकार बनी। मैं आपसे यही आग्रह करूंगा कि हमें काम करने के लिए 5 साल का जनादेश प्राप्त हुआ है। आप इंतजार करिये। अगर हमसे कोई गलती होती है तो जरूर आईना दिखाने की कोशिश करिये। देखिये, अभी हमारी शुरूआत है। आदरणीय राज्यपाल महोदय का अभिभाषण होना एक परम्परा है। उस परम्परा का निर्वाह करते हुए राज्यपाल महोदय का अभिभाषण हुआ और अभिभाषण देने के लिए हम उनका अभिनन्दन तो करेंगे ही और हम उनका अभिनन्दन करते हैं, वंदन करते हैं। नई सरकार गठन के लिए इस सदन को माननीय राज्यपाल महोदय ने संबोधित किया। स्वाभाविक है कि इस हफ्ते-दो हफ्ते के अवसर पर सरकार ने आने वाले अपने दो-तीन महीने के लिए एक खाका तैयार करके रखा है कि हम सबसे पहले क्या करने वाले हैं। सभापति महोदय, जब हम

सब लोग चुनाव के मैदान में गये तो हम लोगों ने सबसे पहले एक ही वादा किया था कि अगर हम कोई पहला आदेश करेंगे, उस कुर्सी में बैठने के साथ ही पहला कैबिनेट का फैसला होगा तो उन 18 लाख गरीब परिवार जो आवासहीन हैं, उनके लिए फैसला लेंगे। उनको आवास देने का फैसला करेंगे (मेजों की थपथपाहट) हम उनको आवास देने की घोषणा करेंगे । हमारे सुदूर अंचलों में रहने वाले, तेंदूपत्ता तोडने वाले संग्राहकों के लिये, 4 हजार रूपये देकर बड़ी-बड़ी घोषणायें किया करते थे, बड़े-बड़े होर्डिंग्स लगे थे, उनका क्या हुआ ? एक-दो दिन तोड़कर बंद कर दिये ? बेचारे मजदूर भटकते थे ? उनका जो लघु वनोपज था, उसको कोई खरीदने वाला नहीं था, मार्केट की कोई व्यवस्था नहीं थी ? हमारी सरकार बनने के साथ ही हमने घोषणा किया और घोषणा को पूरा करने के लिये 5500 रूपये मानक बोरा के हिसाब से तेंदूपत्ता की खरीदी करेंगे । हम लोगों ने इसकी व्यवस्था की है । सभापति महोदय, मैं प्रदेश के तमाम बस्तर से लेकर सरगुजा, चाहे बिलासपुर हो या दुर्ग या रायपुर हो, यहां से बड़ी तादाद में भारतीय जनता पार्टी के विधायक जीतकर आये हैं । सरगुजा संभाग के उन हजारों, लाखों-लाख मतदाताओं का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ, जिनहोंने 14 के 14 सीट देकर भारतीय जनता पार्टी और माननीय नरेन्द्र मोदी जी के ऊपर विश्वास कर, भरोसा करके, मोदी जी की गारण्टी पर कि मोदी जी हैं तो मुमकिन है, उसे मुमकिन करने के लिये, माननीय यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के जो कार्यक्रम चल रहे हैं, जनकल्याण के लिये जो योजना है, उसको गारण्टी के साथ पूरा करने का जो वादा है, उस पर विश्वास किया है । आज हमारे प्रदेश ही नहीं, देश और दुनिया के लोग, यशस्वी प्रधानमंत्री जी के कार्यक्रमों की सराहना कर रहे हैं । जनकल्याण की दिशा में जो काम हो रहे हैं, दुनिया के बहुत से देश उसकी नकल कर रहे हैं । यहां लोग खिल्ली उड़ा रहे हैं, आलोचना कर रहे हैं, लेकिन आलोचना करते-करते आपका क्या हश्र हो रहा है, इसको याद रखिये । आप अगर इस ओर नहीं देखेंगे तो आप भी इतिहास की वस्तु बन जायेंगे । देश ने करवट बदल दिया है, देश ने अपनी दिशा तय कर ली है, उस दिशा को आप पहचानिये और उस दिशा के अनुसार नहीं चलेंगे तो आप भी कहां से कहां इतिहास में गिनाये जायेंगे, यह दिन आने वाला है । सभापति महोदय, मैं आज अपने क्षेत्रवासियों का भी वंदन करता हूँ, वहां के मतदाताओं ने 10 साल के बाद मुझे फिर से विधान सभा चुनाव लड़ने का अवसर भी दिया और भारी मतों से विजय दिलाई, मैं उनके प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, अभिनंदन करता हूँ, प्रणाम करता हूँ । मैंने वर्ष 1990 में पहला विधान सभा चुनाव जीता था, तब से लेकर लगातार, एक बार छोड़कर ...।

श्री उमेश पटेल :- माननीय सभापति महोदय, पूरा ट्रेजरी बैंक खाली है । तीन ही लोग हैं, मुख्यमंत्री जी और दो उप मुख्यमंत्री जी हैं । राज्यपाल महोदय का अभिभाषण चल रहा है, अभिभाषण पर चर्चा चल रही है, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ है, आप बुलवा लीजिए और उसके बाद भाषण शुरू करिये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- 13 लोग रहते थे तो खाली रहता था, तीन लोग में खाली हो गया तो (व्यवधान)

श्री उमेश पटेल :- सभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि ऐसा कभी पहले विधान सभा में हुआ नहीं है ।

श्री राजेश मूणत :- बना लीजिए ना ? बना लीजिए ।

श्री उमेश पटेल :- कोई गलत नहीं है, पांच मिनट रूक जाईये ।

श्री धर्मजीत सिंह :- भाषण होने दीजिए ? आप बोलिये ।

श्री रामविचार नेताम :- मैंने बोल दिया है, वह आ रहे हैं ।

श्री उमेश पटेल :- बेंच पूरा खाली है ।

श्री रामविचार नेताम :- कोई दिक्कत नहीं है, उसके लिये आसंदी है ना ? आसंदी है, आपकी चिंता दूर करेंगे । अभी कुछ चाय पी रहे हैं, कुछ नाश्ता कर रहे हैं, स्वल्पाहार के लिये गये हैं, बल्कि आप भी स्वल्पाहार कर आईये।

श्री उमेश पटेल :- नहीं यह हमारी परंपरा नहीं है, आप नई परम्परा की शुरूआत मत करिये। आप किसी को बुला लीजिये। दो मिनट रूक जाईये।

श्री राजेश मूणत :- उमेश भाई, जब वहां 13 लोग थे तब आप लोग का पूरा मैदान साफ रहता था।

श्री उमेश पटेल :- नहीं, कभी ऐसा नहीं हुआ है।

श्री राजेश मूणत :- क्या बात कर रहे हैं। कई बार ऐसा हो चुका है।

श्री उमेश पटेल :- मूणत जी, कभी ऐसा नहीं हुआ है।

श्री राजेश मूणत :- वह उप मुख्यमंत्री (श्री अरूण साव) जी आ गये। अब बोल लीजिये।

श्री रामकुमार यादव :- ये मन गये रहिथे तो प्वाईंट ऑफ ऑर्डर हो जाये रथिस।

श्री राम विचार नेताम :- सभापति महोदय, मैं मुख्यमंत्री जी के साथ-साथ हमारे दोनों उप मुख्यमंत्रियों को भी, हमारे आदरणीय आज ही निविर्तमान होंगे, मेरे ख्याल से हमारे प्रदेश अध्यक्ष के साथ-साथ उप मुख्यमंत्री जी भी हैं। मैं उनको बहुत-बहुत बधाई देता हूं। साथ-साथ हमारे उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा जी, हम सब की जिम्मेदारी है कि हम सब मिलकर छत्तीसगढ़ राज्य को शांति का टापू बनायेंगे। वहीं एक विकसित राज्य भी बनायेंगे, संस्कारधानी भी बनायेंगे। गरीब से गरीब के लिये योजना लाकर गांव, गरीब, मजदूर, किसान, नौजवान, बच्चे, बुजुर्ग, माताओं एवं बहनों के लिये जो हमारी स्कीम हैं, योजनाएं हैं, जो हम लोगों ने घोषणा पत्र में मोदी जी की गारण्टी दी है, हम उस गारण्टी की एक-एक बिंदु पर काम करेंगे। संगीता जी, बहुत अच्छा लगता है, जब आप बोलती है, अउ ओखर में भी छत्तीसगढ़ी बोलत हे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- हव।



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री राम विचार नेताम :- मैं आपको और पूरे दल को यह कहना चाहता हूं कि हम लोगों ने मोदी जी की गारण्टी दी है। मोदी जी की गारण्टी में कोई भी काम पीछे नहीं रहेगा, पूरा काम होगा। सुनिये दादी, आपके पास भी नोटिस आने वाला है।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- मोदी जी की गारण्टी में सबके खाते में 15 लाख रूपये क्यों नहीं आये ?

श्री राम विचार नेताम :- सुनिये, सुनिये, मैं बता रहा हूं, मैं अभी वहीं आ रहा हूं। आप याद रखिये।

श्री रामकुमार यादव :- वह 15 लाख रूपये दे देवा।

श्री राम विचार नेताम :- हम पूरा करेंगे। उन माताओं बहनों के लिये।

श्री रामकुमार यादव :- वह नीरव मोदी ला खोज के ले आवा।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- आप मोदी जी की गारण्टी को छोड़िये। आप महतारी वंदन योजना के तहत पूरी महिलाओं को तो गारण्टी साबित हो जायेगी।

श्री राम विचार नेताम :- उन सारी तमाम आंगनबाड़ी की महिलाओं के लिये, उन स्व सहायता समूह की बहनों के लिये, जितनी माताएं, बहनें हैं, उनके लिये..।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- महोदय जी, थोड़ी महंगाई ला भी कम करवा दीजिये, जी.एस.टी. ला भी कम करवा दीजिये।

श्री राम विचार नेताम :- मैं बोल रहा हूं, कृपया इंटरप्ट न करें। मैं कभी इंटरप्ट नहीं करता हूं। हम लोगों ने उनके लिये काम किया है। हम लोग संकल्प लेकर काम करने वाले लोगों में से हैं। राजनीति हम अपने लिये नहीं, लोगों के लिये कर रहे हैं।

श्री कवासी लखमा :- हम लोग किसके लिये करते थे ?

श्री राम विचार नेताम :- आप ? मैं वहां आ रहा हूं। मैं वहां आने वाला हूं। माननीय मोदी जी की गारण्टी है। जिसके लिये वह गारण्टी है, हम उसके अकाउण्ट में भेजने वाले हैं और 15 लाख हम आपसे वसूलेंगे।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- शौचालय को भी साथ में बनवा दीजिये। घर-घर शौचालय बनाने की गारण्टी नहीं थी ?

श्री अटल श्रीवास्तव :- 15 लाख रूपये और 2 करोड़ रोजगार।

श्री राम विचार नेताम :- यह भी वसूलने वाले हैं। आप जैसे नहीं कि पी.एस.सी. में घोटाला किये, रेत में घोटाला किये, आयरन ओर में घोटाला किये और तो और भैया कोई जानता नहीं था कि कोयले में ऐसी दलाली है। कोयले तक में दलाली। वह तो ठीक है, मैं अभी शराब में आने वाला हूं, चिंता मत करिये। दादी, उसमें आपका भी नाम है और आपके पास भी नोटिस आने वाला है। इसलिये थोड़ा संभल कर रहिये। आपका दोनों में नाम है। इसलिये मेरा यही कहना है कि मोदी जी की गारण्टी नंबर एक की

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

है। हमारे ईमानदार लोगों के लिये, गरीबों के लिये, बेसहारा लोगों के लिये, जरूरतमंदों के लिये, जो देश के लिये अच्छा काम करने के लिये आगे हैं, उनके लिये जो भी स्कीम बनेगी, उस स्कीम का सीधा लाभ उनके अकाउण्ट में भेजकर मिलेगा, उसमें गड़बड़ी नहीं होगी। और आपकी गारण्टी ? आपकी गारण्टी क्या है ? यह महादेव एप्प, यह रेत माफिया, जमीन माफिया, जंगल की अवैध कटाई, जंगल का अवैध कब्जा, जमीनों पर अवैध कब्जा। रातों-रात यदि किसी का घर है और उस घर में रहने वाला आदमी कहीं बाहर जाकर काम कर रहा है, जो एन.आर.आई. है, तो वहां जाकर बोर्ड लग जा रहा है कि फलाना-फलाना हो रहा है।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, केवल एक की फोटो में 7 सीटें साफ हो गईं। वहां गोबर में एक बढ़िया फोटो टंगी हुई थी।

श्री उमेश पटेल :- माननीय धर्मजीत भईया, अभी माननीय नेता प्रतिपक्ष जी ने बात रखी कि हसदेव बांगों में कटाई शुरू हो गई है। छत्तीसगढ़ संघर्ष समिति के जो सदस्य हैं, उनको पुलिस ने Detain किया है। आप उनके परिवार से बात कर लीजिए। उनको पता नहीं कि उन्हें कहां ले गये हैं? उन्हें जेल ले गये हैं या कहां ले गये? आप जरा उनके परिवार से बात कर लीजिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- माननीय सभापति महोदय, मैंने उस आन्दोलन को बहुत नजदीक से देखा है। मैं जब वहां पर उधर बोल रहा था तो मैंने उस वक्त भी देखा है। आपकी सरकार में सरकार बनने के बाद माननीय भूपेश बघेल की सरकार ने अडानी को अनुमति दी और उस वक्त भी पुलिस पकड़कर ले जा रही थी।अभी कौन सी नई बात हो रही है।

श्री रामकुमार यादव :- माननीय सभापति महोदय, अभी जतका भी विपक्ष के मन आरोप लगात हे हमर धरम भईया ओला झोंकत हे। एला देख के मोला एक ठन सुरता आवत हे। पहले भी ओ सत्ता पक्ष के सुख ला भोग चुके हे, अभी फिर ओती हे। छत्तीसगढ़ी में एक ठन कहावत हे, एक हाथ में लड्डू, एक हाथ में पेड़ा अउ सुसआ करेन, ओकरे असन होगे तइसे लागत हे। वहीच सबको के मजा पावत हे।

श्री रामविचार नेताम :- माननीय सभापति महोदय, हम आज इस अवसर पर माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव के समर्थन में चर्चा कर रहे हैं। आज मैं हमारे देश के पूर्व प्रधान मंत्री भारत रत्न स्वर्गीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी का अभिनन्दन करते हैं। जिनकी कल्पना, सोच के आधार पर इस प्रदेश का कैसे विकास हो, यहां के रहवासी गरीब, अमीर, हर वर्ग का कैसे विकास हो ? क्योंकि हम लोग जानते थे। हम देख रहे हैं यह सभी को मालूम है कि हम लोगों की मध्यप्रदेश में क्या स्थिति थी ? हम सभी की कितनी पूछ-परख होती थी। हम अपने क्षेत्र में कितने विकास के कार्य करवा पाते थे। जब हम उन सब परिस्थितियों को देखते हैं तो निश्चित ही हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि आज का छत्तीसगढ़ आगे बढ़ता हुआ छत्तीससगढ़ है। इन 5 सालों का जो कार्यकाल रहा। इन 5 सालों के कार्यकाल में तमाम् प्रशासनिक अधिकारी हों, चाहे राजनीतिक दल हों,

उनकी विचारधारा से अलग भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्त्ताओं के ऊपर चुन-चुन कर एफ.आई.आर. दर्ज हुएं। उनके ऊपर फर्जी मुकदमें दर्ज किए गए। उन्हें जेल में डाला गया। माननीय मुख्यमंत्री महोदय, मैं आपसे यही आग्रह करूंगा कि इन सब एक-एक राजनीतिक प्रकरणों पर इन पर विचार करते हुए, इन प्रकरणों को वापस लिया जाना चाहिए। (मेजों की थपथपाहट) इसमें जो अधिकारी संलग्न हैं, उनको भी दण्ड मिलना चाहिए। (मेजों की थपथपाहट) कानून से ऊपर कोई नहीं है। हमें कानून के दायरे में रहकर काम करना चाहिए। आज कलेक्टर हो, एस.पी. हो, मैंने देश के इतिहास में ऐसा नहीं देखा था। हालांकि मेरी जितनी आयु है और समझ है। हमें माननीय पटवा जी की सरकार से लेकर माननीय अर्जुन सिंह जी सरकार में बाकी सबके साथ रहने, देखने का भी अवसर मिला, लेकिन हमने पहले ऐसा नहीं देखा कि इस प्रदेश में कलेक्टर और एस.पी. की बोली लगे। वह कमीशन एजेन्ट बनकर रह जाएं। उन्हें धिक्कार है। आज जिस जिले में कलेक्टर और एस.पी. बैठते हैं उन पर जनता का भरोसा होता है। वह विश्वास के एक प्रतीत होते हैं उस कुर्सी, थाने की नीलामी हो रही थी, किसी थाने में क्या एफ.आई.आर. होना है। वहां कांग्रेस में बैठे हुए नेता तय करते थे। इन्होंने यह तय किया। इस प्रदेश में बड़े पैमाने पर भष्ट्राचार का ऐसा आलम था कि आप जहां भी जांच के लिए इंगित करेंगे, वहीं आपको भ्रष्टाचार ही भ्रष्चार दिखायी देगा। हमारी सरकार मोदी जी की गारण्टी पर चलने वाली सरकार होगी। हमारी सरकार भ्रष्टाचार से मुक्त होगी। इसमें भ्रष्टाचार की कहीं गुंजाईश नहीं होगी। जीरो टालरेंस होगा। मैं यह निवेदन करूंगा कि जहां कहीं भी इस तरह की बात हो, उस पर सख्ती से कार्रवाई होनी चाहिए।

समय :
6.00 बजे

सभापति महोदय :- आपको बोलते हुए 20 मिनट हो गये हैं, कृपया समाप्त करिये।

श्री रामविचार नेताम :- माननीय उप-मुख्यमंत्री जी, मुख्यमंत्री जी मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि भ्रष्टाचार की जितनी फाईलें दबी हुई हैं, जल जीवन मिशन, पी.डब्ल्यू.डी., सिंचाई विभाग, ऊर्जा विभाग, डी.एम.एफ., पी.एम.जी.एस.वाई. से ले करके जितने प्रकरण हैं, वह सब की फाईलें खुलनी चाहिए। (मेंजों की थपथपाहट) ऐसी कार्रवाई हो कि उन्हें सबक मिल सके, नजीर भी बन सके। केन्द्र में माननीय नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी सरकार चल रही है, उनके मार्गदर्शन के आधार पर, आशीर्वाद के आधार पर हमारी सरकार काम करेगी, हमारी सरकारें काम करने वाली हैं। इसलिए हम कह देना चाहते हैं कि जहां भी गड़बडी हुई है उस गड़बड़ी को साफ करने के लिए जिस प्रकार से केन्द्र की सरकार लगी हुई है, उसी प्रकार से यहां के दीमक को, यहां के भ्रष्टाचारियों के ऊपर नकेल कसने के लिए, उन्हें हम तो यह कहना चाहेंगे कि यह बरगद बन गया है। भ्रष्टाचारियों का बड़ा सा बरगद का पेड़ बन गया है। उस पेड़ के ऊपर वहां पर खौलते हुये पानी को डालना पड़ेगा। उसमें से बहुत सारे मगरमच्छ



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

निकलेंगे, सांप-बिच्छू निकलेंगे, बहुत सारे चूहे निकलेंगे। यह चूहे जिस बिल में घूसेंगे, उस बिल में आग जला करके धूआं करना पड़ेगा। जहां भी होंगे उसको निकाल करके उसको ठीक करना पड़ेगा। ये काम करने वाले हैं। इसलिए हम यह कहना चाहते हैं कि आगे बहुत कुछ करना है, अभी मत बुलवाईये। हम कबूल कर देंगे तो इतना डर है कि बहुत लोग छोड़कर भाग जायेंगे। आज हमारे दादी बोल रहे हैं।

श्री रामकुमार यादव :- आप कतको डरवा लो, हम भागने वाले नहीं हैं। आप ई.डी., सी.डी. कतको भेज लो।

श्री रामविचार नेताम :- माननीय सभापति महोदय, शराब में कितनी गडबडी हुई है, शराब में गड़बड़ी में आप दस्तखत किये हो। आप दस्तखत किये हो न? आप आप ये बताईये कि आपको ई.डी. वाले बुलायेंगे तो आप कैसे करेंगे। इसलिए आप समझ-बूझ लो। आजकल कोड़ा भी नहीं मारते हैं, आजकल करेन्ट लगाते हैं।

श्री धरमलाल कौशिक :- आप दादी को बोल रहे हो न। दादी को तो केवल पैकेज से मतलब था बाकी वह जानते ही नहीं हैं कि क्या हुआ है।

श्री रामविचार नेताम :- सभापति महोदय, आधे लोग तो जेल में हैं, आधे लोग बेल में हैं और कुछ लोग पैरोल में हैं। अब उसके लिए मंगा रहे हैं। आप यह देखिये जैसी करनी, वैसी भरनी। वैसा क्यों करते हो भाई। यह छत्तीसगढ़ की तासीर नहीं है, संस्कृति नहीं है। हम कहां आदिवासी लोग, ओ.बी.सी. और यहां के सामान्य लोग भी हैं, बाकी लोग इसी में रच बस गये हैं, यहीं की संस्कृति में रचे-बसे हैं। हम लोग किसके लिये लेकर जायेंगे। हम लोगों की सीमित आवश्यकतायें हैं, सीमित संसाधन हैं भाई। आप तो दिन-रात मार कर (पीकर) आ जाते हो, दादी, आपकी बात ही अलग है। आपकी आवश्यकता उतनी है। आपके यहां तो रोज पहुंच जाता है। इसलिए आपकी भी कोई ज्यादा आवश्यकता नहीं है। मुझे मालूम है कि महीना में कितना आता था। बता रहे थे कि कितना आता था। बाकी माल तो वह ले गये, लेकिन आपकी बदनामी हुई। आपकी बदनामी हुई, आपने फाईल में दस्तखत किया है न? आपने दस्तखत किया है या नहीं? कौन दस्तखत करेगा ? बाकी दूसरे लोग थोड़ी दस्तखत करेंगे। दस्तखत आप ही किये हैं या अंगूठा लगाये होगे। और यदि नहीं किये होंगे तो कोई दूसरा कर लिया होगा। अब आप यह बताईये कि अब वह फाईल खुलेगी तो आपकी पेशी होगी। पेशी होगी तो वहां जो दरबान मुंछे तानकर खड़ा रहेगा तो आपके लिए बड़ी मुश्किल होगी। इसलिए मेरा यह कहना है कि भाईयों, अभी बहुत कुछ होना है। माननीय सभापति महोदय, हमारी सरकार ने जो योजना यहां पर लाई, हम उस योजना का स्वागत, अभिनंदन करते हैं। माननीय अजय चन्द्राकर जी ने जो कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, इसका मैं समर्थन करते हुए एक लाईन में यह बोलना चाहूंगा-

वक्त आने पर तुझे बता देंगें आसमा,<br>
हम अभी से क्या बतायें, क्या हमारे दिल में है।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

माननीय सभापति महोदय, आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह।

श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह (अकलतरा) :- सभापति महोदय, धन्यवाद। चूंकि मैं पहली बार निर्वाचित होकर यहां आया हूं। यह एक बड़ा सुखद पल और अनुभव है। इस बड़ी जगह पर हम लोग बैठकर दोनों पार्टियों के वरिष्ठों को सुन रहे हैं। कल से यहां पर कई बातें सुनने को मिली। महामहिम राज्यपाल महोदय का अभिभाषण सुनने को मिला और उसके बाद कई तरह के आरोप और प्रत्यारोप भी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सुनने को मिल रहे थे। मुझे लगा कि एक बात की चर्चा यहां होनी चाहिए, जो अभी शायद नहीं हुई है। अभिभाषण में भी वह बात नहीं आई और अनुपूरक बजट में वह बात मुझे नहीं दिखी तो मुझे लगा कि मुझे वह बात बोलनी चाहिए। JN.1 जो कोविड का एक वेरिएंट है, यह वेरिएंट लगातार महाराष्ट्र, दिल्ली एन.सी.आर. पर फैला हुआ है। मैं आज सुबह की ही आंकड़े देख रहा था। गोवा में ही 19 cases, राजस्थान, बैंगलोर में 30 cases 2 दिन में आए हैं और 1 हफ्ते में 3 लोगों की मृत्यु भी हुई है। पिछले 2 दिन में केरल में मृत्यु दर के साथ-साथ 300 cases आए हैं। अभी कुछ दिन पहले माननीय मुख्यमंत्री जी ने स्वास्थ्य विभाग की बैठक ली थी। जिसमें उन्होंने 108 इमरजेंसी एम्बुलेंस वालों को भी कहा था कि जहां भी कोई भी तरीके की दिक्कतें होती हैं, वहां आधे घंटे के अंदर पहुंचे। लेकिन मेरा मानना है कि precaution is always better than cure. तो हमें यह बात ध्यान रखनी होगी कि कोविड भी अब नजदीक के राज्यों में पहुंच रहा है और उसके बारे में भी सोचना, उसके बारे में त्वरित कदम उठाना भी एक जिम्मेदारी बनती है। जितने भी हॉस्पिटल्स दिल्ली के और बाकी जगह के हैं, जहां cases बढ़ रहे हैं, वहां पर उनको हाई अलर्ट कर दिया गया है। हमारे यहां अभी एक-दो दिन में हर जिले को नोटिस भेजा गया है कि आप आर.टी.पी.आर. के टेस्ट या बाकी टेस्ट करना अब जल्दी शुरू करे। आए दिन आजकल अखबारों में कुछ दिनों से यह बात युवाओं में आती है कि एकदम से हार्ट अटैक हुआ और वहां पर उसकी मृत्यु हो गई। तो हमें इस बात को भी देखना पड़ेगा कि कहीं इंफ्लुएंजा के तौर पर यह नीचे फैला तो नहीं हुआ है। मुझे लगा कि यह एक बात यहां पर आनी चाहिए। अभिभाषण में भी और बाकी जो बात हो रही थी। जल, जंगल, जमीन की लगातार बात हो रही है। मेरे पहले भी माननीय सदस्यों ने इस बात को कहा है कि हसदेव अरण्य बचाव समिति में कई लोगों की गिरफ्तारी हुई है, जिसमें जैनंदन पोर्ते जी जो सरपंच हैं, उनकी भी गिरफ्तारी हुई है। रामलाल करियाम, ठाकुर रामजी हरिहर पोर्ते, ये दोनों हैं, इन दोनों की भी गिरफ्तारी हुई है। परसा इस्ट कोयला खदान में लगातार आज सुबह के बाद से कटाई शुरू हो गई है, यह बात हमारे नेता प्रतिपक्ष ने और बाकी भी सदस्यों ने गंभीरता से उठाई है, लेकिन इस पर कोई भी बात नहीं आई। मेरे अपने क्षेत्र में भारत माला प्रोजेक्ट का काम चल रहा है, 20 दिन से लगातार हम लोगों को अवैध कटाई की खबरें मिल रही है, जिसकी शिकायत हम लोग लगातार कर रहे



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

हैं। हम लोग यदि जंगल की बात कर रहे हैं, हम छत्तीसगढ़ में रहते हैं जहां 44% फारेस्ट covered है। जंगल बचाना हम लोगों की प्राथमिकता होनी चाहिए और हसदेव अरण्य से तो सिर्फ जंगल ही नहीं, वहां का पूरा जांजगीर जिले तक का सिंचाई भी प्रभावित होगी, इस बात का ध्यान रखना होगा। छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है। मैं इस बात से नहीं कहने से चूकूंगा कि आशंकित न हो कि जांजगीर-चांपा जिले का उसमें एक बड़ा भाग रहता है। जांजगीर-चांपा जिला को कह सकते हैं कि छत्तीसगढ़ का धान का कटोरा कहीं है तो वह जांजगीर अविभाजित जिले को कहा जा सकता है। वहां पर मैं आज याद भी करना स्वर्गीय श्यामाचरण शुक्ल, बिसाहूदास महंत जी को, मिनीमाता जी को जिनकी एक लंबी सोच रही और वहां पर आज हम लोग एक सिंचित जिले के रूप में जाने जाते हैं । धान का और बाकी फसलों का भी उत्पादन बहुत ज्यादा हो रहा है । इस बीच जबसे रिजल्ट बाहर आया, सरकार बनने की प्रक्रिया शुरू हुई लेकिन 1 नवम्बर, 2 नवम्बर के बाद से जब किसान पहुंचने लगे तो बहुत से लोगों ने अपना धान रोका हुआ था । बीच में कुछ मौसम भी गड़बड़ाया उसकी वजह से भी धान रूका हुआ था । अभी बार-बार यह बात आ रही है कि टोकन कम कट रहे हैं और उसकी वजह से लाईनें बढ़ी हुई हैं तो आखिर हम सीमित समय में अपने टारगेट का धान कैसे खरीदेंगे यह भी एक विचार करने का विषय है ।

माननीय सभापति महोदय, दो साल के बोनस की बार-बार बात हो रही है । आने के पहले ही हम लोग जब बैठकर यह बात कर रहे थे तो बहुत लोगों की यह बात आयी कि भैया हमर इंहां तो जे समय होए रिहिस हे ओ समय के खाता कुछ बंद हो गये हैं । कुछ लोगों ने बताया कि कई जगह फौत हो गये है । कई जगह बंटवारा हो गये है, कई जगह वहां पर लोग नहीं हैं । कुछ लोगों ने वह जमीन अपनी बेची हुई है तो इन सब समस्याओं को हम लोगों को ध्यान देना होगा क्योंकि आगे इसका क्रियान्वयन बहुत मुश्किल है और यह बात भी तय है क्योंकि यह बात जो नीचे लोगों के बीच में समझ में आ रही है कि इसका क्रियान्वयन करने में हमको समय भी लगेगा और काफी समस्याओं का भी हमें सामना करना पड़ेगा ।

माननीय सभापति महोदय, ऋण माफी की बार-बार बात आयी । माननीय उपमुख्यमंत्री जी से भी इस बारे में बात आयी और कुछ जगह पर्चे भी बंटे थे कि ऋण माफी होगी । अभी जो नारायणपुर में हमारे किसान भाई द्वारा आत्महत्या की गयी है । वह बेहद ही दुखद है और आने वाले समय में यह न हो और यह गलत आश्वासन की वजह से हुआ है क्योंकि जब उन लोगों को दोनों तरफ से आश्वासन था कि आज हमारी अगर कांग्रेस या भाजपा की सरकार बन रही है तो ऋण माफी होगी और पिछली सरकार आते ही कुछ घंटों में ऋण माफी की गयी थी और आने के बाद जैसे ही उसको नोटिस मिला, उसने आत्महत्या की । उस पूरे परिवार के साथ हमारी संवेदनाएं भी हैं और यह एक बहुत दुखद घटना है जिसकी वजह से आज वह परिवार कहीं न कहीं दुख में जी रहा है । मोदी जी की गारंटी की बात हो रही

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

थी । हम लोग डिजिटल इंडिया की बात करते हैं । बीच में कोई नहीं रहेगा, पैसा सीधे खाते में जायेगा । आपके घोषणा-पत्र को ही मैं पढ़ रहा था उसमें लिखा हुआ था कि हर पंचायत में बैंक का एक सिस्टम लगायेंगे जहां पर लोग अपने पैसे आहरण कर पायेंगे तो कहीं न कहीं डॉयरेक्ट के बीच में हम लोग दोबारा एक वॉल लाने का काम कर रहे हैं । इसकी जगह अगर शायद ए.टी.एम. खोलें तो वहां पर ज्यादा आसानी से लोग अपने-अपने पैसे का आहरण कर पायेंगे । 3100 रूपये कब से आयेगा, कैसे आयेगा, कितने में आयेगा और सबसे बड़ी समस्या की जो 19 और 20 क्विंटल बेच चुके हैं वे दोबारा 1 क्विंटल बेचने के लिये सोसायटी में नहीं जायेंगे और अब तक जिन्होंने अपना धान बेचा है वह छोटी संख्या में 1 या 2 क्विंटल जिनका बचा था वह ओपन मार्केट में बेच चुके हैं । अगर एक गरीब किसान है तो 1 क्विंटल का पैसा भी उसके लिये बहुत बड़ी चीज होती है । हम लोगों को इस बात का ध्यान रखना होगा ।

माननीय सभापति महोदय, फॉरेस्ट की भी एक बात आ रही थी । अगर हम लोग जंगल की बात करें तो छत्तीसगढ़ में धीरे-धीरे पर्यटन की भी बात माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण में थी । लेकिन कहीं भी Eco-Tourism या Forest Tourism को डवलप करने की बात उसमें नहीं कही गयी है । इसको कहीं न कहीं हमें जगह देनी होगी । आज भी मध्यप्रदेश, असम या हम लोग कहीं भी जाते हैं तो राजस्थान जैसी जगह में भी बड़े-बड़े सेंचुरीज और National Park हैं । आज हम लोगों को यहां जाना होता है तो कहीं न कहीं छत्तीसगढ़ के लोग बांधवगढ़ और कान्हा की ओर अपना रूख करते हैं । क्यों नहीं अचानकमार में, क्यों नहीं बारनवापारा में, क्यों नहीं बस्तर में यह काम हो सकता है ? हमें Sustainable Development की ही बात करनी पड़ेगी । जहां अगर औद्योगिक विकास हो तो कहीं न कहीं हमें प्रकृति के साथ भी अपना संतुलन बनाये रखना होगा । हम लोग चूंकि 44 प्रतिशत Forest कवर की बात कर रहे हैं तो यह करना प्रकृति के साथ जुड़कर रहना हमें जरूरी लगता है । चारधाम की यात्रा और कई जगह की यात्राएं हैं । रामलला के दर्शन करने की भी बात है बिल्कुल बात सही है, पूजनीय है । हर सनातनी वहां जाना चाहेगा बाकी लोग भी वहां जाना चाहेंगे लेकिन कहीं न कहीं यदि हम पर्यटन की बात करें तो हमें अपने छत्तीसगढ़ के मंदिर, अपनी संस्कृति, अपनी जगह को आज वैश्विक और पहले देश के पटल पर रखने की आवश्यकता है । हमारे यहां इतनी सारी चीजें हैं, उसे पर्यटन में क्यों आगे नहीं लाया जा सकता? हम लोग यहां पर बात करते हैं कि ये छत्तीसगढ़ का मॉरीशस है तो मॉरीशस कहने की जरूरत ही नहीं होनी चाहिए, वो तो छत्तीसगढ़ का है और उसी को विकसित किया जाये।

श्री अनुज शर्मा (धरसींवा) :- आप अगर अपने बाजू में बैठने वाले से बात करते। पर्यटन मंडल के अध्यक्ष रहे हैं, 5 साल में काफी कुछ किया जा सकता था।

श्री राघवेंद्र कुमार सिंह :- भैया, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं, लेकिन 15 साल अब फिर 15 साल की वही बात आ जाती है, 15 साल और 5 साल में भी बहुत कुछ हुआ है। मैं यह बिल्कुल नहीं



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

कह रहा हूं कि 5 साल में नहीं हुआ या उसके पहले नहीं हुआ। आपके अभिभाषण में आपकी नीयत होती है कि आगे आप 5 साल में क्या करना चाहते हैं? तो यदि उसमें नहीं। अभी तो हम अभिभाषण पर चर्चा कर रहे हैं। तो माननीय सभापति महोदय, अगर अभिभाषण पर चर्चा कर रहे हैं तो उसमें कोई चीज नहीं है तो महोदय, उसमें क्या और आनी चाहिए, यही सुझाव देने के लिए तो हम लोग खड़े हुए हैं। न्याय योजना की बात बार-बार आ रही थी। मजदूर न्याय योजना, किसान न्याय योजना, इस पर कई आरोप-प्रत्यारोप हुए कि ये शायद पैसा बाहर जाता था या कुछ हो जाता था, लेकिन कहीं न कहीं ये डायरेक्ट उनके खाते में ही जाता था।

सभापति महोदय :- 10 मिनट हो गये हैं, कृपया समाप्त करें।

श्री राघवेंद्र कुमार सिंह :- मैं बस दो मिनट में समाप्त करता हूं। अगर किसानों की बात करें तो ये सबको पता है कि कोविड के समय में जब इकॉनामी रिसेशन में जा रही थी तो छत्तीसगढ़ उस तरह से रिशेसन में नहीं गया था, जितना भारत की एक ओव्हर-ऑल इकॉनामी रिसेशन में गयी थी। सभापति महोदय, तो इस बात को ध्यान में रखना होगा कि कहीं न कहीं डायरेक्ट सब्सिडी से पैसा किसानों को मिला है, वह छत्तीसगढ़ की इकॉनामी में काम आया है और इस पैसे से किसानों का और हमारे प्रदेश का भला हुआ है। पिछले कुछ दिनों में एक बड़ी घटना मेरे क्षेत्र में हुई है तो मैंने सोचा कि उसका उल्लेख करना आवश्यक है। गौठान की बात हो रही थी, गोबर की बात हो रही थी, गौ-मूत्र की बात हो रही थी, सभापति महोदय, मेरे यहां एक ही गौठान के बाहर 40 से 45 गायों की लाश पायी गयी। उस पर हम लोगों ने कहा कि जांच होनी चाहिए। जांच चल रही है और मैं चाहूंगा कि इस सदन में भी ये बात संज्ञान में रहे कि उसके जो भी दोषी हैं, उन पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई भी होनी चाहिए। सभापति महोदय, आपने आज मुझे बोलने का मौका दिया, सभी वरिष्ठों ने सुना, इसलिए मैं आप सबको प्रणाम भी करता हूं और आगे इसी तरह हम लोगों को जो नये सदस्य हैं, हम लोगों को प्रोत्साहन और आपका संरक्षण मिलेगा। सभापति महोदय, बस यही अपेक्षा करता हूं और इस अभिभाषण के विरोध में मैं अपना मत देता हूं। बहुत-बहुत धन्यावद। (मेजों की थपथपाहट)

सभापति महोदय :- बहुत-बहुत धन्यवाद। ओ.पी. चौधरी जी। (मेजों की थपथपाहट)

श्री ओ.पी. चौधरी (रायगढ़) :- आदरणीय सभापति महोदय, आज बहुत ही हर्ष का विषय है कि जो अभिभाषण आदरणीय गवर्नर महोदय ने यहां पर प्रस्तुत किया है, उससे आने वाले समय में हमारी सरकार किस तरह से काम करने वाली है, उसका एक दर्पण उसमें प्रस्तुत हुआ है। हमारे मुख्यमंत्री के रूप में छत्तीसगढ़ राज्य गठन के बाद पहली बार आदिवासी समाज से प्रतिनिधित्व मिला है, उसके लिए आदरणीय विष्णु देव साय जी को और पूरे आदिवासी समाज को मैं बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। (मेजों की थपथपाहट) आदरणीय डॉ. चरणदास महंत जी, वे नेता प्रतिपक्ष जी की भूमिका में हैं, उन्हें भी मैं बहुत-बहुत बधाई और शुभकामना देता हूं। डॉ. रमन सिंह जी अध्यक्ष की भूमिका में

निर्वाचित हुए हैं, उनके लिए भी उन्हें बहुत-बहुत बधाई और शुभकामना देता हूं। इस अभिभाषण में बहुत सारे पक्ष हैं, लेकिन मैं केवल एक पक्ष पर यहां अपना मत रखने के लिए उपस्थित हुआ हूं और उसमें बहुत ही हर्ष का विषय है कि छत्तीसगढ़ के युवाओं की दृष्टि से एक बहुत बड़े न्याय का काम हमारी सरकार ने करने का मंतव्य स्पष्ट कर दी है, उसमें पी.एस.सी. की जांच का विषय बहुत स्पष्ट रूप से सामने आया है। (मेजों की थपथपाहट) मैं खुद इस पूरे प्रक्रिया से गुजरा हूं, इसलिए छत्तीसगढ़ के युवाओं ने जो झेला है, उस दर्द को मैं बहुत अच्छी तरह से महसूस करता हूं और पूरा सदन भी कई ऐसे तथ्यों को जाने, ऐसी मेरी इच्छा है। कई ऐसे तथ्यों को जाने जिससे हम सुधार की दिशा में काम कर सकें। मैं अपने जीवन के दो अनुभवों को सबसे पहले बताना चाहूंगा कि जो इवेंट मेरे साथ हुए, जो घटनाएं मेरे साथ हुईं, हमारी बैच में जब LBSNAA में ट्रेनिंग करते थे तो दो आई.ए.एस. अधिकारी थे, एक बहुत ही गरीब घर का था। उसका ठीक से घर भी नहीं था और एक दूसरा था जो बस कंडक्टर का बेटा था। हम लोग जब भी दिल्ली में जाते थे, आज भी जब जाते हैं तो घूमते रहते हैं तो जब भी शाहजहां रोड आता है इंडिया गेट के पास धौलपुर हाउस आता है तो गाड़ी को रोकता है और जाकर धौलपुर हाउस यू.पी.एस.सी. के सामने मत्था टेकता है और मेरे लिए चारों धाम यही है, इसी ने मुझे जीवन में आगे बढ़ाया, इसी तरह की बात वह हमेशा कहता है और वहां पर मत्था टेकता है । भारत के ग़रीब लोग, भारत के निम्न मध्य वर्गीय लोग, जो समाज के आखिरी छोर पर खड़े हैं, अगर इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में आशा और विश्वास करते हैं । अगर वे अपनी ज़िंदगी शिक्षा के माध्यम से बदलना चाहते हैं, अपनी ज़िंदगी में छलांग लगाना चाहते हैं तो उसका बहुत बड़ा माध्यम यू.पी.एस.सी., पी.एस.सी. जैसी संवैधानिक संस्थाएं हैं । जिनके माध्यम से एक युवा अपनी जिंदगी में परिवर्तन लाता है । सभापति महोदय, आनंद कुमार जी के ऊपर एक मूवी बनी, सुपर 30, उसमें ऋत्विक रौशन का एक बड़ा फेमस डायलॉग इस संदर्भ में समीचीन और प्रसंगिक है । वे कहते हैं कि इन अमीरों ने अपने लिए खूब चिकनी सड़क बनाई और हमारे लिए गड्ढा ही गड्ढा छोड़ दिया । यहीं उन्होंने सबसे बड़ी गलती कर दी, उन्होंने हमें छलांग लगाना सिखा दिया (मेजो की थपथपाहट)। जब समय आएगा तो सबसे बड़ी और सबसे लम्बी छलांग हम ही मारेंगे । भारत का एक ग़रीब व्यक्ति जो राजा का बेटा नहीं है, जो चांदी का चम्मच लेकर पैदा नहीं हुआ है । वह व्यक्ति भी अगर सोचता है कि मैं जीवन में छलांग लगाकर ऊंचाई अर्जित कर सकता हूं, समाज के लिए, देश के लिए, प्रदेश के लिए कुछ काम कर सकता हूं तो उसके लिए शिक्षा बहुत बड़ा माध्यम होती है । यू.पी.एस.सी., पी.एस.सी. उसकी आशा एवं विश्वास का केंद्र होती है । हमारे देश के संविधान की प्रस्तावना में लिखा है कि हम भारत के लोग संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं, इसमें बीच में जो अंश आता है उसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक न्याय की बात आती है, उसमें प्रतिष्ठा और अवसर के समता की बात आती है । कोई भी लोकतांत्रिक व्यवस्था तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक उसमें समानता स्थापित न हो । जब



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

पी.एस.सी. जैसी संस्थाओं में भ्रष्टाचार होने लगता है, जब घोटाला होने लगता है तो उसी तरह की दौड़ हो जाती है जैसे 100 मीटर की दौड़ में एक बच्चे से कहें कि तुम 80 मीटर आगे जाकर खड़े हो जाओ और दूसरे बच्चे से कहें कि तुम 200 मीटर पीछे से दौड़ना प्रारंभ करो । जब इस विश्वास के केन्द्र में इस तरह का भ्रष्टाचार देखते हैं तो न केवल कुछ व्यक्ति भर्ती से वंचित होते हैं बल्कि पूरे समाज के, पूरे प्रदेश के युवाओं में हताशा और निराशा का वातावरण निर्मित होता है । मैं एक और उदाहरण देना चाहूंगा । अभी चुनाव प्रचार के दौरान मैंने रायगढ़ जिले में खुद महसूस किया । एक दिन में महापल्ली गांव से जा रहा था, हम लोग चुनाव प्रचार समाप्त करके जा रहे थे तो एक पूरा परिवार सड़क पर आकर खड़ा था और उन्होंने हमारे गाड़ियों के काफिले को रोका उसमें से मां रो रही थी, पिता रो रहे थे, उनके दो युवा बेटे बेटियां खड़े थे उन्होंने कहा कि बेटा इंटरव्यू में इनको गलत नम्बर दे दिया गया उसके कारण 3 बार से ये सेलेक्ट नहीं हुए हैं, जब आप लोगों की सरकार बन जाएगी तो जांच करना और दोषियों को जेल में भेजना, उस मां ने रोते हुए कहा (मेजो की थपथपाहट) । इस तरह की स्थिति पी.एस.सी. में निर्मित हुई जो बहुत ही दुर्भाग्यजनक है । मैं इसे केवल आरोप प्रत्यारोप की राजनीतिक तक सीमित नहीं रखना चाहता । छत्तीसगढ़ की एक करोड़ युवा आबादी जो आने वाली पीढ़ी है उसके आशा और विश्वास के रूप में देखना चाहता हूं । उसमें सुधार हो तो मुझे लगता है कि पक्ष और विपक्ष दोनों को यह जिम्मेदारी निभानी चाहिए । मैं सदन के सामने कुछ रिकॉर्ड प्रस्तुत करना चाहता हूं कि पिछले पांच सालों में हमारी पी.एस.सी. का स्तर किस तरह से गिरा, उसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत करना चाहता हूं । तातापानी, एक पर्यटन स्थल हमारे सरगुजा के बलरामपुर जिले में है । जिसे छत्तीसगढ़ का बच्चा बच्चा जानता है लेकिन छत्तीसगढ़ की पी.एस.सी. जैसी संस्था ने उसका उत्तर बताया कि तातापानी बलरामपुर जिले में नहीं, सूरजपुर जिले में है । ऐसा प्रश्न पूछा गया और ऐसा उत्तर छत्तीसगढ़ पी.एस.सी. के माध्यम से सामने आया । एक प्रश्न पूछा गया कि छत्तीसगढ़ में किस मानसून से बारिश होती है, सबको पता है कि पूरे भारत में वर्षा दक्षिणी-पश्चिमी मानसून से होती है लेकिन छत्तीसगढ़ पी.एस.सी. ने दक्षिणी-पूर्वी मानसून को इसका उत्तर बताया । इस बात को हमको याद रखना चाहिए । 56 नम्बर में एक प्रश्न पूछा गया 4 जुलाई 2022 तक भुंइया पोर्टल में कुल कितने व्यक्तिगत अधिकार पत्र अपलोड किये गये । यानी युवा 4 जुलाई का डेटा याद रखे, 5 जुलाई का डेटा याद रखे, 6 जुलाई का डेटा याद रखे । यह मानवीय सीमा से परे है लेकिन इस तरह के प्रश्न छत्तीसगढ़ पी.एस.सी. ने पूछे । मैं एक और प्रश्न के बारे में बताना चाहता हूं माननीय मुख्यमंत्री द्वारा भेंट मुलाकात कार्यक्रम के दौरान विधान सभा क्षेत्र में भेंट मुलाकात कार्यक्रम का आयोजन कब किया गया, यह छत्तीसगढ़ पी.एस.सी. ने पूछा है। मैं सदन से पूछना चाहता हूं, हमारे कांग्रेस के मित्रों से भी पूछना चाहता हूं, इनमें से कोई भी व्यक्ति यह नहीं बता सकता की राजनांदगांव को किस तारीख को गये। क्या यह छत्तीसगढ़ के युवाओं को याद रखने लायक प्रश्न है ? मैं पूछना चाहता हूं कि यह किस

तरह की अप्रासंगिकता है ? यह किस तरह की आत्ममुग्धता है ? यह किस तरह की राजनीति परोसने वाला चीज है ? इस बात को हमको समझने की जरूरत है। छत्तीसगढ़ पी.एस.सी. ने प्रश्न पूछा, रतनपुर राज्य में कल्चुरी शासक रघुनाथ सिंह को अपदस्थ कर रघु जी ने वहां पर कब नये प्रशासक के रूप में नियुक्त किया, 1945 को छत्तीसगढ़ पी.एस.सी. ने उत्तर मान लिया, पूरे 200 साल की गड़बड़ी की गयी, 1745 की जगह पर 1945 सन् को मान लिया गया। (मेजों की थपथपाहट) मेंस के कुछ प्रश्न और उत्तर सामने आए, जो बहुत ही समझने की चीज है। एकप्रायिकता probability जो mathematics में होती है, उस पर प्रश्न पूछा गया था। उसमें 12/52 के बाद 1/4 एक ने उत्तर लिखा है, 12/52 के बाद अगर उसको लिखना था तो 3/4 लिखना था, लेकिन उसे 1/4 लिखा है और पूरे गणित में mathematics गलत हुई है। उसके बाद उसे मेंस में पूरे में पूरे अंक दिये गये हैं।

श्री रामकुमार यादव :- चौधरी साहब, ए त्रुटि ए, जइसे अमित शाह हा बोल दे रिहिस हे कि बी.ए. करके 12 वीं करेव करके वइसने त्रुटि ए।

श्री सुशांत शुक्ला :- पी.एस.सी. के फुल फार्म बता दीजिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- यह बहुत ऊंची चीज बोल रहे हैं।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- उसके पहले बहुत ज्यादा गड़बड़ी थी, उसको देखिए।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपको समझ में नहीं आएगा। आप बैठ जाईए। यह बहुत ऊंची चीज बोल रहे हैं, सुनिए।

श्री रामकुमार यादव :- ओला सुधारे जाथे। आपे समझथव। आप बहुत समझदार हो।

श्री धर्मजीत सिंह :- हम लोग खुद नहीं समझ रहे हैं तो समझने की कोशिश कर रहे हैं। आप बैठिए ना।

श्री ओ.पी. चौधरी :- सभापति महोदय, इसमें हम विशेषज्ञ नियुक्त कर सकते हैं, जरूरी नहीं कि हम लोग हर कोई समझे। सदन का काम नहीं है कि एक-एक चीज को देखे लेकिन हमारे संज्ञान में आए कि इस तरह की चीजें हुई हैं। कवासी लखमा दादी भी संशोधन कर सकते हैं, यह लोकतंत्र की ताकत है। इसको हम यह मान लें कि यह पढ़ा है, यह लिखा है, ऐसा नहीं है। पढ़ने लिखने वाले वहां बैठे हुए हैं। उसमें कोई बात नहीं है, हमको सुधार की दिशा में सोचना चाहिए। मुख्य परीक्षा में पूनो अभ्यारण्य पर एक प्रश्न पूछा गया, यह सब्जेक्टिव उत्तर हैं, लंबे-लंबे उत्तर लिखे गये हैं, पूनो अभ्यारण मध्यप्रदेश में है, सबको पता है, बच्चे ने असम में लिख लिया, उनको पूरे प्रश्न में उत्तर मिल गया। उत्तल लेंस, अवतल लेंस पर दोनों ने सेम उत्तर लिखा, एक को चार में चार अंक मिल गया, दूसरे को चार में शून्य अंक मिल गया।

श्री रामकुमार यादव :- त जांच करवाव न ता कि खाली गोठयात रिहा।

श्री अनुज शर्मा :- सबके जांच होही।



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

श्री ओ.पी. चौधरी :- सभापति महोदय, हनुमान सिंह जी के बारे में प्रश्न पूछा गया और एक अभ्यर्थी ने शहीद वीर नारायण सिंह जी के बारे में पूरे डिटेल में उत्तर लिख दिया। शहीद वीर नारायण सिंह जी हम सब के लिए सम्माननीय हैं, सबकुछ हैं लेकिन इस प्रश्न में हनुमान सिंह जी के बारे में पूछा गया था और पूरा का पूरा उत्तर लिख दिया गया। इस तरह से मैं एक और उदाहरण देना चाहूंगा कि ऑपरेटिंग सिस्टम के नाम लिखने के लिए पी.एस.सी. ने प्रश्न किया था, उस पर एक विद्यार्थी ने keyboard, mouse, printer, monitor, बहुत सारे हमारे इंजीनियर साथी भी हैं, ये सभी हार्डवेयर के पार्ट होते हैं, साफ्टवेयर के पार्ट नहीं होते, उसके बाद भी आंसर लिख दिया, उसे पूरे में पूरे अंक दे दिए गए। इस तरह से जो कुछ पी.एस.सी. में हुआ है, वह बहुत ही दुखद है और छत्तीसगढ़ के युवाओं की दृष्टि से यह बहुत ही दुर्भाग्यजनक है। सबसे दुखद बात यह रही कि जिस भी व्यक्ति ने आवाज उठाने की कोशिश की, जिस भी अभ्यर्थी ने कुछ मुद्दे को सामने लाने का प्रयास किया, सड़क पर बात रखने की कोशिश की, सोशल मीडिया पर बात रखने की कोशिश की, उनको पी.एस.सी. ने पूरी गुंडागर्दी करते हुए ऐसे लोगों को नोटिस पकड़ाए हैं। (शेम-शेम की आवाज) जिस भी व्यक्ति ने यह किया, उनको नोटिस पकड़ाया गया है। आप लोग कौन सहमत थे, कौन असहमत थे, आप सत्ता में थे, मैं आरोप प्रत्यारोप नहीं लगाना चाहता लेकिन कहीं ना कहीं बड़े स्तर से सत्ता का साथ पी.एस. के साथ था और उसी कारण से यह सब कुछ हुआ है। मैं नागार्जुन जी की एक पंक्तियां उस समय के लिए बताना चाहता हूं। जनता की वाजिब मांगों पर, लाठी, गोली और डंडे थे और कानूनों की सड़ी लास पर, प्रजातंत्र के झंडे थे। इस तरह की स्थिति निर्मित हुई थी। (मेजों की थपथपाहट) यह पंक्तियां नागार्जुन ने लिखी है, जो इंदिरा जी के आपातकाल के समय नागार्जुन जी ने लिखी थी। कहीं ना कहीं पिछले रिजीम में अघोषित आपातकाल पी.एस.सी. के लिए भी लगा हुआ था, यह लाईनें उतनी ही प्रासंगिक उस समय के लिए भी लगती हैं। मैं यही कहना चाहता हूं कि जो हमारे युवा साथी हैं, जो हमारे छत्तीसगढ़ के भविष्य हैं, जो हमारे छत्तीसगढ़ की आने वाली पीढ़ी है, वे हताशा और निराश में ना जाएं। जब एक बच्चा एक गांव से निकलकर जाता है तो केवल वह बच्चा भर नहीं जाता है, उसके माता-पिता और उसके पूरे परिवार के अरमान उसके साथ जाते हैं। कोई माता-पिता गहना बेचकर अपने बच्चे को पढ़ाने के लिए भेजते हैं, कोई मां अपने गहने बेचती है, कोई पिता अपने खेत को बेचकर पढ़ाने के लिए भेजता है। वह बच्चा इतने सारे लोगों की आशा और अरमान का केन्द्र होता है।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- मैं आपकी बात का पूरा समर्थन करती हूं। लेकिन आप यह बता दीजिए कि यदि आप P.S.C. की परीक्षा को U.P.S.C. पैटर्न में शुरू करेंगे तो ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को इससे क्या लाभ मिलेगा? अभी तो सारे के सारे शहरी बच्चे U.P.S.C. पैटर्न को जानते हैं, लेकिन ग्रामीण अंचल के बच्चे U.P.S.C. पैटर्न को नहीं जानते हैं। आपके अनुपूरक में जो व्यवस्था की गई है उसमें कहां से पारदर्शिता हुई? आपने अभी बताया कि P.S.C. में गड़बड़ी हुई तो मैं आपको याद दिलाना चाहूंगी कि

वर्ष 2003 की P.S.C. में भी आप लोगों ने इसी तरह का प्रश्न किया था। वर्ष 2012 में S.I. की परीक्षा में भी बहुत सारी गड़बड़ियां थीं, जिसमें जिसका नाम Physical में कट चुका था, उसका चयन हो गया था। वहीं पर मैं कट गई थी। जब इंटरव्यू और सारे सेलेक्शन में मेरा नाम आगे था और ऊपर से मेरे पास 10-10 बोनस अंक थे, उसके बाद भी मैं कट गई थी। आप वर्ष 2003 और वर्ष 2012 की बात बताइये कि यह कहां से आया था? (मेजों की थपथपाहट)

श्री रामकुमार यादव :- चौधरी जी, आप बहुत बात करत हो। (व्यवधान)

श्री ओ.पी. चौधरी :- हर्षिता जी, आपके ऑप्जेक्शन को मैंने बहुत गंभीरता से सुना है।

श्री अटल श्रीवास्तव :- चौधरी जी, मेरा भी एक प्रश्न है।

श्री ओ.पी. चौधरी :- जी, अटल जी।

श्री अटल श्रीवास्तव :- मैं आपकी बात मानता हूं कि त्रुटियां हो सकती हैं। क्लैरिकल त्रुटियां हो सकती हैं और कोई इसमें इनवॉल्व हो सकता है परंतु भारतीय जनता पार्टी के समय भी जांजगीर-चांपा जिले की रहने वाली पोरक बाई को मेरिट में ला दिया गया था। भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में भी P.M.T. का घोटाला हुआ था, जिसका पेपर तखतपुर में बना था।

श्री रामकुमार यादव :- ओ समय उहा के कलेक्टर रहे हव का? (व्यवधान)

श्री अटल श्रीवास्तव :- आप ही की सरकार में हुआ है। (व्यवधान)

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- उस समय जांच की मांग क्यों नहीं की गई और जांच क्यों नहीं करायी गयी? (व्यवधान)

सभापति महोदय :- कृपया एक-दूसरे से बात न करें।

श्री ओ.पी. चौधरी :- मैंने आप लोगों की बात सुन ली है, अब मुझे इस विषय पर जवाब देने का अवसर जरूर दीजिए। मैं अपनी बात रखना चाहता हूं। आदरणीय हर्षिता जी ने अपनी बात रखी है कि P.S.C. के मामले में भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी, तब भी कई गड़बड़ियां और कई चीजें सामने आईं। महत्वपूर्ण यह होता है कि किसी सरकार की राजनीतिक इच्छाशक्ति कैसी है। जब छत्तीसगढ़ P.S.C. में वर्ष 2003 के बाद गड़बड़ियां सामने आईं।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- उस समय भी जांच की मांग की गई थी और स्टे पर स्टे लगते जा रहे थे। (व्यवधान)

श्री ओ.पी. चौधरी :- क्या आप मेरी बात सुनेंगी? क्या आप इतने बड़े सदन को [XX] बनाएंगी?

सभापति महोदय :- आपने अपनी बात कह ली है।

श्री ओ.पी. चौधरी :- क्या आप इतने बड़े सदन को [XX] बनाना चाहती हैं? मैंने आपको पूरी तरह सुना है। आप मेरा जवाब सुन लीजिए। मैं यही कहना चाहता हूं कि राजनीतिक इच्छाशक्ति महत्वपूर्ण होती है। वर्ष 2003 में जब गड़बड़ी सामने आई तो भारतीय जनता पार्टी की तत्कालीन सरकार की

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

राजनीतिक इच्छाशक्ति थी कि P.S.C. के चेयरमेन को उसका कार्यकाल पूरा होने से पहले हटाने का साहस भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने दिखाया। (मेजों की थपथपाहट) आप लोग हमेशा उसको ढकने की कोशिश करते हैं। आज आदरणीय पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी कह रहे थे कि जांच करा लेना। आज भी वह अहंकार। आज भी वह मानने को तैयार नहीं हैं कि जिस व्यक्ति ने वहां अध्यक्ष के रूप में काम किया, उसने कैसे काम किया। उसके खिलाफ किस-किस तरह के जांच पेंडिंग थे। उन जांचों को कैसे दरकिनार करते हुए उनको P.S.C. का चेयरमेन बनाया गया। आप चिंता मत कीजिए, बहुत जल्दी यह बात बहुत अच्छी तरीके से सामने जाएगी। इस तरह की स्थिति राजनीतिक इच्छाशक्ति महत्वपूर्ण होती है और अच्छे व्यक्ति की खोज करते-करते भारतीय जनता पार्टी ने प्रदीप जोशी जैसे व्यक्ति को छ.गढ़ P.S.C. का चेयरमेन बनाया। जो पारदर्शिता की मूर्ति कहे जा सकते हैं। जिन्होंने सिस्टम बनाया कि प्रत्येक वर्ष 26 नवंबर को संविधान दिवस के दिन वैकेंसी निकाली जाएगी और अगले संविधान दिवस तक उसे पूरा किया जाएगा। यदि यह सिस्टम किसी ने बनाया तो प्रदीप जोशी जी ने बनाया। उन्होंने पारदर्शिता के सारे सिस्टम को इनप्लेस किया और दूसरे राज्यों में छगढ़ P.S.C. का उस समय उदाहरण दिया जाता था। उनको आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के कार्यकाल में U.P.S.C. का मेंबर भी बनाया गया और U.P.S.C. का चेयरमेन भी बनाया। ऐसे व्यक्तित्व को भारतीय जनता पार्टी ने सामने लाया। यह भारतीय जनता पार्टी का पॉलीटिकल कमिटमेंट था। मैं आदरणीय सभापति महोदय के माध्यम से पूरे सदन के सामने आप सब लोगों से एक ही बात कहना चाहता हूं कि हमारी आने वाली युवा पीढ़ी को सहेजना हम सबकी जिम्मेदारी है। आज दुनिया की 20 प्रतिशत युवा आबादी हमारे भारत देश में निवास करती है। हमारे देश की जनसंख्या का 65 प्रतिशत 35 वर्ष से कम आयु वर्ग के युवाओं की है। आज हमारे देश की 50 प्रतिशत आबादी 25 वर्ष से कम आयु के युवाओं की है। जब पूरी दुनिया बूढ़ी हो रही है तो हमारा देश युवा देश है। आज हमारे देश की औसत आयु 29 वर्ष है, यूरोप की औसत आयु 46 वर्ष है, जापान की औसत आयु 48 वर्ष है, चीन और अमेरिका की औसत आयु 42 वर्ष है। जब पूरी दुनिया बूढ़ी हो रही है और भारत युवा देश है तो भारत के युवा न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया पर अपना डंका बजा सकते हैं । इतनी क्षमता भारत के युवाओं में है । (मेजों की थपथपाहट) अगर उसे हम हताशा और निराशा के गर्त में ले जाएंगे तो उसके लिए जनता, समाज और युवा हमें कभी माफ नहीं करेंगे । चाहे वह पक्ष हो या विपक्ष हो, हमें इस बात को समझने की जरूरत है । हम युवाओं के लिए पूरी तरह से समर्पित होकर काम करें, यही आप सभी लोगों से मेरा आग्रह है ।

माननीय सभापति महोदय, मैं दंतेवाड़ा का एक उदाहरण देना चाहता हूं । वहां पर 2011-12 में एक छोटा सा प्रोजेक्ट चालू किया गया था-नन्हें परिन्दे । उसमें नवोदय विद्यालय और सैनिक स्कूल के लिए बच्चों की तैयारी कराई जाती थी । उसमें सुकालू मण्डावी नाम का एक बच्चा आया । आदिवासी बच्चा था, उसके मां और पिताजी, दोनों की मृत्यु हो गई थी । वह अनाथ था, जिसे हम सामान्य भाषा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

में कहते हैं । वह बच्चा नन्हें परिन्दे में आया, उस बच्चे का सलेक्शन नवोदय विद्यालय और सैनिक स्कूल के लिए हुआ और वह बच्चा 6वीं से 12वीं तक बारसूर के नवोदय विद्यालय में पढ़ाई किया, वह टॉप करता रहा और 12वीं से निकलने के बाद वह बच्चा आज बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से ग्रेजुएशन करके आ गया है । जब गर्मी की छुट्टियां आती थीं तो उस बच्चे के पास ऐसा जगह नहीं होती थी, जहां वह जा सके । इस तरह की स्थिति थी । ऐसे बच्चे Rays of hope, आशा की किरणें हैं, चाहे वह बस्तर हो, चाहे सरगुजा हो, हमारे ऐसे क्षेत्रों से ऐसी प्रतिभाओं को सहेजना आज सदन की जिम्मेदारी है, सरकार की जिम्मेदारी है, हम सबकी जिम्मेदारी है । मैं यही कहना चाहता हूं कि इन सब लोगों के लिए हम सब मिलकर काम करें और आज सदन के एक सदस्य के रूप में मैं आदरणीय मुख्यमंत्री जी से, हमारी सरकार से आग्रह करना चाहता हूं कि इसमें दूध का दूध और पानी का पानी हो । जो नियुक्तियां निरस्त करने लायक हैं, उनको तत्काल निरस्त किया जाये । (मेजों की थपथपाहट) माननीय उच्च न्यायालय ने भी बहुत सारे लोगों की नियुक्तियों पर रोक लगा दी है, उसे तत्काल किया जाये और जो भी दोषी हैं, उसमें सी.बी.आई. जांच तक भी जाना पड़े तो जाएं । दुर्भाग्य की बात थी कि पिछले कार्यकाल में सरकार बनते ही सी.बी.आई. जांच पर बैन लगाया गया । पता नहीं कि पांच साल में क्या करने का उद्देश्य था ? सी.बी.आई. जांच को बैन कराया गया । मैं सदन के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री जी से अनुरोध करना चाहता हूं कि सी.बी.आई. जांच को तत्काल खोलें और पी.एस.सी. में...।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- सभापति जी, आपके ही शासनकाल में जिसको परीक्षा दिलानी थी, उसके बदले कोई और बैठा था । जिनको परीक्षा दिलानी थी, मैं नाम नहीं लूंगी, उनके बदले में परीक्षा दिलाने के लिए दूसरे को बिठाया गया था ।

श्री ओ.पी. चौधरी :- सभापति जी, मैंने बता दिया कि भारतीय जनता पार्टी का पॉलिटिकल कमिटमेंट क्या था ? पी.एस.सी. का चेयरमैन को बदलने का साहस... ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- घोटाले की बात हुई इसलिए मैंने अपनी बात की और आज भी बस्तर नगर में तत्कालीन घटना हुई है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- संगीता जी, छोटी-मोटी बात को छोड़िए ।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- छोटी-मोटी बात नहीं है ।

श्री ओ.पी. चौधरी :- सभापति जी, सदन से वापस जाकर, दिल पर हाथ रखकर सोचिएगा कि आप में से कितने लोग चाहते थे कि पिछले चार सालों में पी.एस.सी. में जो चल रहा था, वह चलते रहना चाहिए था । क्योंकि एक तानाशाही सरकार चल रही थी इसलिए आप लोग भी कुछ नहीं बोल पा रहे थे । (मेजों की थपथपाहट) आप लोग भी जानते थे कि ये सब गड़बड़ियां हो रही हैं, आप लोगों को भी कष्ट होता था । इससे एक मनुष्य को जरूर कष्ट होता है, लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि इस तरह



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

की सरकार चल रही थी कि आप लोग भी कुछ नहीं बोल पाते थे और ये सब [XX][1] पी.एस.सी. में चलता रहा। इस तरह से हमारे छत्तीसगढ़ में बहुत दुर्भाग्यजनक चीजें हुई हैं ।

सभापति महोदय :- इसको विलोपित करें ।

श्री ओ.पी. चौधरी :- सभापति जी, मैं छत्तीसगढ़ के युवाओं के लिए कुछ पंक्तियां कहकर अपनी बात को समाप्त करना चाहता हूं और अगर सी.बी.आई. जांच तक भी जाना पड़े तो हमारी सरकार को जाने का निर्णय तत्काल करना चाहिए और दूध का दूध और पानी का पानी होना चाहिए ।

श्री ब्यास कश्यप :- माननीय सभापति महोदय, चौधरी साहब, आप पी.एस.सी. के विषय में बात कर रहे हैं । जिस समय आप हमारे जांजगीर जिला के कलेक्टर थे, उस समय वे सी.ई.ओ. जिला पंचायत थे, जिसकी चर्चा आप वर्तमान में कर रहे हैं । उस समय जिला पंचायत की अध्यक्ष मेरी मैडम थीं । उस समय भी मैं लड़ने के लिए बार-बार दिल्ली तक गया था कि अन्याय हो रहा है, अन्याय हो रहा है । उस समय भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में उस सी.ई.ओ. को सीधा कलेक्टर बना दिया गया था । उस समय केन्द्र सरकार के द्वारा जांच की कार्रवाई की गई थी । उस समय जांच नहीं हुआ और सी.ई.ओ. से पदोन्नत करके उनको कलेक्टर बना दिया गया था । उस समय यह नियम कहां था ?

श्री ओ.पी. चौधरी :- सभापति जी, ब्यास जी, आपने जो जांच की शिकायत की थी, आपको याद होगा कि उसका रिपोर्ट भी मैंने ही भेजा था । आप पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग से उस रिपोर्ट की कॉपी निकलवा लीजिए और आप बोल रहे हैं कि आप शिकायत कर रहे थे, आप प्रताड़ित थे और उसको आपकी सरकार में पी.एस.सी. का चेयरमेन बना दिया गया ।

श्री अजय चन्द्राकर :- चौधरी जी, एक मिनट । आप कलेक्टर थे, वे सी.ई.ओ. थे और मैं मंत्री था। (हंसी) आपको यह बता दूं कि मैंने उस पूरे घटनाक्रम का अपने भाषण में भी उल्लेख किया कि सचिव स्तर की जांच हुई। सचिव स्तर की जांच का मतलब, जांच विभाग नहीं कर रहा है, सरकार जांच कर रही है। आपके शासन की उपलब्धि है, इधर अधिकारी बैठे हैं, इसलिए मैं नाम का उल्लेख नहीं कर सकता, लेकिन एक आदमी के निर्देश पर, जिसका बार-बार उल्लेख ओ.पी. चौधरी जी कर रहे हैं, उसकी समस्त जांच वापस ली जाती है, समाप्त की जाती है, उन्होंने एक अपेक्षा व्यक्त की है, उप मुख्यमंत्री जी सुन रहे हैं। जब उसकी नियुक्ति पी.एस.सी. चेयरमैन के तौर पर की जाती है तब राज्यपाल महोदय और नियोक्ता को यह नहीं बताया जाता कि साहब इसकी जांच चल रही है, जिसको इस शासन ने वापस लिया है और वापस लेकर उसको एक टूल्स के तौर पर स्थापित किया गया है। वह टूल्स जितने आंकड़ें बता रहा है, उससे और भरा-पूरा संसार निकलेगा। यदि सी.बी.आई. जांच होती है तो मैं उनके स्वर में स्वर मिलाते हुए फिर से, उप मुख्यमंत्री साहब सुन रहे हैं, उसकी पूरी जांच को खोला जाये। जांजगीर की

[1] [XX] अध्यक्षीय पीठ के आदेशानुसान निकाला गया.

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

घटना की फिर से जांच की जाये। जिन्होंने, उनको नियुक्त किया, पी.एस.सी. के चेयरमैन के लिए अनुशंसा भेजी, पैनल भेजा, उसके ऊपर पहले कार्रवाई की जाये, फिर उसकी जांच की जाये और छत्तीसगढ़ में यह एक नजीर बने। जो भावनाएं माननीय सदस्य व्यक्त कर रहे हैं, छत्तीसगढ़ के माथे पर कलंक है। जांच के द्वारा वह कलंक मिटना चाहिए। (मेजों की थपथपाहट)

श्री ओ.पी. चौधरी :- सभापति महोदय, हमारी सरकार ने अपने जन घोषणा-पत्र और अभिभाषण दोनों में स्पष्ट किया है कि पारदर्शिता के लिए सारे उपाय किए जायेंगे और जल्द किए जायेंगे। हर्षिता जी बोल रही थीं कि यू.पी.एस.सी. के लिए जो स्टैण्डर्ड है, यदि वह लागू हो जायेंगे तो हमारे बच्चों का क्या होगा ? हर्षिता जी, मैं आपको बताना चाहता हूं कि सन् 2000 में हमारे छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ और सन् 2000 से सन् 2005 तक हमारे छत्तीसगढ़ का एक भी बच्चा चयनित नहीं हो पाया, यह हमारे राज्य के मांथे पर कलंक है या नहीं ? मैं सन् 2005 में चयनित हुआ था, मैं छत्तीसगढ़ राज्य का पहला आई.ए.एस. कहलाता था, लेकिन मुझे दु:ख होता था। हमको इस तरह की परिस्थितियां निर्मित करनी है, जिससे हम यू.पी.एस.सी. के कंडीसन्स को भी लागू कर सकें। साथ ही छत्तीसगढ़ के युवाओं को लाभ भी मिले, छत्तीसगढ़ी संस्कृति, छत्तीसगढ़ी भाषा, छत्तीसगढ़ी बोली उनका भी समावेश करके एक ऐसा पैटर्न बनाना पड़ेगा, जिससे हमारे युवा यू.पी.एस.सी. में भी सलेक्ट हो सके और साथ में उसको छत्तीसगढ़ का लाभ भी मिले। इस तरह का बैलेन्स मॉडल हो सकता है, इसमें कहीं कोई संदेह नहीं है।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- सभापति महोदय जी, मैंने यह कहा कि ग्रामीण अंचलों के बच्चों के लिए एक नया सीख रहेगा। उनकी सुविधाओं के लिए भी कुछ सोचा होगा ?

श्री ओ.पी. चौधरी :- निश्चित रूप से। उसको बैलेन्स करके सरकार पॉलिसी बनायेगी।

श्रीमती हर्षिता स्वामी बघेल :- उसके बाद ही उसको लागू करें, तभी शहरी पैटर्न पर उन लोग काम कर सकते हैं।

श्री ओ.पी. चौधरी :- सभापति महोदय, मार्गदर्शिता के लिए सारे उपाय किये जायेंगे। हमारे उप मुख्यमंत्री जी यहां बैठे हैं।

सभापति महोदय :- एक उप मुख्यमंत्री जी यहां बैठे हुए हैं।

श्री ओ.पी. चौधरी :- हमारे उप मुख्यमंत्री जी यहां बैठे हैं। माननीय मुख्यमंत्री जी भी यहां बैठे हैं। मैं सदन के माध्यम से निवेदन करता हूं कि पारदर्शिता के लिए जल्द से जल्द बड़े निर्णय लिए जायेंगे, यह मैं आप लोगों के बीच स्पष्ट रूप से रखना चाहता हूं। छत्तीसगढ़ के युवा साथियों की कार्बन कॉपी की मांग हो, वीडियोग्राफी की मांग हो, 20 प्रश्न-पत्र कैंसल होने पर 5 या 10 प्रतिशत करने की मांग हो, बहुत सारे टेक्नीकल पाईंट्स हैं। उसमें एक विशेष कमेटी बैठे। वह सदन का काम नहीं है। विशेषज्ञ कमेटी बने, इरादा सही होना चाहिए, इरादा नेक होना चाहिए, अपने आप काम हो सकता है।

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नेक इरादे के साथ विशेषज्ञ कमेटी बैठे, सारे टेक्नीकल आसपेक्ट इस तरह से निकाले कि पूरे देश भर में छत्तीसगढ़ पी.एस.सी. एक माडल के रूप में स्थापित हो। इसी आशा और विश्वास के साथ छत्तीसगढ़ की युवाओं के लिए कुछ पंक्तियां कहते हुए मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं :-

"तू खुद की खोज में निकल, तू किसलिए हताश है,
तू चल, तेरे वजूद की समय को भी तलाश है।
जो तुझ से लिपटी बेड़ियां, समझ ना इनको वस्त्र तू,
ये बेड़िया पिघाल के बना ले इनको शस्त्र तू, बना ले इनको शस्त्र तू ।
तू किसलिए हताश है, तू चल तेरे वजूद की समय को भी तलाश है,
समय को ही तलाश है।"

माननीय सभापति महोदय जी, आपने मुझे बोलने के लिए समय दिया, धन्यवाद।

सभापति महोदय :- धन्यवाद। श्री रामकुमार यादव जी।

श्री रामकुमार यादव (चन्द्रपुर) :- सभापति जी, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री धर्मजीत सिंह :- यादव जी, एक मिनट भाई। अब तोला public service commission के बारे में जितना सिखाना हे, अब बोल ले।

श्री रामकुमार यादव (चन्द्रपुर) :- सभापति महोदय, सबले पहली तो मैं मोर सदन के नेता ला प्रणाम करथंव, हमर मुख्यमंत्री जी, उप मुख्यमंत्री जी ला जोहार करथंव । हमन पहली बार सदन में नवा-नवा चुनकर आये हवन, कोई छैः बार, कोई सात बार चुन के आये हे, कोई कलेक्टर चुनके आये हे तो कोई गरीब किसान हा चुनके आये हे । सभापति महोदय, आज बजट पेश होवत रहिसे, राज्यपाल महोदय हा जब अभिभाषण देत रहिसे, वोखर बाद मैं कागज ला खोजेंव, काबर कि मैं अंतिम छोर के गांव के रहवइया अंव, बजट में मोर हिसाब से खोजत रेहेंव...।

श्री अजय चन्द्राकर :- रामकुमार जी, तू बात इधर-उधर की मत कर, विषय पर आ, ओ गड्डी कितनी थी और किसकी थी, यह सदन को बता । (हंसी)

श्री रामकुमार यादव :- सभापति महोदय, वोला लास्ट में बताहंव । लास्ट म वोही रही । आज मैं यहीं सोचत रहेंव, देखत रहेंव, मोर गांव के गरीब अंतिम छोर के महिला मन, गौठान में जाके काम करै, वो मन के लिये एमा कुछ व्यवस्था हे कि नइ ये ? वो किसान जो धरती के सीना ला चीरके अन्न उपजाथे, कर्जा माफी के लिये व्यवस्था हे कि नई ये ? जंगल में रहने वाला मोर आदिवासी समाज के भाई, जेमन जंगल में रहिके अपन जीवन-यापन करथे, वोमन के लिये काय व्यवस्था हे ? ऐला मैंहा देखत रेहेंव । आज मोला बहुत दुख के साथ कहना पड़थे, किसान के कर्जा माफी के एमा कोई बात नइ हे । जब चुनाव के समय अईन, जतका नेता मन बड़े-बड़े सभा गांव में करिन, हमर धर्मजीत सिंह जी हा, पहली ऐती रहिसे अब ओती चल दिस । ओती जाके घलो भाषण देबर सीख गे, ऐमन भाषण दिन कि



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

कांग्रेस की सरकार ने कुछ नहीं किया है, हमें आप सत्ता दो, दो मिनट में हम ऐसे कर देंगे कि छत्तीसगढ़ को सोने की चिड़िया बना देंगे। दो मिनट में, ऐसे सपना दिखाके जैसे मुंगेरीलाल के सपना बता के, आके एमन सत्ता में बैठ गिन । 3 तारीख के वोट के गिनती होये हे अऊ आज ले मंत्रिमंडल के गठन नई होय हे, ए बात ला छत्तीसगढ़ के जनता देखथे । मैं चौधरी साहब ला देखत रेहेंव, पढ़े-लिखे कलेक्टर साहब हरै तो महुं सोचथ रेहेंव कि गरीब के बात करही, किसान के हित में बात करही, बजट में बात करही, एक शब्द नई किहिस न गरीब के लिये, न किसान के लिये । सिर्फ किंदर किंदर के यही कहाथे कि जांच कराबो । जांच करावव न भई ? आप ला जांच करे बर कोन रोके हे ? आपके कलम में तो पॉवर हे, ए बात आरोप लगाय ले नइ होवय, आप ला काम करे ल परही । हमन तो विपक्ष हन, आप सत्ता में हव, तव अब आरोप लगाना बंद करव । अब काम करके देखावव । सम्माननीय सभापति जी, छत्तीसगढ़ म 32 परशेंट आदिवासी समाज हा रहिथे, 16 परशेंट एस.सी.समाज रहिथे अऊ लगभग 47 परशेंट ले ऊपर इहां पिछड़ा वर्ग रहिथे । मैं छत्तीसगढ के पवित्र सदन में यह बात कहना चाहूं कि हमर बाबा साहब आम्बेडकर जी केहे हे, ? "जिसका जितनी संख्या भारी, उसका उतनी हिस्सेदारी।" सम्माननीय सभापति जी, आज पिछड़ा वर्ग के लिये 27 परशेंट आरक्षण के बात हमन करे रेहेंन, आज मोला खुशी होतिस कि जब अभिभाषण में या बजट में कोई बात आतिस, लेकिन एक शब्द नई ए । कहां-कहां के बात करथे, बात करना हे त छत्तीसगढ़ के विकास के बात करव, अब आप सत्ता में आगे हव ! अब आप पल्ला झाड़ नइ सकव ! पूर्व सरकार के बात म आरोप लगाके आपला वो महिला जेन मन आस लगाके वोट दे हे, वो महिला समूह मन अऊ दीदी मन के भावना मन ला आप कुठाराघात लगईहव, त आप ला पाप पड़ही । वैसे आप मन के आदत भी हे, जब-जब चुनाव आथे, आप मन सपना दिखा देथव । घोषणा के बात करथव । सभापति जी, आज जम्मो झन के बात ला सुनत रेहेंव । एमन डरवाय के घलो काम करथे । कइथे कि अंदर कर देंगे, जांच करवा देंगे । गरीब आदमी अन, हमन काय ऐसन कर डारेन, पांच साल म दो साल कोरोना ए, एक साल चुनाव ए, दो साल काम करे बर पायेन । अतेक काय कर डारे होबो ? हमर कांग्रेस पार्टी डर्राने वाला नइ ये, आप मन जो करना हे करव, लेकिन छत्तीसगढ़ के विकास ला जरूर करव । जनता हा सत्ता सौंप के तुमन ला एखर जवाबदारी दे हे । सभापति जी, हमर चौधरी साहब बैठे हे, वो समय कलेक्टर रहिसे, अधिकारी मन घलो सुनही ए बात ला । वो समय पानी देबर स्टॉप डैम बनाइस । कलमा, साराडीह, मिरौनी, बसंतपुर, शिवरीनारायण में हमर जागरूक कलेक्टर साहब रहिसे । वो समय मैं कागज ला धरके काम बर जांवव । गली-गली किंजरंव । जमीन बिकना नहीं चाही, जांच यहु कोति होही, तेखर पायके कहना चाहथंव कि ये गरीब आदमी मन के जमीन बिकना नहीं चाहिए। अम्बिकापुर, दुर्ग, भिलाई, के आदमी मन जाकर वहां वो गरीब मन के जमीन ला खरीद लीन। आज ये बात के भी जांच होना चाहिए अऊ जोन भी अधिकारी ऊंमा हावय, ओ समय भारतीय जनता पार्टी के, ओला भी सजा होना चाहिए। (मेजों की थपथपाहट)

श्री ओ.पी. चौधरी :- सभापति महोदय, मेरे विषय में बात आयी है तो मैं जवाब देना चाहूंगा। माननीय सदस्य, रामकुमार जी को यह अच्छे से ज्ञात है कि यह मुद्दा जो था, जो गलत तरीके से छोटी-छोटी रजिस्ट्री करके किये जाते थे, मैंने उनकी रजिस्ट्री होने के बाद भी रजिस्ट्रियों को कैंसिल करने का काम किया था। बाद में कांग्रेस के पांच सालों में फिर से कोर्ट में जाकर, इधर-उधर जाकर, सेटिंग करके उनको फिर से वापस किया गया है, इसकी भी जांच करायी जाए। इसको भी सी.बी.आई. जांच के लिये सौंप दिया जाए। (व्यवधान)

श्री रामकुमार यादव :- सभापति जी, अभी-भी बहुत सारे किसान मन ला मुआवजा नहीं मिले हे। अधिकारी मन नोट कर लिया। काबर ? ओ समय आनन-फानन में ओला पानी देना रहिसे। कंपनी के ओला आड़ा-बाड़ा लगा लिस, ओकर पंपू संपु लगा लिस अऊ कंपनी चलही तो ओखर लिये कोयला चाहिए, पानी चाहिए। कोयला होगे, ओखर पंपू लग गे, ओकर बड़का-बड़का बंपा हा, अऊ पानी नहीं हे, ओखर खातिर एमा आनन-फानन में ओला बनाईन, किसान ला मुआवजा नहीं दीन। आज भी ओखर बहुत सारा किसान मन भटकथे। सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन ला कहना चाहथव कि न्याय बराबर होना चाहिए। यह नहीं यह मोर हे यह अलग है। महोदय, आपसे निवेदन है। हम देखत रहिन, कोई भी एक आदमी कोई विकास के बात नहीं करिन, जब ले बात करिन हे, हमर पांच साल के सरकार ला कोसे के काम करिन। मैं आपके माध्यम से कहना चाहथव, यह छत्तीसगढ़ के पक्ष हो चाहे विपक्ष हो, हम सब मिलजुलकर के ये छत्तीसगढ़ के संवारे के लिये बने हन, ये छत्तीसगढ़ के विकास के लिये बने हन। हो सकता हे हमरो में कुछ कमीबेशी हो सकथे। आप मन भी ये बात ला स्वीकारे हन। लेकिन कुल मिलाकर सबके उद्देश्य हे, ये छत्तीसगढ़ के विकास करना, छत्तीसगढ़ ले संवारना। अऊ जिस प्रकार से, जब ले आप मन सरकार मा बैठे हन, तब ले हम देखथन कि रोड के काम ठप्प, कोई भी विकास कार्य ठप्प, हम अधिकारी मन ला पूछथे कि क्यों भैया क्या हो गया ? सब आदेश आ गया है, इतना-इतना काम सब कैंसिल हो गया है। अभी एक प्रकार ले छत्तीसगढ़ ला देखिहा तो शून्य हो गे हे। कहीं पर कोई काम नहीं चलथे। सिर्फ ए मन अतका मन गुणा भाग करथे कि कौन मंत्री बनही कौन नहीं बनै।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, पूर्ववर्ती सरकार मा कमीशन कौन ले रिहीसे, ऊंहा ला बता देवा। कही का चिंता हव थोड़ा से।

श्री रामकुमार यादव :- कहां ले कौन गोठियाए भैया ?

श्री सुशांत शुक्ला :- मैं बोले हो गा। मुआवजा के माफिया तोर विधान सभा में तोर संग घूमत रिहिने।

श्री रामकुमार यादव :- तो जांच करावा ना।

श्री सुशांत शुक्ला:- मैं वही तो बात बोले रहव कि 5 साल का करत रहय ?



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री रामकुमार यादव :- हम का कहथन। बल्कि मैं आप ला यह कहाथव कि हर चीज के जांच करावा।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, जिस विधान सभा के प्रतिनिधि बनकर ये विधान सभा में आये हैं। पूरे मुआवजा माफिया इनके साथ थे। यही चलाते थे और आज यह सत्ता पक्ष की तरफ आरोप लगा रहे हैं। खुद के गिरेबान में भी तो थोड़ा सा झांकना चाहिए।

श्री रामकुमार यादव :- पूरा मन से जांच करावा। लेकिन ऐसे नहीं जैसे कि ये दिल्ली..।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय सभापति महोदय।

सभापति महोदय :- बैठिये-बैठिये। बार-बार आवश्यक नहीं है।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय सभापति जी, मैं अनुरोध कर रहा हूं। आप मन हा जांच की बात करत हव तो ये भी बात के जांच होना चाहिए कि यह पिछले 5 साल में जतका सरकारी भूमि में रजिस्ट्री होये हे, काखर नाम से रजिस्ट्री होये हे, तेखर बात के भी जांच होना चाहिए।

श्री रामकुमार यादव :- बिल्कुल-बिल्कुल।

श्री सुशांत शुक्ला :- सभापति महोदय, इस बात की भी जांच होनी चाहिए कि चुनाव के पूर्व माननीयों के माध्यम से जो पंचायतों को कमीशन के आधार पर पैसे दिये गये, उनकी भी जांच करायी जानी चाहिए।

श्री रामकुमार यादव :- शुक्ला जी, सब जांच होही, चिंता मत करव।

सभापति महोदय, यहां पर छत्तीसगढ़िया आदमी, मैं तो छत्तीसगढ़ के जो सपना रहिसे, खूबचंद बघेल जी के, यह हमर तमाम प्रकार के आदमी सपना देखिस, हमर अपन विपक्ष के जो अभी नेता जी है, ओखर।

श्री अनुज शर्मा :- सभापति महोदय, यह खूबचंद बघेल जी के नाम लेवथे। आपकी ही कांग्रेस पार्टी ओखर पार्थिव शरीर ला दिल्ली से मालगाड़ी ले वापस भेजे रहिसे। (शेम-शेम की आवाज)

सभापति महोदय :- अनुज जी, अभी आपका नंबर आने वाला है। बैठिये।

श्री अनुज शर्मा :- मैं वह क्षेत्र से आथव, (व्यवधान) खूबचंद बघेल जी के पार्थिव शरीर ला आपकी कांग्रेस पार्टी हा मालगाड़ी में भेजे रिहिसे।

श्री रामकुमार यादव :- ते छत्तीसगढ़िया हीरो हरा। (व्यवधान) महाराज, तुंहर फिल्म हा छत्तीसगढ़िया मन देखथे, बंबई के मन नहीं देखे। तो छत्तीसगढ़ के बने जय जयकार करे रेहा। मैं हा देखत रहव, जब ले आये तब ले जय श्री राम, मोर तो नाम ही रामकुमार हावय। लेकिन जय छत्तीसगढ़ कहे करा। वह तुहा ला इलाहाबाद अऊ .. नहीं देखन, तोर फिल्म ला यही कहीन देखन छत्तीसगढ़ के मन ला।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सभापति जी, आज मैं कहना चाहथव कि आज जिस प्रकार से जो उम्मीद के साथ में ये मन बैठे हें सत्ता में ओ मा काम करे। येती ओती के बात ला छोड़य, ओखरे खातिर हमर छत्तीसगढ़ के गुरू बाबा कहे रिहिस हावय ''मनखे मनखे एक समान'', हमर गुरू बाबा बैठे हें। रोटी कपड़ा अऊ मकानें हें, तीनों सत लोक समान। रोटी, कपड़ा अऊ मकान के व्यवस्था बनावा। अऊ हम देखा, हमर ददा तो गरीब घर के रहिसे। ओ ह हमर नाम ला रामकुमार धर दिस ताकि हमन कोई तिरथ बरत नइ जा सकबो ता राम कुमार पिढ़हा ला लान, रामकुमार दउड़, कूद, ओ भईंसा ला खेद। मतलब नाम में राम । एक खातिर हमर दाई-ददा रामकुमार नाम धर दे रिहिस हे। अउ तुमन जय श्री राम जय श्री कहिके टाईम पास मत करव। छत्तीसगढ़ के जनता हा तुमन ला मौका दे हे छत्तीसगढ़ में काम करव।

श्री सुशांत शुक्ला :- तोर नाम जरूर रामकुमार हे, पूरा क्षेत्र हा छाती पीट-पीट के मरा-मरा करत हे।

श्री रामकुमार यादव :- तुमन कइसने हो, जानथौ। ऊपर में राम-राम अउ तरी में कसई काम। राम-राम जपना पराया माल अपना।

श्री गजेन्द्र यादव :- गड्डी कहां से निकले रिहिस हे, ओ ला तो बता देवव?

श्री रामकुमार यादव :- सम्माननीय साथी मन, आज मैं आपसे यही कहिहौं। आज जे प्रकार ले हमर जतका नेता मन बोलिन हे। ओ सब मन ला कहौ कि एमन ऐती ओती के बात ला छोड़ए। अब छत्तीसगढ़ के विकास बर सोचए। हमर छत्तीसगढ़ के आदमी मन बहुत देखत हे कि अब हमर का हो ही ? तुमन भोरहा में मत रहिहौ, महिला मन ला जो फारम भराए हो, अभी लोकसभा में क्षेत्र मा जहिहौ ता ओ मन बहरी मुठिया ला धर के बइठे हे। आज ओ वायदा ला पूरा करे बर लागही। माननीय यादव भईया तैं तो शहर नगर के हस। मोर बड़े भईया हस, लेकिन ए मेर बड़े भाई नो हरस। तो आपसे निवेदन हे कि आप सबो झन ला कहौ कि छत्तीसगढ़ के विकास बर काम करए। अगर हम गलत करे हन तो ओकर सजा मिलना चाहिए। नहीं तो ओ बात ला छोड़व । ए प्रदेश में विकास के काम करव। माननीय सभापति महोदय, आप मोला बोले के मौका देव, एखर बर बहुत-बहुत धन्यवाद्।

श्री अनुज शर्मा (धरसींवा) :- माननीय सभापति महोदय जी, आज में ए सदन में माननीय राज्यपाल महोदय द्वारा प्रस्तुत अभिभाषण के समर्थन में अपन बात रखे बर खड़े होए हों।

माननीय सभापति महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय हा हम सब नव निर्वाचित विधायक मन ला अभिनंदन करिस। ओरख बर ओ मन ला धन्यवाद् ज्ञापित करत हौं। पूरा छत्तीसगढ़ के जनता जनार्दन के सामने शीष झुकावत हौं। जेन मन ए बात ला देश अउ दुनिया में साबित करिस कि यदि विकास के असली गारण्टी हे तो सिर्फ मोदी के गारण्टी हे। एखर कारण भारतीय जनता पार्टी हा प्रचण्ड बहुमत के साथ जीतकर आए हे।

समय :



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

6.58 बजे **(सभापति महोदय (श्री धर्मजीत सिंह) पीठासीन हुए)**

माननीय सभापति महोदय, हमर वनांचल में चाहे सरगुजा हो या बस्तर हो। वनांचल से एक बहुत बड़े आवाज आईस। उखर मन के अनदेखी करे गिस, उखर मन के साथ न्याय नइ होईस। तेखर सेती सरगुजा में 14 के 14 अउ बस्तर में बड़े बहुमत लेकर आए हन। ए बात के द्योतक हे कि जेन कांग्रेस के सरकार रिहिस तेन हर मोर्चा में असफल रिहिस। आज मोला सुने मा बड़ा आनंद आवत हे। मोला ए बात के आनंद हे कि हमर विपक्ष के जम्मो सम्माननीय मन हा अपन पिछले 5 साल के असफलता के डंका खुद बजावत हे। ओ मन बतावत हे कि ओ मन कोन-कोन मेर असफल रिहिन। आज माननय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण में चर्चा के बहाना सब काम हो ही। जेन-जेन बताहूं सब हो ही। जेन छत्तीसगढ़ के विकास बर जरूरी होही । हर काम हो ही। अभी तो ओपनिंग बैटिंग चालू होए हे। आप स्लॉग ओव्हर तक देखहू कि कइसे स्कोर बनही। आप सब से में कहना चाहत हौं कि हमर छत्तीसगढ़ में डबल इंजन के सरकार बने हे। कार कि ए प्रदेश में महिला मन हा अपन आप ला असुरक्षित जानत रिहिस हे। रायपुर के जयस्तंभ चौक में खुले आम चाकू बाजी के घटना हो जावत रिहिस हे अउ पुलिस हा देखत बइठे रहाए। कार पार्किंग में पुलिस अधिकारी के कार्यालय के ऊपर एक महिला के बलात्कार हो जाए अउ पुलिस चुपचाप बइठे रह जाए।

श्री रामकुमार यादव :- तुहुं मोर समय बोले रेहेस। जावव तो कोंटा ला किंजर के अहिहौ।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय सभापति महोदय, मैं अउ बतात हौं। अउ तो अउ जनता तो जनता आप अपन विधायक के रक्षा नइ कर सकेव। एक दरूहा आके आपके विधायक ला चाकू मार के गिस। ए तो प्रदेश में लॉ एण्ड ऑर्डर के स्थिति रिहिस। एखरे जवाब ला छत्तीसगढ़ के जनता दे हे। नान-नान लइका रहिथे ता हमर छत्तीसगढ़ में भुलवारे बर कइसे कहिथे। कोनो लइका कोनो चीज बर जिद्दी कर देथे ता सियान मन कहिथे कि ओती देखव चंदा मामा हे। जइसे लइका चंदा मामला डहार देखथे । लइका जेन चीज के जिद्दी करथे ओला सियान मन सट ले लुका लेथे। वइसनहे ए कांग्रेस के सरकार अपन घोषणा पत्र में पिछले बार लोक लुभावन बात करिस कि ओती देखव धान हे । पूरा छत्तीसगढ़ धान डहार देखे ला धरिस। तहान कोयला, शराब, गौठान, गोबर के घोटाला, इहां घोटाला पर घोटाला। महादेव सट्टा एप के घोटाला होईस

समय :
7.00 बजे

ये सरकार हा हर तरह से घोटाला में लिप्त रहिस, तेखर जवाब ला छत्तीसगढ़ के जनता दीहिस। माननीय सभापति जी, मैंहा एक बात से बड़ा व्यथित हौं। जब हम सदन में नवा विधायक के रूप में आयेन तब सब सियान मन हम ला सिखाईन कि जब राज्यपाल जी के अभिभाषण होही, ओला शांति से



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सुनै के परंपरा हे। बहुत अंदर से दुख होईस कि विपक्ष संसदीय परंपरा में का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहत हे। हमर जो संसदीय परंपरा है, यह जो विधान सभा है, एखर अपन प्रतिष्ठा हे। वो प्रतिष्ठा ला चोट करे के प्रयास करे गईस। हमर राज्यपाल महोदय हा जब अपन अभिभाषण देत रहिस हे तो ओला टोका-टाकी करत रहिन। हम नवा विधायक मन ला का सिखाना चाहथन। ये बात से बहुत व्यथित हन। जो हमर संसदीय परंपरा हे, ओला ऊंचाई तक ले जाये के जवाबदारी हमर दोनों पक्ष के हे। मैं आप सबसे आग्रह करत हन।

श्री उमेश पटेल :- माननीय सभापति महोदय, नये विधायक हैं, मैं टोकना नहीं चाहता था। लेकिन चूंकि आपने जो बात रखी इसलिए मैं बताना चाहूंगा कि आप पिछले 05 साल का उदाहरण देख लीजिए। अजय चन्द्रकार जी बैठे हैं, बृजमोहन जी कई बार टोका-टाकी किये हैं, राज्यपाल के अभिभाषण में विपक्ष के द्‌वारा टोका-टाकी हुई है। यह पहले भी हुआ है, यह पहली बार नहीं हुआ है।

श्री अनुज शर्मा :- अब अइसे हे गा, मैंहा नवा विधायक हवौं। मैंहा जेन अनुभव करवं, तेने ला बताहौं।

सभापति महोदय :- ठीक है, आप बोलिये।

श्री अनुज शर्मा :- माननीय सभापति जी, माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण में वह सब बिन्दु हे जेन चुनाव में हम घोषणा करे रहेन और बिन्दुवार बात करे गेहे। कोई वर्ग ला नई छोड़े गेहे। हर वर्ग पर योजना लाये जाही अउ ओला क्रियान्वित करे जाही। ये बात के वादा हे। मैं ये भी कहना चाहथौं कि 25 तारीख को जेन दू साल के बोनस मिलैया हे वो माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्म दिवस पर मिलही। हम चुनाव में ये बात ला कहन कि- छत्तीसगढ़ महतारी ये, आरूग पूजा के थारी ये, छत्तीसगढ़ के जन्मदाता पुरखा अटल बिहारी हे। रद्‌दा में ओखर चलबो बदलबो-बदलबो। ये बात ला कहेन अउ जनता बदल दीहिस। (मेंजों की थपथपाहट)

माननीय सभापति महोदय, आज छत्तीसगढ़ के जनता हा अंत में दू लाईन के साथ समाप्त करहूं- राजा, प्रजा, देवी, देवता तोर कोरा मा आईन, जैसन सेवा करिन तोर वो, तइसन फल ला लाईन। तोर महिमा कतिक बखानौ ओ मोर धरती मईया, जय होवै तोर। मोर छईहा-भुंईहां जय होवै तोर। मैं बंदत हौं दिन-रात वो मोर धरती मैया, जय हौवे तोर। मोर छईहा-भुंईहां जय होवै तोर। माननीय सभापति महोदय, आप बोले बर समय देव, ओखर लिये बहुत-बहुत धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

सुश्री लता उसेण्डी (कोंडागांव) :- माननीय सभापति महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव पर आपने बोलने का समय दिया, उसके लिए धन्यवाद। आज इस सदन में यह छत्तीसगढ़ की छठवीं विधान सभा के सभी सदस्यों को बहुत-बहुत बधाई। हमारे माननीय मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय जी को भी बहुत बधाई है। हमारे उप-मुख्यमंत्री विजय शर्मा जी, अरूण साव जी को भी बहुत-बहुत बधाई है। मैं वह जनता जिन्होंने हमें सेवा का अवसर प्रदान किया और सेवा



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

करने के लिए अपने-अपने क्षेत्र से चुनकर इस विधान सभा में भेजे हैं, मैं भी उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं। (मेजों की थपथपाहट) माननीय सभापति महोदय, राज्यपाल जी के अभिभाषण में विपक्ष से यह बात आ रही थी कि आप राज्यपाल महोदय से असत्य बोलवा रहे हैं। अगर हम आंकड़े देखें और पिछले 05 साल का कार्यकाल देखें तो पूरा 05 साल तो अपने असत्य बोलवाया है। वह झूठ का पुलिंदा छत्तीसगढ़ के वासियों ने समझा और आप उस तरफ चले गये। अब आप इस छत्तीसगढ़ महतारी की कसमें खाकर घूमते रहे। आपने छत्तीसगढ़ के कोने-कोने में जाकर मां गंगा का जल हाथ में लेकर कसम खायें कि हमारी सरकार बनाईये। अब आपके जो वादे थे। 36 वादे तो आपके मुख्य घोषणा-पत्र में था, लेकिन साथ में आपके विधायकों के भी व्यक्तिगत घोषणा-पत्र उनके विधान सभों में थे और उसमें आपके वरिष्ठ नेता दिल्ली से आये। उन्हें भी आप लोगों ने गुमराह किया और उनके साथ मिलकर आप सब हाथ में गंगा जल लेकर कसम खायें। जब सदन में यह बात आई, जब विपक्ष की भूमिका में भारतीय जनता पार्टी थी, उस समय कहा गया कि आपने यह जो वादे किये हैं, इसको कब पूरा किया जायेगा तो माननीय पूर्व मुख्यमंत्री जी यह कहते हैं कि हम इतने सोर वादे नहीं किये थे। हमने कम वादे किये थे। इस तरह के व्याख्यान आप लोगों ने सदन में किया। यह बात छत्तीसगढ़ की जनता आज सोशल मीडिया के माध्यम से, मीडिया के माध्यम से और लाइव प्रसारण छत्तीसगढ़ की जनता देखती रही, जिसका परिणाम था कि आज आप वहां पर पहुंचे हैं।

सभापति महोदय, मैं कहना चाहूंगी कि महतारी वंदन योजना की आप सबको बहुत चिंता है। मुझे लगता है कि सत्ता पक्ष से ज्यादा चिंता आपकी हो गई है। वह सही भी है क्योंकि महतारियों के आशीर्वाद के कारण ही आप वहां हैं और उनके आशीर्वाद के कारण हम लोग यहां पर हैं। (मेजों की थपथपाहट) क्योंकि आप लोग महतारियों के असत्य कसमें खायें। गंगा जल की असत्य कसम, छत्तीसगढ़ महतारी की असत्य कसम और वह महतारी वंदन योजना, जिसमें आपने भी घोषणा की थी कि 500 रूपये देंगे। 5 साल में पलटकर किसी विधायक ने, आपके मुख्यमंत्री ने, किसी मंत्री ने उस विषय को जनता के समक्ष, न सदन के अंदर एक लाईन भी उस विषय में कभी कोई चर्चा नहीं की। आप चिंता मत करिये। माननीय विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में महतारी वंदन योजना की जो घोषणा हुई है, वह मोदी जी की गारंटी की घोषणा है और वह घोषणा, जैसी भावना हमारी छत्तीसगढ़ महतारी की होगी, छत्तीसगढ़ की माताओं की होगी, वह सारे वादे भारतीय जनता पार्टी की सरकार पूरी करेगी।

समय :
7:07 बजे **(अध्यक्ष महोदय (डॉ. रमन सिंह) पीठासीन हुए.)**

माननीय अध्यक्ष महोदय, गोठान की बात बहुत आई। हम लोगों ने भी कमेटी बनाकर गोठान पर सब लोग गये। हमारे चलबो गोठान, खोलबो पोल अभियान चलाये और पोल खुल भी गया, जिसके कारण

हम लोग यहां पर आये हैं। अगर नहीं चलाते तो हम यहां नहीं आ पाते। अब मैंने उस समय आपके प्रदेश अध्यक्ष जी से चैलेंज किया कि आईये अध्यक्ष महोदय हमारे साथ गोठान में चलिये। आप भी दिखाईये कि आपने क्या किया। हम भी देखना चाहते हैं। मैं सही बता रही हूं, मैं इस सदन में मन से कह रही हूं, दिल से कह रही हूं कि जिस दिन गोठान की घोषणा हुई थी, माननीय मुख्यमंत्री जी ने घोषणा की थी कि हम गांव-गांव में, पंचायत में गोठान बनायेंगे, उस दिन मुझे यह लगने लगा था कि कांग्रेस कोई ऐसी मिल की पत्थर साबित होने वाली योजना बना रही है, जिसके कारण भारतीय जनता पार्टी पंचायतों में कभी कब्जा नहीं कर पायेगी। लेकिन आपकी गलत नीयत, आपकी गलत नीति, जिसका परिणाम रहा कि गौ माता को भी आपने ठगा। गायों के ऊपर में भी आपने राजनीति कर दी। आज आप गोठान में जाकर बहुत कहते हैं। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं तो कहती हूं कि एक कमेटी बनाईये और आपके ही विधान सभा में हम सब चलने को तैयार हैं कि कहां पर गोबर की खरीदी होती है। मैं अपने विधान सभा की बात बता रही हूं। आपके आला अफसर यहां से निर्देशित करते थे, जिला पंचायत का सी.ई.ओ. निर्देशित करता था, जनपद का सी.ई.ओ. सचिव को निर्देशित करता था कि तुम प्रतिदिन 2 क्विंटल गोबर खरीदो, नहीं तुमको सस्पेंड कर दिया जायेगा और मैं ऐसे हजारों उदाहरण बता दूंगी जब आपका सचिव गोबर नहीं खरीद पाया, जिसके कारण से आपकी सरकार ने उनको सस्पेंड कर दिया और वह आज भी सस्पेंड हैं। यह परिस्थिति यदि किसी ने छत्तीसगढ़ की गांव में उत्पन्न की है तो आपकी सरकार ने की है। मैं गोठान में एक और बात कहना चाहूंगी। मुख्यमंत्री जी का ड्रीम प्रोजेक्ट, जिसका कोई बजट नहीं है। सचिवों को दबाव डाला जाता था कि मूलभूत की राशि से बनाओ। कलेक्टर को बोला जाता था कि डीएमएफ फंड से बनाओ । मनरेगा से बनाओ, रूरल योजना से बनाओ । ऐसे-ऐसे गोठान हैं जहां पर 2-2, 3-3 करोड़ रूपये की रूरल योजना का खर्च है लेकिन वहां जाकर देखेंगे तो 10 लाख रूपये भी उस गोठान में खर्च नहीं हुआ है और मुझे आश्चर्य होता है । हम भी खुश होते थे कि मुख्यमंत्री जी आयेंगे तो जब हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी थे डॉ. रमन सिंह जी तो उस समय जब आते थे तो करोड़ों रूपये का भूमिपूजन और शिलान्यास होता था । वे घोषणा करके जाते थे और वह चीजें पूरी होती थीं लेकिन भूपेश बघेल जी आते थे, गोठान विजिट करने जाते थे, कैमरे से गोठान देखते थे । रातों-रात मूली उग जाती थी । कल मुख्यमंत्री जी आने वाले हैं करके 2-2 किलो की मछलियां उग जातीं थीं और उसके एक दिन पहले वहां तालाब और ट्रेक्टर चलता था कि कैसे तालाब बनेगा । यह टेलेंट तो आप लोगों के ही पास हो सकता है । हम लोगों के पास नहीं है । (मेजों की थपथपाहट)

श्री धर्मजीत सिंह :- रातभर में बकरा भी आया है, मैंने उसको देखा है ।

सुश्री लता उसेंडी :- हां, मैंने भी उसको देखा है । सुअर भी देखा है ।

श्री धर्मजीत सिंह :- बाजार से खरीदकर लाकर बांध दिये थे । मैंने बोला कि दीदी यह बकरा कब से है तो बोलिस कि कले तो लाये हे साहब सबेरे ले । चूंकि मैं वहां 12 बजे जाने वाला था । बकरा तक



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ले आये । फूलगोभी और आलू तक नीचे से निकाल दिये । भगवान जाने वहां पर क्या-क्या जादू हुआ है ।

सुश्री लता उसेंडी :- वैसा वाला टेलेंट हम लोगों को सीखना भी नहीं है । ईश्वर ने जितनी अवधि दी है कि इतनी अवधि में 2 किलो की मछली होगी । उतने में ही हम लोग खुश हैं । मैं यह कहना चाहती हूं कि जिस तरह से आपने छत्तीसगढ़ महतारी की भावनाओं को छला है, उनकी भावनाओं के साथ खेला है । छत्तीसगढ़ महतारी इसको कभी माफ नहीं करेगी । यह पंचवर्षीय नहीं बल्कि आने वाले कई वर्षों तक आप इससे पार नहीं पायेंगे । छत्तीसगढ़ महतारी का यह श्राप आप लोगों के ऊपर है । (मेजों की थपथपाहट)

श्रीमती अनिला भेंडिया :- अभी तो आपने बता दिया लेकिन 5 साल बाद समय बतायेगा । 5 साल तो अभी उधर ही हैं न ।

श्री रामकुमार यादव :- ठाकुर साहब, ये धरती में बड़े-बड़े भीम-बली मन नइ रहिन ता तुंहर घमंड अउ हमर घमंड का होत हे ।

सुश्री लता उसेंडी :- इही ला तो कहत हंओं । पहिली नइ सुनत रहेओ । रातों-रात गोभी उग जात रिहिस हे ।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- नहीं ता उही घमंड झन करओ न । ये डहर फेर आना हे का ?

सुश्री लता उसेंडी :- हम तो कहत हन कि हमन ला ओसनहा टेलेंट नइ चाहिए।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- आप लोगों ने 15 साल घमंड किया था तो इसलिये इधर आ गये थे । आप लोग भी यह मान रहे हैं न ।

सुश्री लता उसेंडी :- हम लोग घमंड नहीं कर रहे हैं । माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं दिल्ली गयी हुई थी । मैंने दिल्ली में देखा कि बहुत बड़ा पोस्टर टंगा हुआ है, होर्डिंग्स लगा हुआ है उसमें जो एल.ई.डी. लगती है । मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी की फोटो लगी हुई थी और साथ में हमारे वन मंत्री जी की भी फोटो थी । उसमें यह लिखा हुआ था कि छत्तीसगढ़ में हरा सोना खरीद रहे हैं । अब हमारे छत्तीसगढ़ का हरा सोना बेचने वाले भाई-बंधु आज लखपति बन रहे हैं । मुझे भी अच्छा लगा, अच्छी बात है कि हमारे आदिवासी भाई-बंधुगण या कोई भी समाज का व्यक्ति हो, तेंदूपत्ता तोड़ने वाला संग्राहक हो । अगर वह तेंदूपत्ता तोड़कर, हरा सोना तोड़कर लखपति हो रहा है तो इससे ज्यादा खुशी हम बस्तर में रहने वाले, आदिवासी अंचल में रहने वाले, आदिवासी परिवार में पलने वाले, जन्म लेने वाले लोगों से ज्यादा खुशी किसी को नहीं होगी । लेकिन जब मैं लौटकर आयी और जब मैं गांव में घूमने लगी तो पता लगा कि कोटवार महोदय शाम को आये थे । उन्होंने हाका पड़वाया, घूम-घूमकर बताया कि कल फड़ खुलने वाला है, तेंदूपत्ता तोड़िए । तोड़कर लाओ और बेचो करके अऊ दूसर दिन बेचारा गांव के मन सुबह-सुबह उठकर 5 बजे ले तेंदूपत्ता तोड़े बर जायें । अऊ 2 बजे आयें ता 3 बजे,



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

4 बजे फड़ हर बंद हो जाये ता समिति के कोई सदस्य नइ बन पईन । ओमन ला बोनस नइ मिल पाइस । तेंदूपत्ता तोड़ने वाले परिवार के बच्चों को जो स्कॉलरशिप मिलती थी, आपकी सरकार ने उनके अधिकारों का हनन किया है, उनके अधिकारों को खत्म किया है । उनके हक को मारा है यह कांग्रेस की सरकार है । आज गांव में यह देखने को मिल रहा है । इसमें बहुत सारी ऐसी बातें हैं । आप यहां रायपुर में और इस सदन में बैठकर जो बड़ी-बड़ी बातें करते हैं लेकिन गांव की जो वास्तविकता रही है, गांव के लोगों ने जो दर्द सहा है । छत्तीसगढ़ की माता और बहनों ने जो दर्द सहा है उससे आप बेखबर थे । वो 24 हजार बहनें और वो छत्तीसगढ़ की महिलाएं, जिनको पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी के समय राशनकार्ड में मुखिया के दायित्व से नवाजा गया था और भारतीय जनता पार्टी की पहली सरकार छत्तीसगढ़ में थी, राशनकार्ड में महिलाओं को मुखिया बनाने वाली सरकार भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी। (मेजों की थपथपाहट) केबिनेट में चर्चा हुई कि रेडी-टू-इट का काम बहनों को देना चाहिए, ये विषय भी आया, हम लोगों ने चर्चा भी की और ये शंका भी थी कि रेडी-टू-इट का काम बहनें कर पायेंगी या नहीं, लेकिन मैं हमारे वर्तमान विधान सभा अध्यक्ष जी को धन्यवाद देती हूं और साधुवाद देती हूं कि उनकी दृढ़ इच्छा-शक्ति के आगे कि बहनों को दो काम, वो जरूर करके और सफल होकर दिखायेंगी और रेडी-टू-इट का काम हमारे छत्तीसगढ़ की बहनों को देने वाली सरकार पूरे देश में पहली सरकार भारतीय जनता पार्टी की सरकार थी। उसके हक को किसने मारा? उनके अधिकार को किसने छिना? उनके अधिकार और हक को छिनने वाले आप लोग हैं कांग्रेस की सरकार। और आप लोगों ने ठेकेदार को वो काम दे दिया। सप्लायर को काम आप लोगों ने उपलब्ध करा दिया। तो ऐसे अगर आप देखें तो अब यह आप लोगों को शोभा नहीं देता है कि आप अभी एक हफ्ते की सरकार पर लगातार आरोप लगाये जा रहे हैं। लगातार राज्यपाल जी के अभिभाषण पर असत्यवादी कहलवाने का आरोप हमारी सरकार पर लगा रहे हैं। अभी आगे-आगे देखिए 5 साल में हम लोग क्या करते हैं, क्योंकि आने वाले समय में आपको इधर बैठने में अभी बहुत लंबा समय होगा और शायद उस समय तक कोई सदस्य सदन के नहीं रहेंगे, कभी हो सकता है कि वापसी हो जाये। आप किसानों की बात करते हैं।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय जी, जो राज्यपाल जी का अभिभाषण चल रहा है, उसमें चर्चा हो रही है तो मेरे पास एक शायरी है, आपकी इजाजत है तो मैं बोल दूं?

सुश्री लता उसेंडी :- आपके यहां हम लोग गौठान चलेंगे। हम सब लोग चलेंगे। पूरे 54 लोग जायेंगे। मुख्यमंत्री जी को भी आपके यहां ले जायेंगे।

श्रीमती संगीता सिन्हा :- इतना भी गुमान न कर अपनी जीत पर ए बेखबर, इतना भी गुमान न कर अपनी जीत पर ए बेखबर, शहर और गांव में तेरी जीत से ज्यादा चर्चे तो मेरी हार की है।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

श्री सुशांत शुक्ला :- अध्यक्ष महोदय, मैं कुछ कहना चाहता हूं कि छत्तीसगढ़ की जनता चुनाव के पहले कहने लगी थी कि तुमने हमको ऐसे लूटा भरी बीच बाजार में, चुनरी तक का रंग उड़ गया फागुन के त्यौहार में। (हंसी) (मेजों की थपथपाहट)

श्री धर्मजीत सिंह :- कुल मिलाकर आज के भाषण का निचोड़ रामविचार नेताम जी ने बता दिया है। ये जो आपके 9 लोग मंत्री गायब हो गये हैं, जो यहां सुशोभित थे, अगर दस्तखत किये होंगे तो बता दिये हैं, नोटिस आयेगा। जो यहां भी हैं वे भी सुने। नोटिस के बाद फिर आप कुछ हंटर-वटर बता रहे थे। इसका तो यही निचोड़ है और कुछ नहीं है। (हंसी)

श्रीमती संगीता सिन्हा :- अध्यक्ष महोदय जी, हम तो फुल हैं। आप तो 15 लोगों में सिमटे थे।

श्री धर्मजीत सिंह :- आपने कहां दस्तखत किया है? आप क्यों परेशान हो रहे हैं? (हंसी) जिन्होंने दस्तखत किया है, उन लोगों की बात हो रही है कि दस्तखत में ये हो गया। ये दस्तखत में ये हो गया। ई.डी. बाबा आ गये हैं न, फुल पॉवर में यहां काम करने वाले हैं।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- मोदी गारंटी दिया है ई.डी. बाबा ने।

सुश्री लता उसेंडी :- मोदी गारंटी का ही असर था कि कोरोना का, टीका का सार्वजनिक रूप से विरोध किया जाता था और छिप-छिप कर टीका लगवाया जाता था। ये मोदी गारंटी थी।

श्रीमती अनिला भेंडिया :- तभी तो हार्ट-अटैक ज्यादा आ रहा है।

सुश्री लता उसेंडी :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं किसानों की बात कर रही थी। किसानों को बड़ी उम्मीद थी और आपको सेवा करने का अवसर भी किसानों ने दिया और उसी के कारण से इस बार का आपका नारा भी था कि 75 पार। लेकिन आपने उन किसानों के दर्द को कभी उस लेंस में जहां पर धान खरीदी के बाद उनके पैसे जमा होते थे, उस लेंस में कभी जाकर देखे होते तो पता लगता कि उन्हें 10-10, 20-20 हजार रूपये के लिए 3-3, 4-4 दिन उस बैंक में भटकना पड़ता था। आपकी सरकार के समय छत्तीसगढ़ में हमारे किसानों को अपने धान की रखवाली के लिए खेत में जाकर रात में सोना पड़ता था। पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी के नेतृत्व में जो सरकार थी, उनकी दृढ़ इच्छा-शक्ति के कारण किसानों को खेत में जाने से रात्रि विश्राम करने से रोकने वाली कोई सरकार है, सुविधा देने वाली कोई सरकार है, इस प्रदेश में सुशासन लाने वाली कोई सरकार है तो भारतीय जनता पार्टी की सरकार है और आप याद करें , ठीक है वे खेत में नहीं गए । खेत में रात को सोने नहीं गए उसका कारण था, भारतीय जनता पार्टी की सरकार । लेकिन आपकी सरकार आने के बाद आप उन्हें रात को बैंक में सुलवाने लग गए थे । आप लोगों ने छत्तीसगढ़ की यह स्थिति बना दी थी । अध्यक्ष महोदय, किसान को पता ही नहीं लगता था कि कितना पैसा आ रहा है । एक मुश्त 2200 रूपए मिल जा रहा है, 2100 रूपए मिल जा रहा है, पीछे की चार किश्तों का हिसाब वे साल भर लगाते रहे कि कितना आ रहा है, कितना आ रहा है, लास्ट किश्त पता ही नहीं चलता था । किसान कहता था कि मेरी किश्त की तो

कटौती हो गई । 20 परसेंट काट दिये, 30 परसेंट काट दिये । यह दर्द आपने किसानों को दिया । अब विष्णुदेव साय जी की सरकार हो जो मोदी की गारंटी के साथ काम करेगी (मेजो की थपथपाहट) । अब किसानों को बैंक जाकर दो दिन, तीन दिन इंतजार करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी । जहां धान खरीदी होगी, वहीं नगद भुगतान की व्यवस्था भारतीय जनता पार्टी की सरकार करने वाली है। आप गांव के बच्चों की बहुत बातें कर रहे थे । जब पी.एस.सी. की बात आई, यू.पी.एस.सी. की बात आई तो बहुत से सदस्यों ने यह बात उठाई कि हमारे गांव के बच्चे तो उस पैटर्न को जानते ही नहीं, कैसे पढ़ेंगे, उस व्यवस्था को जानते ही नहीं, कैसे पढ़ेंगे । लाईवलीहुड कॉलेज हर गांव में, हर जिले में खोला गया था । आई.टी.आई. हमारी सरकार के समय हर ब्लॉक में खोला गया । उस लाईवलीहुड कॉलेज में जो स्किल डेवलपमेंट का काम चल रहा था उस व्यवस्था को आपने चरमरा दिया और वे कॉलेज जर्जर स्थिति में हैं, जहां बच्चों को ट्रेनिंग और रोजगार के अवसर मिलने चाहिए थे ।

अध्यक्ष महोदय, बहुत अच्छी बात है । जब नई सरकार आती है तो नया काम करती है । आप लोगों ने भी किया । नया नाम रखने का काम किया । आप लोगों ने आत्मानंद जी के नाम से स्कूलें खोलीं, अच्छी बात है । नए तरीके से नई चीजों को आगे लाने का प्रयास किया । लेकिन श्रृंगि ऋषि जी के नाम को मिटाकर आत्मानंद जी का नाम रखना आपको शोभा नहीं दे रहा था । यह कहां पर हुआ है यह आप भी जानते हैं, अंबिका जी जानती हैं ।

श्रीमती अंबिका मरकाम :- श्रृंगि ऋषि जी के नाम को हटाया नहीं गया है । उसमें श्रृंगि ऋषि जुड़ा हुआ है ।

सुश्री लता उसेंडी :- अच्छा, आत्मानंद श्रृंगि ऋषि कर दिया गया है (हंसी)।

श्रीमती अंबिका मरकाम :- अध्यक्ष महोदय, शायद लता जी भूल गई हैं । जब 15 साल आपकी सरकार थी तब झलियामारी कांड हुआ था, नसबंदी कांड हुआ था, उसको भी बताइए न लता जी ।

श्री राजेश मूणत :- माननीय अध्यक्ष महोदय, अगर पांच साल के कार्यकाल को उठाकर देखेंगे । तो जितना नामकरण इन पांच सालों में हुआ है उतना पूरे प्रदेश में कभी नहीं हुआ होगा । पूरी राजधानी के आसपास तो एक काम ऐसा नहीं हुआ होगा जिसका निर्माण इन्होंने खुद किया होगा और खुद नाम रखा होगा । जो पहले से निर्माण किये गये हैं केवल उनके ऊपर तख्ती और फोटो लगाने का काम किया है उमेश जी । नहीं तो आप खुद देख लेना । इस राजधानी के अंदर, नई राजधानी हो या पुरानी राजधानी हो, पुराना शहर हो । एक सिंगल काम नहीं हुआ है, सिंगल काम जिसका भूमि पूजन इस सरकार ने किया हो, उसका लोकार्पण किया हो, उसका नामकरण किया हो । सिर्फ अपनी फोटो चिपकाने का काम किया है । यहां तक कि यह स्थिति देखने को मिलती है [XX] के अंदर भी फोटो लगा हुआ देखा है । नहीं तो मैं रायपुर में दिखा दूंगा । जनसम्पर्क का यह कारनामा अगर आप देखना चाहें नेता जी, तो मैं आपको लेजाकर दिखा सकता हूं । जहां सरकार की योजना लगी हुई है देख लो ।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्यक्ष महोदय :- लता जी, कितना समय लेंगी ।

सुश्री लता उसेंडी :- मैं जल्दी समाप्त करती हूं । अध्यक्ष महोदय, भगवान राम जी का मंदिर पूर्ण होने जा रहा है । तीर्थ योजना की चिंता की, किसी ने विदेश यात्रा की बात की, कोई चारो धाम यात्रा की बात कर रहा था । हमारे अध्यक्ष जी श्रवण कुमार के नाम से इस छत्तीसगढ़ राज्य में जाने जाते हैं । उन्होंने तीर्थ योजना भी चालू की थी और चारों धाम का दर्शन भी करा रहे थे । पता नहीं आपको क्यों रास नहीं आया और आपने बंद कर दिया । वह हमारे घोषणा पत्र में है अब आने वाला है तो आप सब लोगों को चलना ही है और अपने अपने क्षेत्र की जनता को भी चारो धाम ले जाना है । जिसकी व्यवस्था साय जी बहुत जल्दी करने वाले हैं । इस तरह बहुत सी योजनाएं आपने सिर्फ बदले की भावना से बंद कर दी । याद रखिए यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, यह सबकी चिंता करती है। भारतीय जनता पार्टी पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति की बात करती है और उनके अनुसार योजनाएं बनाती हैं। हम लोगों ने 15 साल में देखा है, हम लोगों के मन में भी आ जाता था कि हमारे मुख्यमंत्री जी कांग्रेस के विधायक को भी उतना ही पैसा दे देते हैं जितना हमको देते हैं लेकिन हमारे मुख्यमंत्री जी ने पूरे 90 विधान सभा में बराबर पैसा दिया, योजनाओं को बराबर लागू किया, कहीं भेदभाव नहीं किया। (मेजों की थपथपाहट) और वही सरकार फिर से लौटकर आई है। हमारे वर्तमान मुख्यमंत्री जी भी छत्तीसगढ़ के विकास को लेकर समग्र विकास की परिकल्पना को लेकर आगे बढ़ रहे हैं। हमारे बच्चों की बात हो, चाहे युवाओं की बात हो, हमारे बहनों की बात हो, हमारी माताओं की बात हो, हमारे किसानों की बात हो, आज सारे समग्र विकास के साथ हमारा छत्तीसगढ़ उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ेगा। वर्ष 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ था और 2000 तक की जो स्थिति थी, बहुत सारे वर्तमान सदस्य उसके साक्षी हैं। 2018 से 2023 तक जो स्थिति कांग्रेस की सरकार ने छत्तीसगढ़ में बनाकर रखा था, उसके भी आप साक्षी हैं और पिछले 15 सालों में भारतीय जनता पार्टी की सरकार में जो विकास की गाथाएं गढ़ी गई थी, आने वाले इन पांच सालों में गढ़ी जाएंगी। डबल इंजन की सरकार है, मोदी की गारंटी है, हमारी सरकार में रातों रात गोभी उगाने वाला टैलेंट हम नहीं दिखाएंगे लेकिन वे सारे सपने जो इस छत्तीसगढ़ महतारी के सपूत देखते हैं, उन सारे सपनों को भारतीय जनता पार्टी की सरकार हमारे मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में करेंगे, हमारे मुख्यमंत्री जी आने वाले समय में सारे काम को पूर्ण करेंगे। इन्हीं बातों के साथ मैं अपनी बात को यहीं पर विराम देती हूं। धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

श्री अटल श्रीवास्तव (कोटा) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सबसे पहले आसंदी को प्रणाम करता हूं। चूंकि आज सदन में मेरा पहला वक्तव्य है। मैं सबसे पहले आदरणीय विष्णु देव साय जी को शुभकामनांए देता हूं, बधाई देता हूं कि वे इस प्रदेश के पहले आदिवासी समुदाय से मुख्यमंत्री बने हैं। मैं आदरणीय अरूण साव जी को और आदरणीय शर्मा जी को बधाई देता हूं कि उप मुख्यमंत्री बने हैं और

तमाम 54 विधायकों को शुभकामनाएं देता हूं कि उनमें से 10 जल्दी ही चुनकर मंत्री बन जाएंगे। चूंकि इस सदन का समय बहुत हो रहा है और बहुत सारी बातें रिपीट हुई हैं, मैं कोशिश करूंगा कि बहुत सारी बातें रिपीट ना हो, जो जरूरी है, वही बातें कहना चाहूंगा। आदरणीय विष्णु देव साय जी आप इस प्रदेश के मुख्यमंत्री बने और पहले आदिवासी मुख्यमंत्री बने हैं। मुझे कहते हुए थोड़ा दुख हो रहा है कि आपके मुख्यमंत्री बनते ही छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा डैम हसदेव बांगो डैम का पूरा कैचमेंट एरिया अंबिकापुर साईड से आता है, वहां पर आज यह खबर आई कि हसदेव बचाव आंदोलन के जो लोग हैं, उनको गिरफ्तार कर लिया गया और लगभग 30 लाख पेड़ काट दिए गए, यह लगातार अनवरत चल रहा है। आप आदवासी समुदाय से आते हैं, मेरा आपसे निवेदन है कि अगर जंगल और जमीन छीन जाएगी तो आदिवासी कहीं के नहीं रहेंगे। आप आदिवासी मुख्यमंत्री हैं, मेरा आपसे निवेदन है, हमारे नेता प्रतिपक्ष जी ने बहुत गंभीर मुद्दा उठाया था, बात केवल जंगल के आदिवासियों की नहीं है, बात केवल हसदेव बांगो बांध की नहीं है, हसदेव बांगो बांध के बाद जो जांजगीर और रायगढ़ जिला सिंचित होता है, जहां तीन फसलें ली जाती हैं, वहां के किसानों की भी चिंता करना आपका फर्ज बनता है, इसलिए मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि वहां पर जो कार्रवाई चल रही है, जिन लोगों की गिरफ्तारियां हुई हैं, जिन लोग लगातार जंगल काट रहे हैं, चूंकि आप आदिवासी मुख्यमंत्री हैं, इसलिए आदिवासियों का हित साधना सबसे पहले आपका फर्ज बनता है। साथियों बहुत सारी बातें हो रही थी, मैं तो सबसे पहले नई सरकार से निवेदन करूंगा कि कोई भी सरकार जनोपयोगी कार्यक्रम चलाती है तो जो किसानों की चौथी किस्त बची है, वह पहले दे दी जाए। साथियों केवल दो साल का बोनस वह भी आपका पुराना पाप था, जो हम लोग किसी कारण से नहीं दे पाए, हमारे पूर्व मुख्यमंत्री जी ने बताया कि किस तरह की चिट्ठियां केन्द्र सरकार से आ रही थी कि आप बोनस नहीं दे सकते हैं। अगर हम बोनस नहीं दे पाए तो यह आपका फर्ज बनता है, इसलिए आप किसानों के ऊपर कोई एहसान नहीं कर रहे हैं, अगर आप दो साल का बोनस दे रहे हैं तो केवल 3800 रूपए दे रहे हैं। हमारी चिंता इस बात की है कि आपने जो अपने घोषणा पत्र में 3100 रूपये की बात रखी है, क्या आप एकमुश्त 3100 रूपये देंगे ? अभी राज्यपाल के अभिभाषण में और बजट में उस 3100 रूपये का कोई जिक्र नहीं है और कोई बजट एलॉटमेंट नहीं है। आने वाले तीन महीने में जनवरी, फरवरी, मार्च, तक अगर किसानों का बजट एलॉटमेंट नहीं किया है तो क्या इन तीन महीनों तक आप किसानों को 3100 रूपए धान की कीमत नहीं देंगे। यह मैं आपसे पूछना चाहता हूं। आदरणीय अध्यक्ष महोदय, जब आपकी सरकार थी तो वह तेंदूपत्ता संग्राहक को 2,500 रूपये मानक बोरा देती थी। हमारी सरकार आने के बाद वह 4,000 रूपये मानक बोरा हुआ। आदरणीय लता दीदी कह रही थी कि वहां पर तेंदूपत्ता संग्राहकों के साथ गड़बड़ी हो रही है। जब हमारी सरकार आई तो तेंदूपत्ता की कीमत 2,500 रूपये से 4,000 रूपये प्रति मानक बोरा हुई।

सुश्री लता उसेण्डी :- उसकी खरीदी हो गई, लेकिन अभी तक भुगतान नहीं हुआ है। अब उसको हम लोग करने वाले हैं।

श्री अटल श्रीवास्तव :- जरूर, आपको धन्यवाद कि आप उसका भुगतान करने वाले हैं। परंतु मेरा आपसे निवेदन है कि आपने जो घोषणाएं की हैं कि आप तेंदूपत्ता की कीमत 5,500 प्रति मानक बोरा देंगे। आप 4,500 रूपये बोनस देंगे। मेरा आपसे निवेदन है कि आप उनको जरूर दीजिए। मैं जिस क्षेत्र से चुनाव जीतकर आता हूं, वहां 70 प्रतिशत लोग तेंदूपत्ता की तोड़ाई करते हैं। आपने जो घोषणा की है उस घोषणा पर अमल कीजिए। ताकि हमारे तेंदूपत्ता संग्राहकों को फायदा मिल सके।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं महिला स्व सहायता समूह की बात करना चाहूंगा। मैं आपको बताना चाहूंगा कि पिछले पांच सालों में लगातार महिला स्व सहायता समूहों की संख्या में जिस तरीके से बेतहाशा वृद्धि हुई है, जिस तरीके से गांव की महिलाओं ने संगठित होकर स्व सहायता समूह बनाया है, उन महिला स्व सहायता समूहों ने कर्जा ले-लेकर काम किया है। वह अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी और स्वावलंबी बनना चाहती थी। क्योंकि आप सरकार की योजना की कितनी भी बुराई कर लीजिए, आप गौठान की कितनी भी बुराई कर लीजिए, आप नरवा, गरूआ, घुरवा, बाड़ी की कितनी भी बुराई कर लीजिए, आप रीपा की कितनी भी बुराई कर लीजिए, पर लोगों को एक उम्मीद की किरण दिखी थी कि स्व सहायता समूह की महिलाओं को रीपा के तहत काम मिलेगा। बहुत सारी जगहों में उनको काम मिल भी रहा है। बहुत सारी जगहों में गलतियां भी हुई हैं। जब आपकी सरकार थी तो रतनजोत वाले मामले का क्या हुआ? जब आपकी सरकार थी तो हर किसान को गाय देने की योजना का क्या हुआ? जब आपकी सरकार थी तो एक पैर में 9 नंबर की चप्पल और एक पैर में 8 नंबर की चप्पल आती थी। उन योजनाओं के क्रियान्वयन का काम अधिकारियों का होता है। मैं मानता हूं कि कहीं गौठान में गड़बड़ी होगी। पर आप यह भी सोचकर देखिये कि हम आपको 1 लाख एकड़ से ज्यादा भूमि सुरक्षित करके जा रहे हैं। जहां पर बेजा कब्जा नहीं है। आने वाले समय में आप वहां पर कोई भी प्लानिंग कर सकते हैं। कम से कम सरकार ने यह काम तो किया कि 1 लाख एकड़ से ज्यादा जमीन सुरक्षित तो कर ली। मैं जानता हूं कि योजनाओं में बहुत सारी खराबियां होती हैं, परंतु योजना बनाना सदन का काम है और उसे क्रियान्वित करना सरकारी अधिकारियों का काम है। कही गलतियां हुई हैं। गलतियां तो आपके 15 साल की सरकार में भी हुई थीं। इसलिए केवल बुराइयां करना, क्योंकि राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर चर्चा हो रही है। राज्यपाल महोदय ने जो अभिभाषण दिया है, परंतु मैं देख रहा हूं कि सदन में सत्ता पक्ष और विपक्ष में बैठे हुए लोग लगातार बुराइयां कर रहे हैं। आप हमारे पक्ष में बात कीजिए कि आपकी क्या योजना है और आने वाले समय में आप जनता को क्या देना चाहते हैं। मैं आपसे यही सब बातें कहना चाहता हूं। किसानों की कर्जा माफी की बात थी, मैं भी ग्रामीण क्षेत्र से चुनाव जीतकर आया हूं। किसानों को इतनी उम्मीद थी कि सरकार आएगी तो किसान का भला होगा। आदरणीय उप मुख्यमंत्री

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

जी ने तो पेपर में बड़ा ऐड दिया है, जो बिलासपुर के नई दुनिया पेपर में छपा है कि हम किसानों का 2 लाख रूपये कर्जा माफ करेंगे। पता नहीं कि वह ऐड कैसे आया और आपका वीडियो कैसे आया? किसानों की उम्मीद जगी हुई थी। किसान अभी भी इस उम्मीद में है कि यह सरकार किसानों का 2 लाख रूपये कर्जा माफ करेगी। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि छत्तीसगढ़ के किसान गरीब हैं। छत्तीसगढ़ के किसान को धान की कीमत तो मिल रही है, परंतु किसानों के ऊपर 16,000 करोड़ रूपये का कर्जा है। जो किसान आत्महत्या कर रहे हैं, कहीं ऐसा न हो कि आत्महत्या की लाइन लग जाए। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि उप मुख्यमंत्री जी और आपने जो घोषणाएं की हैं, उसपर अमल कीजिए, ताकि किसानों का फायदा हो सके।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं पहले कभी इस सदन में अध्यक्षीय दीर्घा में आता था और माननीय अजय चंद्राकर जी को जब मैं सुनता था तो मुझे बहुत अच्छा लगता था कि वह संसदीय चीजों के ज्ञाता हैं। चंद्राकर जी, मैं आपको हमेशा फॉलो करूंगा। मेरी कोशिश होगी कि आपके पास जितने नियम-कानून-कायदे, संसदीय ज्ञान हैं, मैं 5 साल में कोशिश करूंगा कि यदि आप मंत्री बने तो नियम-कानून का पालन हो रहा है या नहीं, क्योंकि आपके ज्ञान की मैं बहुत प्रशंसा करूंगा और मुझे आपको सुनना भी बहुत अच्छा लगता है। आपने जो राम वन गमन पथ के लिए जो बात कही और आपने कौशल्या माता के मंदिर के लिए जो बात कही। वहां पर कौशल्या माता का मंदिर तो बरसों से है। पौराणिक कथा में है कि यहां पर भगवान राम का 10 साल का वनवास गुजरा। आपने मूर्ति की बात की। मैं जानता हूं कि आप मुझे नहीं टोकेंगे क्योंकि मैं पहली बार का विधायक हूं। (हंसी) वहां पर जो मूर्तियां बनी हैं तो मूर्तियां 10 जगह लगी हुई हैं और बाकी 9 जगहों में गलतियां सुधार ली गई हैं। मैं टूरिज्म बोर्ड के चेयरमेन की हैसियत से स्वीकार करता हूं कि चंद्रपुर में जो मूर्ति बनी है उसमें कारीगर ने थोड़ी गलतियां की हैं और उसका आकार Proper नहीं आ पाया। उसके लिए पहले ही ऑर्डर दिये जा चुके हैं। करीब 3 महीने हो गये, परंतु उतनी बड़ी मूर्ति नहीं आ पा रही है। बाकी 9 जगहों में जो मूर्ति लगी है वहां पर भगवान राम की आशीर्वाद देते हुए मूर्ति लगी हुई है। हमारी कोशिश थी कि हमारी जो भांजा राम की संस्कृति है, हम उसको आगे चलकर बढ़ाएं । हमने 2270 किलोमीटर के एरिया में नौ जगह चिह्नित की और उस चिह्नित जगह पर भगवान राम की यादों को संजोया ।

श्री अजय चन्द्राकर :- मैं आपको बिल्कुल नहीं टोकूंगा । वैसे आप और खड़े हो चुके हैं । आपका मैडम स्पीच है, अच्छा बोल रहे हैं । मेरा विषय राम भगवान की प्रतिमा में जो भ्रष्टाचार हुआ, उसके बारे में था, लेकिन उससे बड़ा विषय यह है कि जो छत्तीसगढ़ की संस्कृति के साथ छेड़छाड़ हो रहा है । अटल जी, आपका नाम अटल है तो हमारे साथ रहेंगे । किसी भी पौराणिक ग्रंथ, संदर्भ ग्रंथ, ऐतिहासिक ग्रंथ में किसी भी तरह से तारतम्य स्थापित कर दें कि चम्पारण और चन्द्रखुरी में भगवान राम गए हैं, इसका प्रमाण मिलता है । जो भी अभी तक के साहित्य उपलब्ध हैं, चन्द्रखुरी सुषेण वैद्य का निवास है,



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

उनकी समाधि वहां अभी भी बनी है । धनतेरस के दिन यह माना जाता है कि वहां की जड़ी-बूटी औषधि का स्वरूप ले लेती हैं । चम्पारण वल्लभाचार्य जी का प्रकाट्य स्थल है, जिन्होंने भारतीय दर्शन में शुद्ध विशिष्टता, दैत्वा-दैत्व का प्रतिपादन किया । राम भगवान का कोई संबंध नहीं है, लेकिन आपने वहां पर जिद में प्रतिमा लगवाया । मैं घोषित करता हूं कि यहां राम भगवान की प्रतिमा लगेगी ।

श्री अटल श्रीवास्तव :- इसमें परेशानी क्या है ?

श्री अजय चन्द्राकर :- एक सेकण्ड रूकिए । आप 100 जगह प्रतिमा लगाईए, वह परेशानी नहीं है, लेकिन जिन चीजों से सम्बद्धता नहीं हैं, आप यह मत कहिए कि यहां राम भगवान का संबंध है, फिर अपने घर में 100 प्रतिमा लगवा लीजिए, उसमें मुझे आपत्ति नहीं है, लेकिन कृपा करके आप संदर्भों को विकृत मत कीजिए, जो आपने छत्तीसगढ़ की संस्कृति के साथ लगातार विकृत किया है ।

श्री अटल श्रीवास्तव :- अध्यक्ष महोदय, जब राजिम पुन्नी मेला था, तब आपने उसे कुंभ बना दिया । दुनिया भर के संतों को बुलाकर वहां पर नहलाया, तब तो हमने आपसे संस्कृति की बात नहीं की कि आप छत्तीसगढ़ की संस्कृति के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं । हमें जो पौराणिक कथाएं मिलीं, हमें जो जानकारियां मिलीं कि भगवान राम का ननिहाल छत्तीसगढ़ कौशल प्रदेश था, माता कौशल्या यहां की थीं, भगवान राम ने यहां 10 साल गुजारे हैं, उन्हीं पौराणिक कथाओं के आधार पर यह निर्णय लिया गया कि हम रामवनगमन पथ का निर्माण करेंगे, पर्यटन पथ का निर्माण करेंगे ।

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, चूंकि बहुत सारी बातें रिपीट हो चुकी हैं, आदरणीय चौधरी जी ने पी.एस.सी. को लेकर बहुत सारी बातें की हैं । महतारी वंदन योजना के बारे में संगीता जी बात कर रही थीं, मैं उसमें कहना चाहता हूं । जो आपकी योजना के फार्म थे, जैसे हम लोग प्राईवेट बैंक में लोन लेने जाते हैं तो उसमें लिखा रहता है कि इतना लोन मिल जाएगा, इतना इंटरेस्ट है । उसमें नीचे लिखा था- ऑल राईट्स आर रिजर्वड । वैसे ही आपकी महतारी वंदना में नीचे लिखा हुआ है ऑल राईट्स आर रिजर्वड । मतलब आप जब चाहें नियम बदल दें कि दो साल की शादीशुदा औरत को ही इस योजना का लाभ मिलेगा, जिसके घर में सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है, उसको नहीं मिलेगा । ऐसे में आपकी योजना का जो फार्म था, महिलाओं ने आप पर जो विश्वास किया था, उसका क्या होगा ? यह छत्तीसगढ़ की महिलाओं के साथ सबसे बड़ा विश्वासघात होगा, जो आपने नीचे लिख दिया है ऑल राईट्स आर रिजर्वड। जो आप नियम कानून बदल रहे हैं और आपने जो बजट एलाटमेंट किया, उससे लगता है कि छत्तीसगढ़ की लगभग 75 लाख महिलाओं की जगह केवल 20 से 25 लाख महिलाओं को फायदा होगा । मैं माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण के विरोध में बोलने के लिए यहां खड़ा हूं । आपने बोलने का मौका दिया, उसके लिए धन्यवाद । जयहिन्द, जय छत्तीसगढ़ ।

अध्यक्ष महोदय :- माननीय नेता प्रतिपक्ष । (मेजों की थपथपाहट)

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरण दास महंत) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद । हमारी एक संवैधानिक बाध्यता है । हम आपके राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव, जो चन्द्राकर जी ने प्रस्तुत किया है, उसके विरोध में बोलने के लिए खड़े हुए हैं । आज पता नहीं कि चन्द्राकर जी को क्या हो गया ? उन्होंने सिर्फ अभिभाषण की बात कि पिछले वर्ष में क्या हुआ, उसके पहले क्या हुआ, उसके पहले क्या हुआ, किस अधिकारी ने बनाया, कैसे बनाया ? आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं भी आपके माध्यम से चन्द्राकर जी से पूछना चाहता हूं कि इससे छोटा अभिभाषण आपने कभी देखा है ? पांच पृष्ठ का अभिभाषण है, उसमें 16 बिन्दू हैं । सौभाग्य कहिए या दुर्भाग्य कहिए, मैं 1980 से सदन में इधर-उधर घूम रहा हूं । 1980 में पहली बार विधायक बन गया था । आजतक मैंने ऐसा अभिभाषण नहीं देखा था, अभी देख रहा हूं और आपके किस अधिकारी ने बनाया है, यह बता दीजिए। इसमें 1 से 16 बिन्दु में से, 1 से 8 बिन्दु तक सिर्फ चुनाव की बात लिखी है। मैं समझता हूं कि एक सीधे-साधे (xx)[2] राज्यपाल जी का ..।

श्री अजय चन्द्राकर :- (xx)?

डॉ. चरणदास महंत :- हां (xx) आप लोगों ने उन्हें (xx) बना दिया। उनका उपहास कराया है। एक मामलें में नहीं, दो मामले में उनका उपहास कराया है।

अध्यक्ष महोदय :- (xx) विलोपित।

डॉ. चरणदास महंत :- एक तो आपने उनसे उप मुख्यमंत्री का शपथ दिलाया। बताईये, आज तक किसी भी प्रदेश में कभी उप मुख्यमंत्री का शपथ होता है क्या ? अध्यक्ष महोदय, जहां तक हम लोगों को जानकारी है, आपको भी जानकारी होगी, मंत्री पद का शपथ होता है, उप मुख्यमंत्री का दर्जा देते हैं। तो इस तरह से आप लोगों ने एक संवैधानिक व्यक्ति का जो उपहास कराया है, वह मुझे पसंद नहीं आया। फिर दोनों तरफ से, आपने भी और इधर भी, ये 50 लोग नये बच्चे आए हैं, कुछ और बिलकुल नये हैं, वह हम लोगों से कुछ सीखना चाहते हैं। जब आप बजट पर भाषण दे रहे थे उसमें , आप अभिभाषण पर भाषण दे रहे हैं उसमें, सिर्फ एक दूसरे का विरोध, एक दूसरे की कमी, क्या सीखेंगे ? मुझे दु:ख हो रहा है। कुछ बात ऐसी होनी चाहिए जो हमारे नये आए हुए सदस्य सीखकर जायें। खैर, मैं ज्यादा नहीं कहूंगा।

मुख्यमंत्री जी, यह आपका और मेरा दोनों का सौभाग्य है कि हमारे जितने भी विधायकगण आये हैं, सबने सब बात कह दी। आपके लिए और मेरे लिए कुछ नहीं छोड़ा है। मगर मैं आपसे थोड़ा सा नाराजगी व्यक्त करूंगा। इसलिए कि मैं भी सुबह-सुबह भाषण में कहा था कि हसदेव अरण्य कटने लग गया है, काटना शुरू कर दिया है। लोगों की गिरफ्तारी शुरू हो गई है। आदिवासियों की गिरफ्तारी शुरू हो

(xx)[2] अध्यक्ष महोदय के निर्देशानुसार विलोपित।



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

गई है और आंदोलनकारी नेता की भी गिरफ्तारी शुरू हो गई है। कहां ले गये ? पता नहीं। बचायेंगे, मारेंगे, रखेंगे क्या करेंगे, कुछ पता नहीं है। अब तो आप ही गृहमंत्री हो, आप तो सभी मंत्री हो, सब विभाग आपके पास है तो आपको उत्तर देना चाहिए। अगर आपके अधिकारियों ने ऐसा नहीं किया कि सुबह से शाम हो गई, उसका कोई जवाब नहीं आया तो निश्चित रूप से मुझे आपसे बात करने का थोड़ा सा दु:ख हो रहा है

अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात, अब मैं किसको-किसको जवाब दूं, सब हमारे बच्चें हैं। बहुत अच्छी बात कर रहे थे। आपने जो 8 बिन्दु बनवाये हैं, उस पर थोड़ा सा कहूं ? थोड़ा-थोड़ा कह देता हूं। आपको बुरा ना लगे।

श्री अजय चन्द्राकर :- पूरा कहिये।

डॉ. चरणदास महंत :- हमारे यहां 7 नवम्बर, 17 नवम्बर को चुनाव हुए और 3 दिसम्बर को रिजल्ट आया। यह किसको नहीं मालूम है भईया ? आपने इसको राज्यपाल महोदय से कहलवाने की क्या जरूरत थी ?

श्री उमेश पटेल :- नेता जी, यह अभिभाषण तो ऐसा लग रहा है कि चुनाव आयोग के द्वारा बनाया गया है।

डॉ. चरणदास महंत :- वही मैं भी समझ नहीं पा रहा हूं। चलिये, मैं ज्यादा कुछ नहीं कहूंगा। हम सब लोग आप सब साथियों के आभारी हैं। आप लोगों ने अच्छा बात किया। मगर नक्सली उत्पाद के बारे में राज्यपाल महोदय ने अपने अभिभाषण में इतना जरूर कहा है कि बहुत से नक्सलवाद प्रभावित विधानसभा क्षेत्रों में मतदान के अच्छे आंकड़े यह साबित करते हैं कि लोकतन्त्र की रक्षा के लिए ग्रामीण और वन अंचल में रहने वाली जनता का मनोबल मजबूत हुआ है। जब यह मनोबल मजबूत हुआ तब तो आपकी सरकार थी नहीं, महाराज, सरकार हमारी थी, 7 और 17 नवम्बर को मतदान हुआ। तो अगर हमने नक्सली क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासियों का मनोबल मजबूत किया है तो इसके लिए कम से कम इस बात पर धन्यवाद तो दे देते।

श्री अजय चन्द्राकर :- धन्यवाद।

डॉ. चरणदास महंत :- खड़े होकर मत दीजिये, बैठे-बैठे दे दीजिये।

श्री अजय चन्द्राकर :- धन्यवाद।

डॉ. चरणदास महंत :- दूसरी बात, मूणत साहब कह रहे थे कि हर जगह, हर चीज को बदल दिया। मूणत जी, स्काई वाक का नाम तो बदला ही नहीं है। (हंसी) स्काई वाक का नाम तो स्काई वाक है। स्काई वाक का क्या हुआ, हमें पता ही नहीं।

श्री राजेश मूणत :- माननीय नेता जी, आप भी जानते हैं, आपके सामने सब चीज है । मैं 5 साल से स्मॉरक बनाकर रखा हूँ और जो पूर्व मुख्यमंत्री थे, उन्होंने लिखकर भेजा है कि एफ.आई.आर.



अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

दर्ज की जाये । 5 साल में एफ.आई.आर. दर्ज नहीं कर पायें हैं और उसके अंदर दिये हैं एसईव्ही में, वह जांच नहीं कर पाया । अध्यक्ष जी, सरकार के बारे में और क्या कहूं ? आप तो उस समय अध्यक्ष थे ।

श्री अजय चन्द्राकर :- स्काई वॉक बोले तो एक लाईन मैं बोल देता हूँ साहब। एक लाईन भर । जब पहले बजट सत्र हुआ तो मुख्यमंत्री जी यहां से उठकर गये और कहा कि बैठक है उसमें स्काईवॉक के बारे में निर्णय लिया जायेगा । जब लौटकर आये तो मैंने हाऊस में कहा कि आप 100 बैठक कर लीजिए । सत्यनारायण जी की अध्यक्षता में इतनी सारी कमेटी बनी कि उसको राजनीति से सन्यास लेना पड़ गया । आप स्काईवॉक में लागत बढ़ाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते और वही हुआ है ।

डॉ.चरणदास महंत :- अभी तो जैसे लता दीदी जी ने कहा कि 7 दिन की सरकार है, हम तो विरोध नहीं कर पायेंगे । दुर्भाग्य है कि मैं पिछले वर्ष 2003 से वर्ष 2018 तक भी नहीं रहा हूँ तो उस कार्यकाल का विरोध नहीं कर पाऊंगा । मेरी आदत भी नहीं है और कुछ बातों पर जो आपने माननीय राज्यपाल महोदय से कहलवाया है कि- इस प्रकार मेरी सरकार ने अपने कामकाज में बहुत ठोस शुरूआत की है । अभी तक एकाध ठोस शुरूआत बता दो ? दूसरी बात, हमारे नये अनुज भाई आये हैं, उनहोंने कहा है कि हरेक बिन्दु को छुआ है । पाईन्ट नंबर 10 में लिखा है कि- प्रदेश में अभी भी ऐसे अनेक वर्गों के लोग हैं, जिन्हें सामाजिक, आर्थिक विकास के लिये विशेष सहायता की आवश्यकता है । अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, युवा, किसान, वन आश्रितों, ग्रामीणों और परम्परागत व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिये, विशेष संवेदनशीलता अपेक्षित है । ऐसे सभी वर्ग मेरी सरकार की प्राथमिकता में रहेंगे । अनुज भाई, आप अभी तक तो प्राथमिकता तय नहीं किये हैं। आप जो गाना सुना रहे थे, उसमें टीका-टिप्पणी हो रही थी । कौन सा गाना था ?

श्री अनुज शर्मा :- राजा परजा देवी देवता तोर कोरा म आईन । अऊ जइसन सेवा करिन तेन वो वइसन फल ला पाईन ।

डॉ.चरणदास महंत :- चलिये, मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ । आप इधर से और उधर से आये हैं, आपने जो रामचन्द्र जी की जो कल्पना की है, अलग-अलग रूपों में, अलग-अलग बातों में, अलग-अलग ढंग से उसको देखा, सुना, जाना । मैं यह बताना चाहता हूँ कि आप खुद कबीरहा हैं, ऐसा मैं मानता हूँ । गृंदमुनि नाम साहब के गोद में पढ़े हैं । हमारे कबीर पंथ की परम्परा में चार प्रकार के राम पाये जाते हैं । आपका जो राम है, एक तो अयोध्या में है । एक राम दशरथ का बेटा है, जो अयोध्या में राम का मंदिर बना रहे हैं । एक राम घट-घट में बैठा है । हरेक के घट में एक राम है । एक राम का सकल पसारा । यह जो दुनिया का निर्माण हुआ है, जिसको हम देख रहे हैं, आकाश के रूप में, पृथ्वी के रूप में, एक राम वह है जो सबको बनाया है और एक राम वो है, एक राम इन सबसे न्यारा । उस राम की ही हम सब उत्पत्ति हैं । हम सब उस राम की पूजा करते हैं । हम सब में तो रोम-

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

रोम में राम समाया है । आप राम के नाम से हमको अलग कर रहे हैं । हम राम के नाम से आपको अलग कर रहे हैं, यह उचित नहीं है । हम सब रामनामी है ।

श्री अजय चन्द्राकर :- सोनिया जी और खरगे जी को न्यौता मिल गया है । अधीर रंजन जी बोल रहे हैं कि मेरे को मिलेगा तो मैं भी जाऊंगा । अलग नहीं कर रहे हैं, निमंत्रण पहुंच गया है । आप पता कर लीजिए ।

डॉ.चरणदास महंत :- हम सब भी जायेंगे । हमारी तरफ की सदस्य भी बोल रही थी कि आपने सुना । आज बहुत समय हो गया है जो नहीं होना चाहिये था । मैं आपको किसी बात पर कोई टीका टिप्पणी नहीं करते हुए आपको एक बाद याद दिलाना चाहता हूं कि आप जितने लोगों ने हम सबको सपना दिखाया है। अनुज भाई, मैं उसके लिये एक ही बात बोलना चाहता हूं आपने सुना होगा " हम देखेंगे" आपको फैज साहब का वह गाना याद है ? मेरे पास भी है। "हम देखेंगे", फैज अहमद फैज। कहो तो एक आत लाईन कह दूं।

श्री अनुज शर्मा :- बिल्कुल।

डॉ. चरणदास महंत :- "लाजिम है कि हम भी देखेंगे,
वह दिन कि जिसका वादा है।
जो लोह-ए-अजल में लिखा है
जब जुल्म-ओ-सितम के कोह-ए-गरां
रूई की तरह उड़ जाएंगे
हम महकूमों के पांव तले
यह धरती धड़-धड़ धड़केगी
और अहल-ए-हकम के सर ऊपर
जब बिजली कड़-कड़ कड़केगी
जब अर्ज-ए-खुदा के काबे से
सब बुत उठवाए जाएंगे
हम अहल-ए-सफा मरदूद-ए-हरम
मसनद में बिठाए जाएंगे"

वह दिन आयेगा, जब जिसको कोई नहीं पूछता, जो गरीब लोग हैं। उनको जब आप लोग सम्मान देने लगेंगे। आप हमको सपना दिखा रहे हैं कि आप देंगे, हम इंतजार कर रहे हैं। मैं ज्यादा तो नहीं बात करता मगर यह जरूर कहना चाहता हूं कि वह जो हम सब देखने वाले हैं, वह आप भी हैं, वह हम भी हैं, वह समय आयेगा जब हम देखेंगे और ईश्वर करे, परमात्मा करे कि वह दिन आये कि हम सब सुखी हों, सम्पन्न हों। एक दूसरे से प्रेम से, मोहब्बत से, एकता से, भाईचारा से रहे, यह कबीर की धरती है, गुरू बाबा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

घासीदास की धरती है, यह भगवान राम की धरती है, भगवान कृष्ण की धरती है और ब्रम्हा, विष्णु, महेश की धरती है, यह सब तो यहां आ गये हैं। आदरणीय विष्णु देव साय जी, हम आपसे कल्पना करते हैं और आपसे आशा रखते हैं कि आप सुखी रहे, संपन्न रहे और छत्तीसगढ़ को सुखी संपन्न बनाने में आप दिन-रात एक करें। एक आदिवासी दिल के साथ, एक आदिवासी की आत्मा के साथ उसमें इधर-उधर की बात न हों। आप सिर्फ एक आदिवासी के दिल की आवाज को सुनकर छत्तीसगढ़ की सेवा करें, यह शुभकामनाएं देता हूं परंतु मैं यह 5 पृष्ठ के अभिभाषण का विरोध करता हूं। धन्यवाद। (मेजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री जी। (मेजों की थपथपाहट)

मुख्यमंत्री (श्री विष्णुदेव साय) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ शासन के माननीय राज्यपाल श्री विष्व भूषण हरिचंदन जी के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिये उपस्थित हुआ हूं। मैं राज्यपाल महोदय द्वारा सरकार को दिये दिशा निर्देश के लिये उनका आभारी हूं। राज्यपाल महोदय को इस बात के लिये भी धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं कि उन्होंने हमें सेवा, सुशासन, सुरक्षा, विकास के साथ सभी के जीवन स्तर के उन्नयन के लिये हर संभव कदम उठाने के प्रति विश्वास दिलाया है। इस अवसर पर मैं राज्यपाल महोदय के धन्यवाद प्रस्ताव पर पक्ष और विपक्ष में उद्बोधन देने वाले सभी सदस्यों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। आदरणीय श्री अजय चन्द्राकर, श्री दलेश्वर साहू, श्री धरमलाल कौशिक, श्री कवासी लखमा, श्री पुन्नूलाल मोहले, श्रीमती संगीता सिन्हा, श्री राम विचार नेताम, श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह, श्री ओ.पी. चौधरी, श्री रामकुमार यादव, श्री अनुज शर्मा, सुश्री लता उसेण्डी, श्री अटल श्रीवास्तव और आदरणीय नेता प्रतिपक्ष, डॉ. चरणदास महंत का उद्बोधन सुनने को मिला, इसके लिये उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करना चाहता हूं।

अध्यक्ष महोदय, प्रदेश के छठवें विधान सभा का यह पहला सत्र कई मायनों में महत्वपूर्ण है। ऐसा पहली बार है जब इस सदन में 50 नए सदस्य चुनकर आये हैं। सर्वाधिक युवा सदस्य चुनकर आना एवं 19 महिला सदस्यों का निर्वाचित होना, इस सदन की गरिमा को और अधिक बढ़ा रहा है। अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ की जनता ने इस सरकार को बड़ी ही आशा और उम्मीदों से चुना है। लोकतंत्र में जनता ही जनार्दन होती है वही सर्वोच्च है। वही मालिक हैं। जनता की सत्ता को बहाल करना ही मेरी सरकार की प्राथमिकता है। लोकतंत्र भरोसे से चलता है इसलिए 5 वर्षों में छत्तीसगढ़ में भरोसे का बड़ा संकट खड़ा हुआ था। ऐसा माहौल बना दिया गया था मानो आप सत्ता में आने के लिए कुछ भी वायदे कर लेंगे और सत्ता में आने पर उन सभी वायदों से किनारा कर लेंगे। हमारी सरकार का सबसे बड़ा प्रयास इस विश्वास की फिर से बहाली और भरोसे के संकट को खत्म करना होगा। हमने जनता से जो भी वायदे किए हैं उसे सही नियत और स्पष्ट सोच के साथ पूरा करना हमारा दायित्व है। यही हमारा धर्म है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

अध्यक्ष महोदय, एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का कहना था कि समाज के गरीब वर्ग ही हमारे नारायण हैं। उन्हें पक्के घर उपलब्ध कराना हमारा लक्ष्य होना चाहिए। इसी विचार को अमल में लाकर, भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने प्रधानमंत्री आवास योजना प्रारंभ की थी। छत्तीसगढ़ में यह योजना पिछले 5 वर्षों में राजनीति की भेंट चढ़ गई थी। जैसा कि माननीय राज्यपाल महोदय ने उल्लेखित किया है। हमने अपने वायदे के अनुरूप पहली ही कैबिनेट में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 18 लाख से अधिक जरूरतमंद परिवारों को घर स्वीकृत करने और आवश्यक धनराशि प्रदान करने का निर्णय लिया है। (मेजों की थपथपाहट) प्रदेश के 18 लाख ग्रामीण परिवारों को पक्का आवास बनाने के लिए प्रथम किश्त की राशि जारी करने हेतु 3 हजार 799 करोड़ रूपये का प्रावधान इस अनुपूरक बजट में कर दिया गया है। (मेजों की थपथपाहट) माननीय अध्यक्ष महोदय, इस अवसर पर यह बताते हुए अफसोस हो रहा है कि अगर कांग्रेस की पिछली सरकार ने आवास से जुड़े इस महत्वपूर्ण विषय को राजनीति का अखाड़ा नहीं बनाया होता। अगर वह इसे इसलिए केवल नहीं रोकती कि योजना में प्रधानमंत्री शब्द जुड़ा है तो आज इन 18 लाख गरीबों के सर पर अपनी छत होती। (मेजों की थपथपाहट) जो लोग चंद आवास ही गरीबों को देकर दशकों तक इंदिरा आवास के नाम से गांधी, नेहरू परिवार का महिमामंडन करते रहे। अब उन्हें प्रधानमंत्री आवास शब्द से ही चिढ़ हो रही है। ऐसा इसलिए क्योंकि आज एक सामान्य परिवार में जन्म लेने वाला व्यक्ति भारत का प्रधानमंत्री है। (मेजों की थपथपाहट) प्रदेश की गरीब जनता ने इस विषय में जैसा धोखा खाया है वह तकलीफदेह है। अपना घर किसी भी परिवार का सपना होता है। कम से कम उस सपने के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए था। दु:खद स्थिति तो यह रही कि आवास की प्रतिक्षा सूची में रहे, परिवार के कच्चे घर गिरने से मौत तक आपकी सरकार में हो गई है, लेकिन कांग्रेस सरकार का दिल नहीं पसीजा। जिन लोगों की पहली किश्त मिल गई थी उन लोगों की भी दूसरी और अंतिम किश्त रोकने का पाप आपकी सरकार ने किया। पहली किश्त मिलने के भरोसे के कारण लोगों ने अपने घर तोड़ दिए। उन लोगों की दूसरी और आखिरी किश्त नहीं दी गई। टूटे घर और कर्जे से लदकर कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में प्रताड़ित होते रहे। अनेक लोगों को आत्महत्या के लिए मजबूर होना पड़ा। ऐसी थी इनकी भरोसे की सरकार। अब हमने अपनी घोषणा के अनुरूप ही पहले ही कैबिनेट की बैठक में आवास योजना हेतु राशि का प्रावधान कर दिया है। हमारे इस निर्णय से न केवल गरीब परिवारों को पक्के आवास का लाभ मिलेगा, अपितु निर्माण संबंधी गतिविधि एवं इनसे जुड़े हुए सहायक उद्योगों में तेजी आने से प्रदेश की अर्थव्यवस्था में भी गति आएगी। अध्यक्ष महोदय, प्रदेश के हर परिवार को तमाम् सुविधाओं के साथ पक्का मकान देना, उनके शौचालय की व्यवस्था, साफ पानी, भरपेट भोजन, मुफ्त शिक्षा और रोजगार देने के लिए मेरी सरकार दिन रात काम करेगी। हम एक सशक्त और समृद्ध छत्तीसगढ़ बनाने के प्रति कटिबद्ध हैं। नई सरकार को चुनने में मातृशक्ति, किसानों, आदिवासियों और युवाओं का बड़ा योगदान

है। सर्वसमाज और वर्ग के लिए हित में काम करना हमारी परम्परा है। लोकतंत्र लोकलाज से चलता है। हमें अपनी जिम्मेदारियों का एहसास है और इस धन्यवाद् प्रस्ताव के माध्यम से हम सदन को और प्रदेश की जनता को यह आश्वस्त करना चाहते हैं कि हम जनता की कसौटी पर पूरी तरह से खरा उतरेंगे।

समय :
8.00 बजे

(पूर्व से जारी) श्री विष्णुदेव साय :- माननीय अध्यक्ष महोदय, राजनीतिक लाभों के लिये प्रदेश की जाति और वर्ग के आधार पर पिछले दिनों विभाजित करने की कोशिश हुई। लेकिन इस जनादेश ने साबित किया है कि लोकतंत्र की जड़ें हमारे यहां बहुत गहरी हैं और कोई भी ताकत हमें बांट नहीं सकती। हम यह मानते हैं कि समाज में 04 ही वर्ग हैं और वह महिला, युवा, किसान और गरीब हैं। इस वर्ग के लिए हमें लगातार काम करना होगा।

माननीय अध्यक्ष महोदय, किसानों का प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान खरीदने की बात हो या प्रदेश निर्माता अटल जी की जन्म जयंती सुशासन दिवस पर अन्नदाताओं को 02 वर्ष का बकाया 3700 करोड़ रुपये से अधिक बोनस देने की बात हो। हम याद दिलाना चाहते हैं बकायदा अपने जन घोषणा-पत्र की पहली लाईन में डालने के बावजूद कांग्रेस सरकार ने किसानों को बोनस नहीं दिया। इसी 25 दिसंबर को सुशासन दिवस के दिन हम यह रकम किसानों के खातें में डालने जा रहे हैं। (मेजों की थपथपाहट) हमारी सरकार इस योजना समेत सभी बड़ी योजनाओं को समय-सीमा के भीतर अमल में लाने के लिए कदम उठा रही है। अन्य तमाम योजनाओं पर भी दिन-रात हमारी सरकार काम कर रही है। यहां हम विनम्रता से यह याद दिलाना चाहते हैं विगत् 05 वर्षों में भले कृषि से संबंधित अनेक समस्यायें रहीं। लेकिन उससे पहले हमारी पिछली सरकार ने ही जिसके माननीय अध्यक्ष महोदय ही मुखिया थे तब हमारी सरकार ने धान खरीदी में तकनीक का प्रयोग करते हुए एक ऐसी समुन्नत व्यवस्था की थी जिसके कारण अन्नदाताओं की फसल का मूल्य 24 घंटे के भीतर बिना किसी व्यवधान के उनके खाते में पहुंचना संभव होता था। (मेजों की थपथपाहट) मात्र 15 वर्ष के भीतर हमने धान खरीदी में 14 गुना वृद्धि की थी। धान के संदर्भ में बोनस शब्द की अवधारणा भी हमारी ही पहले की सरकार की देन रही है। हम पुन: शासन में आने के बाद अपनी ऐसे ही कृषि हितैषी नीतियों कों आगे बढ़ाने में "अन्नदाता सुखी भव:" के ध्येय वाक्य के लिये प्रतिबद्ध हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय राज्यपाल महोदय ने अपनी सरकार के लिये जो भी निर्देश दिये हैं, वह हमारे लिये मार्गदर्शक हैं। उनकी मंशा के अनुरूप हम सामाजिक, आर्थिक विकास, आदिवासियों, दलितों, पिछड़ों समेत महिलाओं, युवा, किसानों, वन आश्रितों, ग्रामीणों और पंरपरागत व्यवसाय से जुड़े समूहों के प्रति विशेष संवेदनशील होकर माननीय राज्यपाल महोदय की अपेक्षा के अनुरूप अपनी प्राथमिकता का निर्धारण करेंगे। माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके माध्यम से हम यह

आश्वस्त करना चाहते हैं कि माननीय राज्यपाल महोदय की अपेक्षा के अनुरूप ही चुनाव के दौरान किये गये वादों को पूरा करने की दिशा में समुचित कदम उठायेंगे। धान के 02 वर्षों का लंबित बोनस भुगतान, कृषक उन्नति योजना, दीनदयाल उपाध्याय कृषि मजदूर कल्याण योजना, महतारी वंदन योजना, घर-घर निर्मल जल अभियान, रानी दुर्गावती योजना, तेंदूपत्ता संग्रहण दर 5500 रुपये प्रति मानक बोरा करने, 4500 रुपये तक बोनस, चरणपादुका एवं अन्य सुविधायें पुन: प्रारंभ करने जैसे घोषणा पत्र के मुद्दों व निर्णय की समयबद्ध प्रक्रिया अपनाने के प्रति हम इस सदन को आश्वस्त करना चाहते हैं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ की पिछली भाजपा सरकार को छत्तीसगढ़ देश भर में सुप्रबंधित, आर्थिक प्रबंधन के लिये जाना जाता था, किन्तु पिछले 05 वर्षों में अव्यवस्था के कारण संकट हुआ। इसे लेकर जनता में थोड़ी आशंका भी स्वाभाविक है। प्रदेश पर आज लगभग 90 हजार करोड़ रुपये का ऋण भार हमारे लिये चिंता का विषय है। बावजूद इसके आर्थिक सुचिता और सुप्रबंधन की पुर्नबहाली कर हम अपने प्राकृतिक संसाधन, युवा प्रतिभाओं का समयत नियोजन कर हम नि:संदेह अपना लक्ष्य संधान कर लेंगे। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे जैसे एक सामान्य कार्यकर्ता को जिसने पंच के  दायित्व से अपनी राजनीतिक यात्रा प्रारंभ की थी। उसके बाद विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए आज हमें मुख्यमंत्री के रूप में छत्तीसगढ़ महतारी की सेवा का अवसर मिला है, यही इस लोकतंत्र की विशेषता है। मेरे लिये यह क्षण भावुक करने वाला है। अमर बलिदानी शहीद वीर नारायण सिंह जी की पुण्यतिथि के अवसर पर हमारे विधायक दल ने मुझे नेता चुना, इसके लिए मैं कृतज्ञता का अनुभव करता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ की महान जनता ने बड़ी ही आशा, उम्मीदों से फिर से हमें सेवा का अवसर दिया है। हमारी सरकार इस आशा और उम्मीद पर शत-प्रतिशत खरा उतरने के प्रति प्रतिबद्ध है। हम प्रदेश की महान परंपराओं का पालन करते हुए सबको साथ लेकर सबका विकास करने स्वयं को समर्पित करते हैं।  इस अवसर पर प्रदेश के जन कवि लक्ष्मण मस्तुरिया जी के गीत के अंश के साथ ही धन्यवाद के प्रस्ताव रखते हुए मैं विराम लेता हूं :-

मोर संग चलव रे, मोर संग चलव रे, मोर संग चलव जी।

ओ गिरे थेके हपटे मन अउ परे डरे मनखे मन, मोर संग चलव रे।

नवा जोत अउ नवा गांव बर रस्ता नवा गढ़ौ रे, मोर संग चलव रे। धन्यवाद। (मजों की थपथपाहट)

अध्यक्ष महोदय :- मैं समझता हूं कि माननीय राज्यपाल महोदय के अभिभाषण पर प्रस्तुत कृतज्ञता ज्ञापन प्रस्ताव में जितने संशोधन प्रस्तुत किये गये हैं, उन सब पर एक साथ मत ले लिया जाये।

**समस्त संशोधन अस्वीकृत हुए।**

अध्यक्ष महोदय :- प्रश्न यह है कि - "माननीय राज्यपाल महोदय ने जो अभिभाषण दिया उसके लिए छत्तीसगढ़ विधान सभा के इस सत्र में समवेत् सदस्यगण अत्यंत कृतज्ञ हैं।"

**प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।**

**<u>सत्र समापन</u>**

अध्यक्ष महोदय :- षष्ठम् विधानसभा के प्रथम सत्र के समापन के अवसर पर मैं सदन को अपनी ओर से धन्यवाद देता हूँ। यह सत्र दिसंबर से 21 दिसंबर के मध्य आहूत रहा। इस सत्र में 19 य नव निर्वाचित सदस्यों के शपथ ग्रहमाननीण के अलावा माननीय राज्यपाल जी का अभिभाषण एवं नयी सरकार का प्रथम अनुपूरक बजट प्रस्तुत और पारित हुआ।

इस अवसर पर मैं सर्वप्रथम सदन के नेता माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत जी एवं द्वय उपमुख्यमंत्री माननीय श्री अरूण साव जी एवं माननीय श्री विजय शर्मा जी एवं सभापति तालिका के सदस्य सहित पक्ष, प्रतिपक्ष के सभी सदस्यों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने सदन के सुव्यवस्थित संचालन में मुझे अपना सहयोग प्रदान किया।

मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है कि विधान सभा अध्यक्ष के निर्वाचन, नामांकन में पक्ष-प्रतिपक्ष के मध्य जो समन्वय और सद्भाव दिखा, मैं समझता हूँ छत्तीसगढ़ राज्य की संसदीय वातावरण के भविष्य के लिए यह एक शुभ संकेत है। पक्ष प्रतिपक्ष के आप माननीय सदस्यगणों ने अपने संसदीय व्यवहार एवं विचार से जो उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है, उससे लोकतांत्रिक मूल्यों को और अधिक मजबूती प्रदान होगी।

आप माननीय सदस्यों से मैं यह विशेष तौर पर आग्रह करता हूँ कि इस ससंदीय सदन की मर्यादा और सम्मान आपके कार्य, विचार एवं व्यवहार पर ही निर्भर है । आशा करता हूँ कि आप सभी इन बातों को भली-भांति समझते हैं और भविष्य में भी आपके कार्यों से संसदीय परंपरा को और अधिक मजबूती मिलेगी।

नवनिर्वाचित माननीय सदस्यों को मैं अवगत कराना चाहता हूँ कि आपके संसदीय ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए जनवरी माह के अंतिम सप्ताह में प्रबोधन कार्यक्रम प्रस्तावित है। इस कार्यक्रम की सूचना आपको तिथि निर्धारण के पश्चात् सूचित की जा सकेगी। नवनिर्वाचित सदस्यों के साथसाथ सभी - माननीय सदस्यों से मेरा यह भी आग्रह है आप विधान सभा की वेबसाईट का उपयोग विधान सभा से संबंधित जानकारी के लिए कर सकते हैं। साथ ही विधान सभा सचिवालय स्थित पुस्तकालय भी आपके

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

अध्ययन के लिए उपलब्ध है। आप जितना अधिक संसदीय विषयों का अध्ययन करेंगे उतना ही आपके ज्ञान का संवर्धन होगा।

इस सत्र में माननीय राज्यपाल जी के अभिभाषण के कृतज्ञता प्रस्ताव पर चर्चा हुई, जिसमें नये एवं पुराने सदस्यों ने सारगर्भित ढंग से अपनी बात रखी । इस सत्र में नयी सरकार का प्रथम अनुपूरक प्रस्तुत हुआ और उस पर चर्चा पश्चात् प्रस्ताव पारित हुआ। वित्तीय विषय की इस चर्चा में पक्ष-प्रतिपक्ष के आप माननीय सदस्यों ने बहुत ही सुन्दर ढंग से आपके द्वारा विषय का प्रतिपादन किया गया। मुझे इस बात का हार्दिक संतोष है कि परमात्मा ने मुझे एक ऐसे विधायी सदन के अध्यक्ष पद पर आसीन होने का अवसर दिया जिस सदन का प्रत्येक सदस्य अपनी दलीय प्रतिबद्धताओं से ऊपर उठकर संसदीय और लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण के प्रति वचनबद्ध है । मैं आप सभी माननीय सदस्यों की संसदीय सुधी का अभिनंदन करता हूँ वैसे तो यह आप जानते हैं कि नयी विधानसभा गठन के बाद प्रथम सत्र औपचारिक सत्र होता है । बावजूद इसके हमारे लिए यह उपलब्धि है कि इस सत्र में राज्य की जनता के हित से जुड़े प्रत्येक विषयों पर आप सदस्यों ने सारगर्भित सम्यक चर्चा की और आशा करता हूं कि आने वाले सत्रों में भी आप सभी छत्तीसगढ़ के समग्र विकास के लिए संकल्पित होकर राज्य के हित के लिए अपना योगदान देंगे और राज्य के सर्वोच्च प्रजातांत्रिक संस्था विधानसभा का सम्मान उत्तरोत्तर बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

इस अवसर पर मैं सम्माननीय पत्रकार साथियों तथा प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूं कि उन्होंने बड़ी गंभीरता से प्रचार माध्यमों में प्रमुखता से स्थान देकर प्रदेश की जनता को सभा में सम्पादित कार्यवाही से अवगत कराया।

इस सत्र के समापन अवसर पर मैं राज्य शासन के मुख्य सचिव सहित समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूं । सुरक्षा व्यवस्था में संलग्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी बधाई देता हूं जिन्होंने सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था इस सत्र के दौरान कायम रखी । मैं विधान सभा के सचिव सहित सचिवालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भी प्रशंसा करता हूं, जिन्होंने अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण कुशलता एवं निष्ठा के साथ किया।

सत्र समापन के अवसर पर आगामी सत्र की तिथियों की घोषणा की परंपरा रही है। तद्नुसार आगामी सत्र फरवरी माह के प्रथम सप्ताह में आहूत होने की संभावना है। आने वाले अंग्रेजी नव वर्ष की आप सभी को शुभकामनाएं देता हूं और आपके एवं प्रदेशवासियों के सुखमय समृद्धशाली जीवन की कामना करता हूं । आईये, हम सब मिलकर अपने छत्तीसगढ़ राज्य को समग्र उन्नति के शीर्ष पर पहुंचाने का पुनीत संकल्प लें। जय हिन्द, जय छत्तीसगढ़, धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

मुख्यमंत्री (श्री विष्णु देव साय) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं छत्तीसगढ़ की जनता, मातृशक्ति, युवा, किसान भाईयों समेत सभी वर्ग के लोगों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि जिन्होंने



अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

ऐतिहासिक बहुमत से चुनकर हमें सेवा का अवसर दिया है । छत्तीसगढ़ के छठवें विधानसभा के इस पहले सत्र के समापन की बेला में हम सब भावुक महसूस कर रहे हैं । यह एक अल्पविराम है ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, आपने इससे पहले लगातार 3 बार छत्तीसगढ़ की सत्ता के मुखिया के रूप में कार्य कर प्रदेश का जैसा विकास किया वह इतिहास के सुनहरे पन्नों में दर्ज है । चउंर वाले बाबा की आपकी पहचान वास्तव में भारत के लोकतंत्र के लिये एक उदाहरण है । आपका विधानसभा में हम सबके संरक्षक के रूप में सर्वसम्मति से चुनकर आना नि:संदेह प्रदेश की विधायी परंपरा को और अधिक गौरवपूर्ण बना रहा है । पहले सत्र की समाप्ति के इस अवसर पर मैं विपक्ष और पक्ष के सभी माननीय सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करता हूं । नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरणदास महंत जी, पूर्व मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी, हमारे पूर्व अध्यक्ष और वर्तमान में सभी माननीय सदस्यगण, तीसरे दल के इकलौते विधायक तुलेश्वर सिंह मरकाम, विशेष रूप से इस सदन में पहली बार चुनकर आये 50 विधायकगण आप सभी को मैं शुभकामनाएं देता हूं और आभार व्यक्त करता हूं । पहली बार चुनकर आये विधायकगण के साथ-साथ मैं इस सदन के वरिष्ठ विधायकों का भी आभार व्यक्त करता हूं जिनकी भागीदारी से समस्त सदन को बहुत कुछ सीखने को मिला । इस अवसर पर विधानसभा के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को भी धन्यवाद देता हूं। जिन्होंने लगातार अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया । भोजन समेत सभी व्यवस्था देखने वाले बंधु और सुरक्षा कर्मचारियों को भी मैं इस अवसर पर धन्यवाद देता हूं । लगातार दिन भर यहां रहकर कार्यवाही को कवर कर उसे जनता तक पहुंचाने वाले पत्रकार बंधुओं को भी हृदय से आभार फिर से एक-बार सभी को धन्यवाद । (मेजों की थपथपाहट)

नेता प्रतिपक्ष (डॉ. चरणदास महंत) :- आदरणीय अध्यक्ष महोदय, विदाई की बेला आ गयी है । हम सब आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं कि आपके संरक्षण में यह 3 दिनों का सत्र बहुत सुखद रहा । हमारे नये विधायक बड़े ही सुलझे हुए दिखे। उन्होंने प्रत्येक चर्चा में अपनी हिस्सेदारी निभाने की कोशिश की। जितने भी नये साथी आये हैं, मैं उन्हें बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इस सत्र की शुरूआत आदरणीय रामविचार नेताम जी के माध्यम से हम सबको शपथ दिलाकर शुरू की गई। मैं उनका आभारी हूं। प्रतिपक्ष और पक्ष दोनों ने आप सबको अध्यक्ष के पद पर बिठाया। आप एक बेहतर इंसान तो हैं ही, एक बेहतर अध्यक्ष के रूप में आने वाले वर्षों में जाने जायेंगे, मुझे पूरा विश्वास है। मैं आदरणीय विष्णु देव साय जी का बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं, उनका अभिनंदन करता हूं। पूरे शालीन भाव से उन्होंने यहां कार्य संपादित किया। दोनों उप मुख्यमंत्री जी, माननीय साव जी और माननीय शर्मा जी ने भी अपनी भागीदारी यहां निभायी। मैं उन सबको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। विशेष रूप से सचिवालय का काम बहुत टेढ़ा काम होता है। 3 दिन में ही अच्छे ढंग से सभी कार्य को संपादित करना श्री दिनेश शर्मा जी और उनके साथियों के लिए कठिन था, फिर भी उन्होंने बहुत बेहतर ढंग से इस कार्य को संपादित किया। हमारे मीडिया के अधिकारी-कर्मचारी साथी, फोटोग्राफर और जितने भी रिकॉर्ड के लिए बैठे रहते हैं,

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

8 बज चुके हैं, वे सब हम लोगों का साथ देते रहे। यहां के समाचारों को समाचार-पत्रों में छापते रहे। हम उनका भी बहुत-बहुत आभार व्यक्त करते हैं। यहां के अधिकारीगण जो हम सबके सहयोग के लिए बैठे हुए हैं, मैं उनका भी स्वागत करता हूं, धन्यवाद करता हूं। यहां की पुलिस व्यवस्था में आये, यहां की सुरक्षा व्यवस्था में आये सभी साथियों को मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगा। आपने आगामी तिथि की घोषणा की है, मेरा भी मत था कि इस बार चूंकि जरूरत से ज्यादा नये विधायक आये हैं, उन्हें कम से कम 3 दिन की ट्रेनिंग दे दी जाए। आपने ऐसी व्यवस्था कर दी है कि 26 जनवरी के बाद शायद आप ट्रेनिंग की व्यवस्था करेंगे और हमारे सभी साथी उसमें उपस्थित रहें। हर काम छोड़कर यहां उपस्थित रहें, इसलिए कि हमारे छत्तीसगढ़ की जनता ने उन्हें अपनी सेवा के लिए नियुक्त किया है। वे यहां जितने अच्छे ढंग से अपनी बात रख पायेंगे, मुझे विश्वास है उतने बेहतर ढंग से वे छत्तीसगढ़ महतारी की सेवा करेंगे। आप सबने बहुत बेहतर ढंग से संचालन में मदद किया है। सभी पुराने साथियों ने सभी नये साथियों ने, उसके लिए मैं उनके प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं, बधाई देता हूं और आने वाला सत्र इससे बेहतर होगा, इसकी कामना करता हूं। जय छत्तीसगढ़। साहेब बंदगी साहेब। जय सतनाम।

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगान होगा। माननीय सदस्यगण राष्ट्रगान के लिए अपने स्थान पर खड़े हो जाएं।

**(राष्ट्रगान जन-गण-मन का गायन किया गया)**

अध्यक्ष महोदय :- विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल तक के लिए स्थगित।

**(रात्रि 08 बजकर 20 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित की गई)**

**दिनेश शर्मा**

रायपुर (छत्तीसगढ़) **सचिव**

दिनांक : 21 दिसंबर, 2023 **छत्तीसगढ़ विधान सभा**

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं